रे बे का

दाफ़्न द्यू मोरिये के लोक-प्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी रूपांतर

अनुवादिका
शांति भटनागर
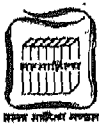
१९६१

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय,
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

पहली बार : १६६१

मूल्य
पांच रुपये

मुद्रक
हीरा आर्ट प्रेस
दिल्ली

प्रकाशकीय

पिछले दशकों में, हिंदी के पाठकों में, विदेशी साहित्य के अध्ययन की रुचि तीव्रता से जाग्रत हुई है और उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। विदेशी उपन्यास तो विशेष रूप से लोकप्रिय हो रहे हैं। पाठकों की इसी रुचि को दृष्टि में रखते हुए हमने उत्कृष्ट और लोकप्रिय विदेशी उपन्यासों को हिन्दी में प्रकाशित करने का सिलसिला शुरू किया है। अबतक स्टीफन ज़्विग का 'विराट' और तुर्गनेव का 'स्वाभिमानी' निकल चुके हैं। इन दोनों ही उपन्यासों को पाठकों ने बहुत पसंद किया है।

इसी क्रम में दाफ्न द्यू मोरिए का 'रेबेका' पाठकों के सामने प्रस्तुत है। इस पुस्तक की लेखिका संसार के सबसे अधिक सफल व जाने-माने उपन्यासकारों में से हैं। उनका पहला उपन्यास 'दि लविंग स्पिरिट' सन् १९३१ में प्रकाशित हुआ जब वह २० वर्ष की थीं।

प्रस्तुत उपन्यास इस सदी के अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यासों में से है। इसमें एक ऐसे नारी-चरित्र का निर्माण किया गया है, जिसका मोहक और दृढ़ व्यक्तित्व न केवल उसके जीवन-काल में, बल्कि उसकी मृत्यु के बाद भी, उन सभी लोगों पर छाया रहता है, जो उसके संपर्क में आते हैं। प्रेम और घृणा के द्वंद्व से पीड़ित प्रमुख पात्रों के क्रियाकलाप रेबेका के व्यक्तित्व से इस प्रकार परिचालित हैं जैसे कोई बड़ा भारी तूफान पेड़-पौधों को मनमाने ढंग से नचाता और झकझोरता है। कथानक में इतना प्रवाह और कौतूहल इतना अधिक है कि उपन्यास एक बार हाथ में लेकर छोड़ते नहीं बनता।

उपन्यास का अनुवाद श्रीमती शांति भटनागर ने किया है और यह 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हो चुका है।

आशा है इस कृति को हिंदी के पाठक बहुत पसन्द करेंगे।

—मंत्री

रेबेका

: १ :

अतीत की स्मृतियां आज मेरी आंखों के सामने एक-एक करके नाच रही हैं और समय की दूरी को एक पुल की भांति पाटे दे रही हैं। अपना उस समय का रूप मैं साफ-साफ देख रही हूं। कटे हुए सीधे बाल, बिना पाउडर लगे मुख पर यौवन की झलक, ढीले-ढाले कोट के नीचे घाघरा और अपने हाथ का बना हुआ जम्पर—इस वेशभूषा में मैं एक घबराई बछेरी जैसी श्रीमती वॉन हॉपर के पीछे-पीछे खिंची फिरती थी। दोपहर के खाने के समय वह मेरे आगे-आगे चलती थीं—ऊंची एड़ी के जूतों पर डगमगाता हुआ नाटा शरीर, भारी-भरकम वक्षस्थल और हिलते हुए कूल्हों से मेल खाती हुई घूमवाली झालरदार ब्लाउज और सिर पर एक बहुत बड़े पर से विभूषित नया टोप, जिसे वह इतना तिरछा करके ओढ़ती थी कि उनके सिर के एक ओर का हिस्सा वैसा ही नंगा दिखाई देता था जैसे स्कूल जानेवाले लड़कों के घुटने दिखाई देते हैं। उनके एक हाथ में बहुत बड़ा बैग लटकता रहता था, जिसमें पासपोर्ट, डायरी, ब्रिज के गणना-पत्र आदि रहते थे और दूसरे हाथ से वह अपनी दूरबीनी ऐनक के साथ खिलवाड़ करती रहती थीं।

श्रीमती हॉपर रेस्टोरां के कोने में खिड़की के पासवाली मेज पर बैठा करती थीं। अपनी ऐनक को अपनी छोटी-छोटी चुंधी आंखों के पास ले जाकर वह बड़े ध्यान से दाएं-बाएं देखती थीं और अंत में उस ऐनक को काले रिबन में लटकता छोड़कर वह एक निराशा की आह भरकर कहती थीं—'हुंह,' एक भी तो बड़ा आदमी नजर नहीं आता। मैं मैनेजर से कहकर अपने बिल में कमी कराए बिना न रहूंगी। आखिर मैं यहां आती किसलिए हूं! क्या इन बैरों को देखने के लिए?" और तब अपनी तेज आवाज से, जो हवा को चीरती हुई चली जाती,

वह बैरे को अपने पास बुलातीं।

आज मुझे याद आ रहा है मॉन्टी कार्लो के कोत्-द-अज़ूर होटल का वह खाने का सजा हुआ बड़ा कमरा और याद आ रही हैं उसमें बैठी हुई श्रीमती वॉन हॉपर, जो जड़ाऊ छल्लों से अलंकृत अपनी मोटी-मोटी अंगुलियों से ऊपर तक भरी हुई पुलाव की रकाबी को कुरेदती जाती थीं और बीच-बीच में अपनी तीखी दृष्टि मेरी प्लेट पर डाल लेती थीं कि कहीं मैंने कोई उनसे बढ़िया चीज तो खाने को नहीं मंगा ली है। लेकिन उन्हें परेशान होने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी, क्योंकि बैरे आदमियों को भांपने में बड़े चतुर होते हैं और वहां के बैरे को भी यह समझने में देर नहीं लगी थी कि मैं श्रीमती हॉपर की कोई सहकारी हूं और इसीलिए वह मेरे सामने ठंडे गोश्त की वह प्लेट रख गया था, जिसे ठीक से तैयार न होने के कारण किसी आदमी ने आध घंटे पहले वापस कर दिया था। मुझे याद है कि एक बार ऐसी ही उपेक्षा का सामना मुझे तब करना पड़ा था जब श्रीमती हॉपर के साथ मैं एक गांव में गई थी और वहां की नौकरानी घंटी बजाने पर न तो मेरे पास आती थी, न मेरे जूते ही लाती थी। इतना ही नहीं, सुबह की चाय, जो बरफ जैसी ठंडी होती थी, वह मेरे सोने के कमरे के दरवाज़े के बाहर रख जाती थी।

हां, तो उस ठंडे गोश्त की प्लेट की याद अब भी ताजा है। गोश्त बिल्कुल सूखा और बेस्वाद था, लेकिन मुझमें इतना साहस कहां था जो उसे लौटा देती! हम चुपचाप खाते रहे, क्योंकि श्रीमती हॉपर को एकाग्र-चित्त होकर भोजन करना पसंद था। उनकी ठोड़ी पर से टपकती हुई चटनी को देखकर मैंने यह भी अनुमान लगा लिया था कि उन्हें पुलाव बहुत स्वाद लग रहा है। इतने पर भी उस ठंडे भोजन के लिए मुझमें कोई रुचि न जगी और जब मैंने श्रीमती हॉपर की ओर से दृष्टि हटाई तो देखा कि हमारी पासवाली मेज, जो पिछले तीन दिन से खाली पड़ी थी, फिर भरनेवाली है और होटल का मैनेजर लम्बा सलाम झुकाकर एक नये आगन्तुक का स्वागत कर रहा है। ऐसे सलाम वह बड़े-बड़े खास व्यक्तियों को ही झुकाता था।

श्रीमती हॉपर ने कांटा नीचे रख दिया और अपनी ऐनक उठाकर

वह आगन्तुक को इस तरह घूरने लगीं कि लज्जा से मेरा सिर झुक गया। लेकिन आनेवाले को इस बात का पता भी नहीं था कि कोई उसे इतनी दिलचस्पी के साथ देख रहा है। वह भोजन की सूची पर नज़र दौड़ाता रहा।

तब श्रीमती हॉपर ने अपनी ऐनक को एक खटके के साथ बन्द कर दिया। उनकी छोटी-छोटी आंखें उत्तेजना के मारे चमक रही थीं। मेज़ के उस पार से मेरी तरफ़ झुकते हुए उन्होंने कुछ ऊंचे स्वर में कहा—"वह मैक्सिम द विन्तर हे, मैन्दरले के स्वामी। वह बीमार-से दिखाई देते हैं। हैं न? सुनते हैं कि अपनी मृत पत्नी को वह भुला नहीं पाते।"

: २ :

आज मैं सोचती हूं कि यदि श्रीमती हॉपर इतनी बननेवाली न होतीं तो न जाने मेरा जीवन कैसा होता। यह सोचकर हँसी-सी आती है कि मेरा उस समय का जीवन श्रीमती हॉपर की इसी विशेषता के कच्चे धागे में लटक रहा था। दूसरों से मेल-जोल बढ़ाने की उनकी उत्सुकता एक प्रकार की बीमारी थी—क़रीब-क़रीब पागलपन। पहले-पहल जब मैं लोग-बागों को उनकी पीठ-पीछे उनकी हँसी उड़ाते सुनती या उनके आते ही लोगों को कतराकर जल्दी-से इधर-उधर चले जाते देखती तब मुझे बड़ा धक्का-सा लगता। इस होटल में आये अब उन्हें कई बरस हो गये थे। ब्रिज खेलने का उन्हें बड़ा शौक़ था, जिसके कारण वह सारे मॉन्टी कार्लो में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। उनका दूसरा शौक यह था कि होटल में जब कभी कोई बड़ा आदमी आता तब उसे वह अपना मित्र घोषित किये बिना न रहतीं, चाहे उसे उन्होंने केवल एक बार कहीं रास्ता चलते ही क्यों न देखा हो। किसी-न-किसी तरह वह उससे परिचय प्राप्त कर ही लेती थीं और इससे पहले कि बेचारा आगन्तुक खतरे को भांप सके, वह उसे अपने कमरे में आने का निमन्त्रण दे देती थीं। उनका यह आक्रमण इतना सीधा और इतना अचानक होता था कि उससे बच सकने का अवसर ही नहीं मिलता था। उन्होंने होटल के आराम करनेवाले कमरे में एक सोफ़े पर कब्जा जमा रखा था, जो स्वागतवाले बड़े कमरे और रेस्टोरां में

जाने के रास्ते के बीचोंबीच था। दोपहर और रात के खाने के बाद वह वहीं बैठकर कॉफ़ी पीया करती थीं और हर आने-जानेवाले को उनके पास से होकर गुज़रना पड़ता था।

अपना शिकार फांसने के लिए कभी-कभी वह मेरा भी प्रयोग करती थीं। नापसन्द होने पर भी मुझे अक्सर उनके 'अकस्मात् आ टपकनेवाले परिचित मित्र' के पास कभी कोई मौखिक सन्देश लेकर या कोई किताब अथवा अखबार उधार मांगने के लिए या किसी और दूसरे बहाने से जाना पड़ता था। साधारण तौर पर श्रीमती हॉपर बड़े-बड़े ओहदेदारों को ही पसंद करती थीं, लेकिन अगर वह किसी व्यक्ति का फोटो किसी सामाजिक पत्र में एक बार भी छपा हुआ देख लेती थीं तो वह भी उनके लिए काफी होता था।

उस दोपहर की बात तो कभी भुलाये नहीं भूलती। इतने साल बीत चुके हैं, लेकिन ऐसा लगता है मानों कल की ही घटना हो। श्रीमती हॉपर अपने प्रिय सोफे पर बैठी सोच रही थीं कि नई चिड़िया को कैसे फंसाया जाय। उनके उस दिन के आकस्मिक व्यवहार को देखकर और जिस ढंग से वह अपनी ऐनक को अपने दांतों पर बजा रही थीं उससे मुझे यह समझने में देर न लगी कि वह किसी सम्भावना की खोज में हैं। जब उन्होंने मीठी प्लेट की चिन्ता न करते हुए खाना बड़ी जल्दी-जल्दी खत्म किया तो मैं समझ गई कि वह नये आगन्तुक के आने से पहले ही भोजन से निबटकर उस स्थान पर बैठ जाना चाहती हैं, जहां से उसे गुज़रना होगा। एकाएक वह मेरी तरफ मुड़ीं और बोलीं, "ज़रा जल्दी-से ऊपर जाकर वह खत तो ले आओ, जो मेरे भतीजे ने भेजा था। तुम्हें याद है न! अरे, वही खत जो उसने 'हनीमून' (मिलन-यामिनी) के अवसर पर लिखा था और जिसमें एक चित्र भी है। जाओ, उसे फौरन ले आओ।"

मैं समझ गई कि उनकी योजना बन चुकी है और वह अपने भतीजे को परिचय का माध्यम बनाना चाहती हैं। सदा की तरह उनकी योजना में हिस्सा लेना मुझे अच्छा नहीं लगा। मुझे विश्वास था कि किसी अपरिचित का

इस तरह बीच में आ पड़ना आगन्तुक को अच्छा नहीं लगेगा। कोई दस महीने पहले श्रीमती हॉपर ने इस व्यक्ति के बारे में दैनिक पत्रों में जो कुछ पढ़ा था, उसे कभी काम में लाने के लिए उन्होंने अपने मस्तिष्क में जमा कर रखा था। उसीके आधार पर उस दिन भोजन के समय उन्होंने उसके सम्बन्ध में जो कुछ कहा उसे सुनकर मैंने—कम उम्र की और अनुभवहीन होते हुए भी—अनुमान लगा लिया कि अपने एकान्त में इस तरह सहसा बाधा पड़ना आगन्तुक को रुचिकर नहीं होगा।

ख़त मेज़ की दराज में मिल गया, लेकिन लौटने में मैंने जान-बूझकर देर कर दी। मुझे ऐसा लगा मानो मैं उसे एकान्त की कुछ और घड़ियां बिताने का अवसर दे रही हूं। यदि मुझमें साहस होता तो मैं कुछ और भी देर कर देती और आगन्तुक को आगाह कर देती; किन्तु मुझमें झिझक बहुत ज्यादा थी और मैं यह नहीं सोच पाती थी कि उससे कहूंगी क्या।

जब मैं लौटी तब आगन्तुक खाने के कमरे में से उठ चुका था और इस भय से कि उससे मिलने का मौका कहीं हाथ से न निकल जाय, श्रीमती हॉपर ने पत्र की प्रतीक्षा किये बिना ही उससे अपना सीधा परिचय कर लिया था। उस समय वह सोफ़े पर उनके पास बैठा था। मैंने जाकर चिट्ठी चुपचाप श्रीमती हॉपर के हाथों में पकड़ा दी। मुझे देखते ही वह एकदम उठ खड़ा हुआ और अपनी सफलता से आनन्दित होकर श्रीमती हॉपर ने मेरी तरफ कुछ अनिश्चित भाव से हाथ हिलाया और मुंह-ही-मुंह में मेरा नाम लिया।

"मिस्टर द विन्तर हमारे साथ कॉफ़ी पियेंगे। जाकर बैरा से दूसरा प्याला लाने के लिए कहो," वह बोलीं। उनका यह उपेक्षापूर्ण स्वर आगन्तुक को मेरी स्थिति का भान कराने के लिए काफ़ी था। उसका तात्पर्य यह था कि अभी मैं कम उम्र की हूं और मेरा उनकी बातचीत में शामिल होना आवश्यक नहीं है। जब कभी वह दूसरे पर प्रभाव डालना चाहती थीं तब मुझसे इसी ढंग से बात करती थीं और मेरा परिचय भी वह अपने बचाव के लिए ही दिया करती थीं। क्योंकि एक बार लोग-बाग मुझे उनकी बेटी समझ बैठे थे, जिसके कारण हम दोनों को ही बहुत लज्जित होना पड़ा था। उनके इस व्यव-

हार से लोगों को मेरी नगण्यता का भान हो जाता था और यही कारण था कि स्त्रियां मुझे देखकर इस ढंग से सिर हिला देती थीं कि उसमें अभिवादन के साथ-ही-साथ विदाई का भी संकेत होता था और पुरुष निश्चिन्त होकर सोच लेते थे कि मेरे लिए खड़े न रहकर अगर वे अपनी कुर्सी पर बैठ भी जायं तो इसमें कोई अशिष्टता नहीं होगी।

इसलिए जब वह आगन्तुक खड़ा ही रहा तब मुझे कुछ आश्चर्य-सा हुआ। उसने बैरे को आने का संकेत किया और श्रीमती हॉपर से कहा, "क्षमा करें, मैं आपकी बात काट रहा हूं, आप दोनों ही मेरे साथ कॉफी पियेंगी।" और इससे पहले कि मैं कुछ ठीक से समझ सकूं, वह मेरी कुरसी पर बैठ चुका था और मैं श्रीमती हॉपर के बराबर सोफे पर थी।

क्षणभर के लिए श्रीमती हॉपर उद्विग्न-सी दिखाई दीं, क्योंकि ऐसी बात उन्होंने बिलकुल नहीं चाही थी। लेकिन जल्दी ही उन्होंने अपनेको सम्हाल लिया और मेरे और सोफे के बीच में अपने भारी-भरकम शरीर को फंसाते हुए उन्होंने उसकी कुरसी की तरफ झुककर उससे जोर-जोर-से बातें करनी शुरू कर दीं :

"जैसे ही तुम रेस्टोरां में घुसे मैंने तुम्हें पहचान लिया और सोचा कि अरे, मिस्टर द विन्तर तो बिली के मित्र हैं, उन्हें बिली और उसकी पत्नी के 'हनीमून' के चित्र जरूर दिखाने चाहिए। देखो, ये रहे। यह डोरा। ओह कितनी सुन्दर है—पतली लचकदार कमर, बड़ी-बड़ी आंखें! यहां ये पाम-बीच पर सूर्य-स्नान कर रहे हैं। बिली तो डोरा के पीछे दीवाना है। जब उसने क्लैरिज में पार्टी दी थी तबतक वह उससे नहीं मिला था। उस पार्टी में ही मैंने तुम्हें पहले-पहल देखा था। लेकिन तुम्हें तो मुझ जैसी बुढ़िया की याद भी नहीं होगी।" ये शब्द श्रीमती हापर ने आगन्तुक की ओर उत्तेजना पैदा करनेवाली निगाह से देखकर अपने दांतों को चमकाते हुए कहे।

"बात बिल्कुल उलटी है, मुझे आपकी बहुत अच्छी तरह याद है।" आगन्तुक ने कहा और इससे पहले कि श्रीमती हॉपर उसे फिर पहली मुलाक़ात की बातों में उलझातीं, उसने उनकी ओर अपना सिगरेट का डिब्बा बढ़ा दिया और

सिगरेट जलाने के लिए श्रीमती हॉपर को एक क्षण के लिए रुकना पड़ा। दियासलाई बुझाते हुए वह बोला, "मुझे पामबीच पसन्द नहीं है।" उस समय उसे देखकर ऐसा लगा जैसे वह पन्द्रहवीं सदी के तंग गलियोंवाले किसी ऐसे नगर का निवासी है, जहां के लोग नोकदार जूते और ऊनी मोज़े पहनते थे। मुझे सहसा किसी पिक्चर-गैलरी में देखे हुए एक 'अज्ञात भद्र पुरुष' के चित्र का स्मरण हो आया। उस समय यदि अंगरेज़ी कोट उतारकर, गले और आस्तीन पर बेल लगा हुआ काला कोट उसे पहना दिया जाता तो ऐसा लगता जैसे एक बीते हुए युग का व्यक्ति हमारे आज के नये संसार को घूर-घूरकर देख रहा है। मैं देर तक उसी चित्र की याद में खोई रही।

इस बीच उनकी बातचीत चलती रही। वह कह रहा था, "नहीं, बीस बरस पहले भी मुझे ऐसी चीजों में आनन्द नहीं आता था।"

इसपर श्रीमती हॉपर अपनी मोटी हँसी हँसते हुए बोलीं—'अगर बिली के पास मैन्दरले-जैसा भवन होता तो उसे पामबीच में सैर करने जाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। मैंने सुना है कि मैन्दरले परी-देश-सा लगता है।"

वह रुककर उसके मुस्कराने का इन्तज़ार करने लगीं, लेकिन वह सिगरेट पीता रहा और मैंने उसकी भौंहों के बीच में मकड़ी के जाले-जैसी महीन सिकुड़न देखी।

"मैंने मैन्दरले की तस्वीरें देखी हैं," श्रीमती हॉपर ने फिर कहा, "वह सचमुच बड़ा मोहक लगता है। बिली कह रहा था कि सुन्दरता में वह अपना सानी नहीं रखता। आश्चर्य है कि तुम उसे छोड़ कैसे पाते हो?"

उसका मौन अब स्पष्ट रूप से कष्टकर हो चला था, लेकिन श्रीमती हॉपर थीं कि बोलती ही चली जा रही थीं, ठीक वैसे ही जैसे कोई भौंड़ी बकरी किसी रक्षित प्रदेश में दौड़ती और उसे रौंदती चली जाय। मेरा मुंह लज्जा से लाल हो गया, क्योंकि श्रीमती हॉपर के साथ-साथ मुझे भी अपमानित होना पड़ रहा था।

"अपने घरों के बारे में सभी अंग्रेज एक जैसे होते हैं। उनके बारे में वे उदासीनता इसलिए दिखाते हैं कि कोई यह न समझ बैठे कि वे घमंडी हैं।

क्यों ठीक कह रही हूं न ? मैंने सुना है मैन्दरले में एक बहुत बड़ी चित्रशाला है और उसमें बड़े-बड़े संगीतज्ञों के बहुमूल्य चित्र टंगे हैं ?" और भी तेज़ आवाज में श्रीमती हॉपर ने कहा और फिर मेरी तरफ मुड़कर वह बोलीं—"मिस्टर द विन्तर इतने संकोची हैं कि वह यह भी स्वीकार नहीं करेंगे; लेकिन मुझे विश्वास है कि यह सुन्दर भवन उनके पुरखों के पास सदियों से है। कहते हैं कि उसकी चित्रशाला तो एक अनमोल हीरा है।"

अब मेरे लिए सहन करना कठिन हो गया था। शायद मिस्टर द विन्तर मेरी स्थिति को भांप गये, क्योंकि उन्होंने आगे की ओर झुककर मुझसे बड़ी ही धीमी आवाज में पूछा, "थोड़ी और कॉफ़ी लोगी ?" मैंने गरदन हिलाकर मना कर दिया, लेकिन मुझे ऐसा लगा कि वह तब भी मुझे कुछ खोये-खोये-से देख रहे थे और शायद सोच रहे थे कि मेरा और श्रीमती हॉपर का आपस मे क्या सम्बन्ध है।

वह मुझसे बोले, "मॉन्टी कार्लो के बारे में तुम्हारा क्या विचार है ? इसके बारे में कभी कुछ सोचती भी हो या नहीं ?" इस प्रकार उनकी बातचीत में शामिल कर लिये जाने के कारण स्कूल से अभी हाल ही में निकली हुई मुझ लाल कोहनी और सीधे बालोंवाली लड़की की हालत और भी विचित्र होगई और मॉन्टी कार्लो को आडम्बरपूर्ण बताते हुए मैंने कुछ बड़े फूहड़पन से उत्तर देने की चेष्टा की। किन्तु मेरे अटकते हुए वाक्य के पूरा होने से पहले ही श्रीमती हॉपर बीच में बोल उठी, "इसके साथ यही तो परेशानी है, मिस्टर द विन्तर ! इसके दिमाग बड़े ऊंचे हो गये हैं। कोई दूसरी लड़की होती तो मॉन्टी कार्लो को देखने का मौक़ा पाने के लिए अपनी आंखें तक न्योछावर करने को तैयार हो जाती।"

"वाह, तब तो मॉन्टी कार्लो का वह खूब मजा लूटती," श्री द विन्तर ने मुसकराते हुए कहा।

हवा में सिगरेट के धुएं का एक बड़ा-सा बादल बनाते हुए श्रीमती हॉपर ने अपने कंधे हिलाते हुए पूछा, "तुम तो यहां शायद हर साल आते हो ? कहो, इस बार क्या कार्यक्रम है ? चेमी खेलोगे या गोल्फ ?"

"मैंने अभी कुछ तै नहीं किया है," उन्होंने जवाब दिया, मैं ज़रा जल्दी में आया हूं।"

इन शब्दों ने शायद उन्हें किसी बात की याद दिला दी, क्योंकि उनका चेहरा फिर कुछ गम्भीर होगया और उनके माथे पर हल्की-सी त्यौरी पड़ गई। लेकिन श्रीमती हॉपर बोलती ही रहीं। कुछ प्रसिद्ध स्त्रियों और पुरुषों के नाम ले-लेकर वह बिल्कुल बेतुकी बातें कर रही थीं, जिनमें श्री द विन्तर को रत्तीभर भी दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन उन्होंने न तो एक बार भी श्रीमती हॉपर को बीच में टोका और न ही अपनी घड़ी की तरफ देखा। अंत में एक छोकरे ने आकर उन्हें इस स्थिति से उबारा। श्रीमती हॉपर के पास आकर वह बोला, "आपके कमरे में दरज़ी आपका इन्तज़ार कर रहा है।"

अपनी कुरसी को पीछे ढकेलते हुए श्री द विन्तर एकदम उठ खड़े हुए और बोले, "अब मैं आपको नहीं रोकूंगा। आजकल फैशन इतनी तेजी-से बदलते हैं कि कहीं आपके ऊपर पहुंचने से पहले ही न बदल जाय।"

इस व्यंग्य को श्रीमती हॉपर समझ नहीं पाईं। इसे वह केवल मज़ाक समझीं और लिफ्ट की ओर जाते हुए बोलीं, "तुमसे इस तरह मिलकर बड़ी खुशी हुई। किसी दिन मेरे कमरे में आकर चाय पियो। शायद कल शाम को दो-एक आदमी चाय पीने आयेंगे, तुम भी क्यों न हमारे साथ ही चाय लो।"

"मुझे खेद है। कल शायद मैं सौस्पल जाऊंगा और कह नहीं सकता कि वहां से कबतक लौट पाऊंगा।"

लिफ्ट के द्वार पर खड़ी-खड़ी श्रीमती हॉपर फिर बोलीं, "तुम्हें यहां बढ़िया कमरा तो मिल ही गया होगा। आजकल तो आधा होटल खाली पड़ा है। मेरे खयाल से तुम्हारे नौकर ने तुम्हारा सामान ठीक से लगा दिया होगा?"

इतनी आत्मीयता दिखाना सीमा से बाहर की बात थी। मैंने श्री द विन्तर की ओर देखा कि उनपर इसका क्या असर पड़ा है। उन्होंने शान्त भाव से उत्तर दिया, "मेरे पास नौकर नहीं है, शायद आप ही मेरे लिए यह काम कर देना पसन्द करें।"

इस बार तीर निशाने पर बैठा। लज्जा से लाल होती हुई श्रीमती हॉपर

अजीब तरह से हँसीं और बोलीं, "मैं...मैं तो ऐसा सोच...भी...नहीं..." और फिर एकाएक मेरी तरफ मुड़कर कहने लगीं, "शायद तुम मिस्टर द विन्तर की कुछ सहायता कर सको।"

"आपका प्रस्ताव बड़ा सुन्दर है," श्री द विन्तर बोले, "लेकिन मैं अपने पुरखों के इस आदर्श वाक्य का पालन करता हूं कि जो अकेला चलता है वही सबसे तेज़ चलता है।"

यह कहकर वह उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही मुड़े और चले गये।

"कैसी अजीब बात है ?" लिफ्ट से ऊपर चढ़ते हुए श्रीमती हॉपर ने कहा, "भला इस तरह एकाएक चले जाना भी कोई मजाक की बात है। पुरुष कैसी अजीब-अजीब बातें करते रहते हैं। मुझे एक मशहूर लेखक की याद है, जो मुझे आता देखकर तेजी के साथ जीने से नीचे उतर जाया करता था। मेरा खयाल है कि उसे मुझसे कुछ लगाव-सा हो गया था, गोकि उसे खुद इस बात का यकीन नहीं था। हां, उस समय मैं कम उम्र की थी।"

लिफ्ट एक झटके के साथ रुक गई और हम ऊपर पहुंच गये। गैलरी में चलते-चलते श्रीमती हॉपर बोलीं, "देखो, मैं कोई कड़ी बात नहीं कहना चाहती, लेकिन आज तुम जरूरत से ज्यादा आगे बढ़ गई थीं। खुद ही सारी बातचीत करने की तुम्हारी चेष्टा मुझे बहुत बुरी लगी और मेरे खयाल से मिस्टर द विन्तर ने भी कुछ ऐसा ही महसूस किया होगा। पुरुषों को इस तरह की बातें अच्छी नहीं लगतीं।"

मैं कुछ नहीं बोली, कोई ठीक जवाब ही मेरी समझ में नहीं आया। अपने कंधे हिलाकर श्रीमती हॉपर ने हँसते हुए फिर कहा, "खैर चलो। तुम्हारे यहां के आचरण की जिम्मेदारी आखिर मेरे ही ऊपर तो है। मैं तुम्हारी मां के बराबर हूं, इसलिए मुझे विश्वास है कि तुम मेरी राय पर चलने की चेष्टा करोगी।" इसके बाद गुनगुनाती हुई वह अपने सोने के कमरे में चली गईं, जहां दरजी उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।

मैं खिड़की के पास घुटनों के बल झुककर बाहर की ओर देखने लगी। दिन ढल रहा था, लेकिन धूप अभी काफी तेज थी और अच्छी हवा चल रही

थी। मैं सोचने लगी कि आध घंटे बाद ही खिड़कियां बन्द करके हम ब्रिज खेलने बैठ जायंगे और बाद में मुझे राखदानी में से लिपस्टिक से रंगे हुए सिगरेट के टोंटे और चाकलेट के टुकड़े साफ करने पड़ेंगे।

एक ठंडी सांस लेकर मैं खिड़की से उठ आई। सूरज चमक रहा था और तेज़ हवा के थपेड़ों से समुद्र में सफेद झाग उठ रहे थे। मैं मेज़ के पास जाकर पेन्सिल और कागज़ ले आई और योंही कल्पना के आधार पर एक चेहरा बनाने लगी—धुंधली आंखें; ऊंची नाक, घृणायुक्त ऊपरी होंठ। इसमें एक नुकीली डाढ़ी और गले के पास एक फीता मैंने और जोड़ दिया।

तभी किसीने दरवाज़े पर धक्का दिया। मैंने देखा कि लिफ्टवाला छोकरा एक लिफाफ़ा लेकर आया है। मैंने उसे बता दिया कि मैडम सोने के कमरे में हैं।

"लेकिन यह तो आपके लिए है," उसने सिर हिलाकर कहा।

मैंने लिफाफा ले लिया और खोला। उसमें एक छोटा-सा परचा था, जिस-पर किसीकी अपरिचित लिपि में ये शब्द लिखे हुए थे—

"माफ़ करना, आज तीसरे पहर मैंने तुम्हारे साथ बड़े रूखेपन का व्यवहार किया।" न कोई सम्बोधन था और न हस्ताक्षर; लेकिन लिफ़ाफे पर मेरा नाम लिखा हुआ था और उसकेहिज्जे भी बिल्कुल ठीक थे, जो एक असाधारण-सी बात थी।

"कोई जवाब तो नहीं है?"

मैंने उन घसीटे हुए शब्दों पर से दृष्टि उठाकर कहा, "नहीं, कोई जवाब नहीं है।"

उसके चले जाने के बाद परचा मैंने अपनी जेब में रख लिया और एक बार फिर चित्र बनाने की चेष्टा की। लेकिन न जाने क्यों उसे देखकर अब मुझे खुशी नहीं हुई। आकृति एकदम निर्जीव और कठोर लग रही थी और गले का फ़ीता तथा दाढ़ी, झाड़ी में थूनी-जैसे दिखाई दे रहे थे।

: ३ :

अगले दिन सुबह जब श्रीमती हॉपर जागीं तब उनके हलक़ में दर्द था और उन्हें १०२ डिग्री बुख़ार चढ़ा हुआ था। मैंने उनके डाक्टर को फ़ोन किया। उसने फ़ौरन आकर उनकी परीक्षा की और बताया कि सदा की भांति उन्हें इन्फ़्लुएन्ज़ा हो गया है। उसने श्रीमती हॉपर से कहा, "जबतक मैं आपको इजाज़त न दूं तबतक आपको बिस्तर पर ही पड़े रहना होगा। मुझे आपके हृदय की धड़कन ठीक नहीं मालूम दे रही है और यह तबतक नहीं ठीक होगी जबतक आप बिल्कुल चुपचाप नहीं पड़ी रहेंगी।" फिर मेरी ओर देखते हुए वह कहने लगी, "श्रीमती हॉपर को एक होशियार नर्स की ज़रूरत है, इनको उठाना-बैठाना तुम्हारे लिए मुश्किल होगा। ज्यादा नहीं, सिर्फ़ १५ दिन की बात है।"

डाक्टर की ये हिदायतें मुझे बेतुकी-सी लगीं और मैंने उनका विरोध भी किया; किन्तु मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि श्रीमती हॉपर डाक्टर का कहना मान गईं। मैं समझती हूं कि उन्हें यह सोचकर ही आनन्द आने लगा कि किस तरह उनकी बीमारी की चर्चा फैलेगी, किस तरह लोग-बाग उनसे हम-दर्दी ज़ाहिर करेंगे, किस तरह मित्र मिलने आयंगे और फूल तथा संदेशे भेजेंगे। मॉन्टी कार्लो से श्रीमती हॉपर का मन उकताने लगा था, इस थोड़ी-सी बीमारी से उनका ध्यान निश्चय ही कुछ और बातों की ओर जाने की सम्भावना थी।

डाक्टर कह गई थी कि नर्स श्रीमती हॉपर के इंजेक्शन लगायेगी और हल्के-हल्के मालिश करेगी। वह उन्हें पथ्य देने को भी कह गई थी। नर्स आ गई और जब मैं श्रीमती हॉपर के पास से आई तब उनका बुख़ार उतर रहा था और वह तकिए के सहारे बैठी हुई बड़ी प्रसन्न दीख रही थीं। उन्होंने सोते समय पहननेवाली अपनी सबसे बढ़िया जाकट कंधों पर डाल रखी थी और वह रिबन लगा कनटोप ओढ़े हुए थीं। मैंने टेलीफ़ोन करके उनके मित्रों को सूचना दे दी कि संध्या समय जो छोटी-सी पार्टी दी जानेवाली थी वह स्थगित कर दी गई है। उसके बाद निश्चित समय से आध घंटा पहले ही मैं नीचे रेस्टोरां में खाना

खाने चली गई। मुझे पूरी उम्मीद थी कि खाने का कमरा बिल्कुल खाली मिलेगा, क्योंकि एक बजे से पहले साधारणत: कोई भी खाना खाना पसंद नहीं करता। सच पूछिये तो कमरा ख़ाली था भी, सिर्फ़ हमारी मेज़ के पासवाली मेज़ भरी हुई थी। यह एक आकस्मिक संयोग था, जिसके लिए मैं बिल्कुल तैयार नहीं थी। मुझे खयाल था कि श्री द विन्तर सौस्पल चले गये होंगे। उन्हें देखकर मैं फ़ौरन समझ गई कि हमसे बचने के लिए ही वह समय से पहले भोजन करने आ गये थे। मैं कमरे में आधी दूर तक पहुंच चुकी थी, इसलिए अब लौटना नामुमकिन था। कल सवेरे के बाद से उनसे मुलाकात भी नहीं हुई थी, क्योंकि जिस कारण से वह दोपहर का खाना जल्दी खा रहे थे शायद उसी कारण से उन्होंने रात का खाना रेस्टोरां से बाहर खाया था।

ऐसी स्थिति का सामना करना मैंने बिल्कुल नहीं सीखा था। बिना इधर-उधर देखे मैं अपनी मेज़ की ओर सीधी चलती गई और फ़ौरन ही मुझे अपनी इस बेवकूफ़ी की सजा मिल गई, क्योंकि जैसे ही मैंने मेज़ पर रखे नैपकिन की तह खोली, फूलदान को धक्का लगा और वह गिर गया। मेज़पोश को भिगोता हुआ पानी मेरी गोद में गिरने लगा। बैरा कमरे के दूसरे कोने पर था, इसलिए उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। लेकिन क्षणभर में ही श्री द विन्तर हाथ में सूखा तौलिया लिये मेरे पास आ खड़े हुए और कहने लगे, "भीगी हुई मेज़ पर खाना कैसे खाओगी? इसमें तुम्हें खाने में मजा नहीं आयेगा। तुम इधर निकल आओ।"

वह मेजपोश को सिकोड़ने लगे। इस बीच गोलमाल देखकर बैरा भागा हुआ आया और बिखरे हुए फूलों को समेटने लगा।

तभी श्री द विन्तर ने उससे कहा, "उसे छोड़ दो और मेरी ही मेज़ पर दूसरा खाना भी लगा दो। मैडम आज मेरे ही साथ भोजन करेंगी।"

मैंने परेशान होकर ऊपर देखते हुए कहा, "नहीं, नहीं, मैं नहीं खा सकूंगी।"

"क्यों नहीं खा सकोगी?" उन्होंने पूछा।

मैंने बहाना बनाने की कोशिश की; क्योंकि मैं जानती थी कि श्री द विन्तर

ने केवल शिष्टतावश मुझे निमंत्रित कर लिया है, वास्तव में वह मेरे साथ खाना नहीं चाहते। मैंने साहस बटोरकर सत्य बात कह डालने का निश्चय किया। मैं बोली, "धन्यवाद, बड़ी कृपा है, आपकी। इतना शिष्टाचार न दिखाइये, बैरा मेज़ साफ़ कर देगा और मुझे कोई परेशानी नहीं होगी," मैंने विनयपूर्वक कहा।

"लेकिन मैं शिष्टाचार बिल्कुल नहीं दिखा रहा हूं," श्री द विन्तर ने कहा, "मैं चाहता हूं कि तुम मेरे साथ भोजन करो। अगर तुमने इतने फूहड़पन से वह फूलदान न भी गिराया होता, तब भी मैं तुम्हें अपने साथ खाने के लिए कहता।"

मेरे मुंह के भाव से शायद वह मेरी शंका को भांप गये और मुस्कराते हुए बोले, "ऐसा लगता है कि तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं आ रहा है; खैर कोई बात नहीं, आओ बैठो। हम एक-दूसरे से तबतक बातचीत नहीं करेंगे जब-तक हमें इसकी आवश्यकता ही न अनुभव हो।"

हम बैठ गये। श्री द विन्तर ने भोजन की सूची मेरे हाथ में पकड़ा दी कि मैं अपनी पसंद की चीजें चुन लूं। इसके बाद वह अखबार लेकर बैठ गये, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

"तुम्हारी सहेली का क्या हुआ?" कुछ ठहरकर उन्होंने पूछा।

मैंने बता दिया कि उन्हें इन्फ्लुएन्ज़ा हो गया है।

'बड़ा अफ़सोस है।...उम्मीद है, तुम्हें मेरा परचा मिल गया होगा। मैं कल की अपनी अशिष्टता के लिए बहुत लज्जित हूं। बस, इतनी ही सफ़ाई दे सकता हूं कि अकेले रहने के कारण मैं कुछ असभ्य हो गया हूं। आज मेरे साथ खाना खाना स्वीकार करके तुमने मेरे ऊपर बड़ी कृपा की है।"

"आपने तो कोई असभ्यता नहीं दिखाई, कम-से-कम ऐसी तो बिल्कुल नहीं जो श्रीमती हॉपर की समझ में आ सके। उनकी यह उत्सुकता की आदत... लेकिन वह किसीको तंग करना नहीं चाहतीं। ऐसा वह सबके साथ करती हैं, यानी उन लोगों के साथ जो महत्वपूर्ण व्यक्ति होते हैं।"

"तब तो मुझे फूलकर कुप्पा हो जाना चाहिए। लेकिन वह मुझे महत्व-

पूर्ण व्यक्ति क्यों समझती हैं ?"

उत्तर देने से पहले मैं ज़रा झिझकी, फिर बोली—

"मेरी समझ में शायद मैन्दरले के कारण।"

उन्होंने उत्तर नहीं दिया और मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने फिर किसी वर्जित स्थान पर पांव रख दिया है। मेरी समझ में नहीं आया कि जिस मैन्दरले को लोग-बाग दूसरों से सुन-सुनाकर ही इतनी अच्छी तरह जान गये हैं, उसकी चर्चा आते ही वह इस तरह क्यों चुप हो जाते हैं, मानो वह उनके और दूसरों के बीच कोई दीवार हो।

कुछ देर तक हम चुपचाप खाना खाते रहे। अचानक मुझे उस पोस्टकार्ड का ध्यान आया, जो मैंने अपने बचपन में किसी छुट्टी के दिन एक गांव की दूकान से खरीदा था। उस पोस्टकार्ड पर एक भवन बना हुआ था। उसकी चित्रकारी थी तो बड़े मोटे ढंग की और रंग भी बहुत तेज़ थे, किन्तु इससे भवन का प्राकृतिक सौन्दर्य नष्ट नहीं हुआ था। मुझे वह अच्छा लगा था और मैंने उसके लिए बूढ़ी दूकानदारिन को दो पैंस (लगभग दो आने) देते हुए पूछा था, "यह क्या है ?" उसे मेरे अज्ञान पर बड़ा आश्चर्य हुआ था और उसने कहा था—"अरे इतना भी नहीं जानती! यह मैन्दरले है।" मुझे याद है कि इस तरह मुंह की खाकर मैं दूकान से बाहर चली आई थी। वह पोस्ट-कार्ड कभी का किसी पुस्तक में गुम हो चुका था, लेकिन शायद यह उसीकी याद थी जिसने मेरे हृदय में श्री द विन्तर के लिए सहानुभूति उत्पन्न कर दी थी।

स्पष्ट है कि श्री द विन्तर को श्रीमती हॉपर की बातें अच्छी नहीं लगी थीं। उन्होंने कहा—"तुम्हारी सहेली तुमसे उम्र में बहुत बड़ी हैं। क्या वह तुम्हारी कोई रिश्तेदार हैं? तुम उन्हें बहुत समय से जानती हो क्या ?"

"नहीं, वह मेरी सहेली नहीं, बल्कि मेरी मालकिन हैं। वह मुझे अपना साथी बनाने के लिए काम सिखा रही हैं और ९० पौंड प्रति वर्ष देती हैं।"

"ओ! मुझे पता नहीं था कि किसीका साथ भी खरीदा जा सकता है। यह तो बहुत ही पुराने जमाने की बात है, जैसे दास-प्रथा।"

"मैंने एक बार डिक्शनरी देखी थी। उसमें साथी का अर्थ लिखा था—'दिली दोस्त'।"

"लेकिन तुममें और उनमें कोई बात ख़ास मिलती-जुलती तो नहीं दिखाई देती।"

यह कहकर वह हँसे और उस समय मुझे ऐसा लगा जैसे वह कम अवस्था के हैं और अब उतने विरक्त भी नहीं रह गये हैं।

"लेकिन यह सब तुम किसलिए करती हो?" उन्होंने फिर पूछा।

"नव्वे पौंड मेरे लिए एक बड़ी रक़म है," मैं बोली।

"क्या तुम्हारे मां-बाप नहीं हैं?"

"नहीं, उनकी मृत्यु हो चुकी है।"

"तुम्हारा नाम बहुत ही सुन्दर और असाधारण है।"

"मेरे पिताजी बहुत ही सुन्दर और असाधारण थे।"

"उनके बारे में मुझे भी तो कुछ बताओ।"

शर्बत पीते-पीते मैंने अपने गिलास के ऊपर से उनकी ओर देखा। पिताजी के बारे में कुछ बताना मेरे लिए सरल नहीं था। साधारणतः मैं उनके विषय में कभी कोई बात नहीं करती थी। एक होटल की मेज़ पर बैठकर उनके बारे में इस तरह अललटप बातचीत करना मुझे उचित भी नहीं लग रहा था। लेकिन श्री द विन्तर की आंखों में अपने लिए सहानुभूति की झलक देखकर मैं अपने को न रोक सकी। मेरी झिझक दूर हो गई और मुंह से बचपन के दुःख-सुख की वे सभी बातें, जो अबतक मेरे अन्तर में छिपी हुई थीं, अनायास ही एक धारा की नाईं बह निकलीं और मैंने देखा कि श्री द विन्तर से जान-पहचान होने के चौबीस घंटे के भीतर-ही-भीतर मैं अपने परिवार का सारा रहस्य उस अज्ञात व्यक्ति को बता चुकी थी। मैंने यह भी अनुभव किया कि मेरे साधारण-से विवरण से ही उन्हें मेरे पिता के तेजस्वी व्यक्तित्व का कुछ-कुछ आभास होगया है और वह यह भी जान गये हैं कि मेरी मां को मेरे पिता से इतना प्रेम था कि उनकी निमोनिए से मृत्यु हो जाने के पांच सप्ताह बाद ही वह भी उनके पथ की अनुगामिनी बन गई थीं।

इस बीच रेस्टोरां में आदमियों की चहल-पहल बढ़ गई थी और जब मेरी दृष्टि घड़ी पर पड़ी तब मैंने देखा कि दो बज चुके हैं। हम लोगों को वहां बैठे-बैठे डेढ़ घंटा बीत गया था और इस बीच मैं-ही-मैं बोलती रही थी। स्थिति का भान होते ही मुझे बड़ी लज्जा आई और टूटे-फूटे शब्दों में मैं उनसे क्षमा मांगने लगी, किन्तु उन्होंने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया और कहा, "तुम-से एक घंटे बातचीत करके आज मुझे जितना आनन्द मिला है, उतना बहुत दिनों से नहीं मिला था। तुमने मुझे निराशा और अंतर की घुटन से कुछ समय के लिए निकाल लिया है, जिनका मैं लगभग एक साल से शिकार हूं।"

मैंने उनकी ओर देखा और मुझे विश्वास हो गया कि वह जो कुछ कह रहे हैं, उसमें कपट अथवा झूठ नहीं है। उस समय वह पहले से भी अधिक उन्मुक्त, अधिक आधुनिक और अधिक मानवीय प्रतीत हो रहे थे। उनके मुख पर चिन्ता की कोई छाया नहीं थी।

वह फिर बोले, "तुम जानती हो कि एक बात में हम और तुम एक जैसे हैं। हम दोनों ही इस दुनिया में अकेले हैं। कहने को तो मेरे एक बहन है, लेकिन मुझे उससे मिले महीनों हो जाते हैं। एक बूढ़ी दादी भी है, जिसके पास साल में तीन बार मैं केवल अपना कर्त्तव्य समझकर जाता हूं। लेकिन दोनों में से एक भी मेरे साथी का स्थान नहीं ले सकती। मैं श्रीमती हॉपर को बधाई देता हूं कि ९० पौंड प्रतिवर्ष खर्च करके उन्हें तुम जैसा साथी मिल गया है।"

"लेकिन एक बात आप भूल रहे हैं", मैंने कहा, "आपका एक घर है, मेरा तो वह भी नहीं है।" कहने को मैं कह तो गई, लेकिन फौरन ही मैंने अनुभव किया कि मैंने ठीक नहीं किया। मैंने देखा कि श्री द विन्तर के मुख पर एक बार फिर वही रहस्यमय गम्भीरता छा गई है। मुझे अपनी इस नासमझी पर बड़ी ग्लानि हुई। उन्होंने सिगरेट जलाने के लिए अपना सिर झुका लिया और कुछ क्षणों तक वह चुप रहे। फिर बोले, "खाली घर एक भरे हुए होटल-जैसा ही निर्जन हो सकता है, जबतक कि वहां अपना कोई आत्मीय न हो।" यह कहकर वह फिर रुके और क्षणभर के लिए मुझे ऐसा

लगा जैसे वह अब मैन्दरले के बारे में कुछ कहने जा रहे हैं, लेकिन कोई बात थी जिसने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया, कोई धुंध था जो उभरकर उनके मस्तिष्क पर छा गया और उन्हें दबोच बैठा। उन्होंने अपनी दियासलाई बुझा दी और उसके साथ-ही-साथ उनके मुख पर विश्वास की जो क्षणिक भावना आई थी वह भी लुप्त हो गई।

कुछ क्षणों के बाद वह सहज आत्मीयता से बोले, "हां, तो आज 'दिली दोस्त' की छुट्टी है। क्या मैं जान सकता हूं कि वह इस छुट्टी को कैसे मनाना चाहती हैं?"

सहसा मुझे एक प्राकृतिक स्थल का ध्यान हो आया और मैंने कुछ झिझकते हुए कह दिया कि वहां मैं अपनी पेंसिल और ड्राइंग की कापी लेकर तीन बजे तक रह सकती हूं।

"तो मैं तुम्हें वहां अपनी कार में पहुंचाये देता हूं," उन्होंने कहा और मेरे आनाकानी करने पर कुछ ध्यान नहीं दिया।

श्री द विन्तर के साथ भोजन करने से मेरी प्रतिष्ठा बढ़ चुकी थी। जैसे ही हम खाना खाकर उठे, होटल का छोटा मैनेजर झट मेरी कुर्सी हटाने के लिए झपटा। उसने मुस्कराकर मुझे सलाम झुकाया। सदा की तरह उसके मुख पर उपेक्षा का भाव नहीं था। फर्श पर गिरे हुए मेरे रूमाल को उठाकर मुझे देते हुए उसने बड़े तपाक से कहा, "उम्मीद है, मैडम को भोजन पसंद आया होगा।" दरवाजे के पीछे से छोकरे तक ने मुझे इज्जत की नजर से देखा। श्री द विन्तर को यह परिवर्तन बिल्कुल स्वाभाविक लगा, किन्तु मेरे मन में उसने ग्लानि उत्पन्न कर दी और मुझे अपने-आपसे कुछ घृणा-सी होने लगी।

"तुम क्या सोच रही हो?" गैलरी में से होकर आराम करने के कमरे में जाते हुए वह अचानक पूछ बैठे और जब मैंने दृष्टि उठाई तो देखा कि उनकी आंखें मुझपर बड़ी उत्सुकता के साथ गड़ी हुई हैं।

"क्या तुम किसी बात से नाराज हो?" उन्होंने फिर पूछा।

होटल के मैनेजर ने आज मेरी ओर जो ध्यान दिया था उससे मेरे सामने

विचारों की एक शृंखला खुल पड़ी थी। कॉफ़ी पीते-पीते मैंने श्री दि विन्तर को बताया कि एक बार श्रीमती हॉपर ने मुसीबत में फंसी हुई एक दरजिन से तीन फ्रॉक ख़रीदे थे और वह इस बात से इतनी प्रसन्न हुई कि उसने चुपके-से मेरी ओर सौ फ्रैंक का एक नोट बढ़ाते हुए कहा था, "धन्यवाद है तुम्हें, जो अपनी मालकिन को मेरी दूकान पर लाईं।" और जब अपमान और लज्जा से पानी-पानी होते हुए मैंने वह नोट उसे वापस किया, तो वह बोली, "यह तो दस्तूर होता है! तुम शायद रुपये नहीं, फ्रॉक लेना चाहती हो। तो कभी अकेले में आना, मैं तुम्हें फ्रॉक ही दे दूंगी।" उस समय मुझमें ठीक वैसी ही भावना उत्पन्न हुई जैसी एक बार बचपन में एक वर्जित पुस्तक के पन्ने उलटते समय हुई थी।

मैंने सोचा था कि इस मूर्खतापूर्ण घटना को सुनकर वह ठठाकर हँसेंगे, लेकिन अपनी कॉफ़ी चलाते हुए उन्होंने मुझे बड़े गौर से देखा और एक मिनट रुककर कहा, "मैं समझता हूं, तुमने बहुत बड़ी ग़लती की।"

"सौ फ्रैंक का नोट वापस करके?"

"नहीं, नहीं। आख़िर तुम मुझे क्या समझती हो! मेरे कहने का मतलब यह है कि श्रीमती हॉपर के साथ रहना मंजूर करके तुमने बड़ी भारी भूल की है। तुम अभी बिल्कुल बच्ची हो, भोली हो। दरजिन का दस्तूरी देना तो मामूली-सी बात है, तुम्हें इस तरह के न मालूम कितने प्रलोभनों का सामना करना पड़ेगा और फिर या तो तुम यह सब मंजूर करने लगोगी या अपना जीवन इसी तरह नष्ट कर डालोगी। तुम्हें यह नौकरी करने की सलाह आख़िर दी किसने?"

उनका प्रश्न स्वाभाविक था और मुझे भी उसमें कोई आपत्ति की बात नहीं दिखाई दी; क्योंकि मुझे ऐसा लगने लगा था मानों हम एक-दूसरे को बहुत पहले से जानते हैं और वर्षों तक अलग रहने के बाद एक बार फिर मिले हैं।

"क्या तुमने कभी अपने भविष्य के बारे में भी सोचा है? क्या कभी तुमने यह भी समझने की चेष्टा की है कि इस तरह रहने से तुम्हारा जीवन कैसा बन जायगा? अगर कभी श्रीमती हॉपर का अपने 'दिली दोस्त' से जी ऊब गया

तब क्या होगा ?"

मैंने मुस्कराते हुए जवाब दिया कि इसकी मुझे अधिक चिन्ता नहीं, क्योंकि श्रीमती हॉपर-जैसी कितनी ही और मिल जायंगी और मुझे अपने ऊपर पूरा विश्वास है।

इसपर उन्होंने पूछा, "तुम्हारी उम्र क्या है ?" और जब मैंने उन्हें अपनी आयु बताई तब वह हँसे और कुर्सी पर से उठते हुए बोले, "मैं जानता हूं, यह उम्र बड़ी हठीली होती है और हजारों हौए भी उसे नहीं डरा सकते। अच्छा, अब कपड़े बदलने का समय तो रह नहीं गया है, तुम जल्दी-से ऊपर जाकर अपना टोप ओढ़ आओ, इतने मैं कार लाता हूं।"

: ४ :

हवा इतनी तेज चल रही थी कि मैं रेखाचित्र न बना सकी। मस्त पवन ने कागज़ के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। इसलिए हम फिर कार में लौट गये और पता नहीं वह उसे किस ओर ले चले। लम्बी सड़क को पार कर हम पहाड़ी की ओर बढ़े और उस ऊंचाई पर कार इस तरह चक्कर काटकर चढ़ने लगी, जैसे हवा में चिड़िया चक्कर काटती हुई ऊपर को उड़ती है। यह कार श्रीमती हॉपर की उस पुराने ढंग की किराए की कार से कितनी भिन्न थी, जिसमें एक बार हम गांव गये थे और जिसमें ड्राइवर की पीठ के पीछे बैठकर बाहर की तरफ़ देखने के लिए मुझे अपनी गर्दन बिल्कुल मोड़ लेनी पड़ती थी। उसकी तुलना में यह कार परी की तरह उड़ती हुई लग रही थी। हम ऊंचाई पर बहुत तेज़ी से चढ़ रहे थे, जिसमें खतरा था, लेकिन उस समय वह खतरा भी मुझे बड़ा आनन्दमय लग रहा था; क्योंकि मैं छोटी थी और वह मेरे लिए एक बिल्कुल नया अनुभव था।

मैंने देखा कि अब और ऊंचे चढ़ने की गुंजाइश नहीं रह गई थी, क्योंकि हम चोटी पर पहुंच चुके थे। जिस सड़क से होकर हम आये थे वह हमारे नीचे सांप-जैसी फैली हुई थी और उसके इधर-उधर भयानक ढलाव तथा खड्ड थे। श्री द विन्तर ने कार रोक ली और मैंने देखा कि सड़क के किनारे-किनारे

क़रीब-क़रीब दो हज़ार फ़ुट की नीचाई तक एक सीधी ढलान चली गई थी। कार से बाहर निकलकर हमने नीचे की ओर देखा और मैंने संतोष की सांस ली, क्योंकि हमारे और ढलान के बीच की दूरी केवल कार की आधी लम्बाई के बराबर रह गई थी। वहां से समुद्र एक बल खाये हुए मानचित्र-सा दिखाई देता था, जो क्षितिज तक फैला चला गया था। मकान सफ़ेद घोंघे-से लग रहे थे और उनके बीच कहीं-कहीं नारंगी धूप झलक रही थी। हवा रुक गई थी और एकाएक ठंड बढ़ गई थी।

जब मैं बोली तब मेरी आवाज़ में कुछ घबराहट और बेचैनी-सी थी। मैंने पूछा, "क्या आप इस स्थान को जानते हैं? क्या आप यहां पहले भी आ चुके हैं?" वह कुछ बोले नहीं और मेरी ओर ऐसी शून्य दृष्टि से देखते रहे मानो काफी देर से मुझको बिल्कुल भूले हुए हों। वह अपने विचारों में कुछ इस तरह खोये हुए थे कि उन्हें मेरे अस्तित्व का ध्यान ही नहीं रह गया था। उस समय उनका चेहरा उस आदमी जैसा लग रहा था, जो सोते-सोते चलता रहता है। क्षण-भर को मुझे ऐसा लगा जैसे उनकी हालत अच्छी नहीं है और शायद वह अपने होशोहवास में नहीं हैं। मैंने सुन रखा था कि कुछ आदमियों को कभी-कभी इस तरह के दौरे पड़ते हैं और वे अजीब-अजीब-सी बातें कर बैठते हैं, जिनका कोई कारण बताना असम्भव होता है और जो मस्तिष्क के किसी कोने में छिपी हुई प्रेरणा से संचालित होते हैं। वह भी शायद एक ऐसे ही आदमी थे और हमारे और मौत के बीच में केवल छः फ़ुट का अन्तर था।

"देर हो रही है, अब घर चलेंगे न?" मैंने कहा। मेरी घबराई आवाज़ और निष्फल मुस्कराहट से कोई भी मेरी उस समय की मनोदशा को ताड़ सकता था।

मेरा ख़याल ग़लत निकला, क्योंकि जैसे ही मैंने यह बात दूसरी बार कही वैसे ही उनका सपना टूट गया और वह मुझसे क्षमा-याचना करने लगे। डर के मारे मेरा रंग सफ़ेद पड़ गया था और उन्होंने यह देख लिया था।

"ओह, मेरा यह व्यवहार बिल्कुल अक्षम्य है," उन्होंने कहा और मेरा हाथ पकड़कर मुझे कार की तरफ़ खींच लिया। हम कार में बैठ गये और उन्होंने

दरवाज़ा बन्द कर लिया।

"डरो मत, उतरना इतना खतरनाक नहीं है जितना दिखाई देता है," वह बोले और कार को बहुत धीरे-धीरे उतारकर नीचे ले आये। मेरी दशा यह थी कि मैं दोनों हाथों से गद्दी पकड़े बैठी थी और मुझे चक्कर आ रहे थे।

जब कार रेंगती हुई तंग सड़क पर चलने लगी तब मैंने कुछ हलकापन अनुभव किया और पूछा, "तो आप यहां पहले भी आ चुके हैं ?"

"हां," उन्होंने उत्तर दिया और फिर कुछ देर रुककर कहा—"लेकिन कितने ही बरस पहले। मैं देखना चाहता था कि यहां कुछ परिवर्तन हुआ है क्या ?"

"हुआ है ?"

"नहीं, कुछ भी नहीं।"

और इसके बाद कुछ क्षणों तक हम बिल्कुल मौन रहे और कार बल खाती हुई सड़क पर बिना किसी रोक-टोक के आगे बढ़ती रही। एकाएक वह मैन्दरले के बारे में बातें करने लगे। अपने विषय में या वहां के अपने जीवन के सम्बन्ध में उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। उन्होंने बताया कि शरद ऋतु में सूर्यास्त का दृश्य वहां बड़ा सुहावना लगता है और बरामदे में से समुद्र की लहरों का शब्द साफ सुनाई पड़ता है। उन्होंने उन भांति-भांति के फूलों के बारे में भी बताया, जो दूर-दूर से लाकर वहां लगाये गए थे और जिनमें से कुछ तो इतनी अधिक संख्या में थे कि कितने भी तोड़ें कम ही नहीं होते थे। गुलाब तो मैन्दरले में साल में आठ महीने खिले रहते थे। लॉन के किनारे पर रात की रानी का एक वृक्ष था, जिसकी सुगंध सोने के कमरे की खिड़की में से आती रहती थी। उनकी बहन को तो, जो कुछ कठोर और व्यावहारिक प्रकृति की थीं, सदा यही शिकायत रहती थी कि मैन्दरले में बहुत तरह की खुशबुएं मिली रहती हैं। श्री द विन्तर को सबसे पुरानी याद नरगिस की उन लम्बी टहनियों की थी, जो सफ़ेद गुलदस्तों में लगी रहती थीं और मकान को तेज़ खुशबू से भरे रखती थीं।

बातें करते-करते हमारी कार दूसरी बहुत-सी कारों में मिल गई और हमें पता नहीं चला कि कब सन्ध्या हो गई। हम मॉन्टी कार्लो की सड़कों पर शोर-

गुल और रोशनी के बीच चल रहे थे। उस चीख-पुकार का मेरे स्नायुओं पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा था और रोशनी बहुत तेज़ तथा पीली दिखाई दे रही थी। उस शान्त निःस्तब्ध वातावरण के बाद इस आकस्मिक परिवर्तन का अप्रिय प्रतीत होना स्वाभाविक था।

हम जल्दी ही होटल पहुंचनेवाले थे, इसीलिए मैंने कार की जेब में अपने दस्ताने टटोले। वे मिल तो गये, लेकिन उनके साथ-ही-साथ मेरी अंगुलियों का स्पर्श एक पुस्तक से हुआ, जिसकी पतली जिल्द से मैं अनुमान लगा सकती थी कि वह निश्चय ही कविता की कोई पुस्तक है। होटल के दरवाज़े के पास जब कार धीमी हुई तब मैंने झांककर उस किताब का नाम पढ़ना चाहा।

"तुम इसे पढ़ना चाहो तो ले जाओ।" श्री द विन्तर ने कहा। उनकी आवाज़ एक बार फिर पहली ही जैसी उपेक्षापूर्ण हो गई थी। हम वापस आ गये थे और मैन्दरले हमसे सैकड़ों मीलों की दूरी पर था।

मुझे बड़ी खुशी हुई और मैंने उस पुस्तक को अपने दस्तानों के साथ कसकर पकड़ लिया। मुझे ऐसा लगा जैसे इतनी देर उनके साथ रहने के बाद मुझे उनकी कोई वस्तु अपने पास रखने की आवश्यकता है।

"अच्छा, अब कूदकर बाहर चली जाओ।" उन्होंने कहा, "मैं कार को गैराज में रख आऊं। और हां, शाम को खाने के समय मैं तुमसे रेस्टोरां में नहीं मिल सकूंगा, क्योंकि मुझे दूसरी जगह भोजन करने जाना है। आज के लिए तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद!"

मैं होटल की सीढ़ियों पर अकेली उस निराश बच्चे की तरह चढ़ने लगी, जिसका खेल खतम हो चुका हो। आज की मेरी संध्या ने मेरे आनेवाले घंटों को नीरस बना दिया था और मुझे लगा कि मेरा सोने तक का समय पहाड़-जैसा कटेगा और रात का खाना भी अकेले-अकेले अच्छा नहीं लगेगा। ऊपर जाकर नर्स और श्रीमती हॉपर के सवालों का सामना करने का साहस भी मुझमें नहीं था। इसलिए मैं आराम करनेवाले कमरे में कोने के एक सोफ़े पर बैठ गई और मैंने बैरे से चाय लाने को कहा।

कुछ अकेलापन और असन्तोष का अनुभव करती हुई मैं अपनी कुरसी पर

पीछे की ओर झुक गई और कविता की किताब उठाकर पढ़ने लगी।

तभी मुझे ऐसा लगा जैसे कोई बन्द दरवाज़े के ताले के सूराख से अन्दर की तरफ़ झांक रहा है। खीझकर मैंने पुस्तक एक तरफ़ रखदी और एक बार फिर वह पहाड़ी, वह कार, वह बातचीत—ये सब चीजें मेरी आखों के सामने घूमने लगीं।

बैरा चाय ले आया। मैंने पुस्तक फिर से उठा ली। इस बार उसका पहला पृष्ठ खुल गया, जिसपर ये शब्द एक विचित्र तिरछी लिपि में लिखे हुए थे—

"मैक्स को रेबेका की भेंट—१७ मई।" स्याही के धब्बे से साथवाला पन्ना कुछ ख़राब हो गया था। ऐसा लगता था कि लिखनेवाली ने जल्दी-से स्याही बाहर निकालने के लिए क़लम को झटक दिया था और निब पर ज्यादा स्याही आ जाने के कारण 'रेबेका' कुछ गहरा लिखा गया था। टेढ़े और लम्बे 'आर' के सामने दूसरे शब्द बौने से लग रहे थे।

मैंने झटके से पुस्तक बन्द करके एक ओर अपने दस्तानों के नीचे रख दी और मैं पास पड़ी एक सचित्र मासिक पत्रिका की पुरानी प्रति उठाकर पढ़ने लगी। उसमें एक बहुत ही सुन्दर सचित्र लेख था। उसे मैंने बड़ी सावधानी से पढ़ने की चेष्टा की, लेकिन मेरी समझ में एक शब्द भी नहीं आया। मेरी आंखों के सामने रेस्टोरां में बैठी हुई श्रीमती हॉपर का एक दिन पहले का चेहरा घूमता रहा था, जब वह अपनी तेज़ निगाह से पासवाली मेज़ को देख रही थीं और उन्होंने पुलाव से भरी हुई अपनी चम्मच को बीच में ही रोककर मुझसे कहा था—

"एक भयानक दुर्घटना थी वह। उसकी खबर से समाचार-पत्र भरे पड़े थे। कहते हैं कि वह कभी इस विषय में बातचीत नहीं करते, कभी उसका नाम नहीं लेते। वह मैन्दरले के पास की एक खाड़ी में डूब गई थी।"

: ५ :

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि प्रथम प्रेम का ज्वर एक बार ही चढ़ता है। कवि लोग चाहे कुछ भी कहें, प्रेम एक बीमारी है और साथ ही एक बोझ

भी। बीस-इक्कीस वर्ष की आयु बड़ी कायरता की आयु होती है। जरा-सी बात से ही हृदय को चोट लग जाती है।

मुझे ऐसा लग रहा है मानों तकिए के सहारे बैठी हुई श्रीमती हॉपर ने कुछ चिड़चिड़ाहट के साथ मुझसे पूछा—"आज सुबह से तुम क्या करती रही हो ?"

"मैं टेनिस सीखने गई थी।" मैंने जवाब दिया। यह झूठ मेरे मुख से निकला ही था कि मैं घबरा उठी और सोचने लगी कि अगर टेनिस सिखानेवाला आदमी अभी कहीं से आ गया और उसने श्रीमती हॉपर से यह शिकायत कर दी कि मैं कई दिनों से टेनिस सीखने नहीं गई हूं तो क्या होगा !

"मेरे बीमार पड़ जाने से तुम्हें कोई काम ही नहीं रह गया है," सिगरेट के टोंटे को क्रीम की शीशी में ठूंसते हुए उन्होंने कहा और मेरे हाथ से ताश लेकर वह उन्हें जोर-जोर-से फेंटने लगीं। "पता नहीं, तुम आजकल सारे दिन करती क्या रहती हो ?" वह बोलती रहीं, "इन दिनों तुमने कोई तस्वीर भी बनाकर मुझे नहीं दिखाई है और जब कभी मैं तुम्हें बाजार भेजती हूं तब तुम टैक्सोल लाना जरूर भूल जाती हो। बस, इतनी भर तसल्ली है कि चलो छुट्टी रहते से तुम्हारा टेनिस का अभ्यास बढ़ रहा होगा। आगे चलकर वह तुम्हारे लिए बहुत फ़ायदेमन्द साबित होगा।"

. मैं सोचती रही कि पन्द्रह दिन से यानी जबसे वह बीमार पड़ी हैं मैं एक बार भी टेनिस खेलने नहीं गई हूं; लेकिन मुझमें इतना साहस क्यों नहीं है कि मैं उन्हें बता दूं कि मैं रोज सुबह श्री द विन्तर के साथ उनकी कार में घूमने जाती हूं और रेस्टोरां में उनके साथ उन्हींकी मेज पर खाना खाती हूं।

मॉन्टी कार्लो की बहुत-सी बातें अब मैं भूल गई हूं। सवेरे-सवेरे हम सैर के लिए कहां जाते थे और क्या बातचीत करते थे, यह भी मुझे ठीक याद नहीं है। किन्तु मैं आज भी यह नहीं भूल पाती हूं कि किस तरह टोप पहनते वक्त मेरी अंगुलियां कांपती रहती थीं और किस तरह लिफ़्ट का इन्तजार किये बिना ही मैं तेज़ी के साथ सीढ़ियों से उतरकर नीचे गैलरी में पहुंच जाती थी और दरबान के दरवाज़ा खोलने से पहले ही किवाड़ों को ठेलती हुई बाहर निकल जाती थी।

वहां श्री द विन्तर ड्राइवर के स्थान पर बैठे अखबार पढ़ते हुए मेरा इन्त-ज़ार करते होते। मुझे देखकर वह मुस्करा देते और अख़बार को पिछली सीट पर डालकर मेरे लिए दरवाज़ा खोलते हुए कहते—

"कहिये, 'दिली दोस्त' के आज क्या हाल-चाल हैं ? वह कहां जाना चाहती हैं ? आज हवा ठंडी है, तुम मेरा कोट पहन लो।"

मैं इतनी बड़ी हो चुकी थी कि उनके कपड़े पहनने में सुख का अनुभव कर सकती थी। उनका कोट उधार लेकर कुछ मिनटों के लिए भी अपने कंधों पर डाल सकना मेरे लिए एक विजय की बात थी और उससे मेरी सुबह चमक उठती थी।

मैं गोद में नक़्शा लिये बैठी रहती थी और मेरे रूखे और सीधे बाल हवा से उड़ते रहते थे। यों तो उनकी खामोशी में भी मुझे सुख मिलता था, लेकिन उनसे बातें करने के लिए मैं सदा आतुर रहती थी। मेरी बैरन तो मोटर में लगी वह घड़ी थी, जो एक बजाकर हमें रेस्टोरां पहुंचने के लिए बाध्य कर देती थी। हम कभी पूरब की ओर जाते थे, कभी पश्चिम की ओर, कभी गांवों में जाते थे, कभी समुद्र-तट पर, लेकिन आज मुझे उनमें से किसीकी भी याद नहीं है।

मुझे याद है सिर्फ एक बात...एक दिन इसी प्रकार बैठे-बैठे मैंने घड़ी की तरफ़ देखकर सोचा—यह क्षण यानी ग्यारह बजकर बीस मिनट कभी समाप्त ही न हों ! इस आकांक्षा का पूरा-पूरा सुख उठाने के लिए मैंने अपनी आंखें बन्द कर लीं। फिर एकाएक मैं बोल उठी, "काश, ऐसा कोई आविष्कार हो सकता, जिससे स्मृतियां इत्र की तरह शीशी में बन्द की जा सकतीं और वे न कभी उड़तीं, न कभी पुरानी पड़तीं। इतना ही नहीं, बल्कि जब मन चाहता तब शीशी खोल ली जाती और स्मृतियां फिर साकार हो उठतीं।" इतना कहकर मैंने उनकी तरफ़ देखा, यह जानने के लिए कि वह क्या जवाब देते हैं। लेकिन उन्होंने मेरी तरफ़ देखा ही नहीं, वह बराबर अपने आगे की सड़क पर दृष्टि गड़ाये रहे।

"अपने इस जीवन के कौन-से क्षण को तुम फिर से जीवित करना चाहोगी ?"

उन्होंने अकस्मात् पूछा। उनकी आवाज़ से यह पता नहीं लग सका कि वह मुझे चिढ़ा रहे हैं या सचमुच गम्भीरतापूर्वक पूछ रहे हैं। मैंने कहा, "कह नहीं सकती," लेकिन फिर बिना कुछ सोचे-समझे मैं एकाएक मूर्ख की तरह कह उठी, "मैं इसी क्षण को सुरक्षित रखना चाहती हूं, इसे भूलना नहीं चाहती।"

"मैं समझ नहीं पाया कि तुम इस सुहावने दिन की प्रशंसा कर रही हो या मेरे कार चलाने की?" उन्होंने कहा और वह ऐसे हँस पड़े जैसे कोई भाई चिढ़ा रहा हो। तभी मुझे अपने और उनके बीच की उस बड़ी खाई का ध्यान आया, जिसे उनकी कृपा ने और भी चौड़ा कर दिया था। इस भावना से अभिभूत होकर मैं चुप बैठी रही।

मैं जानती थी कि इन घटनाओं के बारे में मैं श्रीमती हॉपर से कभी कुछ नहीं कहूंगी। इसलिए नहीं कि वह नाराज़ होंगी या उन्हें कोई आघात लगेगा, बल्कि इसलिए कि वह मेरे कथन पर अविश्वास-सा प्रकट करती हुई अपने कंधे हिलाकर कहेंगी, "यह उनकी उदारता है कि वह तुम्हें रोज़ घुमाने ले जाते हैं, लेकिन क्या तुम्हें विश्वास है कि वह उकता नहीं जाते?" और तब मेरे कंधे थपथपाते हुए वह मुझे टैक्सोल लेने भेज देंगी। ओह! छोटा होना भी कितनी हीनता की बात है! मेरे मन में यह ग्लानि उठी और मैं दांतों से अपने नाखून काटने लगी।

श्री द विन्तर की हँसी अभी मेरे कानों में गूंज रही थी, मैं बिना कुछ सोचे-समझे ही बोल उठी, "मैं चाहती हूं कि मैं लगभग छत्तीस वर्ष की एक समझदार नारी होती, मेरे कपड़े काले साटन के होते और मेरे गले में मोतियों की एक माला होती।"

"तब तुम इस समय कार में मेरे साथ न होतीं। और अपने ये नाखून काटना बन्द करो, ये वैसे ही काफी बदसूरत हैं।"

"आप मुझे गुस्ताख समझेंगे," मैं कहती गई, "लेकिन मैं जानना चाहती हूं कि आप रोज़ मुझे अपने साथ कार में क्यों लाते हैं। आप दयालु हैं, यह तो स्पष्ट है; लेकिन आपने अपनी दया के लिए मुझे ही क्यों छांटा?"

मैं अपनी जवानी की अकड़ में तनी हुई सीधी बैठी रही।

उन्होंने बड़ी गम्भीरता से जवाब दिया, "मैं तुम्हें इसलिए साथ लाता हूँ कि तुम काले साटन के कपड़े और मोतियों की माला पहने हुए नहीं हो और न छत्तीस साल की हो।" उनके मुख पर कोई भाव नहीं था। पता नहीं, वह मन-ही-मन में हँस तो नहीं रहे थे।

"यह सब तो ठीक है," मैंने कहा, "मेरे विषय में जो कुछ भी जानने लायक बात है वह सब आप जानते हैं। लेकिन आपके बारे में मैं जितना पहले दिन जानती थी उससे अधिक नहीं जान पाई हूं।"

"उस दिन तुम क्या जानती थीं ?"

"बस यही कि आप मैन्दरले में रहते हैं और आपकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी है।"

आखिरकार मैंने वे शब्द कह ही डाले जो मेरी जबान पर कई दिन से आ-आकर अटक जाते थे। 'आपकी पत्नी'—बहुत ही सरलता से, बिना किसी झिझक और हिचक के मैंने यह ऐसे कह दिया जैसे उसकी चर्चा भर कर देना संसार की सबसे दुर्लभ वस्तु हो। आपकी पत्नी ! एक बार मेरे मुख से निकलने के बाद ये शब्द हवा में छाये रहे और मेरी आंखों के सामने नाचते रहे; और चूंकि वह चुप रहे और उन्होंने इसपर कुछ कहा नहीं, इसलिए ये शब्द और भी भयंकर दिखाई देने लगे। और अब मैं इन शब्दों को वापस नहीं ले सकती थी, वे तो एक बार कहे जा चुके थे। एक बार फिर कविता की पुस्तक का वह प्रथम पृष्ठ मेरी आंखों के सामने नाच उठा, जिसपर अजीब तिरछी लिपि में 'आर' लिखा हुआ था। मैंने भीतर-ही-भीतर कुछ अस्वस्थता और कंपकंपी का अनुभव किया और मुझे ऐसा भय हुआ कि वह मुझे कभी क्षमा नहीं करेंगे और हमारी मित्रता यहीं समाप्त हो जायगी।

: ६ :

मुझे याद आ रहा है कि उस समय मैं सामने शीशे की ओर एकटक देख रही थी, भागती हुई सड़क मुझे बिल्कुल नहीं दिखाई दे रही थी और मेरे कानों में अपने कहे हुए शब्द गूंज रहे थे। मैं कई मिनट तक चुप बैठी रही,

उन मिनटों में कई मील निकल गये और मैंने सोचा कि अब सबकुछ समाप्त हो चुका है। अब मैं उनके साथ कभी घूमने नहीं आ पाऊंगी। वह कल चले जायंगे, कुली उनका सामान नीचे लायेगा और मैं उनके नई चिट लगे हुए सामान को ठेले में रखा देखूंगी। उनके जाने के समय कुछ सरगर्मी-सी होगी और फिर कोने पर मुड़ते समय गियर की आवाज़ सुनाई देगी, उसके बाद वह आवाज दूसरी आवाजों में मिल जायगी और सदा के लिए खो जायगी।

मैं कल्पना में इतनी डूबी हुई थी कि मुझे कार की गति के धीमी होने का पता ही नहीं लगा और मेरा ध्यान तब टूटा जब कार सड़क के किनारे आकर रुक गई। वह बिल्कुल निश्चल बैठे थे, न सिर पर टोप था, न गर्दन में सफ़ेद टाई।

उस समय न तो वह मित्र-जैसे दिखाई दे रहे थे, न भाई-जैसे, वह बिलकुल अजनबी जैसे लग रहे थे और मैं यह समझ नहीं पा रही थी कि मैं कार में उनके बराबर क्यों बैठी हूं।

तभी उन्होंने अचानक मेरी तरफ़ मुड़कर कहा, "ज़रा देर पहले तुमने एक आविष्कार की बात कही थी—एक ऐसी योजना की बात, जिससे स्मृतियों को बन्द करके रखा जा सके। तुमने यह भी कहा था कि तुम किसी समय फिर से अतीत में विचरण करना चाहोगी। किन्तु मेरे विचार बिल्कुल इसके विपरीत हैं। मेरे लिए तो सभी स्मृतियां कड़वी हैं और मैं उनकी उपेक्षा करना चाहता हूं। पिछले वर्ष एक ऐसी घटना घटी, जिसने मेरे सारे जीवन को बदल दिया है और मैं उस समय तक के अपने जीवन को एकदम भूल जाना चाहता हूं। वे दिन समाप्त हो गये हैं, उनका नामोनिशान तक मिट चुका है। मुझे फिर से नया जीवन आरम्भ करना होगा। जब हम पहली बार मिले थे तब तुम्हारी श्रीमती हॉपर ने मुझसे मॉन्टी कार्लो आने का कारण पूछा था। उनके इस पूछने से पहले वे सारी स्मृतियां, जिन्हें शायद तुम पुनर्जीवित करना चाहोगी, बोतल में बन्द-सी ही हो गई थीं। किन्तु बोतल सदा काम नहीं करती, कभी-कभी उसमें बन्द की हुई वस्तुओं की सुगन्ध इतनी तेज होती है कि उसमें समा नहीं पाती। कभी-कभी मन डाट को उखाड़ फेंकने के लिए विकल हो उठता है।

उस दिन जब मैं तुम्हें कार में लेकर पहली बार पहाड़ी पर गया था, तब ऐसा ही कुछ हुआ था। कुछ साल पहले मैं वहां अपनी पत्नी के साथ गया था। तुमने पूछा था न, क्या वह पहाड़ी अब भी पहले ही जैसी है ? हां, वह बिल्कुल पहले जैसी है। लेकिन मुझे ऐसा लगा जैसे उससे मेरा अब कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है। वहां अतीत का कोई भी संकेत नहीं था। शायद इसका कारण यह था कि तुम मेरे साथ थीं। तुमने मेरे अतीत को एकदम मिटा डाला है, तुम न होतीं तो मैं न मालूम कबका मॉन्टी कार्लो से चला गया होता—इटली, यूनान या शायद और भी दूर। तुमने मुझे जगह-जगह भटकते फिरने से बचा लिया है। कृपा और भिक्षा की बातें छोड़ो। मैं तुम्हें अपने साथ चलने को इसलिए कहता हूं कि मुझे तुम्हारी और तुम्हारे साथ की ज़रूरत है। अगर तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं है तो तुम अभी गाड़ी से बाहर निकलकर अपने घर का रास्ता आप नाप सकती हो। उठो, दरवाज़ा खोलो और बाहर चली जाओ।"

मैं गोद में अपने हाथ रखे चुप बैठी रही। मेरी समझ में नहीं आया कि उन्होंने जो बात कही है, वह सचमुच उनके मन की बात है या योंही कह दी गई है।

"हां, तो तुमने क्या तय किया ?" उन्होंने पूछा।

यदि मैं एक-दो बरस छोटी होती तो शायद रो पड़ती, क्योंकि मेरी आंखों में आंसू डबडबा रहे थे और मेरा चेहरा लाल हो रहा था।

"मैं घर जाना चाहती हूं," मैंने कांपती हुई आवाज़ में कहा और उन्होंने बिना एक शब्द भी कहे इंजिन चला दिया और जिस रास्ते से हम आये थे, उसी रास्ते पर कार मोड़ ली।

बहुत तेज़ी-से हमने मैदान पार कर लिया और हम सड़क के उस मोड़ पर पहुंच गये, जहां की स्मृति को मैं बोतल में बन्द करके रखना चाह रही थी। मेरी बदली हुई मनस्थिति के कारण उसका आकर्षण जा चुका था, उसमें और सड़क के उन दूसरे मोड़ों में, जिन्हें सैंकड़ों मोटरें पार करती रहती हैं, अब कोई अन्तर नहीं रह गया था। आंसू, जो अबतक मेरी आंखों में रुके हुए थे,

बह निकले थे। मैं अपनी जेब से रूमाल भी नहीं निकाल सकती थी, क्योंकि इससे उन्हें पता चल जाता कि मैं रो रही हूं। इसलिए आंसू टपटप गिरते रहे और उनका खारा स्वाद मेरे होठों पर लगता रहा। उन्होंने मुड़कर मुझे देखा या नहीं, इसकी भी मुझे खबर नहीं थी, क्योंकि मैं धुंधली दृष्टि से एकटक सामने देख रही थी। अचानक उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर चूम लिया। अब भी वह कुछ बोले नहीं और उन्होंने अपना रूमाल चुपचाप मेरी गोद में डाल दिया।

इस समय मुझे कहानियों की उन नायिकाओं का ध्यान आया, जो सोते समय बड़ी सुन्दर लगने लगती थीं और मैंने सोचा कि अपना सूजा हुआ चेहरा और आंखों के लाल-लाल कोए लिये हुए मैं उन नायिकाओं से कितनी विपरीत लग रही हूंगी।

आज का सवेरा उदासी के साथ समाप्त हुआ था और अभी मेरे सामने पहाड़-सा दिन पड़ा था। मुझे श्रीमती हॉपर के साथ उनके कमरे में ही भोजन करना था, क्योंकि नर्स आज बाहर जा रही थी। मैं जानती थी कि उसके बाद मुझे उनके साथ घंटों ताश खेलना पड़ेगा। फिर उनके मित्र आयेंगे, जिन्हें मुझे सोडे में शराब मिलाकर देनी होगी। श्रीमती हॉपर उनसे जोर-जोर से हँसकर बातें करेंगी, ग्रामोफोन पास खींचकर उसपर कोई रिकार्ड चढ़ाकर बजायेंगी और उसकी लय के साथ-साथ अपने कंधे मटकायेंगी। इन सब बातों का मुझे सामना करना पड़ेगा और द विन्तर मुझे होटल में छोड़कर अकेले कहीं चले जायेंगे—शायद किसी समुद्र के किनारे, जहां उनके गालों पर धूप और हवा के थपेड़े लगेंगे और वहां वह उन स्मृतियों में डूब जायंगे, जिनके विषय में न मैं कुछ जानती हूं और न ही जिनमें मैं कुछ हिस्सा बंटा सकती हूं। वह फिर से अपने अतीत में भटकने लगेंगे।

हमारे बीच की खाई अब इतनी चौड़ी हो गई थी, जितनी पहले कभी नहीं थी और वह उसके दूसरे किनारे पर मुझसे बहुत दूर, पीठ मोड़े खड़े थे। इस समय मुझे ऐसा लगा जैसे मैं बिलकुल अकेली हूं और अपनी अकड़ के बावजूद मैंने उनका रूमाल उठाकर उससे अपनी नाक साफ़ कर ली।

"ऐसी की तैसी," वह अचानक बोल उठे, मानो कुछ उकता गये हों और उन्हें गुस्सा आ रहा हो। उन्होंने मुझे अपने पास खींच लिया और मेरे कंधे में अपनी बांह लपेट ली। तब भी उनका सीधा हाथ कार के चक्के पर था और वह बिल्कुल अपने सामने देख रहे थे। मुझे याद है कि उन्होंने कार को और भी तेजी से चलाना शुरू कर दिया था। वह बोले—"तुम उम्र में इतनी छोटी हो, जितनी मेरी बेटी और मैं सोच नहीं पा रहा हूं कि तुम्हें किस तरह समझाऊं।" सड़क एक किनारे पर पहुंचकर बिल्कुल तंग हो गई थी और उन्हें एक कुत्ते को बचाने के लिए गाड़ी तेज़ी से मोड़नी पड़ी। मैंने सोचा कि अब वह मुझे छोड़ देंगे, लेकिन वह मुझे चिपटाये रहे, यहांतक कि जब कोना पार कर कार फिर सड़क पर आगई तब भी उन्होंने अपनी बांह मेरे गले में से नहीं निकाली। वह बोले, "आज सवेरे मैंने तुमसे जो कुछ भी कहा है उसे तुम बिल्कुल भूल जाओ। वह सब समाप्त हो चुका है और अब हमें उसके विषय में कभी सोचना भी नहीं चाहिए। मेरे सम्बन्धी मुझे मैक्सिम कहकर पुकारते हैं और मैं चाहता हूं कि तुम भी मुझे इसी नाम से पुकारा करो, तुम मेरे साथ काफ़ी तकल्लुफ़ बरत चुकी हो।"

उन्होंने मेरे टोप को उतारकर पिछली सीट पर फेंक दिया और झुककर मेरे सिर को चूम लिया।

"वादा करो, तुम कभी काली साटन के कपड़े नहीं पहनोगी," उन्होंने कहा।

मैं मुस्करा दी और वह मुझे देखकर हँस पड़े। वह सवेरा मेरे लिए एक बार फिर सुहावना बन गया। अब श्रीमती हॉपर और उनके साथ बीतनेवाली संध्या की मुझे रत्तीभर भी चिन्ता नहीं थी। वह तो बहुत जल्दी बीत जायगी और फिर रात आयगी और उसके बाद फिर कल का दिन शुरू हो जायगा। उस समय मैं बहुत ही प्रसन्न थी और मुझमें श्रीमती हॉपर से बराबरी का दावा करने का साहस था। मुझे लगा मानो मैं उनके कमरे में देर से पहुंची हूं और जब उन्होंने मुझसे इसका कारण पूछा है तब मैंने लापरवाही से जम्हाई लेते हुए जवाब दिया है, "मुझे समय का ध्यान ही नहीं रहा, क्योंकि

में मैक्सिम के साथ खाना खा रही थी।"

मुझमें अभी तक इतना बचपना था कि किसीका अपने प्यार के नाम से पुकारा जाना मुझे एक बहुत बड़ी बात मालूम देती थी और वह पहले दिन से ही मुझे इसी नाम से पुकारते थे। उस प्रभात ने मुझे उनका मित्र बना दिया था। उन्होंने मेरा चुम्बन भी लिया था, जो बिल्कुल स्वाभाविक, शान्त और सुखदायक था। उसमें न तो पुस्तकों में की नाटकीयता थी और न कोई ठेस पहुंचानेवाली भावना। उससे हमारे पारस्परिक सम्बन्ध में और भी अधिक आत्मीयता आ गई थी, सबकुछ सरल हो गया था। हमारे बीच की खाई पट गई थी। अब मुझे उन्हें मैक्सिम कहकर पुकारना था।

उस दिन श्रीमती हॉपर के साथ ताश खेलना मुझे दुःखदाई नहीं लगा। फिर भी उनसे सवेरे की घटनाओं के बारे में कुछ कहने का साहस मुझमें नहीं था। ताश इकट्ठे करते समय जब वह अचानक पूछ बैठीं कि क्या मैक्सिम द विन्तर अब भी होटल में हैं तब मैं एक क्षण के लिए झिझकी थी, ठीक वैसे ही जैसे ग़ोताखोर कगार से कूदते समय झिझकता है। मुझे अपने पर अधिकार नहीं रहा, और मैंने उत्तर दिया, "हां, मैं समझती हूं कि होटल में ही हैं, क्योंकि वह खाना खाने रेस्टोरां में आते हैं।"

मुझे आशंका हुई कि कहीं किसीने कुछ कह तो नहीं दिया है, कहीं किसीने हम दोनों को साथ-साथ देख तो नहीं लिया है, कहीं टेनिस की शिक्षक ने आकर शिकायत तो नहीं कर दी है या कहीं होटल के मैनेजर ने कोई परचा लिखकर तो नहीं भेज दिया है। मैं श्रीमती हॉपर के आक्रमण की प्रतीक्षा करने लगी। लेकिन वह जम्हाई लेती हुई ताश डिब्बे में रखती रहीं और मैं उनके सिकुड़े हुए बिस्तर को ठीक करती रही। फिर मैंने उन्हें पाउडर, रूज और लिपस्टिक पकड़ाई और उन्होंने ताश का डिब्बा रखकर शीशा उठा लिया।

"है तो वह एक आकर्षक व्यक्ति," वह बोलीं, "लेकिन कुछ अजीब-सा स्वभाव है उसका, उसे समझना मुश्किल है।"

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। चुप खड़ी मैं उन्हें होठों पर लिपस्टिक लगाते देखती रही। वह फिर कहने लगीं, मैंने उसे कभी देखा तो नहीं था

लेकिन मेरे खयाल में वह बहुत ही सुन्दंर थी। हर तरह से सुघड़ और गुणवती, मैन्दरले में बड़ी शानदार दावतें हुआ करती थीं। उसकी मृत्यु बहुत ही आकस्मिक और दुःखदायी थी और मुझे विश्वास है कि द विन्तर उसकी पूजा करते थे। मुझे इस तेज लाली के साथ पाउडर का रंग कुछ गहरा करना होगा, ज़रा उठा तो लाओ, और लो इस डिब्बे को दराज में रख देना।"

उसके बाद पाउडर, सेंट और रूज़ का कार्यक्रम तबतक चलता रहा जब-तक कि घंटी न बजी और श्रीमती हॉपर के मित्र न आ पहुंचे। मैंने उन्हें सदा की तरह शराब पेश की, ग्रामोफोन पर रिकार्ड बदले और सिगरेट के टोटे फेंके। किसीने मुझसे मेरी चित्रकारी के बारे में पूछा और मैंने बनावटी मुस्कराहट के साथ उसका कुछ जवाब भी दिया। लेकिन वह जवाब मैंने नहीं दिया था, असल में तो मैं वहां थी ही नहीं, मैं तो एक छाया के पीछे चली जा रही थी, जिसका रूप अब कुछ-कुछ स्पष्ट होने लगा था। फिर भी अभी उसका चेहरा धुंधला-सा था और उसकी आंखों और उसके बालों की रूपरेखा मेरे सामने स्पष्ट नहीं थी।...उसकी सुन्दरता शाश्वत थी, उसकी मुस्कराहट कभी भुलाई नहीं जा सकती थी। उसकी आवाज अब भी कहीं मंडरा रही थी। वे स्थान थे, जहां वह गई थी, वे चीजें थीं, जिन्हें उसने छुआ था। शायद अलमारी में वे कपड़े भी होंगे, जिन्हें उसने पहना होगा और जिनमें अबतक इत्र बसा हुआ होगा। मेरे सोने के कमरे में मेरे तकिए के नीचे एक किताब थी, जिसे उसने अपने हाथों में लिया होगा और मुझे लगा मानो मैं उसे उसका पहला पृष्ठ उलटते हुए देख रही हूं, और वह मुड़े हुए निब को झटककर मुस्कराती हुई लिख रही है—"मैक्स को रेबेका की भेंट।" शायद उस दिन श्री द विन्तर का जन्मदिन रहा होगा और जलपान की मेज पर अपने दूसरे उपहारों के बीच उसने यह किताब भी रख दी होगी। मैक्स! हां, वह उन्हें मैक्स कहकर पुकारती थी। मैक्स! कितना परिचित...कितना सुन्दर और पुकारने में कितना सरल! उसके सम्बन्धी यानी उसकी दादी, उसकी बहन उसे प्यार से मैक्सिम कहकर पुकारती थीं। लेकिन मैक्स तो उसकी अपनी पसंद का नाम था, इस नाम पर उसका एकमात्र अधिकार था और बड़े विश्वास के साथ उस-

ने उसे पुस्तक के पृष्ठ पर लिखा था। वह गहरी तिरछी लिखावट, जिसने सफ़ेद कागज का हृदय बेध दिया था, उसका अपना चित्र था...इतना पक्का इतना सुरक्षित। न मालूम उसने कितनी बार, कैसी-कैसी भावनाओं में खोकर, उन्हें इस प्रकार लिखा होगा।

कागज़ के छोटे टुकड़ों पर घसीट में लिखे हुए कुछ शब्द, मैक्सिम के बाहर चले जाने पर निजी समस्याओं से भरे उसके लम्बे-लम्बे पत्र, घर के भीतर और बाहर बाग में गूंजती हुई उसकी आवाज़—पुस्तक की लिखावट की ही तरह निर्द्वन्द, परिचित !

और अब मुझे उन्हें मैक्सिम कहकर पुकारना है।

: ७ :

कल सुबह नाश्ते के समय जब मैं श्रीमती हॉपर के प्याले में काफी उंड़ेल रही थी, उन्होंने मेरी ओर एक पत्र फेंकते हुए कहा, "हेलेन शनिवार को न्यूयार्क जा रही है। नैन्सी को शायद एपेन्डिसाइटिस हो गई है। हेलेन के पास तार आया है कि वह फ़ौरन घर चली आये। मैंने भी उसके साथ जाने का निश्चय किया है। मैं यूरोप से ऊब उठी हूं। जाड़ा शुरू होते ही हम वापस आ जायंगे। तुम्हें न्यूयार्क देखना कैसा लगेगा ?"

यह विचार मुझे जेल जाने से भी बुरा मालूम दिया। निश्चय ही मेरी परेशानी मेरे मुंह पर उभर आई होगी, क्योंकि पहले तो श्रीमती हॉपर को कुछ आश्चर्य हुआ और फिर उन्हें क्रोध आ गया। वह बोली, "कैसी अजीब लड़की हो तुम ! अभी तक मैं तुम्हें ठीक से समझ ही नहीं पाई। क्या तुम इतना भी नहीं सोच पातीं कि तुम जैसी गरीब लड़कियों को घर पहुंचकर कितना सुख मिलेगा ? वहां लड़के-ही-लड़के होंगे और सभी तुम्हारे वर्ग के। उनसे तुम अपनी छोटी-सी मित्र-मंडली अलग बना सकती हो और वहां तुम्हें मेरे इशारों पर उतना नहीं नाचना पड़ेगा जितना यहां। मैं तो समझती थी कि तुम्हें मॉन्टी कार्लो पसन्द नहीं है।"

"यहां की तो मैं आदी हो गई हूं।" अपने विचारों से संघर्ष करते हुए मैंने

हकलाकर कहा।

"ठीक है! तो इसी तरह तुम न्यूयार्क की भी आदी हो जाओगी। जिस जहाज से हेलेन जा रही है, उसीको हमें पकड़ना है। इसलिए सफर का इन्तजाम फौरन होना चाहिए। तुम होटल के दफ्तर में चली जाओ और क्लर्क से ज़रा जल्दी-जल्दी काम करने को कहो। आज सारे दिन के लिए तुम्हारे पास इतना काम है कि मॉन्टी कार्लो छोड़ने का रंज तुम महसूस भी नहीं कर सकोगी।" यह कहकर वह हँसी और सिगरेट के टोटे को मक्खन के बर्तन में मसल अपने मित्रों को फ़ोन करने चली गई।

मैं सीधी दफ्तर में नहीं जा सकी। गुसलखाने में जाकर मैंने अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया और दोनों हाथों से मुंह ढांपकर मैं चटाई पर बैठ गई। आखिर जाने का दिन आ ही गया! मैं सोचने लगी—कल शाम को मैं श्रीमती हॉपर के आभूषणों का डिब्बा और लोई लिये हुए एक दासी की तरह ट्रेन में सफर कर रही होऊंगी। चीखती हुई गाड़ी का हर झटका मुझे श्री द विन्तर से दूर ले जा रहा होगा और वह होंगे कि बिना इनसब बातों की परवा किये रेस्टोरां में अकेले उस जानी-पहचानी मेज पर निश्चिंत भाव से बैठे कोई किताब पढ़ रहे होंगे।

जाने से पहले मुझे उनसे विदा ले लेनी चाहिए, मैंने अपने मन में सोचा। मैं जानती थी कि श्रीमती हॉपर के कारण यह विदाई भी बड़ी जल्दी-जल्दी और घबराहट में लेनी होगी। कुछ मुस्कराहट और थोड़े-से शब्दों का आदान-प्रदान होगा। वह कहेंगे, "देखो पत्र जरूर लिखना" और मैं कहूंगी, "आपकी कृपा के लिए मैं कभी उऋण नहीं हो सकती।" वह कहेंगे, "अच्छा, तुम्हारा पता क्या होगा?" और मैं कहूंगी, "यह तो बाद में मैं पूछकर लिखूंगी।" फिर सहसा वह सिगरेट जलाने के लिए पास से जाते हुए बैरे से माचिस मांगेंगे और तब भी मैं यही सोच रही होऊंगी, 'मेरे जाने में सिर्फ साढ़े चार मिनट रह गये हैं, इसके बाद मैं इन्हें फिर कभी नहीं देख पाऊंगी।'

गुसलखाने की चटाई पर बैठी-बैठी मैं इन्हीं विचारों में लीन थी कि श्रीमती हॉपर ने आकर दरवाज़ा खटखटाया, "तुम कर क्या रही हो?"

"कुछ नहीं, मैं अभी आती हूं," मैंने नल खोलने और जल्दी-जल्दी तौलिए को तह करके खूंटी पर रखने का बहाना करते हुए कहा।

और, जब मैंने दरवाजा खोला तब उन्होंने मुझे घूरकर देखा, फिर कड़ककर कहा, "कितनी देर लगा दी, तुमने! आज भी क्या सपने देखने का समय है तुम्हारे पास? इतना काम करने को पड़ा है।"

अपनी बीमारी के बाद श्रीमती हॉपर उस दिन पहली बार रेस्टोरां में खाना खाने गईं और जब मैं उनके साथ कमरे में पहुंची तब मेरी ठूंडी के नीचे दर्द-सा हो रहा था। श्री द विन्तर बाहर गये हैं, यह तो मुझे मालूम था, लेकिन डर लग रहा था कि कहीं बैरा यह न पूछ बैठे कि क्या रोज की तरह आज भी आप मिस्टर द विन्तर के साथ खायेंगी। इसीलिए जब कभी बैरा मेज के पास आता तभी मुझे अजीब परेशानी-सी होने लगती। लेकिन उसने कुछ भी नहीं कहा।

असबाब बांधने में सारा दिन निकल गया और संध्या समय लोग-बाग हमें विदाई देने आये। खाने के बाद श्रीमती हॉपर सोने चली गईं। आज मैं अभी तक श्री द विन्तर से नहीं मिल पाई थी। साढ़े नौ बजे के करीब मैं असबाब पर लगाने के लिए चिट लेने के बहाने आराम करनेवाले कमरे में गई, लेकिन वह वहां नहीं मिले। क्लर्क ने मुस्कराकर कहा, "आप श्री द विन्तर को तो नहीं ढूंढ़ रहीं हैं? उनका संदेश आया है कि वह आधी रात से पहले नहीं लौट सकेंगे।"

मैंने जैसे सुना ही नहीं और कहा, "मुझे असबाब पर लगाने के लिए चिटों की जरूरत है।" लेकिन उसके देखने के ढंग से मैं समझ गई कि वह मेरे झांसे में नहीं आया है।

तो आज की अंतिम संध्या मैं उनके साथ नहीं बिता पाऊंगी। जिस घड़ी की प्रतीक्षा में मैंने दिन का एक-एक पल गिनकर काटा है, वह मुझे अकेले ही अपने सोने के कमरे में पड़े-पड़े बितानी पड़ेगी।...मुझे अच्छी तरह से याद है कि उस रात मैं खूब रोई थी। ऐसे आंसू आज नहीं निकल सकते। इक्कीस वर्ष से बड़ी हो जाने के बाद कहीं लड़कियां इस तरह तकिए में मुंह छिपाकर

रो सकती हैं ?....सहसा मॉन्टी कार्लो में मुझे चारों ओर आकर्षण-ही-आकर्षण दिखाई देने लगा था। मुझे ऐसा लगने लगा था मानो सारी दुनिया में यही एक जगह है, जहां सचाई और आत्मीयता का वास है। मैं उसे प्यार करने लगी थी। मेरे मन में उसके लिए ममता उमड़ आई थी, मैं वहां अपना सारा जीवन बिता देना चाहती थी। लेकिन आज मैं उसीको छोड़ रही थी।

सुबह नाश्ते के समय श्रीमती हॉपर ने मुझसे पूछा, "तुम्हें जुकाम हो गया है क्या ?"

"नहीं तो," मैंने उत्तर दिया।

"सामान बंध जाने के बाद मुझे रुकना बुरा लगता है।" वह बोलीं, "हमें पहले ही वाली गाड़ी से जाने का निश्चय कर लेना चाहिए था, इससे पेरिस में हमें अधिक समय मिल जाता। मैं समझती हूं कि..." क्षणभर को रुककर उन्होंने अपनी घड़ी पर दृष्टि डाली और फिर कहा, "मैं समझती हूं कि टिकट अब भी बदले जा सकते हैं। जो हो, चेष्टा तो करनी ही चाहिए। दफ्तर में जाकर मालूम तो करो।"

"अच्छी बात है", मैंने उनकी हां-में-हां मिलाई और सोने के कमरे में जाकर मैं कपड़े बदलने लगी। श्रीमती हॉपर के प्रति मेरी उपेक्षा की भावना ने अब घृणा का रूप ले लिया था, क्योंकि वह प्रातःकाल का समय भी मुझसे छीने ले रही थीं। मुझे श्री द विन्तर से विदा लेने के लिए दस मिनट भी नहीं मिल पा रहे थे और यह सब केवल इसलिए कि श्रीमती हॉपर ने नाश्ता आशा से पहले ही कर लिया था और अब वह बैठी-बैठी उकता रही थीं।

तो फिर मुझे अपना संकोच छोड़ना ही पड़ेगा, अपना अभिमान त्यागना ही होगा—मैंने सोचा और बैठक का दरवाजा बन्दकर मैं भागती हुई गैलरी को पार कर गई। मैंने लिफ्ट की भी प्रतीक्षा नहीं की और एक-एक साथ तीन-तीन सीढ़ियां लांघती हुई तीसरी मंजिल पर जा पहुंची। मुझे उनके कमरे का नम्बर याद था—१४८। वहां पहुंचकर मैंने हांफते हुए जोर-से दरवाजा खटखटाया।

"अन्दर आ जाओ," उन्होंने ऊंचे स्वर में कहा। दरवाजा खोलते हुए मुझे

कुछ घबराहट-सी हुई, क्योंकि मुझे महसूस होने लगा था कि इस समय आने में मैंने भूल की है। मैंने सोचा कि रात को देर से सोने के कारण उनकी आंख अभी-अभी खुली होगी और सिर भारी होने के कारण शायद वह अभी बिस्तर में पड़े होंगे। लेकिन जब मैं भीतर पहुंची तब वह खिड़की के पास हजामत बना रहे थे। पाजामे के ऊपर उन्होंने भूरे रंग की बालदार जाकट पहन रखी थी और मैं थी कि फ़लालैन का सूट और भारी जूते डाटे हुए थी। निश्चय ही उस समय मैं बड़ी भद्दी लग रही होऊंगी।

"कहो, कैसे आई? कोई ख़ास बात है क्या?" उन्होंने पूछा।

"मैं आपसे विदा लेने आई हूं। हम अभी, सुबह ही, जा रहे हैं।"

उन्होंने मुझे घूरकर देखा और अपना उस्तरा वाश-स्टैंड पर रखते हुए कहा, "दरवाजा बन्द कर दो।"

मैंने पीछे से दरवाजा बन्द कर लिया और कुछ खोई-खोई-सी मैं दोनों हाथ लटकाये खड़ी रही।

"तुम कह क्या रही हो?" उन्होंने पूछा।

"मैं ठीक कह रही हूं, हम आज ही जा रहे हैं। पहले हम बादवाली गाड़ी से जानेवाले थे, लेकिन अब श्रीमती हॉपर पहलेवाली गाड़ी पकड़ना चाहती हैं। मुझे डर लग रहा था कि कहीं ऐसा न हो कि आपसे मिल ही न पाऊं, इसलिए मैंने सोचा कि जाने से पहले आपसे मिलकर आपको धन्यवाद तो दे आऊं।"

"लेकिन इस बारे में तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?" उन्होंने पूछा।

"उन्होंने कल ही तो जाने की तै की है। उनकी लड़की शनीचर को न्यूयार्क जा रही है और हम उसके साथ जा रहे हैं।"

"वह तुम्हें अपने साथ न्यूयार्क ले जा रही हैं?"

"हां, पर मैं जाना नहीं चाहती। मुझे उस जगह से नफरत है, मैं वहां बड़ी दुःखी रहूंगी।"

"फिर तुम उनके साथ जा क्यों रही हो?"

"आपको तो मालूम ही है कि मुझे जाना पड़ेगा, मैं उनसे तनख्वाह पाती

हूं, मैं उन्हें छोड़ कैसे सकती हूं ?"

उन्होंने अपना उस्तरा उठाकर अपने मुंह पर का साबुन साफ किया।

"ज़रा बैठो, मुझे देर नहीं लगेगी, मैं गुसलखाने में कपड़े बदलकर अभी पांच मिनट में तैयार होकर आता हूं।"

उन्होंने अपने कपड़े कुर्सी पर से उठाये और अन्दर जाकर गुसलखाने का दरवाजा बन्द कर लिया। मैं पलंग पर बैठी हुई अपने नाखून दांतों से काटती रही। उस समय की मेरी स्थिति बिलकुल स्वप्न जैसी थी और मैं समझ नहीं पा रही थी कि उनके मन में क्या विचार उठ रहे हैं और वह क्या करना चाहते हैं। मैंने कमरे में चारों ओर नज़र डाली, कमरा एकदम अस्त-व्यस्त पड़ा था। कहीं जूतों का ढेर लगा हुआ था, कहीं डोरी पर टाइयां लटक रही थीं। शृंगार-मेज़ पर केवल शैम्पू की शीशी और दो हाथीदांत के ब्रुश रखे थे। न वहां कोई चित्र था, न किसीका फोटो। मैंने सोचा था कि कम-से-कम एक फोटो तो अवश्य ही वहां किसी कार्निस पर या उनके बिस्तर के पासवाली मेज़ पर रखा होगा—एक बड़ा-सा फोटो, चमड़े के फ्रेम में मढ़ा हुआ। लेकिन वहां या तो थोड़ी-बहुत किताबें पड़ी थीं या फिर सिगरेट का एक बक्स।

वह सचमुच ही पांच मिनट में तैयार होकर आ गये।

"तुम मेरे साथ नीचे चलो, मैं ज़रा नाश्ता कर लूं।" उन्होंने कहा।

"लेकिन मेरे पास समय नहीं है। मुझे अभी-अभी दफ़्तर में जाकर सीटें रिजर्व करानी हैं।" अपनी घड़ी की ओर देखकर मैंने कहा।

"उसकी चिन्ता मत करो, मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं।"

हम गैलरी में साथ-साथ गये और उन्होंने लिफ़्ट के लिए घंटी बजाई। पता नहीं वह यह समझ क्यों नहीं रहे थे कि पहलीवाली गाड़ी के जाने में सिर्फ डेढ़ घंटा रह गया था। अभी-अभी श्रीमती हॉपर दफ़्तर में फ़ोन करके यह पूछने ही वाली होंगी कि मैं वहां हूं या नहीं।

हम बिना कुछ बोले लिफ़्ट से नीचे उतरकर बरामदे में पहुंच गये, जहां नाश्ते के लिए मेजें लगी हुई थीं।

"तुम क्या खाओगी ?" उन्होंने पूछा।

"मैं तो खा चुकी हूं और अब तीन-चार मिनट से ज़्यादा नहीं ठहर सकती।"

"मेरे लिए कॉफी, उबला हुआ अंडा, टोस्ट, मार्मलेड और एक टैंगरीन ले आओ।" उन्होंने बैरे से कहा।

"तो श्रीमती हॉपर अब मॉन्टी कार्लो से उकता गई हैं और घर वापस जाना चाहती हैं। मैं भी उकता गया हूं। वह न्यूयार्क जा रही है और मैं मैन्दरले। तुम कहां जाना पसंद करोगी, न्यूयार्क या मैन्दरले ?"

"ऐसी बातों में मज़ाक अच्छा नहीं लगता। अब मैं टिकटों के बारे में पूछ-ताछ करने जा रही हूं और आपसे बिदा लेती हूं।"

"अगर तुम यह समझती हो कि मुझ जैसा आदमी नाश्ते के समय मज़ाक करेगा तो यह तुम्हारी भूल है। सुबह-सुबह तो मेरा स्वभाव बड़ा चिड़चिड़ा रहता है। मैं तुमसे फिर कहता हूं कि यह अब बिल्कुल तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है कि तुम श्रीमती हॉपर के साथ अमरीका जाओ या मेरे साथ मेरे घर मैन्दरले।"

"आपका मतलब यह कि आपको किसी सेक्रेटरी-वेक्रेटरी..."

"कितनी बुद्धू हो तुम ! अरे, मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं।"

बैरा नाश्ता ले आया। मैं अपने हाथ अपनी गोद में रखे बैठी रही और शून्य दृष्टि से बैरे को मेज़ पर कॉफी तथा दूध के बरतन रखते देखती रही।

बैरे के जाने के बाद मैंने कहा, "आप समझते नहीं, मेरी जैसी लड़कियों से पुरुष ब्याह करना पसन्द नहीं करते।"

"तुम्हारा क्या मतलब है ?" अपनी चम्मच नीचे रखकर उन्होंने मेरी ओर देखते हुए कहा।

"मैं स्वयं नहीं जानती कि आपको कैसे समझाऊं। मुझे किसी बात को बताने का ढंग ही नहीं आता। फिर भी एक बात तो मैं आपसे कह ही सकती हूं, मेरा आपके संसार से मेल नहीं बैठता।"

"मेरा संसार क्या है ?"

"मैन्दरले ! मेरा मतलब समझ गये होंगे, आप।"

उन्होंने अपनी चम्मच उठाकर फिर मार्मलेड खाना शुरू कर दिया।

"श्रीमती हॉपर की तरह तुम भी बिल्कुल नासमझ और कमअक्ल हो। तुम मैन्दरले के बारे में क्या जानती हो? यह तै करनेवाला तो मैं हूं कि तुम वहां रहने योग्य हो या नहीं। शायद तुम सोच रही हो कि मैंने यह बात क्षणिक आवेश में कह दी है, या शायद यह सुनकर कि तुम न्यूयार्क जाना नहीं चाहती। तुम समझती हो कि तुमसे शादी करने की बात भी मैंने उसी भाव से कही है जिस भाव से मैं तुम्हें कार में घुमाने ले गया था या उस पहली शाम को अपने साथ खाना खिलाया था। उदारता दिखाने के लिए? क्यों यही सोचती हो न?"

"हां," मैंने उत्तर दिया।

"तो एक दिन तुम्हें पता चल जायगा कि उदारता मेरा सबसे बड़ा गुण नहीं है। इस समय तो शायद तुम कुछ भी नहीं समझ पा रही हो। हां, तो तुमने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। तुम मुझसे विवाह करोगी या नहीं?"

इस सम्भावना की तो मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी—अपने भीषण-से-भीषण क्षणों में भी नहीं। हां, एक बार उनके साथ मोटर में बैठे हुए—जब हम कई मील तक एक-दूसरे से बिना बोले बिल्कुल चुपचाप चलते चले गये थे, मेरी आंखों के सामने यह काल्पनिक चित्र अवश्य आया था कि वह बहुत बीमार हैं, एकदम बेहोश, उन्होंने मुझे अपनी तीमारदारी के लिए बुला भेजा है और मैं उनके माथे पर यूडीकोलोन की पट्टी रख रही हूं। चित्र अभी यहीं तक दीख पाया था कि हम होटल पहुंच गये थे और जैसे एक स्वप्न-सा भंग हो गया था। ऐसे ही एक बार और मैंने कल्पना की थी कि मैं मैन्दरले के अहाते में ही किसी कमरे में रहती हूं और वह कभी-कभी मुझसे मिलने आते हैं और अंगीठी के पास बैठकर मुझसे बातें करते हैं। सहसा विवाह की इस चर्चा से मैं चकित रह गई और मेरे मन को उससे धक्का-सा लगा। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे किसी राजा ने मुझसे विवाह का प्रस्ताव किया हो और इसीलिए मुझे वह वास्तविक नहीं मालूम दिया। जहांतक उनका सवाल है वह शान्त भाव से मार्मलेड खाते रहे, मानों कहीं कोई अस्वाभाविकता ही न हो। पुस्तकों में मैंने पढ़ा तो था कि चांदनी रात में प्रेमी अपनी प्रेमिका के सामने घुटने टेककर

विवाह का प्रस्ताव करते हैं, लेकिन इस तरह नाश्ते के समय तो ऐसा कभी नहीं होता।

"मेरा प्रस्ताव शायद तुम्हें पसन्द नहीं आया," उन्होंने कहा, "मुझे बड़ा खेद है, मैं समझता था कि तुम मुझसे प्रेम करती हो, लेकिन तुमने मेरी अहमन्यता को चूर-चूर कर दिया है।"

"मैं आपसे प्रेम करती हूं...मैं आपके प्रेम में पागल हूं। आपके कारण मैंने सारी रात रो-रोकर बिताई है, क्योंकि मैं जानती थी कि मैं आपको फिर नहीं देख पाऊंगी।"

मुझे अच्छी तरह याद है कि मेरे यह कहने पर वह हँस दिये थे और मेज के उस पार से मेरी तरफ हाथ बढ़ाकर उन्होंने कहा था, "इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ! जब तुम पैंतीस वर्ष की हो जाओगी, जैसा कि तुम चाहती हो, तब एक दिन मैं तुम्हें इन बातों की याद दिलाऊंगा और तुम विश्वास नहीं करोगी। क्या कहूं, बड़ी तो तुम होगी ही।"

मुझे बड़ी लज्जा आई और उनके हँसने पर क्रोध भी। भला कोई स्त्री किसी पुरुष के सामने अपना प्रेम इस तरह स्वीकार करती है ! मैं अभी कितनी कच्ची थी।

"तो, अब तै होगया न ?" उन्होंने मार्मलेड खाते हुए कहा, "अब तुम श्रीमती हॉपर की बजाय मेरी साथिन बनोगी और तुम्हारा काम भी करीब-करीब वही रहेगा। मुझे भी अपनी लाइब्रेरी में नई-नई किताबों, ड्राइंग-रूम में फूलों और खाने के बाद ताश खेलने का शौक है। मुझे भी किसी ऐसे साथी की जरूरत है जो मेरे प्याले में अपने हाथ से चाय उंडेलकर दे। अन्तर केवल इतना है कि मुझे टैक्सोल की बजाय ईनोज चाहिए। और हां, तुम्हें इस बात का ध्यान रखना होगा कि दांतों का जो मंजन मैं करता हूं वह कभी चुकने न पाये।"

मैं अपनी अंगुलियों से मेज ठकठकाती रही, क्योंकि मुझे अभी तक उनके और अपने बारे में कुछ निश्चय नहीं हो सका था। वह मेरी हँसी तो नहीं उड़ा रहे हैं ? यह सब सिर्फ़ मजाक तो नहीं है ? उन्होंने ऊपर नजर उठाई और

मेरे मुख पर चिन्ता की रेखा देखकर कहा, "शायद मैं तुमसे असभ्य-जैसा बरताव कर रहा हूं। तुम्हारी समझ में विवाह के प्रस्ताव इस तरह नहीं किये जाने चाहिए। हम किसी कुंज में होते, तुमने सफ़ेद फ्राक पहन रखा होता, तुम्हारे हाथ में एक गुलाब का फूल होता, दूर से वायलिन पर हँसी-खुशी की कोई सुरीली धुन आ रही होती और मैं किसी तरह वृक्ष के पीछे से तुमसे अपने पागल प्रेम की बातें करता होता। उस समय शायद तुम्हें यह अनुभव होता कि तुम्हारा मूल्य ठीक से आंका गया है। ख़ैर, इस बात की चिन्ता मत करो, मैं तुम्हें हनीमून के लिए वेनिस ले जाऊंगा और हम दोनों एक छोटी-सी नाव में बैठकर उसे खुद अपने हाथों से खेयेंगे। लेकिन वहां हम अधिक नहीं ठहरेंगे, क्योंकि मैं तुम्हें मैन्दरले दिखाना चाहता हूं।"

वह मुझे मैन्दरले दिखाना चाहते हैं...। सहसा मुझे विश्वास हो गया कि यह सब-कुछ होकर ही रहेगा। मैं उनकी पत्नी बनूंगी, हम दोनों साथ-साथ बाग में घूमेंगे। कलेऊ के बाद सीढ़ियों पर खड़ी होकर मैं चिड़ियों को चुग्गा डालूंगी और फिर सिर पर टोप ओढ़े और हाथ में कैंची लिये मैं घर सजाने के लिए फूल काटती फिरूंगी।...और यह सोचते-सोचते एकाएक मेरी समझ में आया कि बचपन में मैंने वह रंगीन पोस्टकार्ड क्यों खरीदा था। निश्चय ही वह मेरे भवितव्य का संकेत था।

वह मुझे मैन्दरले दिखाना चाहते हैं! मेरे मस्तिष्क में उथल-पुथल मचने लगी और मेरी आंखों के सामने एक के बाद एक न मालूम कितने चित्र नाच उठे। किन्तु वह ज्यों-के-त्यों बैठे हुए टैंगरीन खाते रहे और बीच-बीच में मुझे भी एक-दो टुकड़े देते रहे। वह रह-रहकर मेरी ओर देख लेते थे, लेकिन मैं थी कि अपने ही विचारों में लीन थी—हम आदमियों से घिरे होंगे और वह लोगों से कह रहे होंगे—"शायद अभी तक आप मेरी पत्नी से नहीं मिले। यह रहीं श्रीमती द विन्तर।" श्रीमती द विन्तर! हां, मैं श्रीमती द विन्तर बन जाऊंगी। और तब मुझे ध्यान आया कि किस तरह मैं चैकों और निमन्त्रण-पत्रों पर हस्ताक्षर किया करूंगी। अपनी कल्पना में मैं इतनी डूब गई कि मुझे ऐसा लगा जैसे मैं टेलीफोन पर किसीसे कह रही हूं—"अगले शनीचर को

मैन्दरले आइये न ?" हमेशा आदमियों की भीड़-भाड़ रहेगी और उसके किसी एक कोने में कुछ लोग मेरे बारे में यह कानाफूसी कर रहे होंगे—"ओह, वह तो बहुत सुन्दर है ! उससे जरूर मिलना चाहिए।" और यह सुनते हुए मैं दूसरी तरफ को ऐसे मुड़ जाऊंगी जैसे मैने कुछ सुना ही न हो।

श्रीमती द विन्तर ! मैं श्रीमती द विन्तर बन जाऊंगी। खाने के कमरे में चमचमाती हुई मेज होगी और उसपर लम्बी-लम्बी मोमबत्तियां जल रही होंगी। चौबीस आदमियों की पार्टी में मैक्सिम किनारे पर बैठे होंगे। मेरे बालों में फूल लगे होंगे और अपने हाथों में गिलास थामे हर व्यक्ति मेरी तरफ देखकर कह रहा होगा—"हमें दुलहिन की सेहत का जाम पीना चाहिए," और सबके चले जाने पर मैक्सिम कहेंगे—"ओह, तुम कितनी सुन्दर लग रही थीं।" फूलों से सजे हुए ठंडे कमरे ! जाड़ों में अंगीठी से गरम किया हुआ मेरा सोने का कमरा, जिसका दरवाजा कोई खटखटा रहा है। एक स्त्री मुसकराती हुई अन्दर आती है। यह मैक्सिम की बहन है, वह कृतज्ञताभरे शब्दों में कह रही है—"सचमुच तुमने उसे कितना सुखी बना दिया है। हम सब सुखी हैं। तुम कितनी सफल गृहिणी हो।"...सफल गृहिणी ! श्रीमती द विन्तर ! मैं श्रीमती द विन्तर बन जाऊंगी।

तभी उन्होंने मेरी विचार-शृंखला को भंग करते हुए पूछा, "श्रीमती हॉपर को यह बात मैं जाकर बताऊं या तुम बता दोगी ?"

अपनी प्लेट हटाकर वह नैपकिन की तह कर रहे थे। मुझे यह देखकर आश्चर्य हो रहा था कि ये सब बातें वह आखिर इतने शान्त भाव से कैसे कह रहे हैं—ऐसे जैसे वह कोई बड़ी बात ही न हो, ऐसे जैसे किसी योजना में थोड़ी-बहुत उलट-फेर भर की जा रही हो। जहांतक मेरा सवाल है मुझे तो ऐसा लग रहा था जैसे एक बम फट पड़ा हो।

"आप ही कहिये।" मैंने उत्तर दिया, "वह बहुत नाराज़ होंगी।"

हम मेज़ पर से उठ खड़े हुए। मैं उत्तेजित हो रही थी और मेरे अंग-अंग कांप रहे थे। हम लिफ्ट में बैठकर पहली मंजिल पर पहुंचे और उसके बाद गैलरी में। रास्ते में उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया और उसे वह झुलाते हुए

चलते रहे।

"क्या बयालीस बरस की उम्र तुम्हें बहुत मालूम होती है ?" उन्होंने पूछा।

"नहीं," मैंने जल्दी-से और शायद कुछ उत्सुकतापूर्वक उत्तर दिया, "मुझे जवान आदमी पसंद नहीं हैं।"

"यों कहो कि अबतक तुम्हारा किसीसे वास्ता ही नहीं पड़ा है।" वह बोले।

हम कमरे के दरवाजे के पास जा पहुंचे। वह ठिठककर बोले, "मैं सोचता हूं कि उनसे अकेले में ही बात करना ठीक होगा। अच्छा, यह बताओ तुम्हें मुझसे जल्दी शादी करने में कोई ऐतराज तो नहीं है ? तुम यह तो नहीं चाहतीं कि तुम्हारे लिए दुलहिनवाले नये कपड़े मंगाये जायं या ऐसी ही दूसरी वाहियात बातें की जायं। बस मैजिस्ट्रेट के पास जाकर शादी का लाइसेन्स ले लेंगे और फिर कार में बैठकर वेनिस या जहां भी तुम चाहोगी चल देंगे।"

"गिरजाघर में नहीं ?" मैंने पूछा, "न सफेद कपड़े, न दुलहिन की सहेलियां, न घंटे, न गाने-बजानेवाले लड़के ? यह कुछ भी नहीं होगा ? फिर, आपके मित्रों और सम्बन्धियों का क्या होगा ?"

"इस तरह की शादी तो मेरी एक बार हो चुकी है," वह बोले—"हां, तो अब इस बारे में तुम्हारी क्या राय है ?"

"ठीक है, ऐसा ही कीजिये। ये सब बातें तो मैं तबके लिए सोच रही थी जब शादी घर जाकर होती। क्या जरूरत है गिरजाघर की, या भीड़भाड़ की, या इस तरह की दूसरी बातों की ?"

मैं उनकी ओर देखकर मुस्कराई और अपने मुख पर प्रसन्नता का भाव ले आई।

उन्होंने हैंडिल घुमाकर दरवाजा खोला और हम कमरे में पहुंच गये।

"अच्छा तो तुम आ गई !" श्रीमती हॉपर ने बिना देखे हुए ही कहा, "लेकिन अबतक तुम कर क्या रही थीं ? मैंने तीन बार ऑफिस में फोन किया और तीनों बार यही मालूम हुआ कि तुम वहां नहीं पहुंचीं।"

सहसा मेरी इच्छा हुई कि ठहाका मारकर हँसूं; फिर जी चाहा कि जोर-जोर-से रोऊं। मेरी टूंडी के नीचे पेट में दर्द होने लगा और क्षणभर को मैंने यह

चाहा कि यह सब कुछ न हुआ होता और मैं कहीं अकेली सीटी बजाती निर्द्वन्द्व घूमती होती ।

"इसमें सारा अपराध मेरा है," उन्होंने बैठक में जाकर अपने पीछे से दरवाजा बन्द करते हुए कहा । श्रीमती हॉपर की आश्चर्य-मिश्रित चीख मुझे सुनाई दी ।

उसके बाद मैं अपने सोनेवाले कमरे में चली गई और खुली हुई खिड़की के पास बैठ गई ।

कमरे की दीवारें मोटी-मोटी थीं और मुझे उनकी आवाज सुनाई नहीं दे रही थी । मैं समझ नहीं पा रही थी कि वह श्रीमती हॉपर से क्या कह रहे होंगे; किस तरह उन्होंने अपने शब्दों का जाल बुना होगा । शायद उन्होंने कहा होगा, "क्या बताऊं, श्रीमती हॉपर ! पहले दिन आंखें चार होते ही मैं उससे प्रेम करने लगा था और इस बीच हम एक-दूसरे-से रोजाना मिलते रहे हैं ।" मैं आप-ही-आप मुस्करा उठी और सोचने लगी कि सचमुच कितनी अद्भुत घटना है यह ! ओह, कितनी सुखी होने जा रही हूं मैं ! जिसे मैं प्रेम करती हूं, उसीसे मेरा ब्याह होगा, मैं श्रीमती द विन्तर बनूंगी । श्रीमती द विन्तर ! कितने हर्ष की बात है यह ! फिर भी इस तरह ठूंडी के नीचे दर्द होने देना मूर्खता नहीं तो और क्या है । मैं डरपोक हूं, तभी तो यहां बैठी हुई इस तरह प्रतीक्षा कर रही हूं—जैसे कोई डाक्टर के कमरे के बराबर बैठकर प्रतीक्षा करता है । अच्छा होता—निश्चय ही अधिक स्वाभाविक होता—यदि हम हाथ-में-हाथ पकड़े एक-दूसरे से हँसते-बोलते बैठक में जाते और श्री द विन्तर कहते, "हमें एक-दूसरे से बहुत प्रेम हो गया था और अब हम शादी करने जा रहे हैं ।"

प्रेम ! उन्होंने तो अभी एक बार भी प्रेम की चर्चा नहीं की । लेकिन इसके लिए समय ही कहां मिला ! सारी बातें तो हड़बड़ी में नाश्ते की मेज पर बैठे-बैठे ही हुईं । उन्होंने प्रेम का राग नहीं अलापा, सीधे कह दिया कि मैं तुमसे ब्याह करूंगा । कितनी मौलिकता है इसमें ! कितना संक्षिप्त और निश्चित प्रस्ताव ! ऐसे ही प्रस्ताव ज्यादा अच्छे और सच्चे होते हैं । उनमें उन नवयुवकोंवाली बात नहीं होती, जो बकवास तो बहुत करते हैं, लेकिन जिनमें सच्चाई आधी भी नहीं होती,

जो कभी कुछ कहते हैं, कभी कुछ और जो आवेश में आकर असम्भव-से-असम्भव शपथें ले डालते हैं। यह प्रस्ताव उससे भी भिन्न था जो स्वयं श्री द विन्तर ने पहली बार रेबेका से किया होगा...लेकिन मुझे यह बात नहीं सोचनी चाहिए, इस तरह के विचार मेरे मन में नहीं उठने चाहिए। ऐसे विचार तो शैतान की प्रेरणा से उत्पन्न होते हैं। ओ शैतान, तू दूर ही रह मुझसे! मैं ऐसी बातें कभी नहीं सोचूंगी—कभी नहीं...कभी नहीं। वह मुझसे प्रेम करते हैं, मुझे मैन्दरले दिखाना चाहते हैं। पता नहीं उनकी बातचीत अभी पूरी हुई या नहीं। पता नहीं वह मुझे भी बुलायेंगे या नहीं।

वह कविता की किताब मेरे बिस्तर के पास पड़ी थी। जम्हाई लेती हुई मैं उधर बढ़ी और मैंने किताब उठा ली। मेरा पैर लैम्प के तार में उलझ गया और मैं गिर पड़ी। किताब मेरे हाथ से छूटकर फ़र्श पर जा पड़ी। उसका प्रथम पृष्ठ, जिसपर 'मैक्स को रेबेका की भेंट' लिखा था, अचानक खुल गया। वह मर चुकी है और हमें मरों की बातें नहीं सोचनी चाहिए। वे तो शान्ति के साथ अपनी-अपनी समाधि में सोये रहते हैं, जिनके ऊपर घास लहलहाती रहती है। लेकिन इसकी लिपि अब भी कितनी सजीव, कितनी प्रेरणामयी है! ऐसा लगता है मानो ये शब्द कल ही लिखे गये हों। मैंने दराज में से नाखून काटने की कैंची निकाली और एक अपराधी की तरह पीछे फिर-कर देखते हुए मैंने उस पृष्ठ को काट डाला। अब किताब बिल्कुल सफ़ेद और साफ दीख रही थी। उस पृष्ठ को टुकड़े-टुकड़े करके मैंने रद्दी की टोकरी में डाल दिया और एक बार फिर मैं खिड़की के पास जाकर बैठ गई। लेकिन मैं अपना ध्यान उन फटे हुए टुकड़ों पर से हटा न सकी और क्षणभर बाद ही मैंने उठकर फिर टोकरी में झांका। काली और गहरी स्याही उन छिन्न-भिन्न टुकड़ों पर अब भी साफ-साफ चमक रही थी और वह लिखावट नष्ट नहीं हुई थी। मुझसे रहा न गया और मैंने माचिस का डिब्बा उठाकर उन टुकड़ों में आग लगा दी। लपट बड़ी सुन्दर लग रही थी, उसकी लपेट में कागज के टुकड़े काले पड़ते जा रहे थे और उनके किनारे ऐंठते जा रहे थे। अब उस तिरछी लिपि को पहचानना असम्भव हो गया था और वे कागज के टुकड़े

फड़फड़ा-फड़फड़ाकर भूरे रंग की राख बनते जा रहे थे। 'आर' शब्द की सबसे अन्त में बारी आई, लपट में बल खाता हुआ वह क्षणभर के लिए पहले से भी बड़ा दिखाई दिया और फिर ढेर होगया। लपट ने उसे निगल लिया और वह राख ही नहीं बल्कि धूल बन गया। मैं उठी और हाथ धोनेवाले बरतन के पास जाकर मैंने हाथ धो डाले। अब मैं अपने-आपको पहले से बहुत अच्छा महसूस कर रही थी। मुझे वैसी ही प्रसन्नता, वैसी ही नवीनता की अनुभूति हो रही थी जैसी दीवार पर नये वर्ष का कैलेन्डर टांगते समय हुआ करती है। तभी दरवाजा खोलकर श्री द विन्तर ने कमरे में प्रवेश किया और कहा, "सबकुछ ठीक हो गया। पहले-पहल तो उन्हें इतना धक्का लगा कि उनके मुंह से बोल भी नहीं निकला, लेकिन अब वह कुछ-कुछ सम्हल रही हैं। मैं नीचे ऑफिस में जाकर अभी इस बात का इन्तजाम किये देता हूं कि उन्हें पहली ही गाड़ी मिल जाय। क्षणभर के लिए तो उनका जाने का विचार डगमगा गया था। शायद वह शादी में गवाह बनना चाहती थीं। लेकिन मैं डटा रहा। अब तुम जाकर उनसे बातचीत कर लो।"

यह कहकर उन्होंने न तो किसी प्रकार की प्रसन्नता प्रकट की और न ही मेरी बांह में बांह डालकर वह मुझे अपने साथ बैठक में ले गये। उन्होंने मुस-कराकर मेरी तरफ हाथ हिलाया और अकेले ही वह नीचे चले गये। मैं कुछ अनिश्चित-सी, लेकिन आत्म-सम्मान की भावना लिये श्रीमती हॉपर के पास गई—ठीक वैसे ही जैसे कोई नौकरानी किसी मित्र के द्वारा अपना त्यागपत्र भिजवा चुकने के बाद अपनी मालकिन के पास जाती है। वह खिड़की के पास खड़ी सिगरेट पी रही थीं—एक भोंड़ी, नाटी आकृति जिसे अब मैं कभी नहीं देखूंगी। उनका कोट उनके भारी वक्ष पर कसा हुआ था और उनका हास्यास्पद टोप सिर पर एक तरफ बुरी तरह से झुका हुआ था। मुझे देखकर वह बोलीं, "तो यह गुल खिल रहा था! अच्छा, यह बताओ कि यह सब हुआ कैसे?" उनकी आवाज एकदम कड़ी और रूखी थी। निश्चय ही श्री द विन्तर से बातें करते समय उनका स्वर ऐसा नहीं रहा होगा।

मेरी समझ में नहीं आया कि क्या उत्तर दूं। उनका मुस्कराना मुझे अच्छा

नहीं लग रहा था ।

"तो मेरी बीमारी तुम्हारे लिए वरदान बन गई !" उन्होंने फिर कहा, "अब मेरी समझ में आरहा है कि उन दिनों तुम इतनी खोई-खोई क्यों रहती थीं । टेनिस सीखने का भी तुमने खूब बहाना बनाया ! लेकिन तुम्हें मुझे बता देना चाहिए था।"

"मुझे बड़ा खेद है," मैंने उत्तर दिया ।

उन्होंने कुतूहल के साथ मुझे नीचे से ऊपर तक देखा और कहा, "वह कह रहे थे कि दो-चार दिन में ही वह तुमसे शादी कर लेना चाहते हैं । यह भी तुम्हारे लिए सौभाग्य की बात है कि तुम्हारा कोई सगा-सम्बन्धी नहीं, जो तुमसे कुछ पूछताछ करे । खैर, मुझे अब इससे कोई सरोकार नहीं, मैं तो हाथ धो चुकी । मुझे तो बस इस बात का खयाल आ रहा है कि उनके मित्र भला क्या सोचेंगे । लेकिन इससे भी मुझे क्या वास्ता । यह सोचना तो उनका काम है । जानती हो वह तुमसे कितने बड़े हैं ?"

"वह केवल बयालीस बरस के हैं ।" मैंने कहा, "और मैं भी तो काफी बड़ी हो गई हूं ।"

उन्होंने हँसते हुए सिगरेट की राख फर्श पर झटक दी और कहा, "हां, तुम सचमुच बड़ी होगई हो ।" और फिर कुछ देर तक वह मुझे इस तरह देखती रहीं जैसे पहले कभी नहीं देखा था । उनकी आंखों में कुछ ढूंढ निकालने की भावना थी, अप्रसन्नता की झलक थी ।

"अच्छा, एक बात बताओ," उन्होंने घनिष्ठता दिखाते हुए कहा, जैसे एक सहेली दूसरी सहेली से पूछ रही हो, "तुम ऐसी बातें तो नहीं करती रही हो, जो तुम्हें नहीं करनी चाहिए थीं ?"

"मैं आपका मतलब नहीं समझी।" मैंने उत्तर दिया ।

उन्होंने हँसकर अपने कंधे हिलाये, "खैर कोई बात नहीं । अच्छा तो मुझे अब पेरिस अकेले ही जाना होगा और तबतक के लिए तुम्हें यहीं छोड़ देना होगा जबतक कि तुम्हारे प्रेमी को शादी का सर्टिफिकेट न मिल जाय । उन्होंने मुझे शादी के लिए निमंत्रित नहीं किया है ।"

"मेरे खयाल में वह किसीको भी निमन्त्रित करना नहीं चाहते । और

फिर उस समय तक तो आप जहाज में भी चढ़ चुकी होंगी।" मैंने उत्तर दिया।

उन्होंने शृंगार-पेटी निकालकर अपनी नाक पर पाउडर लगाते-लगाते कहा, "मैं समझती हूं कि तुम जो कुछ भी करने जा रही हो, उसे तुमने अपनी ओर से खूब अच्छी तरह से सोच-समझ लिया है। कुछ भी हो, बात बड़ी जल्दी में तै हुई है, कुछ हफ्तों में ही। क्यों है न ठीक ? मैं समझती हूं कि वह इतने सीधे-सादे नहीं हैं और तुम्हें अपनेको उनकी इच्छा के अनुसार ढालना होगा। अभी तक तुम एक अभिभावक की छाया में रही हो, यह तुम अच्छी तरह जानती हो और मैंने तुम्हें कभी गलत रास्ते पर नहीं चलने दिया। अब तुम्हें मैन्दरले की स्वामिनी की तरह व्यवहार करना पड़ेगा। सच पूछो तो मुझे इस बात का विश्वास नहीं है कि तुम यह सबकुछ कर सकोगी।"

"तुम्हें अनुभव नहीं है।" वह कहती रहीं, "तुम वहां के तौर-तरीकों के बारे में कुछ भी नहीं जानतीं। तुम जब मेरे साथ ब्रिज खेलने आनेवाले दो-चार मित्रों को चाय पिलाते समय दो वाक्य एक साथ नहीं बोल पातीं तब फिर उनके मित्रों से कैसे बातें करोगी, समझ में नहीं आता। रेबेका के रहते मैन्दरले में जो पार्टियां हुआ करती थीं, उनकी चर्चा बच्चे-बच्चे की जबान पर है। वैसे तो उन्होंने सब बातें तुम्हें बता ही दी होंगी।"

मैं कुछ कसमसाई, लेकिन ईश्वर की कृपा से वह मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही बोलती रहीं, "ख़ैर, सुखी होना तो सभी चाहते हैं और मैं स्वीकार करती हूं कि वह एक बहुत आकर्षक व्यक्ति हैं। लेकिन मैं समझती हूं और मुझे इसका अफसोस है कि तुम अपने जीवन की एक बहुत भारी भूल कर रही हो, ऐसी भूल जिसके लिए तुम्हें बड़ा पछताना पड़ेगा।"

पाउडर का डिब्बा नीचे रखकर उन्होंने अपने कंधे के ऊपर से मुझे देखा। शायद उस समय वह सहृदयता से बातें कर रही थीं, लेकिन मुझे उसकी आवश्यकता नहीं थी। मैंने कुछ भी जवाब नहीं दिया। मैं प्रसन्न थी कि वह जा रही हैं और उन्हें अब कभी नहीं देख पाऊंगी। मुझे इस बात का अफ़सोस हो रहा था कि इतने दिनों तक मैंने उनकी नौकरी की, उनका रुपया लिया और उनके साथ एक गूंगी छाया की तरह लगी रही। यह ठीक है कि मैं अनुभवहीन

हूं, मूर्ख हूं, शर्मीली हूं और छोटी उम्र की हूं, लेकिन श्रीमती हॉपर को ये सब बातें मुझसे कहनी नहीं चाहिए थीं। मेरे खयाल में उन्होंने यह सब जानबूझकर ईर्ष्या के कारण कही हैं, क्योंकि उन्हें यह शादी नापसन्द है और उन्होंने मेरा जो मूल्य लगाया था उसमें उन्हें धोखा हुआ है।

जबसे मैंने उस पन्ने को जलाया था, मुझमें एक विश्वास की भावना उत्पन्न हो गई थी। अतीत अब हमारे लिए समाप्त हो चुका था और हम नये सिरे से जीवन आरम्भ करने जा रहे थे। रद्दी की टोकरी की राख की तरह ही अतीत भी मानो हवा के झोंके में उड़ गया था। अब मैं श्रीमती द विन्तर बननेवाली थी, अब मुझे मैन्दरले में जाकर रहना था।

श्रीमती हॉपर जल्दी ही चली जायंगी और हम दोनों खानेवाले कमरे में एक साथ, एक ही मेज पर, भोजन करते हुए अपने भविष्य के बारे में बातें करेंगे। हम एक महान रोमांच के कगारे पर खड़े थे। शायद श्रीमती हॉपर के चले जाने के बाद वह मुझसे प्रेम की बातें करेंगे और कहेंगे कि मुझे पाकर वह कितने सुखी हैं। अभी तक तो इन बातों के लिए अवसर नहीं मिला है। और जो बातें आसानी से नहीं कही जा सकतीं उनके लिए प्रतीक्षा तो करनी ही पड़ती है। मैंने ऊपर की ओर दृष्टि उठाई तो श्रीमती हॉपर की परछाईं शीशे में दिखाई दी। वह मुझे ध्यान से देख रही थीं और धीरे-धीरे मुस्करा रही थीं। उनकी उस मुस्कराहट में सहनशीलता की झलक थी और मैं समझी कि अब वह कुछ सहृदय बनकर मेरा हाथ अपने हाथ में लेंगी और मुझे बधाई देंगी, मुझे उत्साहित करेंगी और कहेंगी कि सब कुछ भला ही होगा। लेकिन वह मुस्कराती रहीं और टोप के नीचे से निकले हुए एक अकेले बाल को उमेठती रहीं।

"यह तो तुम जानती ही होगी कि वह तुमसे शादी क्यों कर रहे हैं।" वह बोलीं, "तुम इस बहकावे में तो नहीं हो कि वह तुमसे प्रेम करते हैं। असली बात यह है कि ख़ाली-ख़ाली घर से वह इतने घबरा उठे हैं कि उनका दिमाग ही फिर गया है। तुम्हारे कमरे में आने से पहले उन्होंने स्वयं यह स्वीकार किया था। उनके लिए अब मैन्दरले में अकेला रहना असम्भव हो गया है।"

: ८ :

मई के महीने में हम मैन्दरले पहुंचे। मुझे याद है कि जब हम लन्दन से सुबह के समय मोटर में चले थे तब मूसलाधार वर्षा हो रही थी। मैन्दरले पहुंचते-पहुंचते पांच बज गये थे और चाय का समय हो गया था।

उस समय की अपनी सूरत मुझे अब भी याद है। ब्याह हुए अभी सिर्फ़ सात सप्ताह बीते थे, लेकिन मैंने सदा की तरह ऊलजलूल कपड़े पहन रखे थे—गहरे बादामी रंग का पतला फ्रॉक, गर्दन के चारों तरफ़ लिपटा हुआ छोटा-सा फ़र और सबसे ऊपर एक ढीला-ढाला बरसाती कोट, जो बहुत लम्बा था और मेरे टखनों तक लटक रहा था। मैं समझती हूं कि उसे पहनकर मैं थोड़ी लम्बी दिखाई दे रही थी। मेरे हाथों में दस्ताने थे और मैंने चमड़े का एक बड़ा थैला ले रखा था।

जब हम लन्दन से चले तब मैक्सिम ने कहा, "यह बारिश लन्दन में ही हो रही है। जब हम मैन्दरले पहुंचेंगे तब चमकता हुआ सूरज तुम्हारा स्वागत कर रहा होगा। उनकी बात ठीक निकली, क्योंकि जैसे ही हम ऐक्सेटर से आगे बढ़े, बादल पीछे रह गये और हमारे सिर के ऊपर नीला आकाश चमकने लगा।

सूरज को देखकर मैं प्रसन्न हो उठी, क्योंकि मैं भी अंध-विश्वासियों की तरह वर्षा को अशुभ का सूचक मानती थी, इसीलिए लन्दन में बादलों से भरे हुए आकाश को देखकर मैं मौन हो गई थी।

"अब तो पहले से अच्छा महसूस कर रही हो न ?" मैक्सिम ने पूछा। मैं उनकी ओर देखकर मुस्करा दी और उनका हाथ अपने हाथ में लेकर सोचने लगी कि उनके लिए तो अपने घर लौटना, कमरों में घूमना, चिट्ठियां उठाकर पढ़ना, चाय लाने के लिए घंटी बजाना—ये सभी बातें बहुत ही स्वाभाविक और सरल हैं, इसलिए पता नहीं वह मेरी घबराहट का अनुमान लगा पा रहे होंगे या नहीं।

तभी वह बोले—"चिन्ता मत करो, अब हम जल्दी ही पहुंचनेवाले हैं। ऐसा लगता है कि तुम्हें चाय की जरूरत है।" यह कहते-कहते उन्होंने मेरा हाथ छोड़ दिया, क्योंकि हम सड़क के एक मोड़ पर पहुंच गये थे और कार की चाल धीमी करनी थी। उनकी इस बात से मैं जान गई कि मेरी चुप्पी का कारण

वह थकावट समझ रहे हैं और यह नहीं सोच पा रहे हैं कि जितनी ही मैं मैन्दरले देखने को उत्सुक थी, उतनी ही वहां पहुंचते हुए घबरा रही थी। अब जबकि वह क्षण बिल्कुल पास आ गया था, मैं चाह रही थी कि वह किसी तरह टल जाय। हम कहीं रास्ते में ही किसी सराय में ठहर जायं और आग की किसी पराई अंगीठी के सामने बैठे हुए काफी पियें। या फिर मैं अपने पति के प्रेम में लीन नई दुलहिन बनी, सड़क पर ही सफर करती रहूं। इस तरह पहली बार ही मैन्दरले में मैक्सिम द विन्तर की पत्नी के रूप में जाना मुझे कुछ अजीब-सा लग रहा था।

"बस दो मील और रह गये हैं", मैक्सिम ने कहा," वह देखो पहाड़ी पर वृक्षों की कतार दिखाई दे रही है। वह घाटी की तरफ झुकती चली गई है और उसके आगे समुद्र है। बस, उन्हीं वृक्षों के बीच में मैन्दरले है।"

मैंने जबर्दस्ती मुस्कराने की कोशिश की और उनकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया, क्योंकि अब मेरे मन पर एक आतंक-सा छाता जा रहा था और मैं एक असहनीय बेचैनी का अनुभव कर रही थी। मेरी प्रसन्नता, उत्तेजना और गर्व की भावना लुप्त हो चुकी थी और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं उस बच्ची की तरह हूं, जिसे पहले-पहल स्कूल ले जाया जाता है या उस सीखतड़ नौकरानी की तरह हूं, जो पहले-पहल घर छोड़कर नौकरी की तलाश में आई हो। शादी के बाद के इन सात सप्ताहों में मैंने अपने ऊपर जो थोड़ा-बहुत नियंत्रण रखने का अभ्यास किया था, वह मानो अब हवा में चीथड़े की तरह उड़ रहा था।

"मुझे अब यह बरसाती उतार देनी चाहिए।" उन्होंने मेरी ओर देखते हुए कहा, "यहां तो बिल्कुल भी बारिश नहीं हुई है। और हां, अपना यह बेढंगा फ़र जरा सीधा कर लो। क्या बताऊं, हड़बड़ी में मैं तुम्हें यहां ऐसे ही ले आया। लंदन से तुम्हारे लिए बहुत-से कपड़े ख़रीद लेने चाहिए थे।"

"ऊंह, मुझे इसकी परवा नहीं, बशर्ते कि आपको बुरा न लगता हो।"

"बहुत-सी औरतों को तो बस कपड़ों की ही धुन रहती है।" उन्होंने किसी ध्यान में डूबे-डूबे कहा और एक कोने के मोड़ को पारकर हम चौराहे पर आ गये, जहां से एक ऊंची दीवार शुरू हो गई।

"लो हम आ पहुंचे," उन्होंने कहा। उनकी आवाज़ में एक प्रकार की उत्तेजना थी। मैंने अपने दोनों हाथों से कार की चमड़े की सीट पकड़ ली।

सड़क मुड़ गई थी और बाईं ओर सामने लोहे के दो बड़े फाटक दिखाई दे रहे थे। वे बिल्कुल खुले हुए थे और उनके सामने लम्बा रास्ता चला गया था। जब हम उस रास्ते पर चल रहे थे, मुझे घर की अंधेरी खिड़की से नौकरों के कुछ चेहरे झांकते हुए दिखाई दिये और एक बच्चा उत्सुकता के साथ घूरता हुआ मोटर के पीछे से भागा। मैं सीट के पीछे को झुक गई और मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर-से धड़कने लगा। मैं खूब अच्छी तरह से जानती थी कि वे लोग मुझे इस तरह क्यों घूर रहे हैं। वे देखना चाहते थे कि मैं कैसी हूं। मैं कल्पना करने लगी कि वे एक-दूसरे से बड़ी उत्तेजना के साथ बातें करेंगे और रसोईघर में हँस-हँसकर कहेंगे, "क्या कहें, उनके टोप की झलक भर दीख सकी, मुंह तो उन्होंने देखने ही नहीं दिया। खैर कोई बात नहीं, कल सबकुछ मालूम हो जायगा।"

मेरी यह दशा शायद उनसे भी छिपी न रही। उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर चूम लिया और हँसते हुए कहा, "अगर तुम्हें इन लोगों में कुछ उत्सुकता दिखाई दे तो परवा मत करना, क्योंकि यह बात तो सभी जानना चाहेंगे कि तुम कैसी हो। हफ्तों से वे इसी बात की चर्चा करते रहे होंगे। और हां, मकान की देखभाल के लिए भी तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं है। श्रीमती डैन्वर्स सारे काम कर लेती है। तुम सब-कुछ उसीपर छोड़ देना। आरम्भ में वह तुमसे शायद कुछ खिंची-खिंची-सी रहेगी, क्योंकि उसका स्वभाव बड़ा ही असाधारण है, पर तुम इस बात की चिन्ता मत करना। उसका ढंग ही कुछ ऐसा है। उन झाड़ियों को देखो, जब उनमें फूल खिलते हैं तब वे एक नीले रंग की दीवार-सी मालूम होने लगती हैं।"

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया, क्योंकि उस समय मुझे अपना वह व्यक्तित्व याद आ रहा था, जब मैंने गांव की दुकान से वह चित्रित पोस्टकार्ड खरीदा था और प्रसन्न होते हुए सोचा था—"इसे मैं अपने एलबम में लगाऊंगी। मैन्दरले! मैन्दरले कैसा सुन्दर नाम है यह।" और आज उसीकी मैं स्वामिनी हूं, मैन्दरले मेरा घर है।

हमारे भीतर आ जाने के बाद फाटक एक-दूसरे से टकराते हुए बन्द हो गये और धूल से भरी हुई सड़क आंखों से ओझल हो गई। सामने का मार्ग सांप की तरह बल खाता हुआ चला गया था और कहीं-कहीं एक पगडंडी से अधिक चौड़ा नहीं था। उसके दोनों ओर के वृक्षों की शाखाओं ने आपस में मिलकर हमारे सिर के ऊपर एक कुंज-सा बना लिया था और उनकी पत्तियां इतनी घनी थीं कि दोपहर के समय भी सूर्य की किरणें उनमें से छनकर नहीं आ पा रही थीं।

रास्ता जैसे खत्म नहीं हो रहा था। मैं थक गई थी और हर बार सीट पर आगे की तरफ झुककर यही सोचती थी कि अब के मोड़ के बाद मैन्दरले दिखाई देगा। लेकिन हर बार मुझे निराशा ही होती थी। न कोई घर दिखाई देता था, न कोई खेत, न कोई विशाल मनोरम उपवन। चारों ओर केवल निस्तब्धता थी और थे घने-घने वृक्ष। चलते-चलते इतनी देर हो गई थी कि बाहर के फाटक की याद भर रह गई थी और बाहर की सड़क किसी बीते हुए युग की बात मालूम पड़ती थी।

अचानक वह अंधेरा रास्ता कुछ साफ-सा होता दिखाई दिया। बीच में आकाश का कुछ भाग चमक रहा था। क्षणभर बाद ही वृक्षों की सघनता कम हो गई और झाड़ियों का तो जैसे अस्तित्व ही मिट गया। हमारे दोनों ओर हमारे से भी ऊंची गहरे लाल रंग की दीवारें थीं। अब हम सदाबहार के पौधों के बीच में थे। उन्हें देखकर मैं चकित रह गई, उनके लाल फूल एक के ऊपर एक इस तरह लदे हुए थे कि न तो पत्तियां दिखाई दे रही थीं, न टहनियां। बस चारों ओर लाल-ही-लाल की छटा छाई हुई थी।

मैंने मैक्सिम की ओर देखा। वह मुस्करा रहे थे। "पसन्द आये ?" उन्होंने पूछा।

"हां," मैंने कुछ-कुछ हांफते हुए कहा, क्योंकि मैं समझ नहीं पा रही थी कि मैं सच बोल रही हूं या झूठ। सदाबहार को मैंने सदा ही सुव्यवस्थित क्यारियों में लगा देखा था, लेकिन यहां तो वे दैत्यों की तरह आकाश से बातें कर रहे थे। उनकी पूरी फौज-की-फौज खड़ी थी। वे इतने सुन्दर थे, इतने

शक्तिशाली थे कि पौधे-से दिखाई ही नहीं देते थे।

अब हम मकान से अधिक दूर नहीं थे। मार्ग चौड़ा हो गया था और लाल गहरे रंग की दीवार अभी हमें इधर-उधर से घेरे हुए थी। इसके बाद अन्तिम मोड़ आया और मैन्दरले सामने दिखाई देने लगा। मैन्दरले ! हां, वह मैन्दरले ही था—मेरे चित्रित पोस्टकार्ड का मैन्दरले—सुन्दर, शोभायुक्त, इतना मनो-हर जितना कि मैंने सपने में भी नहीं सोचा था। मोटर पत्थर की चौड़ी सीढ़ियों के पास खुले दरवाजे के पास जाकर रुक गई और मुझे एक झिलमिलीदार खिड़की में से दिखाई दिया कि हॉल आदमियों से खचाखच भरा हुआ है। मैक्सिम ने भी देखा और वह बुदबुदाये—"कैसी बेवकूफ औरत है ! उसे खूब अच्छी तरह मालूम है कि मैं ये सब बातें नहीं चाहता था।" यह कहते हुए उन्होंने एक झटके के साथ ब्रेक लगा दिये।

"क्या बात है ?" मैंने पूछा, "ये सब लोग कौन हैं ?"

"क्या बताऊं ! अब तो तुम्हें इन लोगों का सामना करना ही पड़ेगा।" उन्होंने कुछ चिड़चिड़ाहट के साथ कहा, "श्रीमती डैन्वर्स ने मकान और रिया-सत के सब नौकरों को हमारे स्वागत के लिए इकट्ठा कर लिया है। खैर, तुम्हें कुछ करना नहीं पड़ेगा, मैं खुद सब कर लूंगा।"

कुछ अनमनी, अस्वस्थ और थकी-थकी-सी मैंने मोटर के दरवाजे के हैंडिल की ओर हाथ बढ़ाया, लेकिन तभी बटलर सीढ़ियों से उतरकर नीचे आगया और उसने दरवाजा खोल दिया। उसके पीछे-पीछे एक बैरा भी था।

बटलर बूढ़ा था और उसके मुख से उदारता टपक रही थी। मैंने मुस्करा-कर उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया, लेकिन उसने शायद देखा नहीं, क्योंकि हाथ मिलाने की बजाय वह मेरी लोई और शृंगार-पेटी उठाकर मैक्सिम की तरफ़ मुड़ गया।

"लो, हम आ पहुंचे, फ्रिथ !" मैक्सिम ने अपने दस्ताने उतारते हुए कहा, "जब हम लन्दन से चले थे तब वारिश हो रही थी। यहां तो नहीं हुई है शायद ! सब अच्छे हैं न ?"

"जी हुजूर ! यहां बारिश नहीं हुई। करीब-करीब पूरा महीना ही सूखा

बीता है। आपको घर आया देखकर बड़ी खुशी हो रही है। अच्छे तो थे सरकार ? और मैडम भी ?"

"हां-हां, हम दोनों ठीक हैं, धन्यवाद फ्रिथ ! सफ़र से थक गये हैं और चाय पीना चाहते हैं। यह सब झमेला क्यों किया गया है ? मैं तो नहीं चाहता था !" मैक्सिम ने हॉल की तरफ संकेत करते हुए कहा।

"श्रीमती डैन्वर्स की यही आज्ञा थी।" उस आदमी ने भावहीन मुद्रा से उत्तर दिया।

"मुझे इसका पहले ही अनुमान कर लेना चाहिए था।" मैक्सिम मेरी ओर मुंह करके बोले, "आओ चलो, इनसब बातों में अधिक समय नहीं लगेगा और उसके बाद तुम्हारी चाय आ जायगी।"

हम दोनों साथ-साथ सीढ़ियों पर चढ़े। फ्रिथ और बैरा हमारे पीछे-पीछे हमारी लोई और बरसाती लिये चल रहे थे। मैं नाभी के नीचे हल्का-हल्का दर्द महसूस करने लगी थी और मेरा हलक सूख रहा था।

अब भी आंखें बन्द करने पर मुझे उस समय का दृश्य दिखाई देने लगता है। उस आलीशान सजे हुए हॉल में, जहां आदमियों की भीड़ जमा थी और हर आदमी मुंह बाये मुझे उत्सुकता से घूर रहा था, मैं पतली-दुबली, ऊंचा फ्रॉक पहने और चिपचिपाते हाथों में दस्ताने पकड़े कैसी अजीब-सी दिखाई दे रही थी ! आदमियों की उस भीड़ में से एक लम्बी-पतली सूरत मेरी ओर बढ़ी, गहरे काले रंग के कपड़े, गाल की हड्डियां ऊंची और उभरी हुई, आंखें गढ़े में धंसी हुई। ऐसा लग रहा था जैसे किसी कंकाल पर सफेद खोपड़ी टांग दी गई हो। वह मेरी ओर बढ़ी और मैंने मन-ही-मन में उसकी शान और धैर्य पर ईर्ष्या करते हुए उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया और जब उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लिया तब मैंने ऐसा अनुभव किया जैसे एक भारी थुलथुली मुर्दे-जैसी ठंडी चीज मेरे हाथ में आ गई हो। उसका हाथ मेरे हाथ में बिल्कुल निर्जीव पड़ा था।

"यह श्रीमती डैन्वर्स हैं।" मैक्सिम ने कहा और फिर उस स्त्री ने बोलना शुरू किया। उसका मुर्दे-जैसा हाथ अब भी मेरे हाथ में पड़ा हुआ था और

उसकी धंसी हुई आंखें बराबर मेरी आंखों को देखे जा रही थीं, यहांतक कि उससे दृष्टि बचाने के लिए मुझे ही अपनी आंखें हटानी पड़ीं। लेकिन जैसे ही मैंने ऐसा किया उसका हाथ मेरे हाथ में हिला, मानो उसमें जान आ गई हो। सहसा मुझे लज्जा महसूस होने लगी।

उसके शब्द तो मुझे याद नहीं हैं, किन्तु इतना अवश्य स्मरण है कि उसने दस्तूर के मुताबिक अपने और दूसरे कर्मचारियों की ओर से मेरे मैन्दरले आने के उपलक्ष्य में स्वागत के कुछ शब्द कहे। उसकी आवाज उतनी ही निर्जीव और ठण्डी थी जितने कि उसके हाथ। भाषण समाप्त होने पर वह रुकी—मानो मेरे उत्तर की प्रतीक्षा कर रही हो—और मुझे अच्छी तरह से याद है कि जब मैंने लज्जा से लाल होकर अटकते हुए धन्यवाद के कुछ शब्द कहे तब घबराहट में मेरे दस्ताने नीचे गिर गये। उन्हें उठाने के लिए वह फौरन झुकी और मैंने देखा कि उन दस्तानों को मुझे पकड़ाते समय उसके होंठों पर एक घृणाभरी मुस्कान खेल रही थी, जिसे देखकर मुझे यह समझने में देर न लगी कि वह मुझे फूहड़ समझने लगी है। उसके चेहरे पर कुछ ऐसा भाव था कि मैं मन में बेचैनी अनुभव करने लगी और उसके अपनी जगह पर वापस चले जाने के बाद भी मुझे ऐसा लगता रहा मानो वह काली देह सबसे अलग, अकेली खड़ी है और उसकी आंखें मेरे ऊपर जमी हुई हैं।

तभी मैक्सिम ने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया और बिना किसी झिझक या कठिनाई के उन्होंने धन्यवाद के कुछ शब्द कहे। इसके बाद वह फौरन ही मुझे लेकर लाइब्रेरी में चाय पीने चले गये। उन्होंने दरवाजा बन्द कर लिया और हम दोनों एक बार फिर एकान्त में हो गये।

अंगीठी के पास से बड़े कानों और लम्बे बालोंवाले दो कुत्ते हमारा स्वागत करने आये। पहले वे मैक्सिम के ऊपर पंजे रखकर खड़े हुए और उसके बाद कुछ अविश्वास के साथ वे मेरे पास आये। उनमें से एक मां थी, जो एक आंख से अंधी थी। वह बहुत जल्दी ही मेरे पास से हटकर अंगीठी की ओर चली गई, लेकिन छोटे जैस्पर ने मेरे हाथ पर अपनी नाक और मेरे घुटनों पर अपनी टोड़ी रख दी। उसकी गहरी आंखों में अर्थ भरा हुआ था और जब मैंने उसके रेशमी कान

सहलाये तब वह अपनी पूंछ हिलाने लगा।

मैंने अपना टोप और फ़र उतारकर बैग और दस्तानों के साथ एक तरफ रख दिया और अब मैं अपनेको पहले से अधिक स्वस्थ महसूस कर रही थी। कमरा बहुत बड़ा और आरामदेह था। दीवारों में छत तक ऊंची पुस्तकें चिनी हुई थीं और आग की अंगीठियों के पास कुर्सियां रखी हुई थीं। लम्बी-लम्बी खिड़कियां लॉन की तरफ खुलती थीं और लॉन से आगे बहुत दूर समुद्र की लहरें चमक रही थीं।

चाय आई और फ़िथ और बैरे ने बड़े तपाक के साथ हमें चाय पिलाई। मुझे अपनी ओर से कुछ भी नहीं करना पड़ा। मैक्सिम अपने पत्रों के ढेर पर नजर डालते रहे और मैं गर्म-गर्म चाय पीती और केक खाती रही।

बीच-बीच में वह मेरी तरफ देखकर मुस्करा देते और फिर अपने महीनों के इकट्ठे पत्रों को देखने लगते। उनके मैन्डरले के जीवन के बारे में मैं कितना कम जानती थी। पिछले थोड़े-से सप्ताह कितनी तेजी से बीत गये थे। फ्रांस और इटली में उनके साथ-साथ विहार करती हुई मैं तो बस यही सोचती रही थी कि मैं उनसे कितना प्रेम करती हूं। वेनिस को मैंने उन्हींकी आंखों से देखा था। वह जो कुछ कहते थे प्रतिध्वनि की तरह मैं भी वही कहती थी। जो कुछ बीत चुका था या जो कुछ आनेवाला था, उसके बारे में मैंने कुछ भी पूछताछ नहीं की थी, मैं तो अपने वर्तमान के ही नन्हें-से गौरव से संतुष्ट थी। वह मेरी कल्पना और मेरे स्वप्न से कहीं अधिक प्रसन्नचित्त और कहीं अधिक कोमल थे। यहां वह मैक्सिम नहीं थे, जिनसे पहले-पहल रेस्टोरां में मुलाकात हुई थी... अजनबी, मौन, अपने में ही खोए हुए, सामने की ओर शून्य भाव से ताकते हुए। मेरे मैक्सिम हँसते थे, गाते थे, पानी में पत्थर फेंककर किलोल करते थे, मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर चलते थे। अब उनकी भौहों के बीच शिकन नहीं पड़ती थी और न ही उनके कन्धे किसी चिन्ता के भार से दबे प्रतीत होते थे। मैं तो उन्हें एक प्रेमी, एक मित्र के ही रूप में जानती थी और मैं यह बिल्कुल भूल गई थी कि उनका कोई दूसरा जीवन भी है—नियमित सुव्यवस्थित—एक ऐसा जीवन, जिसे उन्हें फिर से अपनाना है।

वह अपनी चिट्ठियां पढ़ते रहे। किसीको पढ़कर वह मुस्कराते, किसीको पढ़कर भृकुटी तानते और किसीको योंही फेंक देते। मैं अपनी कुर्सी पर सिर टिकाये कमरे को चारों ओर से देखती रही और इस बात की चेष्टा करती रही कि मुझमें यह विश्वास उत्पन्न हो जाय कि मैं इस प्रसिद्ध मैन्दरले की स्वामिनी हूं, क्योंकि मैक्सिम से मेरा विवाह हुआ है। हां, उनसे मेरा विवाह हुआ है अब तो हम यहीं साथ-साथ रहेंगे, साथ-साथ बूढ़े होंगे, यहीं बैठकर चाय पिया करेंगे और इसी लायब्रेरी में हमारी आंखों के सामने हमारे बच्चे सोफे पर खेलेंगे और शैतानी करेंगे।

मेरा यह स्वप्न तब टूटा जब फ्रिथ और बैरा चाय के बर्तन उठाने आये। "श्रीमती डैन्वर्स ने पुछवाया है कि क्या मैडम अपना कमरा देखना चाहेंगी ?" फ्रिथ ने मुझसे कहा।

"पूर्वी हिस्से को ठीक से सजा दिया है न ?" मैक्सिम ने पत्रों पर से दृष्टि उठाते हुए पूछा।

"जी हां, खूब अच्छी तरह से। मेरा ख्याल है कि वहां आपको हर तरह का आराम मिलेगा। उधर का हिस्सा ज्यादा सुहावना है।"

"क्या आपने कुछ परिवर्तन करवाये हैं ?" मैंने पूछा।

"नहीं, कुछ विशेष नहीं," मैक्सिम ने संक्षेप में बताया, "पूरब की ओर जिस हिस्से में हम रहना चाहते है, उसे फिर से रंगवा और सजा दिया गया है। जैसाकि फ्रिथ ने कहा है, उधर का हिस्सा ज्यादा खुशनुमा है और वहां से गुलाब के बाग का बड़ा सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। जब मेरी मां जीवित थीं तब वह हिस्सा अतिथियों के ठहराने के लिए काम में लाया जाता था। मैं अभी ये पत्र समाप्त करके तुम्हारे पास आ जाऊंगा। तुम जाओ, श्रीमती डैन्वर्स से मित्रता बढ़ाने का यह अच्छा अवसर है।"

मैं धीरे-से उठी। मुझे फिर घबराहट होने लगी थी और मैं चाहती थी कि अकेली न जाकर मैं मैक्सिम के साथ जाती और उनकी बांह-में-बांह डाले कमरों को देखती। लेकिन मुझे जाना पड़ा।

जब मैं गोल कमरे में से होकर गुजरी तब मैंने देखा कि खाली होने के

कारण वह अब और भी बड़ा लग रहा था। पत्थर के फर्श पर मेरे जूते खटा-खट कर रहे थे और उनकी आवाज छत तक गूंज रही थी। फ्रिथ के जूतों में रबड़ लगा हुआ था और मैं सोच रही थी कि निश्चय ही वह मुझे मूर्ख समझ रहा होगा।

सीढ़ियों के ऊपर एक काली आकृति मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। मुर्दे जैसे सफेद चेहरे पर गढ़े में धंसी हुई आंखें मुझे गौर से देख रही थीं। मैंने मुड़कर फ्रिथ को देखा, लेकिन वह दूसरी तरफ जा चुका था।

: ६ :

अब मैं श्रीमती डैन्वर्स के साथ अकेली रह गई थी। जीने पर चढ़कर मैं उसके पास पहुंची। वह दोनों हाथ बांधे चुपचाप मूर्ति की तरह खड़ी मेरी प्रतीक्षा कर रही थी और एकटक मुझे ही देखे जा रही थी।

"तुम्हें मेरे लिए ज्यादा इन्तजार तो नहीं करनी पड़ी।" मैंने पास जाकर कहा।

"आपको जैसा सुभीता हो, मैडम ! मैं तो यहां आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए हूं।" उसने उत्तर दिया और फौरन ही वह मेहराबदार गैलरी की तरफ मुड़ गई। कालीन बिछे हुए रास्ते से कभी ऊपर चढ़ते और कभी नीचे उतरते हम एक दरवाजे के पास पहुंचे। उसे खोलकर श्रीमती डैन्वर्स मेरे अन्दर जाने देने के लिए रास्ता छोड़कर एक तरफ खड़ी हो गई। अब मैं एक छोटे कमरे में पहुंची, जिसमें सोफ़ा, कुर्सियां और लिखने की मेज सजी हुई थी। उसके बाद सोने का एक बड़ा कमरा था, जिसमें चौड़ी-चौड़ी खिड़कियां थीं और जिसके साथ ही एक गुसलखाना भी था। मैंने फौरन खिड़की के पास जाकर बाहर की तरफ़ झांका। नीचे गुलाब का बाग लहलहा रहा था और उसके आगे मुलायम घास का मैदान था, जो जंगल तक फैला चला गया था।

"तो यहां से समुद्र नहीं दिखाई देता ?" मैंने श्रीमती डैन्वर्स की तरफ मुड़ते हुए पूछा।

"नहीं, इस हिस्से से नहीं।" उसने जवाब दिया, "यहां से तो उसकी आवाज

भी सुनाई नहीं देगी, यह पता तक नहीं लगेगा कि यहां आस-पास कहीं समुद्र है।"

यह बात उसने बड़े ही विचित्र ढंग से कही, मानो उसके शब्दों में कोई रहस्य छिपा हो। 'इस हिस्से' पर उसने कुछ इस तरह का जोर दिया जैसे कहना चाहती हो कि जिन कमरों में हम खड़े थे वे कुछ घटिया किस्म के थे।

"यह तो कुछ ठीक नहीं रहा, समुद्र मुझे बड़ा अच्छा लगता है।"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। अपने सामने दोनों हाथ बांधे वह लगातार मुझे घूरती रही।

"ख़ैर, यह कमरा बहुत सुन्दर है।" मैंने कहा, "मैं समझती हूं कि यहां मुझे काफ़ी आराम मिलेगा। शायद यह हमारे लिए ख़ास तौर से ठीक कराया गया है?"

"जी हां!"

"पहले यहां क्या था?"

"द विन्तर इस हिस्से को ज्यादा अच्छा नहीं समझते थे। यों कभी-कभी अतिथि ठहरा दिये जाते थे। लेकिन श्री द विन्तर ने अपने पत्र में विशेष रूप से आज्ञा दी थी कि आपके लिए यही कमरा ठीक कराया जाय।"

"तो असल में यह कमरा उनके सोने का नहीं है?"

"नहीं मैडम, इस हिस्से में वह पहले कभी नहीं रहे हैं।"

"अच्छा! लेकिन मुझे तो उन्होंने यह बात नहीं बताई।" मैंने कहा और शृंगार-मेज की ओर जाकर मैं अपने बालों में कंघी करने लगी। मेरा असबाब खोला जा चुका था और मेरा कंघा और मेरे ब्रुश ट्रे में रक्खे थे। मैक्सिम ने मुझे ब्रुशों का एक नया क़ीमती जोड़ा खरीद दिया था और वह शृंगार-मेज पर रखा हुआ था।

"ऐलाइस ने आपका सामान खोल दिया है और जबतक आपकी अपनी आया नहीं आ जायगी तबतक वही आपकी सेवा में रहेगी।" श्रीमती डैन्वर्स ने कहा।

उसकी तरफ़ देखकर मैं फिर मुस्कराई और मैंने ब्रुशों को शृंगार-मेज पर रख दिया। "मुझे अलग आया की जरूरत नहीं है।" मैंने भद्दे ढंग से कहा,

"ऐलाइस तो है ही, वही मेरे काम कर लिया करेगी।"

"लेकिन यह व्यवस्था अधिक दिनों तक नहीं चल सकेगी। आप तो जानती ही हैं कि आप-जैसी सम्मानित महिला के लिए एक निजी दासी का होना आवश्यक है।" श्रीमती डैन्वर्स ने कहा।

मेरा मुंह लाल हो गया और मैंने फिर ब्रुश उठा लिये। उसके शब्दों में जो डंक छिपा हुआ था, वह मैं समझ गई। "अगर दासी का होना जरूरी है तो तुम्हीं मेरे सब कामों की देखभाल कर लिया करना। कोई कम उम्र की लड़की आयगी तो उसे सब बातें सिखानी पड़ेंगी।" मैंने कहा।

"जैसी आज्ञा।"

इसके बाद हम चुप हो गये और मैंने चाहा कि वह चली जाय। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि वह वहीं बुत-जैसी क्यों खड़ी है और एकटक मुझे क्यों घूरे जा रही है।

"शायद तुम मैन्दरले में बहुत वर्षों से हो।" मैंने फिर से बात शुरू करते हुए कहा, "तुमसे पुराना तो यहां शायद ही कोई और हो?"

"नहीं, फ्रिथ तो मुझसे भी पहले का है।" उसने कहा, "जब बूढ़े मालिक जिन्दा थे तभी से वह यहां है, श्री द विन्तर तो उस समय लड़के ही थे।"

"अच्छा, तो तुम तबतक नहीं आई थीं!"

"नहीं, तबतक नहीं।"

एक बार फिर मेरी नज़र उसकी नज़र से मिली—एक ऐसी नजर जो मुझ-में कुछ अजीब तरह की बेचैनी भरे दे रही थी। मैंने मुस्कराने की चेष्टा की, लेकिन मैं मुस्करा न सकी। मुझे ऐसा लगा जैसे उन आंखों ने मुझे बांध रखा है—ऐसी आंखें, जिनमें कोई चमक नहीं थी, जिनमें मेरे लिए कोई सहानुभूति नहीं थी।

"मैं यहां तब आई थी जब पहली श्रीमती द विन्तर दुलहन थीं।" उसने कहा और उसकी आवाज़, जो अबतक बिल्कुल नीरस और भावनाशून्य थी, सहसा कठोर और प्राणवान हो उठी। उसमें अर्थ भरा हुआ था और उसके गालों की पतली हड्डियों पर भी रंग झलक आया था। यह परिवर्तन इतने आक-

स्मिक ढंग से हुआ कि मैं चकित रह गई, कुछ डर-सी गई। मेरी समझ में नहीं आया कि मैं क्या कहूं और क्या करूं। उसकी आंखें अब भी मेरे चेहरे पर ही गड़ी हुई थीं और उनमें दया तथा घृणा का मिला-जुला भाव था। मुझे अब इसमें संदेह नहीं रह गया था कि वह मुझसे घृणा करती है और ताड़ गई है कि मैं कोई ऊंचे वर्ग की महिला नही हूं, बल्कि एक साधारण श्रेणी की दब्बू-सी लड़की हूं, जिसमें आत्मविश्वास का नाम तक नहीं है। उसकी आंखों में सिर्फ़ घृणा की भावना नहीं थी, बल्कि निश्चय ही मेरे लिए व्यक्तिगत अरुचि और द्वेष का भाव भी था।

मुझे कुछ कहना तो था ही, क्योंकि मैं वहां बैठी-बैठी इस तरह कबतक ब्रुशों से खेलती रह सकती थी। मैं श्रीमती डैन्वर्स को यह भी तो अवसर नहीं दे सकती थी कि वह खड़ी-खड़ी देखती रहे कि मैं उससे कितनी डरती हूं और उसपर कितना अविश्वास करती हूं।

"श्रीमती डैन्वर्स," मैं बोली, "मुझे पूरी उम्मीद है कि हम जल्दी ही एक-दूसरे को समझने लगेंगी। तुम्हें मेरे साथ थोड़े धीरज से काम लेना पड़ेगा, क्योंकि तुम जानती हो, इस तरह का जीवन मेरे लिए नया है। मैं अबतक बिल्कुल दूसरे ढंग से रहती आई हूं। लेकिन मैं अपने नये जीवन को सफल बनाना चाहती हूं और सबसे बड़ी बात तो यह है कि मैं श्री द विन्तर को सुखी बनाना चाहती हूं। जैसा कि उन्होंने भी कहा है, घर की देखभाल मैं तुम्हारे ऊपर छोड़ दूंगी। तुम सदा की ही तरह अपना काम करती रहो, मैं किसी बात में हेर-फेर नहीं चाहती।"

मेरी सांस चढ़ गई और मैं चुप हो गई, लेकिन मैं निश्चय नहीं कर पाई कि मैंने जो कुछ कहा है वह ठीक है या नहीं। इसके बाद मैंने जो सिर उठाया तो देखा कि वह कुछ आगे बढ़ गई है और दरवाजे के हैंडिल पर अपना हाथ रखे खड़ी है।

"बहुत अच्छा," वह बोली, "मुझे उम्मीद है कि मैं सब काम ठीक-ठीक कर लूंगी। मकान की देखभाल पूरे एक साल से मेरे हाथ में है और श्री द विन्तर को कभी कोई शिकायत का मौका नहीं मिला है। हां, जब पहली

श्रीमती द विन्तर जीवित थीं तब बात दूसरी थी। उन दिनों बहुत-से आदमी आते-जाते रहते थे और बहुत-सी पार्टियां हुआ करती थीं। इन्तजाम तो तब भी मैं ही किया करती थी, लेकिन सब बातों की देखभाल वह स्वयं किया करती थीं।"

एक बार फिर मैंने महसूस किया कि उसने ये शब्द बड़ी सावधानी के साथ चुन-चुनकर कहे हैं और मेरे चेहरे को देखकर वह यह समझना चाहती है कि उन शब्दों का मेरे ऊपर क्या प्रभाव पड़ा है और मैं उसके बारे में क्या सोच रही हूं।

"यह सब तो मैं तुम्हारे ऊपर ही छोड़ दूंगी।" मैंने कहा और देखा कि उसके चेहरे पर एक बार फिर तिरस्कार और उपेक्षा का वही भाव झलक आया है, जो हॉल में हाथ मिलाते हुए दिखाई दिया था। वह जान गई थी कि मैं उसका सामना नहीं कर सकूंगी और उससे डरती भी हूं।

"और कोई सेवा!" वह बोली और मैंने कमरे में इधर-उधर देखने का बहाना करते हुए कहा, "नहीं, मेरे खयाल में तो यहां सबकुछ हैं, तुमने कमरों को इतना सुन्दर बना दिया है कि मुझे यहां हर तरह का आराम रहेगा।"

"मैंने तो केवल श्री द विन्तर के आदेश का पालन किया है।" उसने कंधे हिलाते हुए कहा। उसके होंठों पर अब भी मुस्कराहट नहीं थी।

दरवाजे के पास जाकर वह कुछ ठिठकी। बोली, "अगर कोई चीज आपकी इच्छा के अनुकूल न हो तो मुझे फौरन बता दीजियेगा।"

"हां-हां; अवश्य।" मैंने जवाब दिया।

"यदि श्री द विन्तर अपनी बड़ी आलमारी के बारे में पूछें," वह सहसा फिर बोली, "तो उनसे कह दीजियेगा कि उसे वहां से हटाना कठिन है। हमने चेष्टा की, लेकिन वह इन तंग दरवाजों में से आ नहीं सकी। इस हिस्से के कमरे पश्चिमवाले कमरों से छोटे हैं। अगर उन्हें यहां का इन्तजाम पसंद न आये तो मुझे बतादें।"

"चिन्ता न करो, श्रीमती डैन्वर्स! मुझे विश्वास है कि वह यह सब देखकर बहुत खुश होंगे। लेकिन तुम्हें इतनी परेशानी उठानी पड़ी, इसका मुझे

खेद है । मुझे तो पता भी नहीं था कि वह कमरों को फिर से सजवा और जमवा रहे हैं । मैं तो पश्चिमी हिस्से में भी इतनी ही प्रसन्न और इतने ही आराम से रह सकती थी ।"

उसने कुछ अजीब ढंग से मेरी ओर देखा और दरवाजे का हैंडिल घुमाते हुए कहा, "श्री द विन्तर ने कहा था कि आप इसी तरफ रहना पसंद करेंगी । पश्चिमवाले कमरे बहुत पुराने हैं । वहां का सोने का कमरा इससे दुगना बड़ा है । वह इस घर का सबसे सुन्दर कमरा है और खिड़कियों में से लॉन के आगे समुद्र दिखाई देता है ।"

मैंने कुछ बेचैनी-सी अनुभव की, क्योंकि मेरी समझ में नहीं आया कि वह इस तरह की कटी-कटी बातें क्यों कर रही है और क्यों मुझे यह बताना चाहती है कि जिस कमरे में मैं रखी गई हूं वह घटिया है और मैन्दरेल की शान के अनुकूल नहीं है, मानो किसी दूसरे दरजे के आदमी के रहने लायक दूसरे दरजे का कमरा हो ।

"शायद श्री द विन्तर सबसे सुन्दर कमरा पब्लिक को दिखाने के लिए सुरक्षित रखना चाहते हैं ।" मैंने कहा । हैंडिल घुमाते हुए उसने एक बार फिर मेरी आंखों में देखा और उत्तर देने से पहले वह कुछ झिझकी-सी, लेकिन जब वह बोली तब उसकी आवाज पहले से भी अधिक शान्त थी, "सोने के कमरे कभी पब्लिक को नहीं दिखाये जाते । नीचे के कमरे, बड़ा हॉल और गैलरी ही दिखाये जाते हैं ।" यह कहकर वह क्षणभर के लिए रुकी और मेरी आंखों के भाव को समझने की चेष्टा करती हुई बोली, "जब श्रीमती द विन्तर जिन्दा थीं तब वे लोग पश्चिमी हिस्से में रहते थे । वह बड़ा कमरा, जिससे समुद्र दिखाई देता है, श्रीमती द विन्तर का कमरा था ।"

तभी मैंने देखा कि उसके चेहरे पर किसीकी छाया पड़ी है । वह दीवार के पास जाकर एक ओर हट गई । बाहर से किसीकी पगध्वनि सुनाई दी और मैक्सिम कमरे में आ गये ।

"कमरा कैसा लगा तुम्हें ?" उन्होंने मुझसे पूछा, "ठीक है न ? पसंद आ गया ।"

वह बड़े उत्साह के साथ एक स्कूली लड़के की तरह प्रसन्न होकर इधर-उधर देखने लगे। फिर बोले, "मैं हमेशा इस कमरे की गिनती यहां के सबसे आकर्षक कमरों में करता रहा हूं। इतने बरसों तक यह बेकार ही मेहमानों का कमरा बना रहा। इसे सजाने में तुम बहुत सफल रही हो, श्रीमती डैन्वर्स! मैं तुम्हें पूरे नम्बर देता हूं।"

"धन्यवाद।" वह बोली और धीरे-से दरवाज़ा बन्द करके बाहर निकल गई। उसका चेहरा उस समय भी बिल्कुल भावशून्य ही था।

मैक्सिम ने खिड़की में से झांककर कहा, "यह गुलाब का बाग मुझे बहुत प्यारा लगता है। मुझे याद है कि जब मां गुलाब के मुरझाये हुए फूलों को चुना करती थी तब मैं उसके पीछे-पीछे डगमगाता हुआ चला करता था। इस कमरे में एक प्रकार की प्रसन्नता है, एक शांति-सी है। तुम्हें पता भी नहीं चल सकता कि इस कमरे से समुद्र सिर्फ पांच मिनट की दूरी पर है।"

"श्रीमती डैन्वर्स भी यही कहती थीं।"

"वह खिड़की से हट आये और कमरे में इधर-उधर चीजें देखते रहे। फिर सहसा बोले, "बूढ़ी डैन्वर्स से तुम्हारी कैसी पटी?"

मैंने बालों में ब्रुश करते हुए कुछ रुककर कहा, "कुछ कठोर मालूम होती है। शायद उसे यह डर है कि मैं घर के काम-काज में दखल दूंगी।"

"तुम्हारे इस काम से वह नाखुश होगी, ऐसी मुझे आशंका नहीं है।" वह बोले और मैंने देखा कि शीशे में वह मेरी परछांई देख रहे हैं। फिर वह मुड़े और खिड़की के पास जाकर सीटी बजाने लगे।

"उसकी चिन्ता न करो।" उन्होंने कहा, "वह एक अजीब औरत है और उसके साथ किसीकी पटना आसान नहीं है। अगर उसने तुम्हें कुछ परेशान किया तो मैं उसे निकाल दूंगा। वैसे वह काफी होशियार है और उसके ऊपर घर की देखभाल का भार छोड़कर तुम बिल्कुल निश्चिंत रह सकती हो। वह दूसरे कर्मचारियों पर भी हावी रहती है, लेकिन मुझपर हावी होने की उसने कभी कोशिश नहीं की वरना मैं कभीका उसे निकाल चुका होता।"

"मैं समझती हूं कि जब वह मुझे कुछ और अच्छी तरह जान जायगी

तब कोई परेशानी नहीं होगी। शुरू में उसका मुझसे कुछ नाराज-सा रहना स्वाभाविक ही है।

"तुमसे नाराज रहना ? क्यों ? तुम्हारा मतलब क्या है ?"

भृकुटी चढ़ाये और चेहरे पर कुछ क्रोध का भाव लिये वह खिड़की से मुड़ आये। मेरी समझ में नहीं आया कि उन्हें मेरा यह कहना अच्छा क्यों नहीं लगा।

"मेरा मतलब यह है कि अकेले एक पुरुष का काम कर लेना मुश्किल नहीं होता। शायद उसे शंका है कि कहीं मैं उसे ज्यादा दबाकर न रखूं।"

"दबाकर रखूं...मैं समझता हूं...।" वह बोलते-बोलते चुप हो गये और मेरे पास आकर उन्होंने मेरे सिर को चूम लिया।

"हमें श्रीमती डैन्वर्स को भूल जाना चाहिए।" उन्होंने कहा, "उसमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। आओ, तुम्हें मैन्दरले के कुछ हिस्से दिखा दूं।"

उस दिन फिर श्रीमती डैन्वर्स से मेरी भेंट नहीं हुई और न ही हमने फिर उसके बारे में कोई बातचीत की। उसका ख़याल दिमाग़ से हट जाने पर मैंने अपने-आपको अधिक सुखी पाया और जब मैक्सिम मेरी गर्दन में बांह डाले मुझे कमरों में घुमा और तस्वीरें दिखा रहे थे तब मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं ठीक वैसी ही हूं जैसी बनने की मैं सपने देखा करती थी। मेरी प्रसन्नता का एक और भी कारण था। मैन्दरले में वह हमारी पहली संध्या थी और वहां आये अभी हमें अधिक देर नहीं हुई थी।

तस्वीरों को देखने-दिखाने में देर हो गई और मैक्सिम ने घड़ी पर नजर डालते हुए कहा कि खाने के लिए अब कपड़े बदलने का समय नहीं रह गया। यह मेरे लिए अच्छा ही हुआ, क्योंकि मैं ऊपर जाती तो एलाइस पूछती कि कौन-से कपड़े पहनेंगी, वह मुझे कपड़े पहनने में सहायता देने के लिए आगे बढ़ती और जो कपड़े श्रीमती हॉपर ने अपनी लड़की के ठीक न आने के कारण मुझे दे दिये थे वे ही कपड़े पहनकर मुझे लम्बी-लम्बी सीढ़ियां पार करते हुए नंगे कन्धे ही हॉल में जाना पड़ता। खाने के कमरे में बैठकर पूरे उपचार के साथ भोजन करने के विचार से ही मैं घबरा रही थी। लेकिन अब

जब कि हमने कपड़े नहीं बदले थे, सबकुछ वैसा ही सरल और स्वाभाविक लग रहा था जैसा कि होटलों में खाते समय लगा करता था। मुझे अपने पतले कपड़ों में ही आराम मिल रहा था और मैं हँस-हँसकर उन चीजों के बारे में बातें कर रही थी, जो हमने इटली और फ्रांस में देखी थीं।

खाने के बाद हम लायब्रेरी में जाकर बैठ गये। वहां परदे खींच दिये गए और अंगीठी में और लकड़ियां डाल दी गईं। मई महीने के हिसाब से ठंड ज्यादा थी, लेकिन लगातार आग जलते रहने के कारण वहां अच्छी-खासी गरमाई थी।

खाना खाने के बाद इस तरह इकट्ठे बैठना हमारे लिए एक नई बात थी, क्योंकि इटली में हम भोजन करने के बाद इधर-उधर घूमने निकल जाते थे और कभी पैदल और कभी कार में सैर करते हुए होटलों में जा बैठते थे या पुलों पर खड़े होकर नीचे कल-कल करके बहती हुई नदी को निरखा करते थे। मैक्सिम अनायास ही अंगीठी की बाईं तरफ़ कुर्सी खींचकर बैठ गये। हाथ बढ़ाकर उन्होंने अखबार उठा लिया और सिर के पीछे एक बड़ी गद्दी लगाकर उन्होंने सिगरेट सुलगा ली। "ऐसा वह रोज ही करते होंगे।" मैंने सोचा—"हमेशा करते होंगे, बरसों से वह इसके आदी होंगे।"

उन्होंने मेरी ओर नहीं देखा। इतमीनान के साथ वह अखबार पढ़ते रहे और मैं अपने हाथ में ठोढ़ी पकड़े कुछ सोचती और कुत्ते के मुलायम कान सहलाती रही। तभी मुझे अचानक ख़याल आया कि उस गद्दीदार कुर्सी पर आराम के साथ पैर फैलाकर बैठनेवाली मैं पहली स्त्री नहीं हूं, मुझसे पहले कोई और उसपर बैठ चुकी है, और उसकी गद्दी और गुदगुदे हत्थे पर अपने शरीर की छाप छोड़ चुकी है। कोई और भी स्त्री उस चांदी के बर्तन से कॉफी उंड़ेल चुकी है, प्याले को अपने होठों से लगा चुकी है और मेरी तरह झुककर कुत्ते को प्यार कर चुकी है।

अनजाने में ही मैं कांप उठी, मानो किसीने मेरे पीछे का दरवाजा खोल दिया हो और ठंडी हवा का एक झोंका आ गया हो। मैं रेबेका की कुर्सी पर बैठी थी, रेबेका की गद्दी पर आराम से पीठ टिकाये हुए थी। जैस्पर ने पास आकर अपना सिर मेरे घुटने पर रख दिया था, क्योंकि ऐसा ही वह करता आया था

और उसे याद था कि वहां उसे कभी कोई चीनी खिलाया करता था।

: १० :

मैंने पहले कभी नहीं सोचा था कि मैन्दरले का जीवन इतना व्यवस्थित होगा। आज मुझे अच्छी तरह याद आ रहा है कि अगले दिन मैक्सिम सवेरे-ही-सवेरे उठ गये थे और कपड़े पहनकर नाश्ते से पहले ही पत्र लिखने में लग गये थे। नौ बजे के बाद घंटे की तेज़ गूंज सुनकर घबराती हुई जब मैं नीचे पहुंची तब वह नाश्ता करीब-करीब ख़तम कर चुके थे और फल छील रहे थे।

मुझे देखकर उन्होंने मुस्कराते हुए कहा, "बुरा न मानना, इसकी तो तुम्हें भी आदत डालनी पड़ेगी। सवेरे का समय नष्ट करने के लिए मेरे पास अवकाश नहीं है। मैन्दरले जैसी जगह का इन्तजाम करने में सारे दिन लगा रहना पड़ता है। काफ़ी और नाश्ते की गरम चीजें बराबरवाली मेज पर रखी हैं। नाश्ते के समय हम अपने-आप ही चीजें ले लेते हैं।"

देर से आने के लिए मैंने कई बहाने बनाये। कभी कहा कि मेरी घड़ी सुस्त थी, कभी कहा कि मुझे ग़ुसलख़ाने में देर हो गई, लेकिन इस ओर उन्होंने ध्यान भी नहीं दिया। किसी पत्र को पढ़ते-पढ़ते उनकी त्योरी चढ़ती जा रही थी।

नाश्ते के ठाठ-बाट देखकर मैं बहुत ही प्रभावित हुई। चांदी की पाएदार केतलियों में चाय और कॉफी थी। अंडे, मछली और गोश्त से बनी हुई कई प्रकार की चीजें हीटर पर रक्खी होनेके कारण गरम बनी हुई थीं। भांति-भांति के टोस्ट, केक, मार्मलेड और मुरब्बे थे। बड़ी-बड़ी प्लेटों में ऊपर तक फल सजे हुए थे। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जो मैक्सिम फ्रांस और इटली में केवल फलादि लेकर एक प्याला कॉफ़ी पीते थे, वह अपने घर पर बरसों से नाश्ते की ऐसी मेज़ पर बैठने के आदी थे, जिसपर एक दरजन आदमियों के खाने लायक सामान होता था। और फिर भी उन्हें इसमें कुछ भी निरर्थक या हास्यस्पद नहीं लगता था।

मैंने देखा कि उन्होंने सिर्फ़ मछली का एक छोटा-सा टुकड़ा लिया था।

मैंने एक उबला हुआ अंडा ले लिया। मैं समझ नहीं पा रही थी कि बाक़ी नाश्ते का क्या होता है। वे अंडे, वे मछलियां, वह गोश्त और वे फल कहां चले जाते हैं ? क्या मैन्दरले में कुछ ऐसे नौकर-चाकर भी हैं, जो रसोई के दरवाजे के पीछे खड़े-खड़े हमारे बचे हुए नाश्ते की प्रतीक्षा करते रहते हैं ? या जो कुछ बचता है, वह कूड़े के बरतन में फेंक दिया जाता है ? लेकिन मुझे यह कैसे मालूम होगा ? मुझे तो उनसे पूछने का साहस ही नहीं होगा।

तभी मैक्सिम बोल उठे, "भगवान की कृपा है कि मेरे इतने रिश्तेदार नहीं हैं कि उनका तुमपर बोझ पड़े। एक बहन है, जो बहुत कम आती है और एक दादी है, जो क़रीब-क़रीब अंधी है। बीट्रिस ने दोपहर को खाने के समय आने को कहा है। उसके आने की आशा मुझे पहले से ही कुछ-कुछ थी। शायद वह तुम्हें देखना चाहती है।"

"आज ?" मैंने पूछा और मेरा दिल बैठने लगा।

"हां, आज सुबह उसकी जो चिट्ठी आई है, उसमें तो यही लिखा है। वह अधिक नहीं ठहरेगी और तुम उसे पसन्द भी करोगी। वह बहुत सीधे-सच्चे ढंग से बातें करनेवाली है। उसके मन में छल-कपट नहीं है। अगर तुम उसे पसन्द न करो तो वह यह बात तुम्हारे मुंह पर कह देगी।"

मुझे यह सुनकर कोई तसल्ली नहीं हुई। मैक्सिम ने कुर्सी पर से उठकर सिगरेट सुलगाते हुए कहा, "आज सवेरे मुझे बहुत काम करना है। तुम अपना मन लगा लोगी न ? मैं तुम्हें बाग में ले जाना चाहता था, लेकिन मुझे अपने एजेन्ट क्राउले से मिलना है। मैं बहुत दिन बाहर रहा हूं, इसलिए यहां के हाल-चाल का कुछ पता नहीं। क्राउले दोपहर का खाना भी हमारे साथ ही खायेंगे। तुम्हें बुरा तो नहीं लगेगा ? प्रसन्न रहोगी न ?"

"हां-हां, क्यों नहीं ?" मैंने उत्तर दिया।

तब वह पत्र उठाकर कमरे से बाहर चले गये। मैन्दरले में अपने पहले प्रभात की कल्पना मैंने कुछ और ही रूप में की थी। मैंने सोचा था कि हम एक दूसरे के हाथ-में-हाथ डाले समुद्र-तट पर घूमने जायंगे, थके हुए लेकिन हँसते-खेलते देर से घर वापस आकर साथ-साथ ठंडा भोजन करेंगे और

फिर उसके बाद अखरोट के उस वृक्ष के नीचे जा बैठेंगे, जो लायब्ररी की खिड़की से दिखाई देता था।

बहुत देर तक मैं अपने नाश्ते में ही उलझी समय काटती रही और जब फ्रिथ ने कमरे में आकर परदे के पीछे से मुझे झांककर देखा तब मुझे पता चला कि दस बज चुके हैं। मुझे अपनी भूल मालूम हुई और मैं झटपट उठकर देर तक बैठे रहने के लिए खेद प्रकट करने लगी, लेकिन फ्रिथ ने बहुत ही नम्रता से सलाम झुकाया और वह कुछ बोला नहीं। लेकिन मुझे उसकी आंखों में आश्चर्य की चमक दिखाई दी और मै सोचने लगी कि मैंने कोई ग़लत बात कह दी है। शायद मेरा खेद प्रकट करना ठीक नहीं था। ऐसा करके शायद मैं उसकी नज़र में कुछ गिर गई हूं। काश मुझमें इतनी बुद्धि होती और मैं समझ सकती कि मुझे क्या कहना चाहिए, क्या करना चाहिए ? मुझे डर हुआ कि शायद फ्रिथ को भी श्रीमती डैन्वर्स की तरह यह ख्याल हो गया है कि मानसिक संतुलन, शोभनीय व्यवहार और आत्म-विश्वास के गुण मुझमें जन्मजात नहीं हैं, इन्हें मुझे सीखना पड़ेगा, लेकिन बहुत-सी कड़वी घूंटें पी-पीकर।

यह सोचते-सोचते मैं कमरे से बाहर निकली, लेकिन दरवाज़े के पास सीढ़ी पर पैर ठीक न पड़ने से गिरने-सी लगी। फ्रिथ फौरन मेरी सहायता के लिए आगे बढ़ा और उसने जमीन पर गिरे हुए मेरे रूमाल को उठाकर मुझे पकड़ा दिया। जवान बैरा राबर्ट परदे के पीछे खड़ा था, अपनी मुस्कराहट छिपाने के लिए वह दूसरी तरफ़ मुड़ गया।

जब मैं बड़े कमरे में से होकर जा रही थी तब मैंने नौकरों की कुछ फुस-फुसाहट-सी सुनी। उनमें से एक हँस भी रहा था। मेरे खयाल में वह राबर्ट था। शायद वे मुझपर ही हँस रहे थे। मैं फिर से ऊपर चली गई, क्योंकि मैं अपने सोने के कमरे में जाकर बिल्कुल एकान्त में बैठना चाहती थी। लेकिन जब मैंने दरवाजा खोला तब नौकरानियां वहां की सफाई कर रही थीं। उन्होंने आश्चर्य से मेरी ओर देखा और मैं जल्दी से बाहर निकल आई। शायद सवेरे-सवेरे मेरा उस कमरे में जाना उचित नहीं था। इससे घर की व्यवस्था भंग हुई

थी। मैं चुपचाप नीचे उतर गई और लायब्रेरी में पहुंची, जिसकी खिड़कियाँ खुली हुई थीं और जहां बहुत ज्यादा ठंड थी। अंगीठी में लकड़ियां रक्खीं तो थीं, लेकिन जलाई नहीं गई थीं।

मैंने खिड़कियां बन्द कर दीं और इधर-उधर दियासलाई ढूंढ़ने की चेष्टा की, लेकिन वह मुझे मिली नहीं। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूं, क्योंकि मैं फ़ोन करना नहीं चाहती थी। मुझे इस बात का आश्चर्य हो रहा था कि जो लायब्रेरी रात इतनी गरम थी, वह सुबह के समय ऐसी बरफ़ जैसी ठंडी क्यों पड़ी थी। माचिस ऊपर सोने के कमरे में थी, लेकिन मैं वहां जाकर नौकरानियों के काम में विघ्न डालना नहीं चाहती थी। उनके सफेद चेहरों को एक बार फिर अपनी तरफ़ घूरते देखना मुझे सह्य नहीं था। मैंने सोचा कि जब फ्रिथ और रॉबर्ट खाने के कमरे में से सामान हटाकर चले जायंगे तब मैं वहां मेज़ पर से माचिस उठा लाऊंगी। मैं दबेपांव हॉल में गई और कान लगाकर सुनने लगी। अभी वे सामान उठा रहे थे, उनके बोलने और बरतनों के हटाये जाने की आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही थी। जब सन्नाटा हो गया तब मैं वहां गई। माचिस मेज़ पर रखी थी। मैंने उसे लपककर उठाया ही था कि इतने में फ्रिथ आ गया। मैंने चुपके-से माचिस अपनी जेब में रखनी चाही, लेकिन मैंने देखा कि फ्रिथ बड़े आश्चर्य से मेरे हाथ को देख रहा है।

"कोई चीज चाहिए क्या, मैडम ?" उसने पूछा।

"मुझे माचिस नहीं मिल रही, फ्रिथ !" मैंने कुछ अजीब भद्दे ढंग से कहा।

उसने फ़ौरन दूसरी माचिस जेब से निकालकर मेरी ओर बढ़ा दी और साथ ही सिगरेट भी। यह मेरे लिए एक और भी परेशानी की बात थी, क्योंकि मैं सिगरेट नहीं पीती थी।

"नहीं-नहीं, बात यह है कि मुझे लायब्रेरी में बहुत ठंड लगी। शायद बहुत दिनों तक विदेश में रहने के कारण मुझे यहां का मौसम ठंडा लग रहा है। इसीलिए मैंने सोचा कि जरा अंगीठी जला लूं।"

"लायब्रेरी में तीसरे पहर से पहले अंगीठी नहीं जलाई जाती, मैडम ! श्रीमती द विन्तर इस समय सुबहवाले कमरे में बैठती थीं। वहां अंगीठी में खूब तेज आग जल रही है। फिर भी अगर आप लायब्रेरी में भी अंगीठी चाहती हैं तो तो मैं अभी कहे देता हूं।

"नहीं-नहीं, इसकी जरूरत नहीं है। मैं सुबहवाले कमरे में ही जा रही हूं।"

"वहां आपको लिखने का सब सामान मिलेगा। नाश्ते के बाद श्रीमती द विन्तर चिट्ठी-पत्री लिखने का सारा कार्य और टेलीफ़ोन वगैरा भी इसी कमरे में किया करती थीं। घर का टेलीफ़ोन भी वहीं है। आप जब चाहें श्रीमती डैन्वर्स से बातचीत कर सकती हैं।"

"धन्यवाद फ्रिथ।" मैंने कहा और मैं एक बार फिर हॉल की ओर मुड़ गई। आत्म-विश्वास की भावना दिखाने के लिए उस समय मैं कुछ गुनगुनाने लगी थी। बात यह थी कि मुझमें फ्रिथ से यह कहने का साहस नहीं था कि मैंने सुबहवाला कमरा नहीं देखा है और कल रात मैक्सिम ने मुझे नहीं दिखाया था। मुझे कुछ ऐसा दिखावा भी करना था, जिससे पता चले कि मैं रास्ता जानती हूं। बड़े ज़ीने के बाईं ओर एक दरवाज़ा था। बिना कुछ सोचे-समझे मैं उसी ओर बढ़ गई और मन-ही-मन मनाती रही कि हे भगवान्, यही सही रास्ता हो। लेकिन जब मैंने दरवाजा खोला तब देखा कि वह तो फूलों-वाला कमरा है। वहां भांति-भांति के फूल रखे हुए थे और एक खूंटी पर दो बरसातियां टंगी थीं। मैं वहां से बाहर निकल आई। फ्रिथ अब भी अपनी जगह पर खड़ा-खड़ा मुझे देख रहा था। निश्चय ही मैं उसकी आंखों में धूल नहीं झोंक पाई थी।

"सुबहवाले कमरे का रास्ता ड्राइंग रूम में से होकर है, मैडम।" फ्रिथ ने कहा, "उधर दाहिनी ओर के दरवाजे से जीने की इस तरफ बड़े ड्राइंग रूम में से होकर चली जाइये और फिर बाएं हाथ मुड़ जाइयेगा।"

ड्राइंग रूम बहुत ही सुन्दर और सजा हुआ था। उसमें तरह-तरह की तस्वीरें टंगी हुई थीं। वहां से होती हुई मैं सुबहवाले कमरे में पहुंची। दोनों

कुत्ते वहां आग के पास बैठे थे। जैस्पर फौरन मेरे पास आया और दुम हिला-हिलाकर मेरा हाथ चाटने लगा, लेकिन काली कुतिया ने सूंघकर ही समझ लिया कि मैं वह नहीं हूं, जिसकी वह तलाश में थी। बाद में जैस्पर भी जाकर अपनी जगह बैठ गया। शायद यह उनका दैनिक कार्यक्रम था।

इस कमरे में लायब्रेरी की तरह सीलन की बदबू नहीं थी। वहां न पुरानी कुर्सियां थीं, न मासिक और साप्ताहिक पत्रों से लदी हुई मेजें। वह एक स्त्री का कमरा था, सुन्दर और नजाकत से भरा। उसकी छोटी-से-छोटी चीजें भी किसीने बड़ी सुरुचि और चतुराई के साथ सजवाई थीं। मैन्दरले के खज़ाने में से बढ़िया-से-बढ़िया चीजें चुन-चुनकर वहां लाई गई थीं। सदाबहार के फूल बाहर तो अपने पूरे सौन्दर्य के साथ लहलहा ही रहे थे। भीतर कमरे में भी उनकी शोभा बिखर रही थी—कार्निस पर, सोफे के पासवाली मेज के गुल-दस्ते में और लिखने की मेज पर सोने की मोमबत्तीदानियों के पास।

मैं जाकर लिखनेवाली मेज पर बैठ गई। वह बड़ी ही खूबसूरत थी और होती भी क्यों नहीं ? कोई स्त्री वहां बैठकर अपनी चिट्ठियां-पत्रियां लिखा करती थी। कागज रखने के खानों पर लिखा हुआ था—'पत्र जिनका उत्तर देना है,' 'पत्र जिन्हें सुरक्षित रखना है,' 'घर के विषय में,' 'जायदाद के विषय,' 'भोजन की सूची,' 'पते,' और 'विविध'। प्रत्येक पर वही जानी-पहचानी तिरछी लिखावट थी। उसे अचानक एक बार फिर देखकर मैं चौंक पड़ी और मुझे कुछ धक्का-सा लगा, क्योंकि जबसे मैंने किताब का वह पन्ना फाड़कर जला दिया था तबसे मैंने वह लिखावट नहीं देखी थी, न ही उसे फिर देखने की मुझे आशा ही थी।

ऐसे ही मैंने एक दराज खोली तो एक चमड़े की किताब पर फिर वही लिखा-वट दिखाई दी। उसपर लिखा हुआ था—'मैन्दरले के मेहमान'। उसमें सप्ताह और महीने के हिसाब से यह लिखा हुआ था कि कौन-कौन-से मेहमान कब आये और कब गये। कौन-कौन-से कमरों में ठहरे और उनके लिए क्या-क्या खाना बना। मैंने किताब के पन्ने उलटकर देखे, उसमें पूरे वर्ष भर का रिकार्ड था, जिसे देखकर मालकिन जब चाहे तभी यह पता लगा सकती थी कि कौन-

सा अतिथि किस महीने, किस दिन, यहांतक कि किस समय वहां आया था, कहां सोया था और उसे क्या खाना खिलाया गया था। दराज में मोटे सादे कागज़ भी थे, जिनपर घर के मोटे-मोटे काम लिखे जाते थे। छोटे-छोटे डिब्बों में दूध-से सफेद विज़िटिंग कार्ड भी रखे थे।

मैंने उनमें से एक निकाल लिया और उसके ऊपर का बारीक कागज़ उतारकर देखा। उसपर लिखा हुआ था—श्रीमती एम. द विन्तर। उसीपर एक कोने में 'मैन्दरले' भी लिखा था। मैंने फौरन उस कार्ड को डिब्बे में ही रख दिया और दराज़ बन्द कर दी। सहसा मुझे ऐसा लगा जैसे मैं कुछ बुरा काम कर रही हूं, जैसे किसीके साथ छल कर रही हूं, जैसे मैं किसी दूसरे के घर ठहरी हुई हूं और उसकी मालकिन ने कृपा करके मुझे अपनी मेज़ पर बैठकर चिट्ठी-पत्री लिखने की अनुमति दे दी है, लेकिन मैं हूं कि चोरी-चोरी उसके पत्र ही पढ़ने लगी हूं। मुझे लगा कि किसी क्षण भी वह कमरे में आ सकती है और मुझे उस खुली हुई दराज़ के सामने बैठी देख सकती है, जिसको छूने का मुझे कोई अधिकार नहीं था।

तभी मेरे सामने की मेज पर एकाएक टेलीफोन की घंटी बज उठी। मेरा दिल धड़कने लगा और यह सोचकर कि मैं चोरी करते पकड़ी गई हूं, मैं भय से कांप उठी। मैंने हिलते हाथों से रिसीवर उठाया और पूछा—"कौन हो ? किसे चाहते हो।" लाइन के दूसरी ओर पहले कुछ घुन-घुन की-सी आवाज़ हुई, फिर एक धीमा किन्तु कठोर स्वर सुनाई दिया—"श्रीमती द विन्तर हैं क्या ?" वह आवाज स्त्री की थी या पुरुष की यह मैं नहीं समझ सकी।

"आप गलती कर रहे हैं।" मैंने कहा, "श्रीमती द विन्तर को मरे तो एक बरस से भी ज्यादा हो गया।" और यह कहकर मैं उत्तर की प्रतीक्षा में टेलीफोन के मुंह की ओर मूर्खों-जैसी घूरती बैठी रही; किन्तु जब वह नाम एक बार फिर पूछा गया और इस बार ऊंचे स्वर में तब मुझे चेत हुआ कि मैं कैसी भयंकर भूल कर बैठी हूं।

"मैं श्रीमती डैन्वर्स हूं, मैडम ! और आपसे घर के टेलीफोन पर बातें कर रही हूं।" उधर से आवाज़ आई।

"ओ ! मुझे खेद है, श्रीमती डैन्वर्स," मैंने हकलाते हुए कहा, "टेली-फोन ने मुझे एकदम चौंका दिया और मेरी समझ में नहीं आया कि मैं क्या कह रही हूं। मैंने यह सोचा ही नहीं कि कोई मुझसे बातें कर रहा है और मैं घर के टेलीफोन पर बोल रही हूं।"

"मुझे दुःख है कि मैंने आपको कष्ट दिया। मैं यह जानना चाहती थी कि आप मुझे बुलाना तो नहीं चाहतीं। आज के भोजन की सूची आपको पसंद है न ?"

"हां-हां, मुझे पसंद है। तुम जो चाहो बनवा लो। मुझसे पूछने का कष्ट करने की जरूरत नहीं।"

"फिर भी अगर आप सूची पढ़ लेतीं तो अच्छा रहता, वह आपके पास ही सोख्ते के नीचे रखी है।"

मैंने जल्दी-जल्दी सूची ढूंढी। उसपर भांति-भांति के व्यंजनों के नाम लिखे थे। मैं समझ नहीं सकी कि वह दोपहर के भोजन की सूची है या रात के। शायद दोपहर के भोजन की थी।

"हां, श्रीमती डैन्वर्स ! मैंने सूची देख ली, बहुत ही अच्छी है।"

"आप कुछ बदलना चाहें तो कृपाकर बता दें, मैं फौरन ही आज्ञा दे दूंगी। आपने देखा होगा कि सॉस के पास मैंने थोड़ी-सी खाली जगह छोड़ दी है, जिससे आप अपनी पसंद लिख सकें। पता नहीं, आपको भुने मांस के साथ कौन-सा सॉस अच्छा लगता है। श्रीमती द विन्तर सॉस के विषय में अपनी विशेष रुचि रखती थीं और मुझे सदा इसके लिए उनसे पूछना पड़ता था।"

"अच्छा," मैंने कहा, "अच्छा...मैं ज़रा देख लूं, श्रीमती डैन्वर्स !...मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा है, तुम जो कुछ सदा बनवाती आई हो, वही बनवा लो। मेरा मतलब है कि तुम वही बनवा लो जो तुम समझती हो कि श्रीमती द विन्तर तुम्हें बनाने के लिए कहतीं।"

"आपकी कोई विशेष पसंद नहीं है, मैडम ?"

"नहीं, श्रीमती डैन्वर्स !"

"क्षमा कीजियेगा, मैंने आपको लिखते समय कष्ट दिया।"

"नहीं-नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है।"

"डाक दो बजे दोपहर को निकलती है। राबर्ट आपके पास जाकर पत्र ले आयेगा और टिकट भी वही लगा देगा। आप केवल उसे टेलीफोन कर दें और अगर आपको कोई पत्र जल्दी भेजना हो तो उसे बता दें, वह उसे फौरन डाकखाने ले जाने का प्रबन्ध कर देगा।"

"धन्यवाद, श्रीमती डैन्वर्स," मैंने कहा और एक क्षण तक मैं टेलीफोन पर ही कान लगाये रही। लेकिन वह फिर कुछ नहीं बोली और दूसरे सिरे पर खट की-सी एक हलकी आवाज़ आई, जिसका मतलब था कि उसने रिसीवर रख दिया है। मैंने भी रिसीवर रख दिया और एक बार फिर मेज़ पर दृष्टि डाली। सोख्ते के ऊपर लिखने का कागज तैयार रखा था। सामने कागज़ रखने के खाने मेरी ओर घूर-घूरकर देख-से रहे थे और उनपर लिखे हुए शब्द मुझे मेरे आलसीपन पर धिक्कार रहे थे। निश्चय ही यहां जो स्त्री पहले बैठा करती थी वह मेरी तरह अपना समय नष्ट नहीं करती थी। वह फौरन ही टेलीफोन उठाकर घर के कामकाज के लिए हिदायतें देती थी और भोजन की सूची में जो चीज़ उसे पसन्द नहीं आती थीं, उसपर पेंसिल फेर देती थी। मेरी तरह वह—'हां श्रीमती डैन्वर्स', 'सचमुच श्रीमती डैन्वर्स', जैसी बातें नहीं कहा करती थी। और यह सब करने के बाद वह धड़ाधड़ तिरछे, लम्बे अक्षरों में अपनी चिट्ठियां लिख डालती थी, एक-दो...पांच, छः, सात और अपने व्यक्तिगत पत्रों के अंत में हस्ताक्षर करती थी—'रेबेका', वही लम्बा टेढ़ा 'आर', जिसके सामने दूसरे अक्षर बौने-से लगते थे।

मैं मेज़ को अपनी अंगुलियों से बजाती रही। कागज़ रखने के खाने खाली पड़े थे। उनमें न उत्तर देने के लिए पत्र थे, न चुकाने के लिए बिल। श्रीमती डैन्वर्स ने कहा था कि यदि मुझे कुछ आवश्यक पत्र भेजने हों तो मैं रॉबर्ट को टेलीफोन कर दूं। मैं सोच रही थी कि रेबेका न मालूम कितने आवश्यक पत्र लिखती थी और न जाने किस-किसको। लेकिन मैं थी कि श्रीमती वान हॉपर के सिवा और किसीका नाम ही नहीं सोच पाती थी, पत्र लिखने के लिए। यह कैसी विडम्बना की बात थी कि अपने ही घर में अपनी ही मेज़ पर बैठकर

मुझे सिर्फ़ एक ऐसी स्त्री को पत्र लिखने की बात सूझ रही थी, जिससे मैं घृणा करती थी और जिससे फिर कभी मिलने की आशा नहीं थी। मैंने एक कागज़ अपनी ओर खींचा और चमकदार नये निबवाले पतले कलम को उठाकर लिखने लगी।

"प्रिय श्रीमती हॉपर..." बड़े परिश्रम के साथ और रुक-रुककर मैंने आगे के कुछ शब्द लिखे और उन्हें लिखते-लिखते मैंने पहली बार अनुभव किया कि मेरी लिखावट कितनी घनी और कैसी सिखतड़ों जैसी थी। उसमें न कोई अपनी विशेषता थी, न शैली। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी घटिया स्कूल में पढ़नेवाली किसी नई छात्रा की लिखावट हो।

: ११ :

सड़क पर कार की आवाज़ सुनकर मैं एकदम घबरा गई और घड़ी की ओर देखती हुई उठ खड़ी हुई, क्योंकि मुझे यह समझने में देर न लगी कि बीट्रिस और उनके पति आ धमके हैं। अभी बारह ही बजे थे और मेरी आशा से बहुत पहले ही वे आ गये थे। मैक्सिम अभी तक नहीं लौटे थे। एकाएक मेरे मन में आया कि क्यों न खिड़की के रास्ते उतरकर मैं बाग में छिप जाऊं, जिससे कि फ्रिथ जब उन्हें लेकर सुबहवाले कमरे में आये तब मुझे न देखकर कह दे कि मैडम शायद कहीं बाहर चली गई हैं। लेकिन जैसे ही मैं खिड़की की तरफ़ लपकी कुत्ते मुझे उत्सुकता के साथ देखने लगे और जैस्पर दुम हिलाता हुआ मेरे पीछे लग लिया।

सदाबहार की टहनियों को हटाकर मैं नीचे उतरने ही वाली थी कि मुझे उन लोगों के बोलने की आवाज़ बिल्कुल पास ही सुनाई दी और मैं झटपट कमरे में लौट आई। मैंने देखा कि वे बाग के रास्ते ही से भीतर आ रहे थे। निश्चय ही फ्रिथ ने उन्हें बता दिया था कि मैं सुबहवाले कमरे में हूं। मैं तेजी-से ड्राइंग रूम में घुस गई और अपनी बाईं ओर का दरवाजा खोलकर बाहर की तरफ़ लपकी। सामने पत्थर का एक लम्बा गलियारा चला गया था। बिना सोचे-समझे मैं उसी ओर दौड़ती चली गई। उस समय मुझे अपनी मूर्खता का

पूरा-पूरा ज्ञान था और अपनी इस अचानक घबराहट के लिए अपने-आपसे घृणा भी हो रही थी, लेकिन मैं जानती थी कि मैं इन लोगों का सामना नहीं कर सकूंगी, कम-से-कम फौरन तो नहीं।

वह रास्ता शायद मकान के पिछले भाग की ओर चला गया था। कुछ दूर आगे चलकर मैं एक मोड़ पर मुड़ी ही थी कि दूसरा जीना दिखाई दिया और वहां मुझे एक नौकरानी मिली, जिसे मैंने अबतक नहीं देखा था। उसने बड़े आश्चर्य के साथ मुझे घूरा, जैसे मैं कोई छाया हूं और घर के उस भाग में मेरा जाना बिल्कुल कल्पना के बाहर की बात हो। मैंने बड़ी घबराहट के साथ उससे 'गुडमार्निंग' कहा और लपककर मैं सीढ़ियों की ओर बढ़ी। वह भी 'गुड मार्निंग मैडम' कहकर मुझे अपनी गोल-गोल आंखों से आश्चर्य के साथ मुंह बाये देखती रही।

सीढ़ियों पर चढ़ने के बाद एक दरवाजे को पारकर मैं एक ऐसे लम्बे गलियारे में जा पहुंची, जिसे मैंने पहले नहीं देखा था। मैं झिझककर बाईं ओर मुड़ी और एक दूसरे जीने के पास जा पहुंची। वहां बिल्कुल सुनसान और अंधेरा था। आसपास कोई भी नहीं था। मैंने ऐसे ही अललटप एक दरवाज़ा खोल दिया। उसके पीछे एक कमरा था, जहां घुप अंधेरा था। बन्द खिड़कियों में से रोशनी बिल्कुल भी नहीं आ पा रही थी। फिर भी मैंने देखा कि कमरे के बीच में जो मेज-कुर्सियां पड़ी थीं, उनपर सफेद धूल की तह जमी हुई थी। कमरे में सीलन की बदबू आ रही थी। शायद पिछली गर्मियों से इस कमरे की खिड़कियों पर से पर्दे तक नहीं हटाये गए थे। मैंने धीरे-से दरवाज़ा बन्द कर दिया और गलियारे की ओर पांव बढ़ाये। उसके दोनों तरफ़ दरवाज़े-ही-दरवाज़े थे, लेकिन सब बन्द थे। चलते-चलते मैं एक महराबदार झरोखे के पास पहुंची, जिसकी चौड़ी खिड़की से रोशनी आ रही थी। उससे मैंने बाहर की ओर जो झांका तो सामने लॉन दिखाई दिया, जिसके आगे सफेद झागों से भरा हुआ समुद्र का हरा पानी लहरा रहा था।

समुद्र इतना पास था, जितना मैंने सोचा भी नहीं था। किसी छोटी खाड़ी के किनारों पर टकराती हुई लहरों की आवाज़ साफ सुनाई दे रही थी। अब

मैं समझी कि सारे घर का चक्कर काटकर मैं पश्चिमी भाग में पहुंच गई थी। हां तो, श्रीमती डैन्वर्स ने ठीक ही कहा था, समुद्र वहां से साफ़ दिखाई दे रहा था और शायद जाड़ों में उसकी लहरें लॉन को पार करके मैन्दरले के लिए खतरा बन जाती होंगी। अब भी तेज हवा के कारण खिड़कियों के शीशे धुंधले हो रहे थे, जैसे उनपर किसीने मुंह की भाप छोड़ दी हो। नमक के कण लिये हुए एक घना कुहरा समुद्र के ऊपर की ओर उठ रहा था। मैं उधर देख ही रही थी कि तेजी से दौड़ते हुए बादल के टुकड़े ने सूर्य को क्षणभर के लिए ढंक लिया, जिससे समुद्र का रंग एकदम बदल गया और वह बिल्कुल काला दिखाई देने लगा।

मैं कह नहीं सकती क्यों, लेकिन मुझे इस बात की खुशी हुई कि मेरे कमरे पूर्वी भाग में थे। सागर के शोर से गुलाब का बाग मुझे अधिक पसन्द था। मैं वहां से जीने की ओर लौट आई और नीचे उतरने लगी। तभी पीछे से दरवाजा खुलने की आवाज सुनाई दी और मैंने देखा कि श्रीमती डैन्वर्स खड़ी थीं। कुछ क्षण हम बिना बोले एक-दूसरे को घूरते रहे। उसकी आंखों में क्रोध का भाव था या कौतुहल का, यह मैं समझ नहीं सकी, क्योंकि मुझे देखते ही उसने अपना भाव बदल लिया। उसने मुझसे कुछ कहा तो नहीं लेकिन मन-ही-मन में मैंने ऐसा महसूस किया मानो मैं किसी वर्जित स्थान में घुसती हुई पकड़ी गई हूं।

"मैं रास्ता भूल गई हूं।" मैंने कहा।

"आप दूसरी ओर चली आई हैं, यह तो पश्चिमी हिस्सा है।"

"हां, इतना तो मैं समझ गई हूं।"

"क्या आप किसी कमरे में गई थीं?"

"नहीं," मैंने कहा, "मैंने एक कमरे का दरवाज़ा खोला तो था, लेकिन वहां बिल्कुल अंधेरा था और धूल-ही-धूल भरी थी। तुम शायद इस हिस्से को बन्द रखना चाहती हो?"

"अगर आप चाहेंगी तो मैं इन कमरों को खुलवा दूंगी। आपके कहने भर की देर है। कमरे बिल्कुल सजे हुए हैं और काम में लाये जा सकते हैं।"

"नहीं, नहीं, तुम मेरा मतलब शायद ग़लत समझ गई हो।"

"शायद आप चाहती हैं कि मैं आपको इधर का सारा हिस्सा दिखा दूं।"

"नहीं, मैं नीचे जा रही हूं।" मैंने गर्दन हिलाते हुए कहा और सीढ़ियों पर से उतरना शुरू कर दिया। वह मेरे साथ-साथ इस तरह चलती रही जैसे वह जेल की सुपरिन्टेन्डेन्ट हो और मैं उसकी क़ैदी।

"जब भी आपको फ़ुर्सत हो, आप मुझसे कह दें, मैं आपको पश्चिमी हिस्से के सारे कमरे दिखा दूंगी।" उसने फिर वही बात दुहराते हुए कहा और न मालूम क्यों मुझे कुछ बेचैनी-सी होने लगी।

"मैं वहां की सफ़ाई करा दूंगी और तब आप उन्हें असली हालत में देख सकेंगी।" श्रीमती डैन्वर्स ने फिर कहा, "मैं तो आज सुबह ही आपको दिखलाना चाहती थी, लेकिन मैंने सोचा कि शायद आप चिट्ठी-पत्री लिखने में लग रही होंगी। आपको जब कभी मुझसे कुछ कहना हो, आप फ़ौरन टैलीफ़ोन कर दें। उन कमरों को ठीक करने में कुछ भी देर नहीं लगेगी।"

"धन्यवाद, श्रीमती डैन्वर्स, मैं तुम्हें बता दूंगी," मैंने नीचे पहुंचकर कहा। मैं उससे निगाह चुराने की चेष्टा कर रही थी, लेकिन वह मुझे एकटक घूरे जा रही थी, मानो पूछना चाहती कि आखिर मैं उधर गई क्यों।"

कुछ क्षणों बाद वह बोली, "श्रीमती लेसी और मेजर लेसी को आये काफ़ी देर हो चुकी है। बारह बजने के थोड़ी देर बाद ही मैंने उनकी कार की आवाज़ सुनी थी।"

'अच्छा ! मुझे ख़बर नहीं थी।"

"फ़िथ उन्हें सुबहवाले कमरे में ले गया होगा। शायद साढ़े बारह बज गये हैं। अब तो आपको रास्ता मालूम हो गया है न ?"

"हां, अब मैं चली जाऊंगी।" मैंने कहा और सीढ़ियां उतरकर मैं बड़े हॉल में पहुंच गई, लेकिन मैं जानती थी कि अब भी वह ऊपर खड़ी-खड़ी मुझे देख रही थी।

अब सुबहवाले कमरे में जाकर मैक्सिम के बहन-बहनोई से मिलने के सिवा और कोई चारा नहीं था। मैं ड्राइंगरूम में चली गई और वहां से मैंने मुड़कर

जो देखा तो श्रीमती डैन्वर्स अब भी वहीं सीढ़ियों के ऊपर काले सन्तरी की तरह खड़ी थी।

एक क्षण के लिए मैं दरवाजे के पास ठिठकी। अन्दर से बातचीत की आवाज आ रही थी। मैक्सिम आ गये थे और मुझे ऐसा लगा कि उनके साथ उनके एजेन्ट क्राउले भी आ गये हैं। अनायास ही मेरे मन में फिर घबराहट होने लगी—ठीक वैसी ही जैसी अक्सर बचपन में लोगों से हाथ मिलाने के लिए बुलाये जाने पर हुआ करती थी, मैं हैंडिल घुमाकर एकदम कमरे में घुस गई।

"आखिर वह आ ही गई!" मैक्सिम ने कहा, "तुम कहां छिप रही थीं? हम तो तुम्हें खोजने के लिए एक पूरी पार्टी-की-पार्टी भेजनेवाले थे। यह बीट्रिस हैं, यह गाइल्स हैं और यह फ्रैंक क्राउले। देखो-देखो, तुम अभी कुत्ते को कुचले दे रही थीं।"

बीट्रिस लंबी थी और बहुत ही खूबसूरत। उसके कन्धे चौड़े थे। होठों का फैलाव और आंखें तो बिल्कुल मैक्सिम जैसी थीं। लेकिन वह इतनी फुर्तीली नहीं थी जितनी कि मैंने कल्पना की थी। उसने मेरा चुम्बन नहीं लिया, बल्कि मेरी आंखों में आंखें डालते हुए बड़ी दृढ़ता के साथ मुझसे हाथ मिलाया। फिर मैक्सिम की तरफ देखकर कहा, "जैसा मैंने सोच रखा था, उससे बिल्कुल भिन्न हैं। तुमने जो हुलिया बताया था, उससे एकदम नहीं मिलतीं।"

सब हँस पड़े और मैंने भी उनका साथ दिया, लेकिन मैं समझ नहीं पाई कि वे मेरी प्रशंसा में हँस रहे थे या निन्दा में। मैं यह भी नहीं सोच पाई थी कि बीट्रिस को मुझसे क्या आशा थी और मैक्सिम ने उसे मेरा क्या हुलिया बताया था।

"यह गाइल्स हैं।" मेरी बाह को टहोकते हुए मैक्सिम ने कहा और गाइल्स ने अपना लम्बा-चौड़ा पंजा बढ़ाकर मेरी दुबली-पतली अंगुलियों को मसल-सा डाला। उनकी प्रसन्न आंखें चश्मे के भीतर से मुस्करा रही थीं।

"और यह फ्रैंक क्राउले हैं।" मैक्सिम ने कहा और मैं एजेन्ट की तरफ मुड़ी। वह एक दुबले-पतले आदमी थे और मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे देखकर उन्हें कुछ संतोष-सा हुआ है। इस संतोष का कारण क्या था, यह सोचने के लिए मुझे समय

नहीं मिला, क्योंकि तभी फ्रिथ ने आकर शराब पेश की और बीट्रिस मुझसे बातें करने लगीं, "मैक्सिम कह रहे थे कि तुम कल ही आई हो। मुझे इसका पता नहीं था, नहीं तो हम इतनी जल्दी नहीं आते। मैन्दरले तुम्हें कैसा लगा ?"

"अभी तो मैंने कुछ देखा ही नहीं है," मैंने जवाब दिया, "हां, सुन्दर तो बहुत है।"

जैसी कि मुझे उम्मीद थी, वह मुझे नीचे से ऊपर तक देख रही थीं—बिल्कुल सीधे स्वभाव से, श्रीमती डैन्वर्स की तरह द्वेष के साथ नहीं, न ही किसी अमित्रता की भावना से। उन्हें मेरे गुण-दोष देखने का पूरा अधिकार था, क्योंकि वह मैक्सिम की बहन थीं। और अब तो मैक्सिम भी मेरे पास ही आगये थे; उन्होंने मेरी बांह में अपनी बांह डाल रखी थी, जिससे मुझे बड़ा ढांढ़स-सा बंधा हुआ था।

"तुम पहले से स्वस्थ दिखाई दे रहे हो।" वह मैक्सिम से बोली और फिर मेरी तरफ गर्दन हिलाते हुए कहा, "इसके लिए शायद हमें तुमको धन्यवाद देना है।

"मैं सदा स्वस्थ रहा हूं। अपने जीवन में मुझे कभी कुछ नहीं हुआ है। तुम्हें तो जो कोई भी गाइल्स की तरह मोटा दिखाई नहीं देता, उसे ही तुम अस्वस्थ कहने लगती हो।"

"रहने भी दो। अभी छः महीने पहले तुम्हारी जो हालत थी वह भूल गये क्या ? सूखकर बिल्कुल कांटा हो गये थे। जब मैं आई थी तब तुम्हें देखकर एकदम घबरा गई थी। क्यों गाइल्स, ठीक कह रही हूं न ? जब हम पिछली बार आये थे तब मैक्सिम कितने डरावने दिखाई देते थे।"

"इतना तो मैं भी कहूंगा कि अब तुम बिल्कुल दूसरे आदमी दिखाई दे रहे हो। यह अच्छा ही हुआ कि तुम यहां से चले गये। क्यों क्राउले, अब यह पहले से अच्छे दिखाई दे रहे हैं न ?"

मैंने अपनी बांह में मैक्सिम के पुट्ठों का तनाव अनुभव किया और मुझे लगा कि वह अपने क्रोध का दबाये रखने की चेष्टा कर रहे हैं। किसी कारण से उन्हें अपने स्वास्थ्य के बारे में यह बातचीत अच्छी नहीं लग रही थी और मैं

समझती हूं कि बीट्रिस का इस तरह मैक्सिम की तन्दुरुस्ती के बारे में कुरेद-कुरेदकर बातें करना ठीक नहीं था।

इसके बाद भी बीट्रिस और मैक्सिम के बीच कुछ ऐसी-वैसी ही बातें होती गईं। मैंने अनुभव किया कि वातावरण कुछ अप्रिय होता जा रहा है और मैं सोचने लगी कि क्या इन भाई-बहन में सदा इसी प्रकार नोक-झोंक चलती रहती है। मैंने सोचा कि किसी तरह फ्रिथ जल्दी-से आकर भोजन के तैयार होने की सूचना दे दे। मुझे यह भी तो पता नहीं था कि वह हमें बुलाने आयेगा या हमें घंटा बजाकर बुलाया जायगा। मुझे मैन्दरले के तौर-तरीकों का पता नहीं था।

बात बदलने के लिए मैंने बीट्रिस के पास बैठते हुए पूछा, "आप यहां से कितनी दूर रहती हैं? बहुत सवेरे तो नहीं चलना पड़ा था?"

"हम यहां से पचास मील दूर पर ट्राउचेस्टर के उस ओर दूसरे सूबे में रहते हैं। हमारे लिए शिकार खेलना बड़ा आसान है। जब मैक्सिम तुम्हें छुट्टी दे सकें तो कुछ दिन के लिए हमारे पास आकर रहना। गाइल्स तुम्हें घोड़े पर ले जायंगे।"

"लेकिन मैं शिकार खेलना नहीं जानती। बचपन में मैंने घोड़े पर चढ़ना सीखा था, लेकिन वह भी योंही मामूली-सा। अब तो वह भी भूल गई।"

"तुम्हें फिर से घुड़सवारी करनी चाहिए। इस देश में इसके बिना काम नहीं चल सकता। और, फिर कोई शुगल भी तो चाहिए। मैक्सिम कहते थे कि तुम्हें चित्रकारी आती है, लेकिन उससे कुछ कसरत नहीं होती, वह तो बारिश के दिनों के लिए ही ठीक होती है, जब और कुछ करना सम्भव नहीं होता।"

"लेकिन बीट्रिस, हम तुम्हारी तरह हवा में घूमनेवाले प्रेत नहीं है।" मैक्सिम बोले।

"मैं आपसे बातें नहीं कर रही हूं, जनाब! हम सब जानते हैं कि आपको मैन्दरले के बागों में छपाछप करते फिरने में ही आनन्द आता है।"

"मुझे भी घूमने का बहुत शौक है और मुझे विश्वास है कि मैन्दरले में घूमने से मैं कभी उकताऊंगी नहीं। ठंड कुछ कम हो तो मुझे लहरों में नहाना

भी अच्छा लगता है।"

"ना बाबा ! यह मेरे बस का काम नहीं। यहां का पानी बहुत ठंडा है और समुद्र का किनारा बड़ा कंकरीला है।"

"उसकी कोई परवा नहीं। नहाना मुझे बहुत प्यारा लगता है, बशर्ते कि लहरें ज्यादा तेज़ न हों। खाड़ी में नहाने में कोई खतरा तो नहीं है ?"

किसीने उत्तर नहीं दिया और तब मुझे एकाएक ध्यान आया कि ओह, मैं क्या कह गई। मेरा दिल धड़कने लगा और मेरे चेहरे पर लाली दौड़ गई। परेशानी में मैं नीचे झुककर जैस्पर के कान थपथपाने लगी।

"मुझे बड़ी भूख लग रही है, पता नहीं आज खाने का क्या हो रहा है ?" मैक्सिम ने कहा।

"लेकिन कार्निसवाली घड़ी में अभी-अभी तो एक बजा है।" क्राउले बोले।

"यह घड़ी सदा आगे रहती है।" बीट्रिस ने कहा।

"अब कई महीनों से यह बिल्कुल ठीक समय दे रही है।" मैक्सिम ने बताया।

तभी दरवाजा खुला और फ्रिथ ने आकर सूचना दी कि खाना मेज़ पर लगाया जा चुका है।

"मुझे हाथ धोने हैं।" अपने हाथों की ओर देखते हुए गाइल्स बोले।

हम सब उठ खड़े हुए और ड्राइंगरूम में से होते हुए हॉल की तरफ चल दिये, बीट्रिस ने मेरा हाथ पकड़ रखा था और हम दोनों आगे-आगे चल रहे थे।

"मेरे कहने का कुछ ख्याल मत करना तुम।" बीट्रिस ने कहा, "मैक्सिम ने तुम्हारी उम्र बताई तो थी, लेकिन तुम तो अभी बिल्कुल बच्ची हो। क्यों मैक्सिम से प्यार करती हो न ?"

मुझे ऐसे प्रश्न की स्वप्न में भी आशा नहीं थी। उसे सुनकर मुझे जो आश्चर्य हुआ वह बीट्रिस से छिपा न रहा। उसने धीरे-से हँसकर मेरे हाथ को दबाते हुए कहा, "खैर, कहने की जरूरत नहीं है। मैं तुम्हारे मन की बात समझ गई हूं। ऐसी-ऐसी बातें करके मैं तुम्हें बहुत परेशान कर रही हूं न ! बात यह है कि मुझे मैक्सिम से बड़ी मुहब्बत है। वैसे हम जब मिलते हैं तब इसी तरह एक-दूसरे से कुत्ते-बिल्ली की तरह लड़ते-झगड़ते हैं। मैं तुम्हें एक बार

फिर मैक्सिम के स्वास्थ्य के लिए बधाई देना चाहती हूं। पिछले साल इन्हीं दिनों हम उनकी ओर से बहुत चिन्तित हो उठे थे, लेकिन चारा ही क्या था; तुम्हें तो सब बातें मालूम ही होंगी।"

अब हम लोग खाने के कमरे में पहुंच गये थे। बीट्रिस चुप हो गई और खाना शान्तिपूर्वक निबट गया। बीच-बीच में कुछ बहस होती तो जरूर रही लेकिन बीट्रिस और मैक्सिम ज्यादातर घोड़ों, बाग और आपस के मित्रों की ही बातचीत में लगे रहे। गाइल्स बातों से अधिक खाने पर ध्यान दे रहे थे।

हमने पनीर और कॉफी ली और उसके बाद मैंने मैक्सिम की ओर देखा कि मुझे अब क्या करना चाहिए। लेकिन उन्होंने कोई संकेत नहीं दिया और इसी बीच गाइल्स बर्फ़ में फंसी हुई एक मोटर का किस्सा सुनाने लगे। मैं चुपचाप बैठी सुनती रही और बीच-बीच में सिर हिलाती तथा मुस्काती रही। मैं देख रही थी कि मैक्सिम बड़ी बेचैनी-सी महसूस कर रहे हैं। जब किस्सा खत्म हुआ तब मैंने मैक्सिम की ओर देखा। उनकी भृकुटी कुछ चढ़ी हुई थी और उन्होंने सिर हिलाकर दरवाजे की ओर इशारा किया।

मैं एकदम उठ खड़ी हुई और जैसे ही मैंने कुर्सी सरकाई गाइल्स का शराब का गिलास बुरी तरह हिल गया। "उफ" मैंने कहा और मै घबराकर नैपकिन उठाने लगी। "ठीक है।" मैक्सिम बोले, "फ्रिथ सब ठीक कर लेगा, तुम अब ज्यादा गड़बड़ मत करो। बीट्रिस, तुम इन्हें बाग में ले जाओ, इन्होंने अभी यहां कुछ भी नहीं देखा है।"

मैंने देखा कि वह थके-थके-से लग रहे थे और उनके मुंह पर कुछ क्रोध का-सा भाव था। सचमुच मेज हिलाकर मैंने कितनी मूर्खता का परिचय दिया था।

हम चबूतरे पर से होकर नीचे हरी मुलायम लॉन में पहुंच गये। टहलते-टहलते बीट्रिस ने कहा, "कुछ अपने विषय में तो बताओ। तुम दक्षिणी फ्रांस में क्या कर रही थीं? मैक्सिम कह रहे थे कि तुम किसी भयानक अमरीकी महिला के साथ रह रही थीं।"

मैंने बीट्रिस को श्रीमती हॉपर की सारी बातें बता दीं और फिर मैक्सिम

के साथ घनिष्ठता किस प्रकार बढ़ी, यह भी कह-सुनाया।

"हां, यह सब अचानक ही हो गया। जब मैक्सिम ने लिखा कि उन्होंने तुम्हें दक्षिणी फ्रांस में पाया है और तुम बहुत ही जवान और सुन्दर हो तब मुझे कुछ धक्का-सा लगा। हम उम्मीद कर रहे थे कि तुम बिल्कुल आधुनिक ढंग की एक फैशनेबल रंगी-सजी तितली होगी, लेकिन जब तुम खाने से पहले सुबहवाले कमरे में आईं तब मैं तुम्हें देखकर हक्की-बक्की रह गई।" यह कहकर वह हँसी। मैं भी हँसी, लेकिन यह न समझ सकी कि बीट्रिस मुझे देखकर निराश हुई हैं या प्रसन्न।

"बेचारे मैक्सिम को बड़ा बुरा वक़्त काटना पड़ा है।" बीट्रिस ने कहा, "उम्मीद है कि तुम्हारे साथ रहकर अब वह सबकुछ भूल गये होंगे। मैन्डरले से उन्हें प्यार है।"

मैंने चाहा कि वह इसी प्रकार स्वाभाविक रूप से बातों-ही-बातों में मुझे कुछ और भी पिछली बातें बता दें।

"हम दोनों की आदतें एक-दूसरे से बिल्कुल अलग-अलग हैं।" वह बोली, "मेरे मन की बात मेरे मुंह पर झलक आती है, मैं किसी आदमी को पसन्द करती हूं या नहीं, मैं किसीसे प्रसन्न हूं या रुष्ट, यह सब मेरे मुंह को देखने से पता चल जाता है। मैं कुछ भी गुप्त नहीं रख पाती। लेकिन मैक्सिम इसके बिल्कुल उलटे हैं—बहुत खामोश, बहुत रहस्यमय। उन्हें देखकर कोई यह पता नहीं चला सकता कि किस समय उनके दिमाग में क्या बात घूम रही है। मुझे ज़रा-ज़रा-सी बात पर क्रोध आ जाता है। मैं जल्दी ही भभक उठती हूं, लेकिन जल्दी ही शान्त हो जाती हूं। लेकिन मैक्सिम को शायद साल-दो-साल में एक बार क्रोध आता है, और जब आता है तब बस पूछो मत। तुमपर वह कभी क्रोध करेंगे, ऐसी मुझे आशा नहीं है। तुम तो एक हँसती-खेलती सुन्दर गुड़िया-सी हो।"

उन्होंने मुस्कराकर मेरी बांह में चुटकी भरी और फिर कहा, "मेरी इन बातों का ख्याल न करना। नहीं करोगी न ?...लेकिन मैं समझती हूं, तुम्हें अपने बालों के लिए कुछ करना चाहिए, तुमने इन्हें घुंघराले क्यों नहीं करवा

लिया ? ये बहुत लम्बे हैं, टोप के नीचे से अजीब-से दिखाई देते होंगे । इन्हें अपने कानों के पीछे की तरफ डाल लिया करो ।"

उनकी इच्छा के अनुसार मैंने अपने बाल कानों के पीछे कर लिये, लेकिन उन्हें वे जंचे नहीं । "नहीं ऐसे तो और भी बुरे लगते हैं ।" उन्होंने कहा, "तुम तो इन्हें घुंघराले ही करवा लो । मैक्सिम का क्या ख्याल है ? क्या उन्हें ये बाल अच्छे लगते हैं ?"

"पता नहीं, उन्होंने तो कभी कुछ बताया नहीं ।"

"तो शायद उन्हें ऐसे ही अच्छे लगते होंगे । अच्छा, यह बताओ, लंदन या पेरिस से तुमने कुछ नये कपड़े भी खरीदे या नहीं ?"

"नहीं, हमें समय ही नहीं मिला । मैक्सिम को मैन्दरले आने की जल्दी थी ।"

"तुम्हारे कपड़े पहनने के ढंग से पता चलता है कि तुम्हें कपड़ों की ज्यादा परवा नहीं है ।" बीट्रिस ने कहा और मैंने लज्जित होते हुए अपने फ़लालैन के फ्रॉक की तरफ देखा ।

"नहीं, ऐसी बात तो नहीं है ।" मैंने उत्तर दिया, "मुझे बढ़िया कपड़ों का बहुत शौक है, लेकिन मेरे पास अबतक कभी इतना रुपया ही नहीं हुआ कि कपड़ों पर मनमाना खर्च कर सकूं ।"

"समझ में नहीं आता कि मैक्सिम ने कुछ दिन लंदन में ठहरकर तुम्हारे लिए ढंग के कपड़े क्यों नहीं खरीद दिये । ऐसा उनका स्वभाव तो नहीं है । वह तो इन बातों का बड़ा ध्यान रखते हैं ।"

"अच्छा ! लेकिन मेरे लिए तो उन्होंने कभी कोई ख़ास परवा नहीं दिखाई । उन्हें तो शायद इस बात का ध्यान तक नहीं आता कि मैं क्या पहनती हूं, क्या नहीं ।"

"अच्छा ! तब तो वह बिल्कुल बदल गये होंगे ।"

मेरी ओर से दृष्टि हटाकर बीट्रिस ने जेब में हाथ डाले-डाले जैस्पर की ओर सीटी बजाई और फिर वह ऊपर मकान की तरफ देखने लगीं ।

"हूं, तो तुम पश्चिमी हिस्से में नहीं रह रही हो ?" उन्होंने पूछा ।

"नहीं, हमारे कमरे पूर्वी हिस्से में हैं। उसे नये ढंग से सजाया गया है।"

"अच्छा! मुझे पता नहीं था। लेकिन ऐसा क्यों किया गया?"

"मैक्सिम यही चाहते थे, शायद उन्हें वहीं रहना पसन्द है!"

वह कुछ नहीं बोलीं और सीटी बजाती हुई खिड़कियों की ओर देखती रहीं। "श्रीमती डैन्वर्स के साथ तुम्हारी कैसी पट रही है?" अचानक उन्होंने पूछा।

मैं नीचे की ओर झुककर जैस्पर के कान और सिर थपथपाने लगी। फिर बोली, "अभी उससे कुछ ज्यादा वास्ता नहीं पड़ा है। लेकिन उससे मुझे कुछ भय-सा लगता है, आज तक मैंने ऐसी औरत नहीं देखी।"

"जरूर नहीं देखी होगी। मेरा भी यही ख्याल है। लेकिन उससे डरने की जरूरत नहीं है, उसे इस बात का पता भी नहीं लगना चाहिए कि तुम उससे डरती हो।"

मैं जैस्पर का सिर थपथपाती रही।

"उसके ढंग कैसे हैं? मित्रतापूर्ण या...?"

"नहीं, कुछ अधिक मित्रतापूर्ण तो नहीं।"

बीट्रिस फिर सीटी बजाने लगीं और अपने पैर से जैस्पर के कान मलने लगीं।

"वह घर का काम-काज बहुत अच्छे ढंग से चला रही है, मुझे बीच में दखल देने की जरूरत नहीं है।" मैं बोली।

"लेकिन मेरा ख्याल है कि इसका वह बुरा नहीं मानेगी।" बीट्रिस ने कहा।

यही बात एक दिन पहले मैक्सिम ने कही थी। कुछ अजीब बात है कि दोनों की राय एक-सी थी। लेकिन मैं समझती हूं कि जो बात श्रीमती को सबसे ज्यादा नापसन्द हो सकती थी, वह थी किसीका घर के काम-काज में दखल देना।

"मेरा ख्याल है कि कुछ दिनों बाद वह ठीक हो जायगी। हो सकता है कि शुरू-शुरू में तुम्हें कुछ कठिनाई पड़े। वह बहुत ही ईर्ष्यालु है।"

"लेकिन क्यों?" मैंने बीट्रिस की ओर देखते हुए पूछा, "ईर्ष्या की क्या

बात है ? मैक्सिम को तो वह कुछ ज्यादा पसन्द नहीं है ।"

"मैक्सिम की उसे चिन्ता नहीं है । मैं तो समझती हूं कि उनकी वह इज्जत करती है, लेकिन बस इज्जत ही करती है, इससे आगे और कुछ नहीं।"

वह क्षणभर को रुकीं और फिर कुछ त्योरी चढ़ाकर बोलीं, "असल में बात यह है कि तुम्हारा यहां आकर रहना उसे अच्छा नहीं लग रहा होगा।"

"लेकिन क्यों ? क्यों नहीं अच्छा लग रहा होगा ?"

"मैं तो समझती थी कि तुम सब जानती होगी, मैक्सिम ने तुम्हें बता दिया होगा। रेबेका की वह पूजा किया करती थी।"

"अच्छा, यह बात है ! अब मैं समझी।"

हम दोनों जैस्पर को थपथपाती रहीं। उस बेचारे को इतना प्यार मिलता कहां था। खुशी के मारे वह जमीन पर लोटने-पोटने लगा।

"वे लोग आ रहे हैं।" बीट्रिस ने कहा, "चलो, कुछ कुर्सियां निकलवाकर अखरोट के पेड़ के नीचे बैठें।"

वे लोग घूमते-घामते हमारे पास आ पहुंचे। गाइल्स ने जैस्पर की ओर एक टहनी फेंकी और सब उसकी ओर देखने लगे। क्राउले ने अपनी घड़ी की तरफ़ देखा और कहा, "अच्छा, अब मुझे चलना चाहिए। खाने के लिए धन्यवाद, श्रीमती द विन्तर।"

"जरा जल्दी-जल्दी आया कीजिये।" उनसे हाथ मिलाते हुए मैंने कहा।

फिर हम सब जाकर अखरोट के पेड़ के नीचे बैठ गये। रॉबर्ट अन्दर से कुर्सियां और लोइयां ले आया था। गाइल्स ने कुर्सी पर पसरकर टोप अपनी आंखों पर रख लिया और थोड़ी देर बाद ही वह मुंह खोले जोर-जोर-से खर्राटे भरने लगे।

"बन्द करो।" बीट्रिस ने चिल्लाकर कहा।

"मैं सो नहीं रहा हूं।" गाइल्स अपनी आंखें खोलकर बड़बड़ाये और फिर सो गये। मुझे वह बड़े भद्दे लगते थे और मैं समझ नहीं पाती थी कि आखिर बीट्रिस ने उनसे ब्याह क्यों किया। निश्चय ही उन्हें उनसे कभी प्रेम तो नहीं हुआ होगा।

शायद यही बात बीट्रिस मेरे लिए सोच रही थीं। मैंने देखा कि वह रह-रहकर मेरी ओर देख लेती थीं, मानो मन में सोच रही हों—आखिर मैक्सिम ने इसमें क्या विशेषता देखी ? लेकिन इतने पर भी वह मेरे प्रति उदार मालूम देती थीं।

वे अपनी दादी के बारे में बातें करते रहे और मैं अपने और मैक्सिम के भावी जीवन के सम्बन्ध में कल्पनाएं करती रही। तभी एकाएक बीट्रिस ने घास पर से उठकर अपने फ्रॉक को झाड़ते हुए कहा, "अच्छा अब हमें चलना चाहिए। मैं जल्दी घर पहुंचना चाहती हूं। कार्टराइट और उनकी पत्नी हमारे घर खाना खाने आयेंगे।"

"उनसे मेरा प्यार कह देना।" मैक्सिम ने कहा और हम उठ खड़े हुए। गाइल्स ने अपने टोप पर से धूल झाड़ी। मैक्सिम ने हाथ-पैर फैलाकर जम्हाई ली। सूरज डूब चुका था। मैंने आकाश की ओर देखा। वहां छोटे-छोटे बादल इकट्ठे हो रहे थे।

"हवा रुक गई है।" मैक्सिम ने कहा।

"रास्ते में बारिश न होने लगे।" गाइल्ड बोले।

"आज का दिन बड़े आनन्द में कटा।" बीट्रिस ने कहा और धीरे-धीरे टहलते हुए हम कार के पास पहुंचे।

"तुमने यह भी देखा कि पूर्वी हिस्सा अब कितना बदल गया है ?" मैक्सिम ने बीट्रिस से पूछा।

"चलिये, ऊपर चलकर देख आइये, एक-दो मिनट से ज्यादा नहीं लगेगा।" मैं बोली और हम हॉल में से होकर ऊपर पहुंचे। गाइल्स ने छोटे दरवाजे में से झुककर कमरे के अन्दर देखते हुए कहा, "अरे, यह तो बहुत सुन्दर हो गया है। है न बीट्रिस ?"

"अरे, तुमने तो बड़े पैर फैला लिये हैं। नये पर्दे ! नये बिस्तरे ! हर चीज नई है। गाइल्स, याद है तुम्हें, जब तुम्हारी टांग टूटी थी तब हम इसी कमरे में रहे थे। तब तो यहां बड़ी सीलन थी। मां को इन बातों का ज्यादा ख्याल नहीं रहता था। और यहां रहता ही कौन था ! जब मेहमानों की ज्यादा भीड़-

भाड़ होती थी तब उन्हें यहां भर दिया जाता था, खास तौर से अविवाहितों को। लेकिन अब तो इसका रूप ही बदल गया है। यहां से गुलाब का बाग भी तो दिखाई देता है। यह कितनी अच्छी बात है। मैं जरा अपनी नाक पर पाउडर लगा लूं।" बीट्रिस ने कहा।

पुरुष नीचे उतर गये और बीट्रिस ने शीशे में अपना मुंह देखते हुए पूछा, "क्या यह सब बूढ़ी डैन्वर्स ने ठीक किया है ?"

"हां, उसने बहुत अच्छा सजाया है ?"

"क्यों नहीं ! उसे इसकी शिक्षा तो खूब मिली है। लेकिन पता नहीं इसमें कितना खर्चा पड़ा होगा।...अरे, यह डिब्बा तो बहुत ही खूबसूरत है, क्या तुमने खरीदने को कहा था ?"

"नहीं, मैंने तो नहीं कहा था।"

"श्रीमती डैन्वर्स को तो बुरा नहीं लगा ? जरा तुम्हारा कंघा इस्तेमाल कर लूं ? ये ब्रुश कितने सुन्दर हैं ! विवाह के उपहार हैं न ?

"मैक्सिम ने दिये हैं।"

"मुझे बहुत पसंद आये। हमें भी तो कोई उपहार देना चाहिए। बोलो क्या लोगी ?"

"मैं क्या जानूं ? उंह, इसकी आप क्यों चिन्ता करती हैं ?"

"पगली कहीं की ! तुम्हें उपहार देना मुझे बुरा थोड़े ही लगेगा। यह बात और है कि हम ब्याह में बुलाये नहीं गए थे।"

"आप इस बात का ख्याल न करें, मैक्सिम यहां से कहीं दूर ही शादी करना चाहते थे।"

"नहीं-नहीं, कोई बात नहीं ! तुम दोनों बहुत समझदार हो। फिर भी...।" वह कहती-कहती रुक गईं और उनका बैग हाथ से छूटकर नीचे गिर गया।

"अरे, हैन्डिल तो नहीं टूट गया ?" उन्होंने उसे उठाते हुए कहा, "नहीं, सब ठीक है।...हां, तो मैं क्या कह रही थी, ओ, याद आया। मैं उपहार की बात कह रही थी। हमें कोई चीज जरूर सोचनी चाहिए। जेवर तो शायद तुम पसन्द नहीं करोगी ?"

मैंने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह उपहारों की कुछ बातें करती रहीं, फिर शृंगार-मेज पर से उठ खड़ी हुईं और अपना फ्रॉक ठीक करती हुई बोलीं, "क्या बहुत-से आदमी आयेंगे ?"

"पता नहीं, मैक्सिम ने तो कुछ बताया नहीं !"

"बड़ा अजीब आदमी है। पता ही नहीं चलता कि उसके दिमाग़ में कब क्या होता है। खैर, हां, यह बात नहीं कि तुम घुड़सवारी या बंदूक चलाना नहीं जानतीं। तुम्हें नाव चलाने का तो शौक नहीं है ?"

"नहीं।"

"शुक्र है भगवान का !"

हम दरवाजे से निकलकर नीचे गैलरी में चलने लगे।

"जब मन करे तब हमसे मिलने जरूर आना। मैं तो हमेशा यही चाहती हूं कि लोग बिना किसी तकल्लुफ़ के अपने-आप चले आया करें।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद।"

अब हम सीढ़ियों के सिरे पर जा पहुंचे थे। नीचे मैक्सिम और गाइल्स खड़े थे। हमें देखते ही गाइल्स चिल्लाये, "बीट्रिस, जल्दी आओ, अभी-अभी मेरे ऊपर एक बूंद पड़ी है।"

बीट्रिस ने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया और नीचे को झुककर मेरा गाल ज़ोर-से चूम लिया। "अच्छा, अब बिदा ! न जाने मैं तुमसे क्या-क्या बेहूदे सवाल पूछती रही और शायद ऐसी-ऐसी बातें कहती रहीं, जो मुझे नहीं कहनी चाहिए थीं। खैर, क्षमा कर देना। क्या बताऊं, मुझे बातचीत करने का ढंग ही नहीं आता, यह बात तो शायद तुम्हें मैक्सिम ने बता दी होगी ? दूसरी बात यह है कि जैसा मैंने सोचा था तुम वैसी बिल्कुल नहीं निकलीं।" उन्होंने फिर मुझे ध्यान से देखा और सीटी बजाते हुए बैग से एक सिगरेट निकालकर जलाई।

"तुम," उन्होंने सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए कहा, "तुम रेबेका से बिल्कुल भिन्न हो।"

हम नीचे उतर आये। सूरज बादलों के पीछे छिप गया था और हल्की-

हल्की फुहार पड़ने लगी थी। रॉबर्ट लॉन में से जल्दी-जल्दी कुर्सियां उठा रहा था।

: १२ :

कार जबतक आंखों से ओझल नहीं हो गई तबतक हम उधर देखते रहे। उसके बाद मैक्सिम ने मेरी बांह को अपनी बांह में लेते हुए कहा—"चलो, चलो यह काम भी निबटा। जल्दी-से जाकर अपना कोट ले आओ। बारिश हो रही है तो होने दो, मैं घूमना चाहता हूं। मुझसे इस तरह बैठा नहीं जाता। वह बहुत ही थके हुए लग रहे थे, पर मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि अपनी सगी बहन और बहनोई की आव-भगत करने से वह इतनी थकावट क्यों महसूस कर रहे थे।

"ज़रा ठहरिये, मैं अभी दौड़कर ऊपर से अपनी बरसाती ले आती हूं।" मैंने कहा।

"फूलवाले कमरे में ढेरों बरसातियां पड़ी हैं, उन्हींमें से एक ले लो। सोने के कमरे में जाकर भला कभी कोई औरत आध घंटे से पहले लौट सकती है। राबर्ट, श्रीमती द विन्तर के लिए फूलवाले कमरे से एक बरसाती तो ले आओ।"

यह कहते-कहते वह रास्ते पर जा खड़े हुए थे और जैस्पर को बुला रहे थे। राबर्ट बरसाती लेकर भागता हुआ आया और मैंने उसे जल्दी-जल्दी पहना। मेरे लिए वह बहुत लम्बी थी; लेकिन अब बदलने के लिए समय नहीं था। हम चल दिये और लॉन पार करके जंगल की ओर बढ़े। जैस्पर हमारे आगे-आगे भाग रहा था।

"बीट्रिस बहुत अच्छी है, लेकिन वह हर बात में अपनी टांग अड़ाती रहती है। तुम्हारा उसके बारे में क्या ख्याल है?" मैक्सिम ने पूछा।

"मुझे तो वह बहुत पसन्द आईं।"

"भोजन के बाद वह तुमसे यहां के बारे में क्या बातें कर रही थी?"

"कुछ ठीक से ध्यान नहीं। बात तो ज्यादातर मैं ही करती रही थी।

हां, वह यह जरूर कह रही थीं कि मैं वैसी नहीं निकली जैसी कि उन्हें आशा थी।"

"क्या आशा थी उसको ?"

"यही कि मैं बहुत ही चुस्त और सुरुचिवाली लड़की होऊंगी—एक फैशने-बल तितली। यह तो उन्होंने कहा भी था।"

क्षणभर तक मैक्सिम चुप रहे और जैस्पर के साथ खेलते रहे। फिर बोले, "कभी-कभी बीट्रिस बेहद नासमझी की बातें कर जाती है।"

हम जंगल में सूखी पत्तियों और टूटी हुई टहनियों को रौंदते हुए चल रहे थे। पेड़ झुककर एक-दूसरे के इतने पास आ गये थे कि वहां काफ़ी अंधेरा था। मैंने मैक्सिम की बांह अपनी बांह में ले ली और अचानक ही पूछ बैठी, "आपको मेरे बाल अच्छे लगते हैं ?"

उन्होंने आश्चर्य के साथ घूरकर देखा, "तुम्हारे बाल ! लेकिन तुम यह सवाल क्यों कर रही हो ? हां, मुझे तुम्हारे बाल पसन्द हैं। क्यों बात क्या है ?"

"कुछ नहीं, ऐसे ही सोच रही थी कि कहीं..."

"तुम भी कितनी अजीब हो !"

अब हम जंगल में एक खुले स्थान पर पहुंच गये थे। वहां से दो रास्ते एक-दूसरे से बिल्कुल विपरीत दिशा में चले गये थे। जैस्पर बिना झिझक के दाईं ओर चल दिया।

"उस रास्ते से नहीं चलो, इधर आओ।" मैक्सिम ने उसे बुलाया।

लेकिन जैस्पर लौटा नहीं, वह वहीं खड़ा-खड़ा दुम हिलाता रहा।

"वह उधर क्यों जाना चाहता है ?" मैंने पूछा।

"उसे उधर जाने की आदत है। उस ओर आगे चलकर एक-छोटी-सी खाड़ी है, जिसमें हमारी एक नाव रहा करती थी। जैस्पर आओ, इधर आओ।"

हम बिना कुछ बोले बाईं ओर मुड़ गये और मैंने घूमकर देखा कि जैस्पर हमारे पीछे-पीछे चला आ रहा था।

"यह रास्ता उस घाटी की ओर जाता है, जिसकी चर्चा मैंने तुमसे पहले

की थी।"

अब वह बिल्कुल स्वस्थ और प्रसन्न दिखाई दे रहे थे—वैसे ही जैसे मुझे पसन्द थे, वैसे ही जैसे इटली में दिखाई देते थे। वह हँस-हँसकर क्राउले की प्रशंसा कर रहे थे। मैं भी उनकी ओर देख-देखकर मुस्करा रही थी और बीच-बीच में उनकी बांह को अपनी बांह में दबोच लेती थी। मुझे इस बात की प्रसन्नता थी कि उनके मुख पर से थकावट की छाया अब बिल्कुल हट गई थी।

"देखो, उस तरफ देखो।" सहसा मैक्सिम बोले।

हम एक जंगली पहाड़ी के ढलान पर खड़े थे। वहां से हमारा रास्ता एक बहते हुए झरने के बराबर-बराबर घाटी तक चला गया था। उसके दोनों ओर सफेद और सुनहरे फूलों के वृक्ष थे। हवा उनकी सुगंध से भरी हुई थी। झरने की कलकल ध्वनि और वर्षा की रिमझिम के अतिरिक्त वहां चारों ओर घोर निस्तब्धता थी। जब मैक्सिम बोले तब उनकी आवाज भी दबी हुई और धीमी थी, मानों वह उसकी नीरवता को भंग न करना चाहते हों।

"हम इसे 'आनन्द-घाटी' कहते हैं।" वह बोले।

भांति-भांति के फूलों, पौधों और वृक्षों को देखते हुए हम मुग्ध भाव से आगे बढ़ते चले जा रहे थे। रंग-बिरंगे पक्षी आनन्द में भरे चहचहा रहे थे। मैक्सिम का हाथ मेरे हाथ में था। मैं चुप थी, प्रसन्न थी। घाटी का जादू मुझपर भी प्रभाव डाल रहा था। चलते-चलते हम उस मार्ग के अन्त पर पहुंच गये। यहां फूलों ने हमारे सिर के ऊपर एक तोरण-सा बना लिया था। हम उसके नीचे से झुककर दूसरी ओर को निकले और जब अपने बालों परसे पानी की बूंदे झाड़कर मैं सीधी खड़ी हुई तब मैंने देखा कि घाटी हमारे पीछे है और हम एक तंग खाड़ी में खड़े हैं, जिसके किनारों पर लहरें आ-आकर टकरा रही थीं। मुझे ध्यान आया कि ठीक यही वर्णन तो मैक्सिम ने कई सप्ताह पहले उस शाम मॉन्टी कार्लो में किया था।

मेरे मुंह पर हैरानी का भाव देखकर मैक्सिम मुस्कराये। उन्होंने एक पत्थर उठाकर किनारे पर फेंका और जैस्पर से उठाकर लाने को कहा।

जैस्पर पत्थर की खोज में तीर की तरह भागा। उसके काले लम्बे कान हवा में फड़फड़ा रहे थे।

फिर हम दोनों किनारे पर पत्थर फेंकते रहे, समुद्री पक्षियों को उड़ाते रहे और लकड़ी के एक बहते हुए तख्ते को खींचकर ऊपर लाये। मैक्सिम अपनी आंखों पर से बालों को हटाते हुए मेरी ओर देखकर हँसे और मैंने अपनी बरसाती की बाहें खोल दीं, क्योंकि मुख पर समुद्री लहरों के छींटे पड़ने लगे थे। तभी हमने अपने इधर-उधर जो देखा तो जैस्पर का कहीं पता नहीं था। हमने उसे आवाजें दीं, सीटी बजाई, लेकिन वह नहीं आया। चिंतित होकर मैंने खाड़ी के मुहाने को देखा, जहां लहरें चट्टानों से टकरा रही थीं।

"कोई बात नहीं।" मैक्सिम ने कहा, "यहीं कहीं होगा, वह गिर नहीं सकता। जैस्पर, जैस्पर..."

"शायद वह लौटकर आनन्द-घाटी की ओर चला गया है।" मैं बोली।

"अभी-अभी तो वह उस चट्टान के पास एक मरी हुई चिड़िया को सूंघ रहा था।" मैक्सिम ने कहा।

हम फिर घाटी की ओर समुद्र के किनारे पर गये। "जैस्पर, जैस्पर," मैक्सिम ने बुलाया।

बहुत दूर चट्टानों के उस पार मुझे एक हलकी-सी भौंकने की आवाज़ सुनाई दी। "वह सुनिये।" मैंने कहा, "वह इस रास्ते से चढ़कर चला गया है।" और यह कहती हुई मैं घुटनों और हाथों के बल उस फिसलनी चट्टान पर चढ़ने लगी, जिसके उस पार से भौंकने की आवाज़ आई थी।

"उधर से लौट आओ," मैक्सिम ने तीखी आवाज़ में कहा, "हमें उधर नहीं जाना है। वह बेवक़ूफ कुत्ता अपने-आप आ जायगा।"

मैं कुछ ठिठकी और चट्टान से नीचे की ओर देखती हुई बोली, "शायद वह गिर गया है, मैं उसे अभी लेकर आती हूं। बेचारा कितना छोटा है।"

जैस्पर के भौंकने की आवाज फिर आई, इस बार और भी दूर।

"ओह सुनो," मैं बोली, "मैं उसे लेकर आऊंगी। कोई खतरा तो नहीं

है ? ज्वार-भाटे ने उसे हमसे अलग तो नहीं कर दिया होगा ?"

"वह ठीक है, बिल्कुल ठीक है।" मैक्सिम ने खीजते हुए कहा, "उसकी चिन्ता न करो, वह रास्ता जानता है।"

मैंने जैसे उसे सुना ही न हो। मैं चुपचाप जैस्पर की तरफ चट्टान पर चढ़ती चली गई।

सामने बड़े-बड़े पत्थर थे और भीगी चट्टानों पर मेरे पैर फिसल रहे थे। लेकिन बिना किसी बात की परवा किये मैं बढ़ती ही गई। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि जैस्पर को इस तरह छोड़कर मैक्सिम इतनी हृदयहीनता क्यों दिखा रहे हैं।

चढ़ती-चढ़ती मैं उस बड़े पत्थर के पास पहुंची, जिससे आगे की चीजें ओझल हो रही थीं। मैंने आगे झुककर आश्चर्य के साथ देखा कि दूसरी ओर भी एक बिल्कुल वैसी ही खाड़ी थी, जैसी कि मैं अभी पीछे छोड़कर आई थी। हां, वह कुछ ज्यादा चौड़ी और गोल अवश्य थी।

समुद्र के किनारे पर एक आदमी था। शायद वह मछेरा था। उसने लम्बे जूते और स्वेटर पहन रखे थे। जैस्पर उसके चारों ओर चक्कर काट-काटकर उसपर भौंक रहा था और उसके जूतों पर तीर की तरह हमले कर रहा था। वह आदमी इसकी कोई चिन्ता नहीं कर रहा था और नीचे झुका हुआ कंकरों को कुरेद रहा था।

"जैस्पर", मैं चिलाई, "जैस्पर इधर लाओ।"

कुत्ते ने मुझे देखकर पूंछ हिलाई, लेकिन वह मेरे पास नहीं आया और उस आदमी को तंग करता रहा। मैंने पीछे की ओर मुड़कर देखा, लेकिन मैक्सिम का कहीं पता नहीं था। मैं चट्टान पर से नीचे उतरकर किनारे पर आ गई। कंकरों पर मेरे जूतों की खड़खड़ सुनकर उस आदमी ने सिर उठाया और मेरी ओर देखा। अब मैंने देखा कि उसकी आंखें पागलों जैसी छोटी और लम्बी थीं। वह मुझे देखकर मुस्कराया और तब मैंने देखा कि उसके सारे दांत भी टूटे हुए थे।

"नमस्ते," वह बोला, "मौसम बहुत बुरा है।"

"नमस्ते। हां, मौसम अच्छा नहीं है।" मैंने कहा।

वह मुझे बड़े चाव के साथ देखता और मुस्कराता रहा।

"जैस्पर, यहां आओ, देर हो रही है।" मैंने पुकारा।

किन्तु जैस्पर बड़े क्रोध में था। शायद समुद्र और गीली हवा का उसपर कुछ असर हो गया था। वह भागकर मेरे पीछे चला गया था और योंही पागल की तरह नाच-नाचकर भौंक रहा था। मैं समझ गई कि वह मेरा कहना नहीं मानेगा और उस समय मेरे पास कोई रस्सी भी नहीं थी। मैं फौरन उस आदमी की ओर मुड़ी, जो फिर वहीं किनारे पर झुका-झुका व्यर्थ ही सीपियों के लिए बालू कुरेद रहा था।

"तुम्हारे पास कोई डोरी है क्या ?" मैंने पूछा।

"एं।"

"तुम्हारे पास कोई डोरी है क्या ?"

"यहां कोई सीपी नहीं है, मैं दोपहर से भी पहले से यहां खोद रहा हूं।" उसने सिर हिलाते हुए कहा और अपनी रक्तहीन नीली आंखों से बहते हुए पानी को पोंछा।

"कुत्ते को बांधने के लिए मुझे एक डोरी चाहिए।" मैंने कहा।

"एं।" वह बोला और फिर पागलों की तरह मुस्काराया।

"खैर, कोई बात नहीं।" मैंने कहा।

उसने अनिश्चित दृष्टि से मेरी ओर देखा और झुककर मेरे सीने को ठोकते हुए कहा, "मैं इस कुत्ते को जानता हूं। वह उस घर का कुत्ता है।"

"हां, इसे अब मैं अपने साथ वापस ले जाना चाहती हूं।"

"वह तुम्हारा कुत्ता तो नहीं है।"

"वह श्री द विन्तर का कुत्ता है। मैं उसे घर वापस ले जाना चाहती हूं।"

"एं।"

मैंने फिर जैस्पर को पुकारा, लेकिन वह हवा में उड़ते हुए एक पर के पीछे दौड़ रहा था। तभी एकाएक ध्यान आया कि शायद नावघर में कोई रस्सी हो और मैं उस ओर चल दी। उस जगह को देखकर ऐसा लगता था

जैसे पहले वहां अवश्य कोई बाग रहा होगा। लेकिन अब तो वहां लम्बी-लम्बी घास उग रही थी और चारों ओर कांटे-ही-कांटे थे। नाव-घर की खिड़कियां बन्द थीं और दरवाजे का भी ताला लगा हुआ मालूम देता था। मुझे उसके खुलने की आशा नहीं थी, लेकिन जब मैंने हैंडिल घुमाया तब वह थोड़ी-सी सख्ती के बाद खुल गया। दरवाजा नीचा था। मैं सिर झुकाकर अन्दर चली गई। मैंने सोचा कि वहां के गोदाम में धूल-मिट्टी से सनी हुई रस्सियां, काठ के टुकड़े, लंगर आदि तो पड़े ही होंगे। वहां धूल तो थी और कहीं-कहीं मिट्टी भी थी, लेकिन रस्सी या काठ के टुकड़े जैसी कोई चीज नहीं थी। कमरा सजा हुआ था और नाव-घर के एक छोर से दूसरे छोर तक लम्बा चला गया था। कोने में एक डेस्क रखी थी और दीवार के सहारे एक मेज, कुरसियां और आरामसौफा पड़ा था। वहां खाना बनाने की एक मेज भी थी, जिसपर प्लेटें और प्याले रखे हुए थे। आलमारियां भी थीं, जिनमें किताबें रखी हुई थीं। क्षणभर के लिए मुझे ऐसा लगा जैसे यहां कोई रहता है—सम्भव है, वह पागल-सा आदमी ही रहता हो। मैंने एक बार फिर अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई, लेकिन मुझे वहां ऐसा कोई चिह्न नहीं मिला, जिससे पता चलता कि अभी कुछ दिन पहले कोई यहां रहता था। जंग लगी हुई अंगीठी में आग नहीं थी, धूल से भरे हुए फर्श पर पैरों के निशान नहीं थे और चीनी के बरतनों पर सीलन की वजह से धब्बे पड़ गये थे। वहां सीलन की कुछ अजीब-सी बदबू आ रही थी। आलमारियों पर जहाज के दो नमूने थे, उनपर मकड़ियों ने जाले पूर रखे थे। न वहां कोई रहता था, न कोई आता-जाता था। जब मैंने दरवाजा खोला तब उसकी चूलों में से चर-चर की आवाज हुई। छत पर बारिश होने की आवाज आ रही थी और बंद खिड़कियों पर भी बूंदे पटापट गिर रही थीं। पलंगनुमा सोफे के कपड़े को चूहों ने कुतर डाला था। चारों ओर सीलन और ठंड थी और अंधेरे के मारे दम घुटा जा रहा था। मुझे यह सब अच्छा नहीं लगा और मैंने वहां अधिक ठहरना नहीं चाहा।

मैंने चारों ओर डोरी के लिए दृष्टि दौड़ाई, लेकिन मुझे ऐसी कोई वस्तु नहीं दिखाई दी, जिससे मेरा काम चल सकता। कमरे के दूसरे छोर पर

एक और दरवाज़ा था। मैं उसके पास गई और उसे मैंने डरते-डरते खोला। न मालूम क्यों उस समय मुझे बड़ी बेचैनी हो रही थी और ऐसा लग रहा था जैसे अचानक मेरे सामने कोई ऐसी वस्तु आनेवाली है, जिसे मैं देखना नहीं चाहती—एक ऐसी वस्तु, जो शायद भयानक हो और मुझे कुछ हानि पहुंचा दे।

यह निरर्थक-सी बात थी और मैंने दरवाज़ा खोल लिया। मैंने देखा कि वहां और कुछ नहीं, सिर्फ़ नाव का सामान था—रस्सियां, लकड़ियां, पाल, आदि। आलमारी में डोरी का एक गोला पड़ा था और उसके पास भी जंग लगा चाकू रखा था। जैस्पर को बांधकर ले जाने के लिए वह डोरी काफ़ी थी। मैंने चाकू खोलकर डोरी का एक टुकड़ा काट लिया और फिर मैं बाहर-वाले कमरे में वापस आ गई। छत और अंगीठी की चिमनी पर अब बूंदें पड़ रही थीं। मैं बिना पीछे की ओर देखे जल्दी-से बाहर निकल आई।

वह आदमी अब जमीन नहीं खोद रहा था, बल्कि मुझे देख रहा था और जैस्पर उसके पास खड़ा था।

"चलो जैस्पर।" मैंने कहा और नीचे झुककर उसकी गरदन की पट्टी पकड़ ली।

"मुझे उस कमरे में डोरी मिल गई।" मैंने उस आदमी से कहा, पर उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। मैंने जैस्पर की गरदन की पट्टी में ढीली-सी डोरी बांध दी।

"नमस्ते।" मैंने जैस्पर को आगे की ओर घसीटकर ले जाते हुए कहा। उस आदमी ने मेरी ओर अपनी पागलों-जैसी चुंधी आंखों से घूरते हुए अपना सिर हिलाया।

"मैंने तुम्हें अन्दर जाते हुए देखा था।" वह बोला।

"हां, मैं गई थी। श्री द विन्तर इसका बुरा नहीं मानेंगे।"

"वह अब अन्दर नहीं जाती।"

"नहीं, अब वह नहीं जाती।"

"वह समुद्र में चली गई है और अब वापस नहीं आयेगी।"

"नहीं, अब वह वापस नहीं आयेगी।"

"मैंने तो कुछ बताया नहीं है ! हैं न ?"

"नहीं, तुमने कुछ नहीं बताया है। चिन्ता मत करो।"

वह फिर जमीन कुरेदने के लिए नीचे झुका और आप-ही-आप बड़बड़ाता रहा। पत्थरों को पारकर मैं दूसरी ओर पहुंची तो मैंने देखा कि मैक्सिम चट्टान के पास खड़े हुए अपनी जेबों में हाथ डाले मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे।

"मुझे बड़ा दुःख है!" मैंने कहा, "जैस्पर आ ही नहीं रहा था। उसे पकड़-कर लाने के लिए मुझे रस्सी लेने जाना पड़ा।"

वह एकाएक घूम पड़े और जंगल की ओर चल दिये।

"आप तो चट्टानों की ओर वापस जा रहे हैं।" मैंने कहा।

"अब क्या फायदा, जब हम यहां पहुंच ही गये हैं।" उन्होंने संक्षेप में उत्तर दिया।

हम उस नाव-घर के पास से होते हुए जंगल के बीच के एक रास्ते पर चलने लगे।

"मुझे बड़ा दुःख है कि इतनी देर लग गई।" मैं बोली, "यह सब जैस्पर की करतूत है। वह उस आदमी पर भौंके ही चला जा रहा था। कौन है वह ?"

"वह बेन है, बिलकुल निरीह ! बेचारे का बूढ़ा बाप हमारे यहां चौकीदारी करता था। ये लोग हमारे खलिहान के पास रहते हैं। तुम्हें यह डोरी का टुकड़ा कहां से मिला ?"

"इसे मैंने समुद्र के किनारेवाले कमरे से लिया है।"

"क्या वहां का दरवाजा खुला था ?"

"हां, मैंने धक्का दिया तो वह खुल गया। यह डोरी मुझे भीतरवाले कमरे में मिली, जहां एक छोटी-सी नाव और पाल वगैरा भी थे।"

"हूं, तो यह बात है।" उन्होंने धीमे-से कहा। फिर क्षणभर रुककर वह बोले, "उस कमरे में तो ताला बन्द रहना चाहिए। दरवाज़ा खुला क्यों था ?"

मैं कुछ नहीं बोली, क्योंकि इस बात से मेरा कोई वास्ता नहीं था।

"क्या तुम्हें बेन ने बताया था कि दरवाज़ा खुला हुआ है ?" उन्होंने पूछा।

"नहीं, मैंने तो उससे जो कुछ भी कहा वह शायद उसकी समझ में ही नहीं आया।"

"वह इतना मूर्ख नहीं है, जितना बनता है।" मैक्सिम ने कहा, "जब वह चाहता है तब खूब समझदारी की बातें करता है। वह बीसियों बार उस नाव-घर में आया-गया होगा, लेकिन तुम्हें शायद उसने बताना नहीं चाहा।"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं समझती। वह जगह बिल्कुल सुनसान थी और उसे देखकर ऐसा लगता था जैसे वहां कोई आता-जाता ही नहीं है। वहां चारों ओर धूल-ही-धूल भरी थी। अगर कोई आता-जाता होता तो उसके पैरों के निशान जरूरी दिखाई देते। बड़ी सीलन है वहां, मुझे डर है कि वहां जो किताबें, कुरसियां और सोफ़े हैं वे सब ख़राब हो जायंगे। वहां चूहे भी हैं और कई गिलाफ़ तो उन्होंने कुतर भी डाले हैं।"

मैक्सिम ने कोई उत्तर नहीं दिया और हम तेज चाल से सीधी चढ़ाई पर चढ़े। यहां वृक्ष बहुत घने थे और डालियों से बड़ी-बड़ी बूंदें टपक रही थीं, जो मेरी कालर पर गिरकर गरदन के नीचे की ओर बहने लगी थीं। उनके ठंडे स्पर्श से मैं कांपने लगी थी और इस प्रकार चढ़ने से मेरी टांगों में भी दर्द होने लगा था। जैस्पर हमारे पीछे-पीछे घिसटता आ रहा था। वह भी थक गया था और उसकी जीभ मुंह से बाहर लटक रही थी।

"जैस्पर चलो।" मैक्सिम ने कहा, "उसे रस्सी पकड़कर खींचती क्यों नहीं हो? बीट्रिस ठीक कह रही थी कि जैस्पर बहुत मोटा हो गया है।"

"लेकिन हम क्या करें? आप इतना तेज़ चल रहे हैं कि हम आपका साथ नहीं दे पा रहे हैं।"

"यदि तुमने मेरी बात मान ली होती और इस बुरी तरह भागकर उन चट्टानों के पीछे न गई होतीं तो अबतक हम घर पहुंच गये होते। जैस्पर को रास्ता मालूम था। पता नहीं, तुम उसके पीछे गईं क्यों?"

"मैंने सोचा बेचारा कहीं गिर न गया हो। मुझे ज्वार-भाटे का डर था।"

"यदि ज्वार-भाटे का डर होता तो क्या तुम समझती हो कि मैं जैस्पर को वहीं छोड़ देता। मैंने तुमसे उन चट्टानों पर जाने को मना किया था और

अब तुम शिकायत कर रही हो कि तुम थक गई हो।"

"मैं शिकायत नहीं कर रही हूं। किसीके लोहे के पैर हों तो भी वह इस चाल से थक जायगा। जब मैं जैस्पर को पकड़ने भागी थी तब मैंने सोचा था कि आप भी मेरे साथ-साथ आयेंगे, लेकिन आप तो वहीं खड़े रह गये।"

"मुझे क्या पड़ी थी, जो एक कुत्ते के पीछे अपनेको इतना थकाता।"

"लेकिन क्या पानी में बहते हुए तख्ते के पीछे दौड़ना कम थकानेवाली बात थी? यह तो आप केवल इसलिए कह रहे हैं कि आपके पास कोई दूसरा बहाना नहीं है।"

"मैं बहाना किसलिए बनाऊंगा?"

"मुझे क्या पता? खैर छोड़िये इस बात को।"

"छोड़ूं क्यों? तुम्हींने तो बात छेड़ी है। तुम कहती हो कि मैं बहाना बनाने की कोशिश कर रहा था। इससे तुम्हारा क्या मतलब है? मैं किस बात के लिए बहाना बना रहा था?"

"शायद इस बात के लिए कि आप मेरे साथ चट्टानों पर नहीं गये।"

"हूं! और मैं दूसरी ओर के तट पर जो नहीं गया, उसके बारे में तुम्हारा क्या खयाल है?"

"मैं क्या जानूं! मैं किसीके मन में थोड़े ही बैठी हूं। मैं तो बस इतना जानती हूं कि तुमने उधर आना नहीं चाहा और यह बात तुम्हारे मुंह से प्रकट हो रही थी।"

"मेरे मुंह से क्या प्रकट हो रहा था?"

"अभी तो बता चुकी हूं। बस, खतम करो, इस बात को। मुझे इस विषय पर बातचीत करना बहुत बुरा लग रहा है।"

"सारी स्त्रियां ऐसा ही करती हैं, जब बहस में पार नहीं पातीं तो यही कहकर पिंड छुड़ाना चाहती हैं। खैर, यही सही, मैं उधर जाना नहीं चाहता था; अब तो तुम खुश हो! मैं उस मनहूस जगह की ओर कभी नहीं जाता और मैं जानता हूं कि अगर तुम्हारे साथ भी वहां की स्मृतियां बंधी होतीं तो तुम उधर कभी नहीं जातीं, उसके बारे में बातचीत नहीं करतीं; सोचती तक

नहीं।"

उनका चेहरा सफ़ेद पड़ गया था और उनकी आंखें वैसी ही थकी-थकी, खोई-खोई लग रही थीं जैसी कि पहली मुलाक़ात के दिन लगी थीं। मैंने उनका हाथ कसकर पकड़ लिया और एक प्रकार से चीख़-सी उठी, "मैक्सिम, मैक्सिम !"

"क्या बात है ?" उन्होंने रुखाई से पूछा।

"मुझे तुम्हारा इस तरह देखना अच्छा नहीं लगता, इससे मुझे बड़ी पीड़ा होती है। मैक्सिम, सबकुछ भूल जाओ, हमने जो भी बातें कही-सुनी हैं, उन सबको भूल जाओ। ओह, कैसी बेकार की बहस थी। मुझे बड़ा खेद है, मैक्सिम !"

"हमें इटली में ही ठहरना चाहिए था, हमें कभी मैन्दरले वापस नहीं आना चाहिए था। ओह, मैं भी कैसा मूर्ख हूं, जो फिर यहां आ गया।"

डालियों को इधर-उधर हटाते हुए वह और भी तेज़ी-से चलने लगे और उनका साथ देने के लिए मुझे क़रीब-क़रीब दौड़ना पड़ा। मेरा सांस फूल गया और मेरी आंखों में आंसू छलछला आये। डोरी का किनारा पकड़े मैं बेचारे जैस्पर को अपने पीछे घसीटती रही।

अन्त में हम उसी स्थान पर पहुंच गये, जहां से मार्ग दो दिशाओं में बंट गया था। अब मैं समझी कि जैस्पर दूसरे रास्ते से क्यों जाना चाहता था। वह रास्ता समुद्र के उस किनारे और नाव-घर की ओर जाता था, जिसे वह खूब अच्छी तरह से जानता था और जिधर जाने की उसे पुरानी आदत थी।

हम लॉन में आ गये और उसे पार करके बिना बोले-चाले घर में पहुंचे। उस समय मैक्सिम का चेहरा एकदम कठोर और भावशून्य था। वह सीधे हॉल में पहुंचे और बिना मेरी ओर देखे लाइब्रेरी की ओर चल दिये। हॉल में फ्रिथ था।

"हमें फौरन चाय चाहिए।" उन्होंने उससे कहा और लाइब्रेरी का दरवाजा बन्द कर लिया।

मैं अपने आंसुओं को फ्रिथ से छिपाने की चेष्टा करने लगी। मैंने सोचा

कि अगर उसने मेरी आंखों में आंसू देख लिये तो वह समझेगा कि हममें झगड़ा हो गया है और वह जाकर दूसरे नौकरों से कहेगा "अभी-अभी हॉल में श्रीमती द विन्तर रो रही थीं, मालूम होता है उनकी श्री द विन्तर से पट नहीं रही है।"

फ्रिथ मेरा चेहरा न देख सके, यह सोचकर मैं पीछे की ओर मुड़ गई। वह मेरे पास आया और बरसाती उतारने में मेरी सहायता करने लगा।

"मैं आपकी बरसाती फूलवाले कमरे में रख दूंगा, मैडम!"

"धन्यवाद!" मैंने अपना चेहरा अब भी उससे दूर रखते हुए कहा।

"इस समय घूमने में शायद अधिक आनन्द नहीं आया होगा।"

"हां, कुछ अधिक नहीं।"

"आपका रूमाल," उसने जमीन पर पड़ी हुई कोई चीज उठाते हुए कहा।
"धन्यवाद!" मैं रूमाल को अपने कोट की जेब में रखते हुए बोली।

मैं तय नहीं कर पा रही थी कि ऊपर जाऊं या मैक्सिम के पीछे-पीछे लाइ-ब्रेरी में। फ्रिथ मेरी बरसाती लेकर चला गया और मैं वहीं खड़ी-खड़ी दांतों से नाखून काटती रही। जब फ्रिथ वापस आया तब भी मैं वहीं खड़ी थी, यह देखकर उसे आश्चर्य हुआ और उसने कहा, "लायब्रेरी में इस समय खूब तेज आग जल रही है, मैडम!"

"धन्यवाद, फ्रिथ!" मैंने कहा और हॉल को पारकर मैं धीरे-धीरे लाइब्रेरी के पास पहुंची। दरवाजा खोलकर मैं अन्दर चली गई। मैक्सिम कुरसी पर बैठे थे, जैस्पर उनके पैरों के पास बैठा और बूढ़ी कुतिया अपनी टोकरी में। मैक्सिम की कुरसी के हत्थे पर अखबार रखा था, लेकिन वह उसे पढ़ नहीं रहे थे। मैं उनके पास जाकर घुटनों के बल बैठ गई और उनके मुंह के पास अपना मुंह ले जाकर बोली, "मुझसे नाराज मत होओ, मैक्सिम!"

उन्होंने मेरा मुंह अपने दोनों हाथों में थाम लिया और अपनी थकी हुई बोझिल आंखों से मेरी तरफ़ देखते हुए कहा, "मैं तुमसे नाराज नहीं हूं।"

"मैंने तुम्हें परेशान कर दिया है, इसका मतलब यही है कि मैंने तुम्हें नाराज कर दिया है। मैं जानती हूं कि तुम भीतर-ही-भीतर दुःखी और रंजीदा

हो। मैं यह सब नहीं देख सकती। मैं तुमसे इतना प्रेम करती हूं कि मैं यह सब नहीं सह सकती।"

"सच ? क्या तुम सचमुच मुझसे इतना प्रेम करती हो ?" यह कहते हुए उन्होंने मुझे कसकर पकड़ लिया। उनकी आंखें जैसे मुझसे कुछ पूछ रही थीं—अनिश्चय से भरी धुंधली आंखें, एक ऐसे बच्चे की-सी आंखें जो डर रहा हो, पीड़ा से कराह रहा हो।

"यह क्या, मैक्सिम ? तुम मुझे इस तरह क्यों देख रहे हो ?"

उनके उत्तर देने से पहले ही मैंने दरवाजा खुलने की आवाज़ सुनी। मैं नीचे की ओर बैठ गई और अंगीठी में लकड़ी डालने का बहाना करने लगी। इतने में फ्रिथ आ गया। उसके पीछे-पीछे राबर्ट था। हमारी चाय का कार्यक्रम शुरू हो गया।

वे चाय रखकर चले गये और हम एक बार फिर अकेले रह गये। इस बार मैंने मैक्सिम की ओर जो दृष्टि उठाई तो मैंने देखा कि उनके चेहरे पर फिर लाली आ गई थी और उनकी आंखों में से थकावट का भाव जा चुका था।

"यह सारी गड़बड़ी भोजन के समय भीड़भाड़ हो जाने से हुई थी। हां, याद आया, हमें कभी दादी से मिलने चलना है। जरा मेरी चाय बना दो। मुझे बड़ा दुःख है कि आज मैंने तुम्हारे साथ बिलकुल जानवरों जैसा व्यवहार किया।"

तो इस तरह उस दिन की घटना का सुखान्त हुआ। वह अपनी चाय पीते-पीते मेरी ओर देखकर मुस्कराये और उन्होंने कुरसी के हत्थे पर से अखबार उठा लिया। उनका वह मुस्कराना ही मेरा पुरस्कार था। मैंने टोस्ट का एक टुकड़ा उठाकर दोनों कुत्तों को बांट दिया। मुझे भूख नहीं थी और मैं बड़ी थकावट और कमजोरी महसूस कर रही थी। मैंने मैक्सिम की ओर देखा। वह अख़बार पढ़ रहे थे। मेरी अंगुलियां टोस्ट के मक्खन से चिकनी हो गई थीं। मैंने जेब से रूमाल निकाला, लेकिन उसे देखते ही मेरी त्योरी पर बल पड़ गये। उस रूमाल के किनारों पर बेल लगी हुई थी। निश्चय ही वह मेरा रूमाल नहीं था। अब मुझे याद आया कि उसे फ्रिथ ने जमीन पर से उठाकर मुझे

दिया था, शायद वह बरसाती की जेब से गिर गया था। मैंने उसे उलट-पलट-कर देखा, वह मुसा-मुसाया था और उसपर जेब के कुछ फुएं चिपक रहे थे। ऐसा लगता था, जैसे वह बहुत समय से उस बरसाती की जेब में पड़ा रहा था। कोने पर एक मोनोग्राम बना हुआ था। एक लम्बा, तिरछा 'आर', 'द डब्ल्यू' के साथ लिपटा हुआ था। रूमाल बहुत ही छोटा था। ऐसा लगता था जैसे वह कभी योंही गोल-मटोल करके बरसाती की जेब में डाल दिया गया था और फिर शायद किसीको उसकी याद ही नहीं रही थी।

इसके बाद उस बरसाती को पहननेवाली शायद मैं पहली ही स्त्री थी। पहले जो स्त्री उसे पहनती थी वह लम्बी और छरहरी थी और उसके कंधे अधिक चौड़े थे। रूमाल पर लिपस्टिक का एक गुलाबी धब्बा था। शायद उससे उस रमणी ने अपने होठ रगड़े थे। मैंने उसपर अपनी अंगुलियां रगड़ीं और देखा कि एक भीनी-भीनी सुगन्ध अब भी उस रूमाल से आ रही थी। ऐसी सुगन्ध मैंने पहले भी कभी सूंघी थी। मैंने आंखें बन्द करके याद करने की चेष्टा की। और तब मुझे एकाएक ध्यान आया कि वह तो उन्हीं फूलों की पत्तियों की सुगन्ध थी, जिन्हें मैंने आज ही तीसरे पहर आनन्द-घाटी के रास्ते पर कुचली-कुचलाई अवस्था में देखा था।

: १३ :

एक हफ्ते तक बारिश होती रही और बहुत ठंड रही, जिसके कारण हम फिर समुद्र-तट पर नहीं गये। चबूतरे और लॉन से समुद्र दिखाई देता था, लेकिन उसका भूरा-भूरा उदास फैलाव मुझे अच्छा नहीं लगता था। कभी-कभी तो मुझे ऐसा मालूम देता था जैसे इसकी लहरें कठोर पत्थरों पर माथा पटक-पटककर रुदन कर रही हों। इसलिए मुझे इस बात की खुशी थी कि मेरा कमरा पूर्वी हिस्से में था, जहां मैं जब चाहती थी तभी खिड़की के पास खड़ी होकर गुलाबों की छटा देखने लगती थी। कुछ दिनों तक तो मुझे नींद ही नहीं आती थी और सुनसान रात में मैं चुपके-से पलंग पर से उठकर खिड़की के पास जा खड़ी होती थी और उसकी चौखट पर बाहें टेककर बाहर के शान्त, शीतल वातावरण की

ओर देखती रहती थी।

सागर की उन अशांत लहरों की आवाज़ के अच्छा न लगने का एक और भी कारण था। उसे सुनते ही उस दिन की सारी घटना मेरी आंखों के सामने नाच उठती थी—चट्टानों की वह खड़ी चढ़ाई-उतराई, वह नाव-घर, उसके सामने अन्दर रखी हुई चीजें, वह पागल आदमी और मैक्सिम की वह क्रोध और कष्ट से भरी मुद्रा। मैं इन सभी बातों को भुला देना चाहती थी, लेकिन मेरे मस्तिष्क के किसी कोने में दिन-रात एक भयभरी उत्सुकता छिपी रहती थी और मैं यह जानना चाहती थी कि आखिर ये चीजें मुझे इतनी बेचैन, इतनी परेशान क्यों बना देतीं हैं। और जितनी ही मैं अपनी इस उत्सुकता को दबाने का प्रयत्न करती थी उतनी ही वह बढ़ती जाती थी।

उस दिन का मैक्सिम का वह सफ़ेद चेहरा और उनकी खोई-खोई दृष्टि मैं भूल ही नहीं पाती थी। उनके ये शब्द "ओह! मैं भी कितना मूर्ख हूं, जो यहां फिर लौट आया!" मेरे कानों में गूंजते रहते थे। मैंने उनकी सोई हुई यादों को फिर से जगा दिया है। यों तो अब वह पहले ही जैसे हो गये थे; हम साथ-साथ रहते थे, साथ-साथ सोते थे, घूमते-फिरते थे, चिट्ठियां लिखते थे और मोटर में बैठकर गांव जाते थे—संक्षेप में यह कि सारे दिन साथ-साथ काम करते थे, फिर भी मैं जानती थी कि इस घटना के कारण मेरे और उनके बीच में एक दीवार-सी खड़ी हो गई थी।

अब मुझे समुद्र की चर्चा होते हुए भी भय लगता था, यहांतक कि एक दिन जब खाना खाते समय फ्रैंक क्राउले ने तीन मील की दूरी पर होनेवाली एक नावों की दौड़-प्रतियोगिता की बात सुनाई तब मैं घबरा उठी और मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा दिल बैठा जा रहा है। मैं जानती थी कि यह मेरी मूर्खता है, लेकिन बात मेरे बस की नहीं थी। बाहरवालों से मिलते समय तो मेरी यह घबराहट और भी बढ़ जाती थी। शुरू-शुरू के हफ़्तों में तो लोगों के आने-जाने का तांता-सा लगा रहा था और उनका स्वागत करते हुए या उनसे हाथ मिलाते हुए मेरी जो दशा होती थी, वह मैं ही जानती हूं। मुझे खूब अच्छी तरह से याद है कि जब मैं किसी गाड़ी के आने या घंटी के बजने की आवाज़

सुनती तो झपटकर अपने कमरे में भाग जाती थी, जल्दी-जल्दी अपनी नाक पर पाउडर थोपती और बालों में कंघा करने लगती थी।

कभी-कभी मुझे भी दूसरों के यहां जाना पड़ता था, क्योंकि ऐसी बातों में मैक्सिम शिष्टता का बड़ा ध्यान रखते थे। कभी-कभी ऐसा भी होता था कि मैक्सिम को अवकाश नहीं होता था और मुझे अकेले ही जाना पड़ता था। बातें करते-करते लोग पूछ बैठते थे, "कहिये, श्रीमती दविन्तर, मैन्दरले में अब शानदार दावत कब होगी ?" "पता नहीं, मैक्सिम ने तो अभी तक इस बारे में कुछ कहा नहीं।" मैं उत्तर देती और फिर वे बातों-ही-बातों में कहते, "पहले तो मैन्दरले में मेहमान भरे रहते थे। लोग-बाग लंदन से आते थे और बड़ी-बड़ी पार्टियां होती थीं।...तुम्हें तो पता ही होगा कि रेबेका को सभी पसन्द करते थे। गजब का व्यक्तित्व था उसका !"

"जी हां, मैं जानती हूं।" मैं उत्तर देती और क्षण-दो-क्षण बाद अपनी घड़ी पर दृष्टि डालते हुए कहती—"अच्छा अब चलूं।"

"चाय तो पीती जाइये।" लोग-बाग कहते।

"नहीं, नहीं, धन्यवाद। मैं मैक्सिम से वादा कर आई थी कि...।" यह कहते-कहते मैं उठ खड़ी होती और साथ-ही-साथ वे लोग मुझे विदा करने के लिए तैयार हो जाते। मैं जानती थी चाय की बात उन्होंने यों ही कह दी है और वे भी खूब समझते थे कि मैक्सिम से वादा कर आने के मेरे बहाने में कोई तथ्य नहीं है।

एक बार पड़ोस के एक गांव में पादरी की पत्नी ने मुझसे पूछा—"क्या आपके पति मैन्दरले में फिर से फैन्सी ड्रेस बॉल करने की सोच रहे हैं। और, ओह, कितना सुन्दर हुआ करता था वह दृश्य ! मैं तो उसे कभी भूल नहीं सकती।"

मुझे इस प्रकार मुस्कराना पड़ा, मानो मैं सबकुछ जानती हूं। मैं बोली, "अभी हमने कुछ तय नहीं किया है। अभी तो और ही बातों से फुरसत नहीं मिली है।"

"सो तो ठीक है, लेकिन मुझे पूरी आशा है कि वह नाच बन्द नहीं किया

जायगा। तुम भी उनपर जोर डालना। पिछले साल तो कोई आयोजन हुआ नहीं था, लेकिन दो बरस पहले की बात मुझे खूब याद है। हॉल इतनी खूबसूरती के साथ सजाया गया था कि पूछो मत। वहां नाच हुआ था और गैलरी में गाना। इन्तज़ाम इतना बढ़िया था कि सबने तारीफ के पुल बांध दिये थे।"

"हां, मैं मैक्सिम से इसके लिए जरूर कहूंगी।"

"एक बार गर्मियों में पार्टी दी गई थी, जिसमें हम भी गये थे।" पादरी की पत्नी ने कहा, "सब चीजें बड़ी सुन्दरता से संवारी और सजाई गई थीं। गुलाब के बाग में छोटी-छोटी मेजों पर चाय लगाई गई थी। बिल्कुल नया विचार था। सचमुच वह बहुत ही निपुण थी...।"

कहते-कहते वह सहसा रुक गई जैसे उसके मुंह से कोई अव्यावहारिक बात निकल गई हो। लेकिन उसकी इस परेशानी को मिटाने के लिए मैंने उसकी बात का समर्थन किया और दृढ़ता के साथ ऊंचे स्वर में कहा, "इसमें संदेह नहीं कि रेबेका बड़ी प्रतिभाशालिनी रही होगी।"

तो आखिर मैंने यह नाम ले ही लिया! मुझे अचानक विश्वास तो नहीं हुआ, लेकिन यह सच है कि मैंने रेबेका का नाम ले लिया था और वह भी ऊंचे स्वर में। इससे मुझे बड़ा संतोष हुआ। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे सिर पर से कोई बड़ा भारी बोझ उतर गया है, जैसे मेरी कोई असहनीय पीड़ा एकाएक दूर हो गई है। रेबेका, हां रेबेका! मैंने यह नाम खूब ऊंचे स्वर में लिया था।

कुछ देर के बाद तक भी हम रेबेका के ही विषय में बातचीत करते रहे और पादरी की स्त्री ने बताया कि उसे रेबेका से व्यक्तिगत रूप से मिलने का अवसर तो नहीं मिला था, लेकिन जब वह मैन्दरले में नाच और पार्टी के अवसर पर गई थी तब रेबेका ने उसका बड़े तपाक के साथ स्वागत किया था। "सचमुच वह बड़ी प्यारी थी, बड़ी सुन्दर थी, हर काम में दक्ष, खेलों की शौकीन। एक ही स्त्री में इतने सारे गुण विरले ही देखने को मिलते हैं। नाच की वह रात मुझे आज भी अच्छी तरह याद है। वह सीढ़ियों के पास खड़ी तत्परता के साथ आनेवालों से हाथ मिला रही थी—सफ़ेद हंस जैसे शरीर पर काले-काले बालों की छटा, शरीर पर खूब फबता हुआ लिबास!"

"और अपने घर का काम-काज भी वह स्वयं ही देखती थी।" मैंने मुस्कराते हुए कहा। मैं यह जताना चाहती थी कि इन सब बातों को सुनकर मुझे कोई परेशानी, कोई बेचैनी नहीं हो रही है।

इसी तरह की बातें करते-करते चार बज गये और घड़ी की टन-टन सुनकर मैं उठ खड़ी हुई। मैंने पादरी की पत्नी से अपने यहां आने को कहा और चलते-चलते उसने मुझे फिर याद दिलाया, "अपने पति से नाच के बारे में कहना न भूलियेगा।"

मैं अपनी कार में जाकर धम्म-से बैठ गई और दांतों से नाखून काटने लगी।

एक-एक करके न मालूम कितने ही दृश्य उस समय मेरी आंखों के सामने घूम गये—मैन्दरले के बड़े हॉल में विचित्र-विचित्र कपड़े पहने हुए पुरुषों और स्त्रियों की भीड़, लोगों का ज़ोर-ज़ोर-से बातचीत करना, रह-रहकर हँसी का फ़व्वारा छूट पड़ना, श्री द विन्तर का सीढ़ियों पर खड़े होकर लोगों से हँस-हँसकर हाथ मिलाना और बीच-बीच में अपने पास खड़ी हुई एक सुन्दरी को देखते जाना—लम्बी, छरहरी और जैसा कि पादरी की पत्नी ने बताया था—हंस जैसे सफ़ेद शरीर पर काले-काले बालों की छटा लिये, अपनी स्फूर्तिभरी आंखों से अपने अतिथियों के आराम का ध्यान रखती हुई, गर्दन घुमाकर नौकरों को अनेक प्रकार के आदेश देती हुई, क्षणभर को भी अपने में किसी प्रकार का भोंडापन, किसी प्रकार की अशिष्टता न आने देनेवाली, और नाचते समय हवा में इत्रों की सुगन्ध बिखेरती हुई।

मुझे मैन्दरले में लोग-बागों का आना पसंद नहीं था, क्योंकि मैं जानती थी कि वे सिर्फ़ मेरी आलोचना करने के लिए आते हैं, रेबेका के साथ मेरा मिलान करने के लिए आते हैं, यह देखने के लिए आते हैं कि मेरी और मैक्सिम की आपस में कैसी निभ रही है। मैंने निश्चय कर लिया कि मैं दूसरों के घर नहीं जाया करूंगी और यह बात मैक्सिम से कह भी दूंगी। यही तो होगा कि वे लोग मुझे असभ्य और फूहड़ समझेंगे और कहेंगे—"हम तो पहले ही समझते थे। आख़िर वह है ही क्या! मैक्सिम उसे ऐसे ही मॉन्टी कार्लो या किसी दूसरी जगह से पकड़ लाये हैं। उसके पास तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी, किसी बूढ़ी

औरत के पास नौकरानी की तरह रह रही थी। मर्द भी कैसे अजीब होते हैं। पता नहीं रेबेका जैसी पत्नी के बाद मैक्सिम ऐसी लड़की कहां से ले आये।"

मैं यह सब सोच ही रही थी कि कार फाटक के अन्दर घुसी। अगले मोड़ पर कुछ दूर मुझे एक आदमी दिखाई दिया। वह फ्रैंक क्राउले थे। कार की आवाज़ सुनकर वह रुक गये और ड्राइवर ने चाल धीमी कर दी। कार में मुझे देखकर क्राउले ने अपना टोप उतार लिया और वह मुस्कराये। ऐसा लगा जैसे मुझे देखकर उन्हें प्रसन्नता हुई हो। उत्तर में मैं भी मुस्कराई। फ्रैंक क्राउले मुझे पसंद थे। बीट्रिस की तरह वह मुझे नीरस नहीं लगते थे। मैंने ड्राइवर से रुकने के लिए कहा।

क्राउले ने बढ़कर दरवाजा खोल दिया और कहा, "मालूम होता है, आप किसीसे मिलने गई थीं, श्रीमती द विन्तर ?"

"हां फ्रैंक।" मैंने उत्तर दिया !" मैं उन्हें फ्रैंक ही कहती थी, क्योंकि मैक्सिम भी उन्हें ऐसे ही पुकारते थे। लेकिन वह मुझे सदा श्रीमती द विन्तर ही कहा करते थे। वह कुछ इस प्रकार के आदमी थे कि यदि हम किसी वीरान टापू में बरसों अकेले पड़े रहते और सारी जिन्दगी एक दूसरे के साथ घनिष्ठता के साथ बिताते तब भी वह मुझे इसी तरह श्रीमती द विन्तर ही कहकर पुकारते।

"हां, मैं बिशप के घर गई थी।" मैं बोली, "वह तो बाहर गये हुए थे, लेकिन उनकी पत्नी से बहुत सारी बातें हुईं। वह पूछ रही थी कि मैन्दरले में अगला नृत्य-समारोह कब होगा। पिछले समारोह-नृत्य में वह आई थीं और उन्हें वह बहुत पसंद आया था। मुझे तो पता भी नहीं था, यहां नृत्य-समारोह हुआ करते हैं।"

उत्तर देने से पहले क्राउले एक क्षण के लिए ठिठके—जैसे मन-ही-मन में कुछ दुःखी-से हुए हों, फिर बोले, "हां, नाच का समारोह तो मैन्दरले में हर साल हुआ करता था और उसमें जिले के सभी लोग आते थे। लंदन से भी बहुत-से आदमी आते थे। काफ़ी बड़ा समारोह होता था।"

"तब तो उसके लिए इन्तज़ाम भी बहुत बड़ा करना पड़ता होगा ?"

"हां, वह तो करना ही पड़ता था।"

"शायद रेबेका ही सब इन्तजाम करती होंगी।" मैंने कुछ लापरवाही के साथ कहा।

उस समय मैं बिल्कुल अपनी सीध में देख रही थी, लेकिन मुझे ऐसा लगा जैसे उन्होंने मुड़कर मेरे मुख की ओर देखा है, मानो मेरे मन का भाव पढ़ना चाहते हों।

"हम सबको ही बहुत काम करना पड़ता था।" उन्होंने शांत भाव से उत्तर दिया। इन शब्दों को कहते हुए वह कुछ अजीब संकोच-सा कर रहे थे; कुछ झेंप-से रहे थे। उनका यह व्यवहार देखकर सहसा मुझे ध्यान आया, कहीं वह रेबेका से प्रेम तो नहीं करते थे और फिर मैंने सोचा—वह इतने लजीले हैं कि उन्होंने अपने मन की बात किसीसे भी नहीं कही होगी, रेबेका से तो कहने का सवाल ही क्या ?

"लेकिन अगर फिर नृत्य-समारोह हुआ तो मैं कुछ नहीं कर सकूंगी, मुझे इन्तज़ाम-विन्तज़ाम करना नहीं आता।" मैंने कहा।

"आपको कुछ करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आपका काम तो अपने-को खूब अच्छी तरह सजाना-संवारना भर होगा।

"लेकिन मैं समझती हूं कि यह काम भी ठीक से नहीं कर सकूंगी।"

"और मैं समझता हूं कि आप यह काम बड़ी सुन्दरता से कर सकेंगी।" क्राउले ने उत्तर दिया।

वह बड़े चतुर थे और खूब सोच-समझकर सावधानी से बातें कहा करते थे। मुझे उनकी इस बात पर विश्वास हो गया और मैं जानती हूं कि उन्होंने जो कुछ भी कहा है वह सिर्फ़ दिखाने के लिए नहीं कहा है।

"तो आप मैक्सिम से नाच-समारोह के बारे में कुछ कहेंगे न ?" मैंने पूछा।

"आप ही क्यों नहीं कहतीं ?"

"नहीं, मैं नहीं कहना चाहती।"

कुछ देर तक वह चुपचाप चलते रहे। लेकिन चूंकि उस दिन मैं रेबेका का नाम दो बार ले चुकी थी और उसे मुख से निकालने की मेरी झिझक टूट चुकी थी, इसलिए मुझमें उसकी चर्चा करने की उत्सुकता बढ़ गई थी और मुझे इससे कुछ अजीब संतोष-सा हो रहा था।

"एक दिन मैं समुद्र के किनारे गई थी।" मैं बोली, "जैस्पर बड़े क्रोध में था और पागलों जैसी आंखवाले उस बेचारे आदमी पर भौंके चला आ रहा था।"

"आपका मतलब बेन से है ?" क्राउले ने कहा। अब उनकी आवाज बहुत ही शान्त और स्वाभाविक हो गई थी। वह बोले, "हां वह वहीं तट पर फिरता रहता है, बड़ा अच्छा और सीधा-सादा आदमी है। उससे आपको रत्तीभर भी डरने की जरूरत नहीं है। वह तो एक चींटी तक को कष्ट नहीं पहुंचाता।"

"नहीं, मैं डरी नहीं थी।" मैं बोली और अपना आत्म-विश्वास प्रदर्शित करने के लिए कुछ गुनगुनाने-सी लगी। फिर कुछ रुककर और साहस बटोरकर मैंने कहा, "मुझे फ़िक्र इस बात की है कि वह नाव-घर एक-दम चौपट होता जा रहा है। जैस्पर को बांधकर लाने के लिए मुझे रस्सी ढूंढ़ने के लिए अन्दर जाना पड़ा था। वहां चीनी के बर्तनों पर दाग़ पड़ गये हैं और सारी किताबें फटती-फटाती जा रही हैं। यह तो बहुत बुरी बात है, इसका कुछ इन्तजाम होना चाहिए।"

मैं जानती थी कि वह एकाएक उत्तर नहीं देंगे। वह जूतों के फ़ीते बांधने के बहाने नीचे झुक गये और फिर बोले, "मैं समझता हूं कि अगर मैक्सिम वहां कुछ करवाना चाहेंगे तो मुझे बता देंगे।"

"क्या वे सब चीजें रेबेका की हैं ?" मैंने पूछा।

"हां।"

"नाव-घर में वह क्या करती थीं ? वह तो बिलकुल सजा-सजाया दीखता है।"

"हां, पहले वह नाव-घर ही था, लेकिन बाद में उन्होंने उसे यही रूप दे दिया, उसमें फ़र्नीचर रखवा दिया और चीनी के बर्तन सजवा दिये।" क्राउले की

आवाज में एक भार-सा था। ऐसा लग रहा था जैसे इस बारे में बातचीत करते हुए उन्हें कुछ कष्ट हो रहा हो।

"क्या वह वहां बहुत आती-जाती थी ?" मैंने पूछा।

"हां, चांदनी रातों में कभी वहां पिकनिक होती थी, कभी कुछ और, कभी कुछ।"

हम एक-दूसरे के अगल-बगल चल रहे थे और मैं अब भी गुनगुना रही थी।

"चांदनी रातों में तो पिकनिक का बड़ा आनन्द आता होगा ?" मैंने कुछ उल्लास के साथ पूछा, "क्या तुम भी कभी उनमें शरीक हुए थे।"

"एक या दो बार।" उन्होंने बिना कोई रुचि दिखाये जवाब दिया।

"वहां, उस छोटे-से बन्दरगाह में वह लंगरवाला पीपा क्यों रखा हुआ है ?"

"नाव वहीं बांधी जाती थी।"

"कौन-सी नाव ?"

"उनकी नाव।"

मैं जानती थी कि वह इस विषय पर बातचीत करना नहीं चाह रहे हैं। लेकिन मुझमें एक अजीब उत्तेजना-सी भर गई थी और मैं उसे रोक नहीं पा रही थी।

"उस नाव का क्या हुआ ?" मैं पूछ बैठी, "क्या वह उसी नाव में डूब गई थीं ?"

"हां, नाव उलट गई थी और वह लहरों में जा पड़ी थीं।"

"नाव कितनी बड़ी थी ?"

"कोई तीन टन वज़न की। उसमें एक केबिन भी था।"

"वह उलट कैसे गई ?"

"खाड़ी में तूफ़ान आ जाने से।"

"क्या कोई उन्हें बचा नहीं सका ?"

"किसीने उस दुर्घटना को देखा ही नहीं, न किसीको मालूम ही हुआ कि

वह डूब गई।"

"घर के आदमियों को तो पता होगा ?"

"नहीं, वह अक्सर अकेली ही नाव लकर निकल जाया करती थीं और रात को किसी समय भी लौटकर उसी नाव-घर में सो जाया करती थीं।"

"उन्हें डर नहीं लगता था ?"

"डर ! डर तो उन्हें किसी बात से नहीं लगता था।"

"क्या मैक्सिम उनके इस तरह अकेले जाने का बुरा नहीं मानते थे ?"

क्षणभर के लिए फ्राउले चुप रहे, फ़िर संक्षेप में बोले, "यह मुझे पता नहीं।"

मुझे ऐसा लगा, जैसे किसीके प्रति वह अपना कर्त्तव्य निभा रहे हैं, मैक्सिम के प्रति, रेबेका के प्रति या शायद अपने ही प्रति।

"तो शायद वह नाव के उलट जाने के बाद तैरकर किनारे आने की चेष्टा करते समय डूब गई होंगी ?"

"हां।"

और तब मैंने सोचा कि किस तरह वह नाव तूफ़ान में पड़कर कांपी और थर्राई होगी, किस तरह पानी हहराकर उसके अन्दर घुस आया होगा और किस तरह हवा के उस भयंकर झोंके में पालों ने उन्हें नीचे की ओर दबोच दिया होगा। निश्चय ही खाड़ी में बड़ा अंधेरा रहा होगा और उस समय तैरने-वाली को किनारा दूर, बहुत दूर मालूम पड़ा होगा।

"फिर उनका शव कितने दिनों बाद मिला ?" मैंने पूछा।

"दो महीने बाद।"

दो महीने ! मैं सुनकर आश्चर्य में रह गई, क्योंकि मैं समझती थी कि डूबे हुए आदमी एक-दो दिन बाद ही मिल जाते होंगे, ज्वार-भाटा उन्हें कहीं आस-पास ही किनारे पर ला फेंकता होगा।

"वह कहां मिली ?" मैंने पूछा।

"यहां से करीब चालीस मील की दूरी पर।"

"लेकिन दो महीने बाद लोग-बाग कैसे पहचान सके कि वह उन्हींका शव

था ?" मैंने पूछा। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि हर वाक्य को कहने से पहले क्राउले रुक क्यों जाते थे ? वह अपने शब्दों की इतनी नाप-तोल क्यों कर रहे थे ? तो क्या उन्हें रेबेका से प्रेम था—क्या उन्हें उसके डूब जाने से बड़ा दुःख हुआ था।

"मैक्सिम को उन्हें पहचानने के लिए बुलाया गया था।" उन्होंने सहसा उत्तर दिया।

एकाएक मैंने अपनेको कुछ अस्वस्थ-सा अनुभव किया और मैंने कोई प्रश्न पूछना नहीं चाहा। मुझे अपने से कुछ घृणा-सी हुई। अपने प्रश्न मुझे स्वयं ही बेतुके-से लगे और मैंने सोचा—फ्रैंक क्राउले कहीं मुझसे घृणा न करने लगें।

"आप लोगों के लिए तो वह समय बहुत ही बुरा रहा होगा और शायद उस घटना का फिर से याद दिलाया जाना आपको अच्छा नहीं लग रहा होगा। मैं तो सिर्फ यह कहना चाहती थी कि उस नाव-घर के लिए कुछ करना चहिए। वहां की सारी चीजें बरबाद होती जा रही हैं।"

उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। मुझे यह सोचकर बड़ी बेचैनी हुई कि वह मेरे मन की बात समझ गये होंगे, वह यह भांप गये होंगे कि मैंने ये सब सवाल सिर्फ उस नाव-घर के कारण नहीं किये हैं। निश्चय ही उन्हें इन सवालों से धक्का लगा होगा, तभी तो अब वह चुप हो गये थे। मेरी उनकी मित्रता बड़े अच्छे ढंग से चल रही थी। मैं उन्हें अपना साथी, अपना सहायक मानने लगी थी। कहीं ऐसा न हो कि मेरी इन बातों से उनका मन मेरी ओर से फिर गया हो।

"कितना लम्बा रास्ता है यह ! इसे देखकर तो मुझे परियोंवाली कहानी के जंगल का रास्ता याद आ जाता है।" मैंने बातचीत की दिशा बदलने के विचार से कहा।

"हां, यह बहुत ही लम्बा है।"

उनके व्यवहार से लग रहा था कि वह अब भी बच-बचकर उत्तर दे रहे हैं और उन्हें और भी प्रश्नों के पूछे जाने की आशा है। उस समय भोंडी स्थिति पैदा हो गई थी, जिसे भंग करना आवश्यक था।

"फ्रैंक," मैंने आवेश में आकर कहा, "मैं जानती हूं कि तुम क्या सोच रहे

हो ! तुम नहीं समझ सकते कि मैंने ये सवाल क्यों पूछे हैं। तुम समझते होगे कि मैं ये सब बातें जानने को बड़ी उत्सुक हूं। लेकिन बात ऐसी नहीं है। बात यह है कि यहां मैं अपनेको एक बड़ी विचित्र अवस्था में पाती हूं। यहां मैन्दरेल में रहना मुझे कुछ अजीब-अजीब-सा लग रहा है। इस तरह का जीवन मैंने कभी नहीं बिताया है। जब मैं दूसरे लोगों से मिलने जाती हूं, जैसे आज तीसरे पहर गई थी—तब मैं जानती हूं कि लोग-बाग मुझे ऊपर से नीचे तक घूरकर देखते है और यह जानने की चेष्टा करते हैं कि मैं यहां के जीवन में खप सकूंगी या नहीं। मैं जानती हूं कि लोग अपने मन में कहते होंगे कि आखिर मैक्सिम ने इस लड़की में क्या अच्छाई देखी ? और उस समय स्वयं मुझे भी अपने पर संदेह होने लगता है और मैं सोचने लगती हूं कि मुझे मैक्सिम से विवाह नहीं करना चाहिए था, क्योंकि हम प्रसन्न नहीं रह सकेंगे। मैं सच कहती हूं, फ्रैंक, जब कभी मैं किसी नये आदमी से मिलती हूं तब मुझे यही डर बना रहता है कि मुझे देखकर अवश्य ही वह यह सोचा करता होगा कि मैं रेबेका से बिल्कुल भिन्न हूं।"

यह कहते-कहते मेरा सांस चढ़ गया और मैं स्वयं अपने पर लज्जित होकर चुप हो गई। फ्रैंक ने बहुत ही चिंतित और दुखी होकर मेरी ओर देखा और कहा, "आप ऐसी बातें न सोचें, श्रीमती द विन्तर। जहांतक मेरा प्रश्न है, मुझे तो इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि मैक्सिम ने आपसे विवाह कर लिया। इससे उनका जीवन बदल जायगा और मुझे विश्वास है कि आप उनके जीवन को सफल बना सकेंगी। मैं तो समझता हूं कि मैन्दरले के जीवन में बिल्कुल रिलमिल जानेवाली आप जैसी महिला का आना एक बड़ी ही अच्छी बात है। मगर आस-पास के आदमी आपकी आलोचना करते हैं तो मैं इतना ही कह सकता हूं कि ऐसा करना उनके लिए बिल्कुल अनुचित है। मैंने कभी किसीको आपकी आलोचना करते नहीं सुना है और यदि मैंने कभी सुना भी तो मैं इस बात का प्रबन्ध कर दूंगा कि ऐसी बात फिर कभी किसीके मुंह से न निकले।"

"तुम बहुत अच्छे हो, फ्रैंक ! तुम्हारी बातों से मुझे बड़ा ढाढ़स बंधा है। लेकिन बात यह है कि मैं सचमुच ही मूर्ख हूं। मैं लोगों से मिलना-जुलना नहीं

जानती और दिन-रात मुझे यही ध्यान आता रहता है कि रेबेका के रहते हुए मैन्दरले का वातावरण कितना भिन्न रहा होगा। आखिर वह ऐसे ही वातावरण में तो जन्मी और पाली-पोसी गई थीं, इसलिए उन्हें तो यहां का सब काम बिल्कुल स्वाभाविक, बिल्कुल आसान लगता होगा। लेकिन मैं अपने लिए क्या करूं ? मैं तो दिन-रात अपनी कमियों पर ही कुढ़ती रहती हूं। मुझमें न तो वह आत्म-विश्वास की भावना है, न वह सुन्दरता, न वह योग्यता और न वह दक्षता, जो एक स्त्री के लिए आवश्यक है और जो सब उनमें थी। इसके लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता, फ्रैंक, कुछ भी नहीं किया जा सकता।"

वह कुछ बोले नहीं और बड़े चिन्तित और दु:खित-से मेरी ओर देखते रहे। रूमाल निकालकर उन्होंने अपनी नाक साफ की और कहा—

"आपको ऐसा नहीं कहना चाहिए।"

"क्यों नहीं ? मैंने सच्ची ही बातें तो कहीं हैं।"

"आपमें वे गुण हैं, श्रीमती द विन्तर, जो इन गुणों से कम महत्व नहीं रखते, बल्कि सच पूछिये तो जो उनसे भी अधिक महत्वपूर्ण हैं। मैं आपको बहुत अच्छी तरह नहीं जानता। मैं अविवाहित हूं और स्त्रियों के बारे में मेरी जानकारी कुछ अधिक नहीं है। मैं मैन्दरले में बहुत ही शान्त जीवन बिता रहा हूं, जैसा कि आपको मालूम ही है; फिर भी इतना मैं कह सकता हूं कि उदारता, दिल की सचाई और सुशीलता ऐसे गुण हैं, जो एक पति के लिए इस संसार की सारी सुन्दरता और सारी बुद्धिमत्ता से अधिक मूल्यवान होते हैं।"

वह बहुत ही व्याकुल मालूम हो रहे थे। मेरी बातों से वह बहुत ही परेशान हो गये थे, मुझसे भी ज्यादा परेशान।

कुछ देर बाद वह फिर बोले, "मैक्सिम को पता चलेगा कि आप ऐसी बातें सोचती हैं तो वह बहुत ही दुखी होंगे। उन्हें तो इसकी कल्पना भी नहीं होगी।"

"तुम उनसे कहना मत।"

"नहीं-नहीं, मैं उनसे कुछ नहीं कहूंगा। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूं। अगर उन्हें पता चल गया कि आपको पिछली बातों की इतनी चिंता है तो वह बहुत ही दुखी होंगे। इन दिनों वह बहुत सुखी, बहुत स्वस्थ दिखाई देते हैं। आप

जवान हैं, नई-नई हैं और समझदार हैं। आपका बीती बातों से कोई सरोकार नहीं हैं। उन्हें भूल जाइये, श्रीमती द विन्तर, बिल्कुल भूल जाइये, जैसा कि वह स्वयं भूल गये हैं, हम सभी भूल गये हैं। मैक्सिम की बात तो दूर रही, हममें से कोई भी उन भूली बातों को याद करना नहीं चाहता। यह आपपर निर्भर है कि आप हम सबको उनसे दूर ही रखे रहें और फिर से उनके पास न ले जायं।"

क्राउले ने ठीक ही कहा था। मैं निरर्थक ही भावनाओं की बाढ़ में बह गई थी।

"मुझे ये सब बातें तुम्हें पहले ही बता देनी चाहिए थीं।" मैंने कहा।

"काश कि आपने ऐसा किया होता। शायद मैंने आपकी बहुत-कुछ परेशानी दूर कर दी होती।"

"लेकिन अब मैं पहले से अधिक प्रसन्न हूं। अब चाहे कुछ भी हो, तुम मुझे एक मित्र के रूप में मिल गये हो। क्यों ठीक है न ?"

"बिल्कुल ठीक।"

"लेकिन फ्रैंक, इस बातचीत को समाप्त करने से पहले मैं तुमसे एक बात पूछना चाहती हूं। क्या तुम उसका बिल्कुल सचाई के साथ उत्तर देने का वचन देते हो ?"

वह कुछ रुके और मेरी ओर संदेहात्मक दृष्टि से देखते हुए बोले, "ऐसा मैं कैसे कर सकता हूं। हो सकता है, आप कोई ऐसा प्रश्न पूछ बैठें, जिसका उत्तर देना मेरे लिए बिल्कुल असम्भव हो।"

"नहीं-नहीं, मेरा प्रश्न इस ढंग का नहीं होगा।"

"तब मैं उत्तर देने का भरसक प्रयत्न करूंगा।"

"अच्छा, एक बात बताओ। क्या रेबेका बहुत सुन्दर थी ?"

फ्रैंक क्षणभर के लिए रुके। मैं उनका मुंह नहीं देख सकी। उनका मुंह मेरी ओर नहीं था। वह दूर मकान की तरफ देख रहे थे।

"हां," वह धीमे-धीमे बोले, "मैं समझता हूं कि उनसे बढ़कर सुन्दर स्त्री मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखी।"

हम सीढ़ियां चढ़कर लॉन में पहुंच गये और मैंने चाय के लिए घंटी बजाई।

: १४ :

मुझे श्रीमती डैन्वर्स से मिलने का अधिक अवसर नहीं मिलता था। वह अधिकतर अपने ही कामों में लगी रहती थी। हां, प्रतिदिन सवेरे वह नियमपूर्वक घर के टेलीफोन पर मुझसे भोजन की सूची के लिए स्वीकृति अवश्य ले लेती थी। लेकिन इसके बाद फिर हमारी बातचीत नहीं होती थी। उसने मेरे लिए एक नौकरानी रख दी थी, जिसका नाम क्लैराइस था। वह मैन्दरले की ही किसी नौकरानी की लड़की थी और शान्त प्रकृति की बहुत ही नेक तथा अच्छे आचरणवाली थी। उसने पहले कभी नौकरी नहीं की थी और सारे मैन्दरले में वही एक ऐसी थी, जो मेरा डर मानती थी। उसके लिए मैं घर की स्वामिनी थी, श्रीमती द विन्तर थी। दूसरे नौकर-नौकरानियों की कानाफूंसी उसपर असर नहीं डालती थी।

मैन्दरले के लिए वह मेरी ही जैसी बिल्कुल नई थी, क्योंकि कुछ समय के लिए वह वहां से पंद्रह मील दूर अपनी चाची के पास चली गई थी और वहीं पाली-पोसी गई थी। उससे कुछ कहते हुए मुझे रत्तीभर भी झिझक नहीं होती थी। उसके मुकाबले में एलाइस बहुत पुरानी थी। इसीलिए उससे किसी काम को कहने की बजाय मैं अपना काम अपने ही हाथों कर लेना ज्यादा अच्छा समझती थी।

श्रीमती डैन्वर्स से मुझे अब अधिक भय नहीं लगता था, क्योंकि मैं उसके क्रोध और घृणा का कारण समझ गई थी। उसे मेरे व्यक्तित्व से घृणा नहीं थी, बल्कि इस बात से थी कि उस घर में मैंने रेबेका का स्थान ले लिया था। इस स्थान पर जो कोई भी आती वही उसकी घृणा का पात्र बनती क्योंकि (जैसा कि बीट्रिस ने कहा था) वह रेबेका की पूजा किया करती थी। पहले तो मुझे इन बातों से एक धक्का-सा लगा था, लेकिन जितना ही मैंने उनपर विचार किया, उतना ही श्रीमती डैन्वर्स का आतंक मेरे मन पर से हटता गया। मुझे अब उसपर तरस आने लगा था, क्योंकि अब मैं महसूस करने लगी थी कि जब वह मुझे श्रीमती द विन्तर कहकर पुकारती होगी, मुझे उन्हीं चीजों को

प्रयोग में लाते देखती होगी, जिन्हें रेबेका प्रयोग में लाती थी और उन्हीं स्थानों पर चलते-फिरते, सोते-जागते और बैठते-उठते देखती होगी, जहां रेबेका ये सब काम किया करती थी तो उसके दिल पर क्या बीतती होगी।

फ्रैंक ने मुझसे कहा था कि मैं अतीत को भूल जाऊं और मैं भूलना चाहती भी थी, लेकिन फ्रैंक भला मेरी स्थिति को क्या समझ सकते थे, उन्हें न तो मेरी तरह रोजाना सुबहवाले कमरे में बैठना पड़ता था, न ही उस क़लम से लिखना पड़ता था, जिसे कभी रेबेका अपनी अंगुलियों के बीच पकड़ा करती थी। फ्रैंक को मेज पर रखे हुए स्याह-सोख पर कुहनी टेककर पत्रों के उस डिब्बे को भी दिन-प्रतिदिन नहीं देखना पड़ता था, जिसपर रेबेका ने अपने हाथों से कुछ लिख रखा था। उन्हें कार्निस पर रखी हुई मोमबत्ती-दानी, घड़ी, फूलदान और दीवार पर टंगी हुई तस्वीरें भी देखनी नहीं पड़ती थीं, न ही इन चीजों को देखकर उन्हें यह याद करने की ज़रूरत पड़ती थी कि ये चीजें रेबेका की थीं और उन्हें उसीने ही वहां चुन-चुनकर सजाया था। फ्रैंक को खाने की मेज पर बैठकर वे कांटे-छुरी भी नहीं पकड़ने पड़ते थे, जिन्हें रेबेका पकड़ा करती थी और न उन्हें उस गिलास में पानी पीना पड़ता था, जिसमें रेबेका पिया करती थी। फ्रैंक ने कभी अपने कंधों पर वह बरसाती नहीं डाली थी, जो रेबेका की थी और जिसमें उसका रूमाल था। न ही फ्रैंक को रोजाना यह देखना पड़ता था कि किस तरह वह कानी कुतिया मेरे पैरों—एक स्त्री के पैरों—की आवाज सुनकर अपने कान खड़े कर लेती थी, लेकिन फिर हवा को सूंघकर अपना सिर नीचे को छिपा लेती थी, क्योंकि मैं वह नहीं थी, जिसकी वह तलाश में थी।

कहने को तो ये छोटी-छोटी, निरर्थक और मूर्खता की बातें थीं, लेकिन इन्हें मुझे रोज़ाना देखना, सुनना और अनुभव करना पड़ता था। मैं चाहती थी कि रेबेका के बारे में मैं कुछ न सोचूं। मैं स्वयं प्रसन्न रहकर मैक्सिम को प्रसन्न रखना चाहती थी और चाहती थी कि वह सदा मेरे पास रहें। लेकिन मुझे बरबस रेबेका का ख्याल आता रहता था और सपनों तक में वह मुझे दिखाई देती रहती थी। अनायास ही मुझे ऐसा लगता रहता था कि मैं मैन्दरले में—

स्वयं अपने घर में—एक मेहमान की तरह रह रही हूं और वहां की स्वामिनी के आने की इन्तजार में दिन काट रही हूं। छोटी-छोटी बातें मुझे प्रतिदिन, प्रतिक्षण यही याद दिलाती रहती थीं।

एक दिन सुबह अपने हाथों में बकाइन की डंडियां लिये मैंने लाइब्रेरी में आकर फ्रिथ से कहा, "फ्रिथ, इन्हें रखने के लिए एक लम्बे फूलदान की जरूरत है, फूलवाले कमरे में तो सारे फूलदान छोटे-छोटे हैं।"

"बकाइन के लिए तो, मैडम, ड्राइंग रूम में रखा हुआ सेलखड़ी का लम्बा फूलदान ही सदा इस्तेमाल में आता रहा है।"

"वह खराब तो नहीं हो जायगा ? कहीं टूट जाय तो ?"

"श्रीमती द विन्तर सदा सेलखड़ी का फूलदान ही इस्तेमाल करती थीं, मैडम !"

"अच्छा, तब ठीक है।"

कुछ ही क्षणों बाद फ्रिथ पानी से भरा हुआ फूलदान मेरे पास लाया और मैंने उसमें बकाइन की टहनियां एक-एक करके सजा दीं। कमरा सुगंध से भर उठा और अचानक मुझे ध्यान आया कि रेबेका भी इन्हें ऐसे ही सजाती होगी। वह भी ऐसा ही करती होंगी जैसा मैं कर रही हूं। आखिर यह फूलदान उसी-का तो है और यह बकाइन भी तो उसीकी है।

"फ्रिथ, खिड़की के पासवाली मेज पर से किताबों का वह रैक तो हटा दो। मैं यह फूलदान वहीं रखूंगी।" मैंने कहा

"श्रीमती द विन्तर तो हमेशा सोफ़े के पीछेवाली मेज पर ही सेलखड़ी का फूलदान रखा करती थीं।"

"अच्छा..." मैं जरा हिचकिचाई। फूलदान मेरे हाथ में था। यदि मैं कहती तो फ्रिथ फ़ौरन मेरी आज्ञा का पालन करता, किन्तु...

"अच्छा रहने दो," मैंने कहा, "शायद यह बड़ी मेज पर ही ज्यादा अच्छा लगेगा।" और यह कहते हुए मैंने सेलखड़ी का फूलदान सोफ़े के पीछेवाली मेज़ पर रख दिया, जहां वह हमेशा रखा जाता था।

... ...

बीट्रिस को विवाहोपहार भेजने का अपना वादा याद रहा और एक दिन जब मैं सुबहवाले कमरे में बैठी थी, एक बहुत बड़ी-सी पार्सल आई—इतनी बड़ी कि राबर्ट उसे मुश्किल से सम्हाल पा रहा था। उसे देखते ही मैं बच्चों-जैसी उत्सुकता के साथ झपटी और उसकी डोरी को काटकर मैंने ऊपर के काग़ज़ को फाड़ डाला। उसके अन्दर से चार सुन्दर पुस्तकें निकलीं। बीट्रिस ने मेरे लिए चित्रकारी के इतिहास के चारों भाग भेजे थे। पहली पुस्तक में एक पत्र रखा हुआ था, जिसपर लिखा था—

शायद यह चीज तुम्हें पसंद आयेगी

प्रेमसहित

तुम्हारी बीट्रिस

बीट्रिस कितनी अच्छी हैं, मैंने सोचा। वह मुझे कितना प्यार करती हैं, मेरी पसन्द का कितना ध्यान रखती हैं। न जाने क्यों एकाएक मेरा मन आया और जी चाहा कि चिल्ला-चिल्लाकर रोऊं।

मैंने उन किताबों को अच्छी-से-अच्छी जगह पर सजाकर रखना चाहा। वह नजाकतभरा कमरा उनके लिए उपयुक्त नहीं था। लेकिन इससे क्या होता है, कमरा अब मेरा है, मैं जहां जो चीज़ चाहूं रख सकती हूं—यह सोचकर मैंने पुस्तकों को डेस्क के सिरे पर लगा दिया, यह देखने के लिए कि वे कैसी लगती हैं। मैं पीछे की ओर हटी, लेकिन शायद मेरी हड़बड़ी के कारण वह डेस्क हिल गया और किनारेवाली किताब नीचे आ पड़ी। उसके गिरते ही और पुस्तकें भी फिसल गई और उनके फिसलने से डेस्क पर रखी हुई चीनी मिट्टी की एक छोटी मूर्ति को धक्का लगा और वह फ़र्श पर गिरकर चकनाचूर हो गई। वह मूर्ति कामदेव की थी। उसके टूटते ही मैं घबरा उठी, एक अपराधी की तरह मैंने दरवाज़े की तरफ़ देखा और टुकड़ों को जल्दी-जल्दी समेटकर एक लिफ़ाफ़े में भर दिया और फिर उस लिफ़ाफ़े को एक दराज़ में छिपा दिया। इसके बाद मैं उन पुस्तकों को लेकर लाइब्रेरी में गई और वहां मैंने उन्हें एक तख़्ते पर सजा दिया।

उन पुस्तकों को जब मैंने गर्व के साथ मैक्सिम को दिखाया तब वह हँस-

कर बोले—"बी० बहुत अच्छी है। तुमसे उसकी अच्छी निभेगी। जहांतक उसका बस चलता है, वह कोई किताब कभी खोलकर भी नहीं देखती।"

अगले दिन जब खाने के बाद फ्रिथ लाइब्रेरी में कॉफ़ी लाया, तब कुछ मिनट तक वह मैक्सिम के पीछे खड़ा रहा और फिर बोला, "क्या आपसे कुछ कह सकता हूं ?'

"हां-हां कहो।" मैक्सिम ने अखबार पर से दृष्टि उठाते हुए कुछ आश्चर्य के साथ कहा।

फ्रिथ की मुद्रा इतनी गम्भीर थी और उसके होंठ इतने सिकुड़े हुए थे कि एकाएक मैं यह सोच बैठी कि उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई है।

"मुझे आपसे राबर्ट के बारे में कुछ कहना है।" फ्रिथ बोला, "आज श्रीमती डैन्वर्स से उसकी झड़प हो गई है, जिसके कारण वह बहुत परेशान है।"

"क्या बात है ?" मैक्सिम ने मेरी ओर देखकर मुंह बिचकाते हुए कहा और मैं नीचे झुककर जैस्पर को थपथपाने लगी, जैसा कि इस प्रकार के परेशानी के क्षणों में अक्सर किया करती थी।

"बात यह है कि श्रीमती डैन्वर्स ने रॉबर्ट पर यह आरोप लगाया है कि उसने सुबहवाले कमरे से कोई सजावट की क़ीमती चीज चुरा ली है। सुबहवाले कमरे में फूल वही लाकर लगाता है। आज उसके फूल सजा चुकने के बाद जब श्रीमती डैन्वर्स कमरे में गईं तब उन्होंने देखा कि एक चीज वहां से ग़ायब है। कल वह वहां थी। श्रीमती डैन्वर्स कह रही हैं कि या तो रॉबर्ट उसे चुरा ले गया है या वह चीज उससे टूट गई है और उसने उसे कहीं छिपाकर रख दिया है। रॉबर्ट इन दोनों आरोपों को झूठा बतलाता है और वह रोता हुआ मेरे पास आया था। आपने देखा होगा कि खाना परसते समय वह अपने-आपे में नहीं था।"

"हां, मुझे इस बात पर ताज्जुब तो जरूर हुआ था कि उसने बिना प्लेट दिये हुए ही मुझे कटलेट कैसे दे दिये, लेकिन मुझे पता नहीं था कि रॉबर्ट इतना भावुक है। हो सकता है कि यह किसी नौकरानी की करतूत हो।"

"नहीं साहब, नौकरानी के कमरा साफ़ करने जाने से पहले ही श्रीमती

डैन्वर्स वहां गई थीं। कल मैडम के वहां से चले आने के बाद से अन्दर कोई नहीं गया। आज सवेरे रॉबर्ट ही वहां सबसे पहले फूल रखने के लिए गया था। यह राबर्ट के लिए और साथ-ही-साथ मेरे लिए भी बड़े दुःख की बात है।"

"हां, है तो। तुम श्रीमती डैन्वर्स से यहां आने के लिए कहो, अभी सारी बातों का पता लगा जाता है। वह चीज थी क्या ?"

"चीनी की कामदेव की मूर्ति, जो लिखनेवाली मेज पर रखी रहती थी।"

"ओह, वह तो हमारी सबसे क़ीमती चीजों में से एक थी। उसका तो पता लगाना ही होगा। श्रीमती डैन्वर्स को फौरन बुलाओ।"

फ्रिथ के चले जाने के बाद मैक्सिम बोले, "यह तो बड़ी गड़बड़ी की बात है। वह मूर्ति बहुत ही क़ीमती थी। मुझे नौकरों का इस तरह लड़ना-झगड़ना बहुत बुरा लगता है। इन बातों के लिए वे मेरे पास क्यों आते हैं, यह तो तुम्हारा काम है, प्रिय!"

मैंने जैस्पर पर से दृष्टि उठाकर ऊपर की ओर देखा। मेरा मुंह लाल हो रहा था।

"मैं तुम्हें पहले ही बता देना चाहती थी, मैक्सिम!" मैंने कहा, "लेकिन...लेकिन मैं भूल गई। कल वह मूर्ति मुझसे ही टूट गई थी।"

"तुमसे टूट गई थी ? तो फिर तुमने यह बात फ्रिथ के सामने क्यों नहीं बता दी ?"

"मुझे उसके सामने बताना अच्छा नहीं लगा। मैंने सोचा, वह मुझे मूर्ख समझेगा।"

"अब तो वह तुम्हें और भी बड़ा मूर्ख समझेगा। अब तुम्हें उसके और श्रीमती डैन्वर्स दोनों के सामने सब बातें बतानी पड़ेंगी।"

"नहीं मैक्सिम! मुझे ऊपर जाने दो, तुम्हीं उन्हें बता देना।"

"मूर्ख कहीं की! वे समझेंगे कि तुम उनसे डरती हो।"

"नहीं, डरती तो नहीं, लेकिन..."

इतने में दरवाज़ा खुला और श्रीमती डैन्वर्स और फ्रिथ अन्दर आ गये। मैंने घबराकर मैक्सिम की तरफ़ देखा। उन्होंने कुछ-कुछ नाराजगी और कुछ-कुछ मनोरंजन के साथ अपने कंधे हिलाये।

"गलतफ़हमी हो गई, श्रीमती डैन्वर्स, मूर्ति असल में श्रीमती द विन्तर से टूटी थी, लेकिन वह बताना भूल गई।"

सबके-सब मेरी ओर देखने लगे और मैं एक अपराधी बच्चे की तरह बोली, "मुझे इस बात का खेद है। मुझे पता नहीं था कि इसके लिए रॉबर्ट को इतनी परेशानी होगी।"

"क्या अभी वह इस लायक है कि उसकी मरम्मत की जा सके, मैडम?" श्रीमती डैन्वर्स ने कहा। उसे शायद यह जानकर कुछ भी आश्चर्य नहीं हो रहा था कि असली दोषी मैं हूं। मुझे तो ऐसा लगा जैसे यह बात वह पहले ही समझ गई थी और रॉबर्ट का नाम उसने सिर्फ़ इसीलिए लिया था कि देखे मुझमें अपना अपराध स्वीकार करने का साहस है या नहीं।

"शायद नहीं," मैंने उत्तर दिया, "उसके तो टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं।"

"उन टुकड़ों का तुमने क्या किहा?" मैक्सिम ने पूछा।

"मैंने उन सबको समेटकर एक लिफ़ाफ़े में रख दिया है।"

"अच्छा! और उस लिफ़ाफ़े का क्या किया?" मैक्सिम ने सिगरेट जलाते हुए पूछा।

"मैंने उसे लिखने की मेज़ की एक दराज के पीछे रख दिया है।"

"ऐसा लगता है कि श्रीमती द विन्तर को शायद यह डर लगा कि कहीं तुम उन्हें जेल में न भेज दो, श्रीमती डैन्वर्स! खैर, उस लिफ़ाफ़े को लेकर तुम टुकड़े लंदन भेज दो। अगर वे जुड़ने के लायक नहीं हैं, तब तो कोई चारा ही नहीं। अच्छा फ्रिथ, रॉबर्ट से कह दो, वह अपने आंसू पोंछ डाले।"

फ्रिथ चला गया, लेकिन श्रीमती डैन्वर्स वहीं रुकी रही और बोली, "मैं रॉबर्ट से इसके लिए क्षमा मांग लूंगी, लेकिन इसके ख़िलाफ़ सबूत बहुत पक्का था। यह तो मुझे ध्यान ही नहीं आया कि मूर्ति स्वयं श्रीमती द विन्तर से टूट गई होगी। अगर फिर ऐसी कोई बात हो तो श्रीमती द विन्तर मुझे बता दिया

करें, मैं फ़ौरन सब देखभाल लिया करूंगी। ऐसा करने से दूसरे लोगों में बेकार का मन-मुटाव नहीं होगा।"

"हां, ठीक है," मैक्सिम ने अधीर होते हुए कहा, "पता नहीं इन्होंने कल ही क्यों नहीं बता दिया। जब तुम कमरे में आई थीं तब मैं इनसे यही कहने जा रहा था।"

"शायद, श्रीमती द विन्तर को पता नहीं था कि वह मूर्ति कितनी कीमती थी।" श्रीमती डैन्वर्स ने मेरी ओर देखते हुए कहा।

"नहीं, यह तो मैं समझती हूं कि वह क़ीमती थी। तभी तो मैंने उसके टुकड़े सम्हालकर लिफ़ाफ़े में रख दिये।"

"और दराज के पीछे छिपा दिया, जहां कोई उन्हें पा ही न सके," मैक्सिम ने हँसते और अपने कंधे उचकाते हुए कहा, "इस तरह के काम की तो नौकरानियों से उम्मीद की जाती है। क्यों है न ठीक, श्रीमती डैन्वर्स !'

"मैन्दरले की किसी नौकरानी को सुबहवाले कमरे में जाकर कोई क़ीमती चीज छूने की कभी इजाज़त नहीं मिल सकती।" श्रीमती डैन्वर्स ने उत्तर दिया।

"हां, तुम वहां की कोई चीज किसीको छने नहीं देती।" मैक्सिम बोले।

"जो कुछ हुआ बहुत ही बुरा हुआ ! इससे पहले उस कमरे की कोई भी चीज कभी नहीं टूटी। मैं खुद ही वहां की चीजें झाड़ती-पोंछती थी और किसी दूसरे पर भरोसा नहीं करती थी। जब श्रीमती द विन्तर जिन्दा थीं तब हम दोनों मिलकर यह काम किया करते थे।"

"ख़ैर, जो हो गया सो हो गया। अब बस, श्रीमती डैन्वर्स।"

वह चली गई और मैं खिड़की के पास बैठकर बाहर की ओर देखने लगी। मैक्सिम ने अख़बार उठा लिया। हम दोनों ने एक-दूसरे से कुछ नहीं कहा।

एक क्षण बाद मैं बोली, "मुझे बहुत ही दुःख है, मैक्सिम कि मैंने ऐसी लापरवाही से काम किया। पता नहीं, यह सब कैसे हो गया। मैं तो किताबों को डेस्क पर सिर्फ़ यह देखने के लिए रख रही थी कि वे वहां खड़ी रह सकती है या नहीं।

इतने में ही मूर्ति खिसककर गिर पड़ी।"

"उहूं, छोड़ो भी इस बात को। इससे क्या बनता-बिगड़ता है?"

"बनता-बिगड़ता कैसे नहीं। मुझे ज्यादा सावधान रहना चाहिए था। श्रीमती डैन्वर्स मुझसे बहुत नाराज़ हो गई होंगी।"

"वह नाराज़ होनेवाली कौन है? मूर्ति उसकी तो नहीं थी।"

"लेकिन उसे इन वस्तुओं पर अभिमान है। कितनी बुरी बात है कि पहले कभी कोई चीज नहीं टूटी और टूटी भी तो मुझसे टूटी।"

"अच्छा हुआ, वह अभागे राबर्ट से न टूटकर तुमसे टूटी।"

"लेकिन मैं सोचती हूं कि अगर उससे टूटी होती तो अच्छा रहता। श्रीमती डैन्वर्स इसके लिए मुझे कभी माफ़ नहीं करेंगी।"

"ऐसी की तैसी श्रीमती डैन्वर्स की, वह क्या कोई भगवान है। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम उससे डरती क्यों हो।"

"नहीं, डरती तो नहीं, लेकिन...लेकिन मैं कह नहीं सकती...।"

"कैसी अजीब बातें करती हो तुम! तुम्हीं सोचो, कितना अच्छा रहता अगर तुम उसे बुलाकर कह देतीं कि देखो श्रीमती डैन्वर्स, यह मूर्ति टूट गई है, इसकी मरम्मत करा दो। इसके बजाय तुमने टुकड़ों को छिपाकर रख दिया। यह तो नौकरानियों जैसी बात हुई, घर की मालकिन जैसी नहीं।"

"मैं जानती हूं कि बहुत-सी बातों में मैं नौकरानियों ही जैसी हूं। तभी क्लैराइस से मेरी बातें इतनी मिलती-जुलती हैं और इसीलिए वह मुझे इतना पसंद करती है। एक दिन मैं उसकी मां से मिलने गई थी। वह कहती थी कि क्लैराइस को तो कभी यह लगता ही नहीं कि वह किसी मालकिन के साथ रह रही है। उसे तो ऐसा ही मालूम होता है जैसे वह अपने ही किसी आदमी के साथ रह रही हो। इसीलिए तो मुझे बिशप की पत्नी के घर जाने की बजाय क्लैराइस की मां के पास जाना ज्यादा अच्छा लगता है।"

"और तभी तो जब तुम मेरे साथ पादरी की पत्नी के पास गई थीं, तब 'हां,' 'नां,' के सिवा और कुछ बोली ही नहीं थीं।"

"क्या करूं? मुझे बड़ी झेंप आया करती है।"

"मैं जानता हूं कि यह तुम्हारे वस की वात नहीं है। फिर भी तुम उस पर विजय पाने की चेष्टा तो कर ही सकती हो।"

"ऐसा न सोचिये। मैं दिन-रात इसकी चेष्टा करती रहती हूं। तुम मेरी कठिनाई को नहीं समझ सकते। तुम्हें तो इन बातों की आदत है, लेकिन मेरा लालन-पालन इस ढंग से हुआ ही नहीं है।"

"हिश! यह लालन-पालन की बात है! यह तो अपनेको किसी बात में लगा देने की बात है। तुम जानती हो कि मुझे लोग-वागों से मिलना-जुलना पसंद नहीं है। मैं ऊब जाता हूं। लेकिन संसार में रहकर यह सब करना ही पड़ता है।"

"मैं ऊबने की बात नहीं कह रही हूं। मुझे ऊबने से परेशानी नहीं होती। लेकिन मुझे इस बात से बड़ी नफ़रत होती है कि लोग-वाग मुझे ऊपर से नीचे तक इस तरह देखते हैं कि मैं कोई इनाम में मिली हुई गाय हूं।"

"तुम्हें कौन ऊपर से नीचे तक देखता है?"

"यहां के सब आदमी।"

"तो उनके ऐसा करने से क्या होता है? चलो, इसी बहाने उन्हें जीवन में कुछ दिलचस्पी हो जाती है।"

"लेकिन अकेली मैं ही सबकी दिलचस्पी का केन्द्र क्यों बनूं और फिर बदले में सबकी आलोचना सुनूं!"

"बात यह है कि यहां मैन्दरले ही एक ऐसी जगह है, जहां के जीवन में लोगों को दिलचस्पी है।"

"तब तो मैं उनकी आंखों में एक किरकिरी-सी खटकती होऊंगी।"

मैक्सिम ने उत्तर नहीं दिया, वह पढ़ते रहे।

मैंने फिर वही बात दुहराई और कहा, "शायद, इसीलिए तुमने मुझसे ब्याह किया था, तुम जानते थे कि मैं मूर्ख हूं, जड़ हूं, अनुभवहीन हूं; इसीलिए मेरे बारे में कभी कोई कानाफूसी नहीं होगी।"

"क्या मतलब है तुम्हारा?" मैक्सिम ने अखबार को ज़मीन पर फेंककर कुरसी पर खड़े होते हुए कहा।

उनके चेहरे पर कालिमा छा गई थी और उनकी आवाज कठोर थी।

"मैं...मैं नहीं जानती।" मैंने खिड़की की तरफ़ पीठ झुकाते हुए कहा, "मैंने किसी मतलब से यह बात नहीं कही थी। तुम मुझे इस प्रकार क्यों देख रहे हो?"

"तुमने यहां क्या कानाफूसी सुनी है?"

"मैं तो कुछ नहीं जानती, मैंने तो केवल...केवल कुछ कहने के लिए कह दिया था। मुझे इस तरह मत देखो, मैक्सिम! मैंने ऐसा क्या कह दिया है? आखिर बात क्या है?"

"तुमसे कौन इस तरह की बातें कहता रहा है?" उन्होंने धीरे-से कहा।

"कोई भी नहीं, सचमुच कोई भी नहीं।"

"तब फिर तुमने यह सब क्यों कहा?"

"अभी तो बताया कि मैंने योंही कह दिया था। मेरे दिमाग में एक बात आई और मैंने कह दी। मुझे क्रोध आ रहा था, मैं झुंझला रही थी। कहां तो मुझे इन लोगों से मिलना बुरा लगता है और कहां तुम मेरे मत्थे झेंपने का दोष मढ़ते जा रहे थे। बस इसीसे मैं कुछ-का-कुछ कह बैठी। मैंने किसी विशेष मतलब से कुछ नहीं कहा। मैं सच कहती हूं, मैक्सिम, मेरा विश्वास करो।"

"लेकिन इस प्रकार की बातें करना क्या अच्छा लगता है?"

"नहीं, मैं जानती हूं।"

वह किसी विचार में डूबे हुए मुझे घूरते रहे। उनके हाथ उनकी जेबों में थे और वह अपने जूतों की एड़ियों पर आगे-पीछे हिल रहे थे। बड़े धीरे-से और कुछ सोचते हुए वह बोले, "तुमसे ब्याह करने में शायद मैंने बड़े स्वार्थ से काम लिया।"

मैं एकदम ठंडी पड़ गई और घबराकर बोली, "क्या मतलब है तुम्हारा?"

"मैं तुम्हारा साथी बनने योग्य नहीं हूं। हम दोनों में उम्र का बड़ा अन्तर है।

तुम्हें कुछ दिन और प्रतीक्षा करनी चाहिए थी और अपनी ही उम्र के किसी लड़के से ब्याह करना चाहिए था...मेरे जैसे आदमी से नहीं, जिसका आधा जीवन बीत चुका हो।"

"कैसी अजीब बात कह रहे हो तुम !" मैंने बड़ी व्यग्रता से कहा, "ब्याह में उम्र का कोई सवाल नहीं होता। हम निश्चिय ही एक-दूसरे के साथी हैं।"

"क्या सच ?" उन्होंने कुछ अजीब निरीह भाव से पूछा।

खिड़की के पास मैं घुटने टेककर खड़ी हो गई और अपनी बाहें मैंने उनके गले में डाल दीं।

"आप ऐसी बातें क्यों कर रहे हैं।" मैं बोली, "आप जानते हैं, मैं आपसे कितना प्रेम करती हूं। मेरे लिए तो आप ही सबकुछ हैं, मेरे बाप, मेरी मां, मेरे बेटे—सभी आप ही हैं।"

"इसमें मेरा ही दोष था।" मेरी बात पर बिना ध्यान दिये ही वह बोले, "मैंने तुमसे इतनी जल्दबाजी में ब्याह कर डाला कि तुम्हें सोचने का अवसर ही नहीं मिला।"

"मैं इसपर सोचना ही नहीं चाहती थी। मेरे सामने दूसरा रास्ता ही क्या था ? तुम नहीं जानते, मैक्सिम ! जब कोई किसीको प्यार करता है..."

"तो क्या तुम यहां सचमुच प्रसन्न हो ?" उन्होंने मुझसे दूर कहीं दूसरी तरफ देखते हुए कहा, "कभी-कभी मुझे शक होने लगता है। तुम दुबली हो गई हो। तुम्हारा रंग बदल गया है।"

"मैं सचमुच प्रसन्न हूं, मैक्सिम ! मुझे मैन्दरले बड़ा प्यारा लगता है, मुझे यहां के बागों से, यहां की हर चीज से प्रेम हो गया है। मुझे लोगों के यहां जाना भी अच्छा लगता है। मैंने तो योंही चिढ़कर कह दिया था। अगर तुम्हें पसंद है तो मैं हर रोज लोगों से मिलने जाने को तैयार हूं। मैं तो एक क्षण के लिए भी तुमसे ब्याह करके नहीं पछताई हूं। इस बात को तो तुम हमेशा के लिए गांठ बांध लो।"

उन्होंने बड़े ही अन्यमनस्क भाव से मेरे गाल थपथपाये और झुककर मेरा माथा चूम लिया। फिर कहा, "क्या कहूं, मैं तुम्हें हँसा-खेला नहीं पाता। मैं बड़ा ही टेढ़ा आदमी हूं। क्यों हूं न?"

"कौन कहता है कि तुम टेढ़े आदमी हो? तुम तो बहुत सीधे हो, एकदम सीधे। औरों के पति शराब पीते हैं, गालियां बकते हैं, ज़रा-ज़रा-सी बात पर नाक-भौंहें सिकोड़ते हैं। लेकिन तुम तो ऐसी कोई बात नहीं करते।"

"सचमुच?" और यह कहकर वह मुस्कराये। इसका लाभ उठाकर मैं भी मुस्करा दी और उनके दोनों हाथ पकड़कर मैंने चूम लिये। फिर कहा, "तुम कैसे कहते हो कि हम साथी नहीं हैं। हम-तुम तो रोज़ यहां साथ-साथ बैठते हैं, चाय के प्यालों की तरह। देखो तो, हम कितने सुखी हैं, हमारा ब्याह कितना सफल रहा है।"

"अगर तुम ऐसा कहती हो तो ठीक ही है।"

"नहीं, तुम भी तो ऐसा ही सोचते हो। अकेली मैं ही नहीं, हम दोनों प्रसन्न हैं, बहुत प्रसन्न। हैं न?"

उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। वह खिड़की के बाहर टकटकी लगाये देखते रहे और मैं उनके हाथ पकड़े रही। मुझे अपने हलक में खुश्की मालूम दी और मेरी आंखें जलने लगीं। मैंने सोचा—यह तो एक नाटक का-सा दृश्य है, क्षण भर में ही परदा गिरेगा और अभिनेता-अभिनेत्री की तरह हम दर्शकों को सिर झुकाकर एक-दूसरे से अलग-अलग हो जायंगे। मैं खिड़की की सीट पर बैठ गई। अनायास ही उनका हाथ छोड़कर कठोर, नीरस स्वर में बोली, "अगर आप समझते हैं कि हम प्रसन्न नहीं हैं तो फिर आप साफ़-साफ़ कह क्यों नहीं देते? मैं यह नहीं चाहती कि आप किसी तरह का दिखावा करें। इससे तो अच्छा हो कि मैं चली जाऊं और आपके साथ न रहूं।"

"आप उत्तर क्यों नहीं दे रहे हैं?" उन्हें चुप देखकर मैंने पूछा।

उन्होंने मेरा चेहरा अपने दोनों हाथों में थाम लिया और मेरी ओर उसी तरह देखा जिस तरह उस दिन समुद्र-तट से वापस आने पर देखा था, जबकि फ्रिथ आ गया था। फिर वह बोले, "मैं तुम्हें क्या उत्तर दूं! मैं स्वयं इसका

उत्तर नहीं जानता। अगर तुम कहती हो कि हम प्रसन्न हैं तो मैं यही माने लेता हूं।" उन्होंने फिर मेरा चुम्बन लिया और वह कमरे में इधर-से-उधर टहलने लगे। मैं खिड़की की सीट पर उसी तरह अपने हाथ अपनी गोद में रखे सीधी तनी-सी बैठी रही।

कुछ देर बाद मैंने कहा, "यह सब आप इसलिए कह रहे हैं कि आपको मुझसे निराशा मिली है। मैं भद्दी हूं, भौंडी हूं, सलीके से कपड़े नहीं पहनती, लोग-बागों से झेंपती हूं। लेकिन मैंने तो यह सब मॉन्टी कार्लो में ही आपको बता दिया था। आप सोचते हैं कि मैं मैन्दरले के योग्य नहीं हूं।"

"व्यर्थ की बातें क्यों करती हो? मैंने कभी नहीं कहा कि तुम कपड़े सलीके से नहीं पहनतीं या तुम भौंडी हो। यह सब तुम्हारे अपने दिमाग़ की उपज है। रही झेंप की बात, सो उसके लिए तो मैं कहता ही रहा हूं कि वह कुछ दिनों में दूर हो जायगी।"

"हम तो बहस करते-करते उसी जगह आ पहुंचे हैं, जहां से हमने आरम्भ किया था। यह सब सिर्फ इसलिए हुआ कि मुझसे वह मूर्ति टूट गई थी। न मुझसे वह मूर्ति टूटती, न ये बातें होतीं, हम तो कॉफी पीकर कभी के बाग़ में चले गये होते।"

"छोड़ो भी उस मनहूस मूर्ति की बात। उसके हजारों टुकड़े हो जाते तब भी मुझे परवा नहीं थी।"

"क्या वह सचमुच बहुत कीमती थी?"

"परमात्मा जाने! हां, शायद थी। सच पूछो तो उसके बारे में मैं सब कुछ भूल गया हूं।"

"क्या सुबहवाले कमरे में सब क़ीमती ही चीजें रखी हैं?"

"हां, हैं तो।"

"वे सारी क़ीमती चीजें उसी कमरे में क्यों रखी गई हैं?"

"मुझे पता नहीं, शायद वे वहां अच्छी लगती थीं।"

"क्या हमेशा से वे वहीं हैं? जब तुम्हारी मां जिन्दा थीं तब भी क्या वे वहां थीं?"

"नहीं, तब ऐसा नहीं था। वे घर में यहां-वहां बिखरी हुई थीं। कुरसियां तो शायद गोदाम में पड़ी थीं।"

"तो फिर यह सुबह्वाला कमरा इस तरह कब सजाया गया था ?"

"जब मेरी शादी हुई थी।"

"शायद तभी यह मूर्ति वहां रखी गई होगी।"

"हां, ऐसा ही हुआ होगा।"

"क्या वह भी गोदाम में ही पड़ी मिली थी ?"

"नहीं, मेरे खयाल में तो वह विवाह का उपहार थी। रेबेका को चीनी मिट्टी से बनी चीजों की अच्छी जानकारी थी।"

मैंने उनकी तरफ नहीं देखा और मैं अपने नाखूनों पर पालिश करने लगी। रेबेका का नाम उन्होंने बड़े ही स्वाभाविक ढंग से और बड़े ही शान्त भाव से ले लिया था। उन्हें इसके लिए कुछ भी चेष्टा करनी नहीं पड़ी थी। क्षणभर बाद मैंने उनकी ओर तेजी से दृष्टि डाली। वह जेबों में हाथ डाले कार्निस के पास खड़े कुछ सोच रहे थे। वह शायद रेबेका की बातें सोच रहे थे। शायद वह सोच रहे थे कि यह कैसी अनोखी घटना है कि मुझे मिला हुआ विवाहोपहार रेबेका को मिले हुए विवाहोपहार के नष्ट होने का कारण बन गया था। शायद वह कामदेव की मूर्ति की बात सोच रहे थे। शायद उन्हें याद आ रहा था कि किस तरह उस विवाहोपहार के आने पर रेबेका ने उसे मुस्कराते हुए उन्हें दिखाया था और किस प्रकार दोनों ने उसे कार्निस पर सजाकर उसकी ओर प्रेमभरी आंखों से देखा था।

मैं नाखूनों पर पालिश करती रही। कुछ देर बाद मैंने फिर मैक्सिम की ओर देखा। वह तब भी वहीं खड़े थे।

"आप क्या सोच रहे हैं ?"

मेरी आवाज़ दृढ़ और शान्त थी, किन्तु मेरा हृदय कांप रहा था और मेरे मस्तिष्क में कड़वाहट और क्रोध भरा था। उन्होंने सिगरेट जलाई—शायद उस दिन उनकी वह पच्चीसवीं सिगरेट थी...और अभी हमने सिर्फ दोपहर का खाना समाप्त किया था। उन्होंने बुझी हुई दियासलाई झंझरी में डाल दी

और अखबार उठा लिया।

"कोई खास खबर नहीं है।" उन्होंने कहा।

"लेकिन आप बहुत ही गम्भीर दिखाई दे रहे थे।"

"कुछ नहीं, मैं ज़रा मैच की बात सोच रहा था।" उन्होंने कहा और सीटी बजाते हुए सिगरेट को अंगुलियों से कसकर पकड़ लिया।

वह फिर कुरसी पर बैठ गये और अखबार को मोड़ने लगे। मैं खिड़की से बाहर देखने लगी। तभी जैस्पर आया और उछलकर मेरी गोद में बैठ गया।

: १५ :

जून के अंत में मैक्सिम को किसी सार्वजनिक भोज में सम्मिलित होने के लिए दो दिन को लंदन जाना पड़ा। पता नहीं क्यों, उनके जाने से मेरे मन में एक भय-सा बैठ गया। जैसे ही उनकी कार आंखों से ओझल हुई, मेरा जी भर आया और मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अब फिर मैक्सिम को नहीं देख पाऊंगी, जैसे यह हमारी अन्तिम विदा है। सारे दिन मैं किसी दुर्घटना की अशंका से बेचैन रही और यही सोचती रही कि अभी फ़ोन से कोई बुरी ख़बर आने-वाली है। यह अशंका मेरे मन में ऐसी समा गई कि मैंने बड़े-से-बड़े अमंगल तक की कल्पना कर डाली—लोगों का कब्रिस्तान में जमा होना, मेरा फ्रैंक की बाहों पर झुके-झुके फूट-फूटकर रोना—ये सब बातें इतनी वास्तविक-सी लगीं कि मुझसे दोपहर का खाना भी ठीक से नहीं खाया गया।

तीसरे पहर जब मैं अखरोट के वृक्ष के नीचे अपनी गोद में एक किताब रखे बैठी थी, तब मैंने रॉबर्ट को अपनी ओर आते देखा। मेरा जी धक-से हो गया और मुझे ऐसा लगा कि अब यह आकर कोई बुरी खबर सुनायेगा, मेरा दिल बैठने-सा लगा, लेकिन तभी रॉबर्ट ने आगे बढ़कर बताया कि क्लब से समाचार आया है कि दस मिनट पहले श्री द विन्तर सकुशल लंदन पहुंच गये हैं।

इस समाचार से मुझे बड़ा इतमीनान हुआ और मैंने महसूस किया कि

बड़ी भूख लग रही है। जब रॉबर्ट चला गया तब मैं बड़ी खिड़की के रास्ते चुपके-से भोजन के कमरे में गई और कुछ बिस्कुट और एक सेब उठा लाई। उन्हें लेकर मैं झाड़ियों के पीछे चली गई और वहीं बैठकर उन्हें खाने लगी, जिससे कोई देखकर मेरी हँसी न उड़ाये और यह कानाफूसी न करे कि श्रीमती द विन्तर को रसोई-घर में बने खाने की चिन्ता नहीं है, वह तो अपना पेट बिस्कुटों और सेब से भर लेती हैं।

मैक्सिम लंदन सकुशल पहुंच गये थे और मेरा पेट भी भर गया था, इसलिए मैं बड़ी प्रसन्न थी। मैंने अपने मुंह पर लगे हुए बिस्कुट के चूरे को पोंछा और जैस्पर को पुकारा। उसे लेकर मैं समुद्र-तट की ओर चल दी। आनन्द-घाटी से होकर हम खाड़ी की ओर गये और वहां मैं ऊंची-ऊंची घास पर हाथ का तकिया लगाकर लेट गई और घास का एक तिनका उठाकर चबाने लगी। जैस्पर मेरे पास बैठा था।

उस समय मैं बिल्कुल स्वतंत्र थी और मुझे ऐसा आनन्द आ रहा था जैसा मैन्दरले में पहले कभी नहीं आया था। शायद इसका कारण यह था कि मैक्सिम मेरे पास नहीं थे। लेकिन नहीं, मेरा ऐसा सोचना मैक्सिम के साथ विश्वासघात करना था। मैक्सिम मेरे जीवन थे, मेरे संसार थे। मैं उठ बैठी और जैस्पर के साथ घाटी से उतरकर समुद्र के किनारे जा पहुंची। जैस्पर उस दिन की भांति फिर उन चट्टानों पर चढ़ने लगा और मेरे बार-बार बुलाने पर भी वापस नहीं आया। "कितना परेशान करता है यह कुत्ता।" मैंने जोर-से कहा और मैं भी उसके पीछे चट्टानों पर चढ़ने लगी—अपने मन को झूठ-मूठ समझाती हुई कि मैं वहां जाना नहीं चाहती हूं।

किनारे पर चलते-चलते हम नाव-घर के पास जा पहुंचे और मैं उसके दरवाजे पर गई। वह कसकर बन्द नहीं था, जैसा कि मैं पिछली बार बन्द कर गई थी। जैस्पर दरवाजे के नीचे को मुंह करके सूंघने और गुर्राने लगा। मैंने उसे मना किया, किन्तु वह अपनी नाक को दरवाजे की चौखट पर घुसाकर और भी जोर-जोर-से सूंघने लगा। मैंने धक्का देकर दरवाजा खोला। अन्दर पहले की तरह बिल्कुल अंधेरा था और सारी चीजें पहले ही जैसी अवस्था

में थीं। दूसरे कमरे का दरवाजा खुला हुआ था। जैस्पर तीर की तरह मेरी टांगों के बीच में से निकलकर उस कमरे में घुस गया और ज़ोर-ज़ोर-से भौंकने लगा। मुझे लगा जैसे वहां कोई है। मैं चिल्लाई, "अन्दर कोई है?" किन्तु कोई उत्तर नहीं मिला। मैंने अन्दर आकर देखा, कोने में कोई दुबका बैठा था और अपनेको पाल के पीछे छिपाने की चेष्टा कर रहा था। वह बेन था।

"क्या बात है? क्या तुम्हें कोई चीज चाहिए?" मैंने पूछा।

वह मेरी तरफ़ देखकर मूर्खों की तरह आंखें मिचमिचा रहा था और उसका मुंह थोड़ा-थोड़ा खुला हुआ था।

"मैं कुछ नहीं कह रहा हूं।" वह बोला।

"तुम्हें क्या चाहिए, बेन?" इस बार मैंने पहले से कुछ अधिक साहस के साथ पूछा।

उसने कुछ उत्तर नहीं दिया और अपनी मूर्खों-जैसी आंखों से वह मुझे घूरता रहा।

"तुम बाहर निकल आओ, श्री द विंतर नहीं चाहते कि यहां कोई आय-जाय।" मैंने कहा।

अपनी बांह से अपनी नाक पोंछता खीसें निपोरता हुआ वह भद्दे ढंग से उठ खड़ा हुआ। उसका एक हाथ कमर के पीछे था।

"तुम्हारे हाथ में क्या है, बेन?" मैंने पूछा।

एक बच्चे की तरह मेरी आज्ञा का पालन करते हुए उसने अपना हाथ दिखा दिया। उसमें मछली पकड़ने का कांटा था।

"मैंने कुछ नहीं लिया है।" वह फिर बोला।

"क्या यह कांटा यहां का है?"

'हां!"

"सुनो बेन, अगर तुम्हें इस कांटे की जरूरत है तो तुम इसे ले जाओ, लेकिन फिर ऐसा काम मत करना। दूसरों की चीज लेना बेईमानी है।"

वह कुछ बोला नहीं। मेरी ओर देखकर उसने आंखें मिचमिचाईं और अपना शरीर सिकोड़ते हुए वह चलने लगा।

"इधर आओ।" मैंने कहा और बड़े कमरे को तेजी से पारकर मैं बाहर धूप में निकल आई। मैंने दरवाजा बन्द कर दिया और बेन से कहा, "अब तुम घर लौट जाओ।"

उसने कांटे को इस तरह अपने सीने से चिपका रखा था, मानो वह उसकी जी-जान से प्यारी चीज़ हो।

"आप मुझे पागलखाने में तो नहीं भेजेंगी ?" वह बोला।

अब मैंने ध्यान से देखा कि वह डर के मारे कांप रहा था। उसके हाथ हिल रहे थे और वह मुझे एक गूंगे की तरह देख रहा था।

"नहीं, नहीं।" मैंने कोमल स्वर में कहा।

"मैंने कुछ नहीं किया है, मैंने कभी किसीसे कुछ नहीं कहा है। मैं पागलखाने जाना नहीं चाहता।" उसने कहा और उसके गंदे गाल पर एक आंसू टपक पड़ा।

"डरने की कोई बात नहीं, बेन ! तुम्हें कोई पागलखाने नहीं भेजेगा, लेकिन तुम फिर उस कमरे में मत जाना।"

मैं वहां से मुड़कर चल दी और वह मेरे पीछे-पीछे चलने लगा।

"इधर आइये, ज़रा इधर आइये, मैंने आपके लिए एक चीज रख छोड़ी है।" उसने मूर्खतापूर्वक मुस्कराते हुए एक ओर को अपनी अंगुली से संकेत किया और वह समुद्र-तट की ओर चल दिया। मैं उसके पीछे-पीछे हो ली। चट्टान के पास पहुंचकर उसने झुककर एक चपटा पत्थर उठाया, जिसके पीछे घोंघों का एक छोटा-सा ढेर लग रहा था। उसने उनमें से छांटकर एक उठाया और मुझे उपहार की तरह देते हुए कहा, "यह आपका है।"

"धन्यवाद, यह बहुत सुन्दर है।" मैंने कहा।

उसने फिर खीसें निपोरीं और वह अपना कान मलने लगा। अब उसका भय दूर हो गया था।

"आपकी आंखें फ़रिश्तों जैसी हैं।" वह बोला।

कुछ चकित होकर मैं फिर घोंघे की ओर देखने लगी। मेरी समझ में नहीं आया कि उसे क्या उत्तर दूं।

"आप ऐसी नहीं हैं, जैसी वह दूसरी थीं।" वह बोला।

"तुम्हारा किससे मतलब है ? दूसरी कौन ?" मैंने पूछा।

उसने अपना सिर हिलाया। उसकी आंखों में फिर चालाकी झलक आई थी। अपनी अंगुली अपनी नाक पर रखकर वह बोला, "वह लम्बी और काली थी, वह नागिन-जैसी लगती थी। उसे मैंने अपनी आंखों से देखा था। वह रात को यहां आती थी।"

उसने रुककर मुझे गौर से देखा। मैं कुछ नहीं बोली।

"एक बार मैंने उसे अन्दर झांककर देखा था और वह मेरी ओर घूमकर बोली थी, 'तू मुझे नहीं पहचानता न ? फिर कभी तुझे खिड़कियों में से झांकते देखा तो तुझे पागलखाने भेज दूंगी।" मैं चुप रहा था और अपनी टोपी छूकर उससे कहा था, 'मैं कुछ नहीं कहूंगा, मैडम !' अब वह चली गई है। चली गई है न ?" उसने उत्सुकतापूर्वक मुझसे पूछा।

"पता नहीं तुम्हारा किससे मतलब है ! तुम्हें कोई पागलखाने में नहीं भेजेगा।" यह कहकर मैं वहां से जैस्पर को साथ लेकर चल दी। बेचारा बेन ! वह स्वयं नहीं जानता था कि वह क्या कह रहा था। उसे भला पागलखाने भेजने की किसीको क्या जरूरत थी ? मैक्सिम और फ्रिथ दोनों ही उसे निर्दोष कहते थे। वह बिल्कुल बच्चों-जैसा था—आज खुश, कल नाखुश ! आज वह मुझसे प्रसन्न था, क्योंकि मैंने उसे कांटा लेने की आज्ञा दे दी थी। कल शायद वह मुझे पहचानेगा भी नहीं। उस मूर्ख की बातों पर ध्यान देना व्यर्थ था।

बेन चला गया था और वह जगह सुनसान हो गई थी। वृक्षों के बीच में से मुझे नाव-घर की चिमनी दिखाई दी। एकाएक मुझे कुछ भय-सा लगा और जी चाहा कि दौड़कर भाग निकलूं। जैस्पर की जंजीर पकड़कर मैं तेजी-से दौड़ी और मैंने पीछे घूमकर नहीं देखा। मैंने सोचा कि मैं अब फिर कभी यहां नहीं आऊंगी, चाहे दुनिया का सारा खजाना ही क्यों न मिल जाय। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे वहां कोई बैठा है और सबकुछ देख और सुन रहा है।

जैस्पर भी भौंकता हुआ मेरे पीछे-पीछे भागता रहा। मैं फिर उस जंगल में आ पहुंची, जहां अंधेरा था। मैंने सोचा—मैं मैक्सिम से कहकर यह झाड़-

झंकाड़ साफ करा दूंगी, जिससे यहां प्रकाश आ सके।

लॉन में पहुंचकर मैंने चैन की सांस ली। मैंने सोचा कि रॉबर्ट से कहकर चाय मैं अखरोट के वृक्ष के नीचे ही मंगा लूंगी। किन्तु घड़ी में देखा तो अभी चार नहीं बजे थे। मैंने इतनी जल्दी लौट आने की आशा नहीं की थी, और मैन्दरले में साढ़े चार बजे से पहले चाय पीने का नियम नहीं था। इसलिए मुझे रुकना पड़ा और मैं लॉन की ओर निकल गई। वहां घूमते हुए मेरी नज़र झाड़ियों और वृक्षों के बीच में एक चमकदार वस्तु पर पड़ी। ग़ौर से देखने पर मालूम हुआ कि वह किसी कार का रेडिएटर था। मैंने सोचा—कोई मिलने आया है क्या? लेकिन उसे तो कार मकान तक लानी चाहिए थी। इस तरह उसे दूर झाड़ियों में छिपाकर रखने का क्या मतलब? पास जाने पर मैंने देखा कि वह कार ही थी, एक लम्बी कार, जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था। मैं किसीके सामने उस तरह के कपड़े पहने नहीं जाना चाहती थी, इसलिए मैं लॉन में कुछ ठिठकी। इतने में मकान के ऊपरी हिस्से पर मेरी दृष्टि जो पड़ी तो मैंने देखा कि पश्चिमी भाग की एक खिड़की खुली हुई है और वहां एक पुरुष खड़ा है। जैसे ही उसने मुझे देखा वह झपटकर पीछे हट गया और उसके पीछे से एक बांह दिखाई दी, जिसने दरवाजा बन्द कर लिया। वह बांह निश्चय ही श्रीमती डैन्वर्स की थी। मैंने उसकी काली आस्तीन पहचान ली। क्षण भर के लिए मैंने सोचा कि आज कहीं बाहरवालों को भवन दिखाने का दिन तो नहीं है। पर नहीं, आज तो मंगलवार था और फिर पश्चिमी भाग तो किसी-को दिखाया भी नहीं जाता था। स्वयं मैंने ही उसे अभी तक नहीं देखा था। दिखाने का काम भी फ्रिथ करता था और वह बाहर गया था। शायद कमरों में कुछ मरम्मत हो रही हो। लेकिन अगर यह बात थी तो मुझे देखकर उस आदमी को छिपने की क्या आवश्यकता थी? और फिर, कार इस प्रकार क्यों छिपाकर खड़ी की गई थी? ख़ैर, इन सब बातों को देखना-भालना तो श्रीमती डैन्वर्स का काम है, मुझे इनसे क्या? यदि वह अपने मित्रों को पश्चिमी भाग में ले जाकर उठाती-बैठाती है तो उससे मेरा क्या सरोकार। किन्तु कैसी अजीब बात है कि यह सब एक ऐसे दिन हो रहा था जब मैक्सिम घर पर नहीं थे।

मैंने फूलवाले कमरे में जाकर अपने हाथ धोये और अपनी बुनाई लेने सुबहवाले कमरे में गई। मैंने देखा कि मेरा बैग वहां नहीं था जहां मैं उसे छोड़ गई थी। मैं उसे सोफे पर रख गई थी, लेकिन अब किसीने उसे हटाकर दूसरी तरफ़ रख दिया था। सोफ़े पर किसीके बैठने का निशान भी पड़ा हुआ था। मेज़ के पासवाली कुरसी भी हटी हुई थी। इससे साफ़ मालूम होता था कि मेरे और मैक्सिम के वहां न रहने पर श्रीमती डैन्वर्स अपने मिलनेवालों को सुबहवाले कमरे में बुलाकर बैठाती थी। मुझे यह अच्छा नहीं लगा। मैंने अपनी बुनाई उठाई और जैसे ही मैं ड्राइंग रूम में जाने को हुई, उसका पिछली ओर का दरवाज़ा खुला और किसीके बोलने की आवाज़ सुनाई दी। मैं झपटकर फिर से सुबहवाले कमरे में चली गई और दरवाजे के पीछे छिप गई। मैं अपनी सांस रोके चुपचाप खड़ी रही और जैस्पर पर नाक-भौंह सिकोड़ती रही, क्योंकि वह दरवाज़े पर खड़ा-खड़ा मेरी ओर मुंह खोले देख रहा था और अपनी दुम हिलाये चला जा रहा था।

तभी मुझे श्रीमती डैन्वर्स की आवाज़ सुनाई दी—"ऐसा लगता है कि वह लाइब्रेरी में चली गई हैं। किसी वजह से वह जल्दी लौट आई हैं। अगर वह लाइब्रेरी में चली गई हैं तो तुम चुपके-से हॉल में से निकलकर जा सकते हो। ज़रा ठहरो, मैं अभी देखकर आती हूं।"

मैं समझ गई कि वे मेरे बारे में ही बातचीत कर रहे थे। मुझे और भी अधिक बेचैनी मालूम दी। तभी जैस्पर एकाएक ड्राइंग रूम की ओर घूमा और दुम हिलाता हुआ उधर चला गया।

"हलो, जैस्पर," वह आदमी बोला और कुत्ता उत्तेजित होकर भौंकने लगा। मैंने घबराकर चारों ओर देखा कि कहीं कोई छिपने की जगह मिल जाय। लेकिन तभी मेरे बिल्कुल पास किसीकी पगध्वनि सुनाई दी और वह आदमी कमरे में आ गया। मैं दरवाज़े के पीछे थी, इसलिए एकदम तो वह मुझे नहीं देख सका, लेकिन जैस्पर मेरी ओर जो लपका तो वह आदमी भी सहसा उसी ओर को मुड़ा और मुझे देखकर आश्चर्यचकित रह गया। इतना आश्चर्य शायद ही मैंने कभी किसीके चेहरे पर देखा हो। ऐसा लगता था, मानो मैं चोर

हूं और वह उस घर का स्वामी ।

"मैं क्षमा चाहता हूं।" उसने मुझे ऊपर से नीचे तक देखकर कहा ।

वह एक बड़ा ही लम्ब-तड़ंग, भारी-भरकम आदमी था—देखने में अच्छा, लेकिन कुछ फूला हुआ और धूप लगने के कारण भूरा-भूरा-सा । उसकी गरम-गरम नीली आंखें वैसी ही थीं जैसी शराबियों और दुश्चरित्रों की हुआ करती हैं । उसके मुंह से शराब की बदबू आ रही थी । मुझे देखकर वह इस तरह मुस-कराया जैसे सभी औरतों को देखकर मुस्कराया करता होगा ।

"मुझे देखकर आप घबरा तो नहीं गईं ?" वह बोला ।

मूर्खों-सी दीखती हुई मैं दरवाजे के पीछे से निकलकर बोली, "नहीं तो, मुझे किसीकी आवाज सुनाई तो दी, पर मैं समझ नहीं पाई कि कौन आया है । इस समय मुझे किसीके आने की आशा नहीं थी ।"

"मैं बड़ा लज्जित हूं कि यहां इस तरह टपक पड़ा । आशा है, आप क्षमा करेंगी । "मैं ज़रा डैनी से मिलने चला आया था। उससे मेरी बड़ी पुरानी जान-पहचान है ।"

"कोई बात नहीं, सब ठीक है ।" मैंने कहा ।

"बेचारी डैनी को इस बात की बड़ी चिन्ता रहती है कि उसके कारण किसीको कष्ट न हो । वह आपको परेशान करना नहीं चाहती थी ।

"कोई बात नहीं है," मैंने कहा ।

मैं जैस्पर को देख रही थी, जो प्रसन्नता से उछल-उछलकर उस आदमी पर अपने पंजे रख रहा था ।

"यह मुझे भूला नहीं है, अब तो अच्छा-खासा बड़ा हो गया है । पिछली बार जब मैंने इसे देखा था तब यह बहुत छोटा था । मोटा बहुत हो गया है, इसे कसरत की जरूरत है ।"

"अभी मैं इसे बहुत दूर घुमाने ले गई थी ।"

"बड़ा अच्छा किया आपने ।" वह बोला और जैस्पर को थपथपाता हुआ मेरी ओर देख-देखकर मुस्कराता रहा । फिर उसने अपना सिगरेट का डिब्बा निकाला और मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा, "आप भी लीजिये ।"

"मैं सिगरेट नहीं पीती।" मैंने उत्तर दिया।

"सचमुच !" और यह कहकर वह सिगरेट जलाकर पीने लगा।

वैसे तो मैं इन बातों की चिन्ता नहीं करती, लेकिन किसी दूसरे के कमरे में बैठकर सिगरेट पीना मुझे एक बिल्कुल बेहूदी बात मालूम दी। निस्संदेह मेरे प्रति उसकी यह अशिष्टता थी।

"मैक्स कैसे हैं ?" वह बोला।

मुझे उसका इस तरह बोलना बड़ा अजीब-सा लगा। मैक्सिम को मैक्स कहना एक विचित्र-सी बात थी। कोई भी उन्हें इस नाम से नहीं पुकारता था।

"वह बिल्कुल अच्छे हैं, धन्यवाद ! वह लंदन गये हैं।"

"और दुलहन को अकेली छोड़ गये ? यह तो बुरी बात है। उन्हें यह डर नहीं लगा कि कहीं कोई आकर तुम्हें उठा न ले जाय ?"

वह मुंह फाड़कर हँसा। मुझे उसका हँसना अच्छा नहीं लगा। वह स्वयं भी मुझे पसंद नहीं आया। तभी श्रीमती डैन्वर्स कमरे में आ गई। उसने मेरी ओर देखा और मैं अन्दर-ही-अन्दर ठंडी पड़ गई।

"ओह डैनी ! तुम आ गईं ? तुम्हारी सारी सावधानी व्यर्थ गई। मकान की मालकिन तो दरवाज़े के पीछे छिपी हुई थीं।" यह कहकर वह फिर हँसा, किन्तु श्रीमती डैन्वर्स कुछ नहीं बोली। वह एकटक मुझे निहारती रही।

"क्या तुम इनसे मेरा परिचय नहीं कराओगी ?" उसने कहा, "कुछ भी हो, मुझे आकर दुलहन को नमस्कार तो करना ही चाहिए था।"

"यह श्री फ़ेवेल हैं, मैडम !" श्रीमती डैन्वर्स ने बड़ी अनिच्छा के साथ धीरे-से कहा। वह मुझे उसका परिचय देना नहीं चाहती थी।

"कहिये, आप कैसे हैं ?" मैं बोली और फिर अपनेको नम्र बनाने की चेष्टा करते हुए मैंने कहा, "चाय तो लेकर ही जायंगे ?"

वह बड़ा प्रसन्न हुआ और श्रीमती डैन्वर्स की ओर मुड़कर बोला, "कितना आकर्षक निमंत्रण है ! मुझे चाय पीने को ठहरने के लिए कहा गया है। डैनी, मेरा भी यही जी चाह रहा है।"

मैंने देखा कि श्रीमती डैन्वर्स ने उसे आंखों-ही-आंखों में कुछ चेतावनी-सी दी। इससे मुझे बड़ी बेचैनी हुई।

"अच्छा, अब मैं चलता हूं।" एकाएक उसने मुझे सम्बोधित करते हुए कहा। आइये, ज़रा मेरी कार को तो देख लीजिये।" वह अब भी बड़ी घनिष्ठता के साथ, बल्कि अपमानजनक ढंग से, बोल रहा था। मैं उसके साथ जाना नहीं चाहती थी, लेकिन मुझे कोई बहाना नहीं सूझा।

"कार कहां है ?" मैंने क्षीण स्वर में कहा।

"वहां सड़क के मोड़ पर। मैं उसे यहांतक इसलिए नहीं लाया कि कहीं आपको असुविधा न हो। मुझे खयाल था कि आप तीसरे पहर आराम करती होंगी।"

मैं कुछ नहीं बोली। उसका झूठ स्पष्ट था।

हम सब ड्राइंगरूम में होकर हॉल में पहुंचे। उसने अपने कंधे के पीछे से श्रीमती डैन्वर्स को आंख से कुछ इशारा किया, किन्तु उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह बड़ी कठोर और भयानक दिखाई पड़ रही थी।

"तुम भी मेरी कार देखने चल रही हो न ?" उसने श्रीमती डैन्वर्स की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखते हुए कहा। श्रीमती डैन्वर्स कुछ सकुचाई-सी और मेरी ओर अपनी आंखों की कोर से देखती रही; फिर बोली, "नहीं, इस समय मैं बाहर नहीं जाऊंगी। अच्छा नमस्ते, मिस्टर जैक।"

उस आदमी ने श्रीमती डैन्वर्स से बड़ी प्रसन्नता के साथ हाथ मिलाया और कहा, "अच्छा नमस्कार, डैनी ! अपना खयाल रखना। मैं कहां मिल सकता हूं, यह तो तुम जानती ही हो। तुमसे फिर से मिलकर मुझे बड़ा बल मिला है।"

वह आगे-आगे चल पड़ा। जैस्पर उसके पैरों के पास-पास नाचता हुआ चल रहा था और मैं धीमे-धीमे पीछे चल रही थी।

उसने ऊपर खिड़कियों की ओर देखते हुए कहा, "मैन्दरले बिल्कुल पहले ही जैसा दीखता है। इसमें कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ा है। शायद, डैनी ही इसकी देख-भाल करती है। कितनी अद्भुत स्त्री है वह !"

"हां, वह बहुत योग्य हैं।"

"आपको यहां कैसा लगता है ?"

"मुझे मैन्दरले बहुत पसन्द है।" मैंने ज़रा कठोरता से कहा। और बातें करते हुए हम उसकी हरी कार के पास आ पहुंचे।

"कहिये, कैसी लगी यह आपको ?"

"बहुत अच्छी।"

"चलिये फाटक तक सैर करा लाऊं।"

"नहीं, मैं नहीं चल सकूंगी; मैं बहुत थक गई हूं।"

"शायद आप सोच रही हैं कि मैन्दरले की स्वामिनी को मुझ जैसे आदमी के साथ जाना शोभा नहीं देगा।" यह कहकर वह कुछ अजीब ढंग से हँसा।

"नहीं, ऐसी बात नहीं है।" लज्जा से लाल होते हुए मैंने कहा।

वह अपनी अप्रिय नीली आंखों से मुझे ऊपर से नीचे तक देखता रहा।

"अच्छा जैस्पर, अब हमें दुलहन को इधर-उधर नहीं भटकाना चाहिए।" यह कहकर उसने अपनी टोपी उठाई और अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा, "अच्छा नमस्कार, आपसे मिलकर बड़ा आनन्द आया।"

"नमस्कार।" मैंने कहा।

"एक बात है। अगर आप मेरे यहां आने की चर्चा मैक्सिम से न करें तो अच्छा हो। पता नहीं क्यों, वह मुझे पसन्द नहीं करते। अगर आप कह देंगी तो हो सकता है डैनी बेकार ही परेशानी में फंस जाय।"

"नहीं, मैं नहीं कहूंगी।"

"आप बहुत ही अच्छी हैं। एक बार फिर सोच लीजिये, कुछ देर के लिए चल सकती हों तो चलिये मेरे साथ, घूम आइये।"

"नहीं, मैं नहीं जा सकूंगी। बुरा न मानियेगा।"

"अच्छा तो फिर नमस्कार। फिर किसी दिन आकर मिलूंगा। उतर जैस्पर, तूने तो मेरी पतलून खराब कर दी। मैक्स को इस तरह आपको अकेली छोड़कर लन्दन नहीं जाना चाहिए था।"

"मुझे इसकी परवा नहीं। अकेले रहना मुझे अच्छा लगता है।"

"सचमुच ? आपका विवाह हुए तो अभी तीन ही महीने बीते हैं !"

"हां, करीव-करीब ।"

"काश कि मेरी भी कोई तीन महीने की दुहलन घर पर मेरी प्रतीक्षा करती होती ! मैं तो बिल्कुल एकाकी और ववांरा हूं ।"

वह हँसा और उसने अपनी टोपी आंखों तक खींच ली ।

"अच्छा विदा।" उसने कहा और अपनी कार स्टार्ट कर वह चलता बना। जैस्पर अपने कान लटकाये वहां खड़ा देखता रहा ।

"चलो जैस्पर, इतने पागल मत बनो, मैंने कहा और मैं उसे लेकर घर लौट आई। श्रीमती डैन्वर्स जा चुकी थी । मैंने घंटी बजाई । पांच मिनट तक कोई नहीं आया, फिर एलाइस मुंह लटकाये आई । मैंने पूछा, "राबर्ट नहीं है क्या ? मैं चाहती थी कि मेरी चाय अखरोट के पेड़ के नीचे भेज दी जाय ।"'

इसपर उसने बताया कि रॉबर्ट को तो श्रीमती डैन्वर्स ने डाक लेकर भेजा है और वह अभी तक नहीं लौटा है । उन्होंने उससे कहा था कि मैडम आज देर से चाय पियेंगी । फ्रिथ भी बाहर गया हुआ है । आप कहें तो मैं चाय ले आऊं, वैसे अभी साढ़े चार नहीं बजे हैं ।

"ओह ! कोई बात नहीं। मैं रॉबर्ट के आने तक इन्तजार कर लूंगी।" मैंने कहा। मैंने सोचा कि मैक्सिम के न रहने पर लोगों का कुछ ढीला पड़ जाना स्वाभाविक ही है, लेकिन फ्रिथ और रॉबर्ट को एक ही समय घर से बाहर जाते हुए मैंने कभी नहीं देखा था । फ्रिथ की छुट्टी का दिन था और रॉबर्ट को श्रीमती डैन्वर्स ने डाकखाने भेज दिया था। जहांतक मेरा खयाल था, मेरे लिए समझ लिया गया था कि मैं बहुत दूर घूमने गई हूं । आखिर ऐसे ही अवसर को फ़ेवेल ने श्रीमती डैन्वर्स से मिलने आने के लिए क्यों चुना ? निश्चय ही इसमें कुछ भेद है, मैंने सोचा। और उसने मुझसे यह भी तो कहा था कि उसके आने की चर्चा मैं मैक्सिम से न करूं !

अब मुझे विश्वास हो गया, लेकिन मैं श्रीमती डैन्वर्स को झमेले में डालना नहीं चाहती थी। इससे भी बड़ी बात यह थी कि मैं मैक्सिम को परेशान करना नहीं चाहती थी ।

फिर भी मैं नहीं समझ पा रही थी कि यह आदमी फ़ेवेल कौन है, जो मैक्सिम को मैक्स कहता है। ऐसा उन्हें और कोई गैर नहीं कहता!

हॉल में खड़े-खड़े सहसा मुझे यह विचार आया कि कहीं श्रीमती डैन्वर्स बेईमान तो नहीं हैं। ऐसा तो नहीं है कि मैक्सिम के जाने के बाद वह कुछ गड़बड़ करती हो। संयोग की बात है कि मैं जल्दी चली आई और भेद का पता चला गया। यह भी हो सकता है कि उस आदमी ने सिर्फ मुझे बहकाने के लिए कह दिया हो कि वह मैक्सिम को जानता है। वे पश्चिमी भाग में क्या कर रहे थे? मुझे लॉन में देखकर उन्होंने दरवाजा वन्द क्यों कर लिया? सम्भव है, यह आदमी चोर हो और श्रीमती डैन्वर्स उसके साथ मिली हुई हो। पश्चिमी भाग में तो बड़ी कीमती चीजें हैं।

अचानक मेरे मन में एक भयानक-सी उत्सुकता हुई कि मैं सब कुछ अपनी आंखों से देख आऊं। चारों ओर सन्नाटा था, नौकर-चाकर अपने-अपने कमरों में थे। क्षणभर के लिए मैं झिझकी, लेकिन फिर फौरन ही ऊपर की ओर चल दी। मेरा दिल जोर-जोर से धड़क रहा था।

: १६ :

मैं उस गैलरी में जा पहुंची, जहां मैं पहले दिन गई थी। वहां एकदम सन्नाटा था और सीलन की बदबू आ रही थी। मैं निश्चित नहीं कर पा रही थी कि किस ओर जाऊं। तभी एकाएक मुझे उस रास्ते का ध्यान आया, जिधर से पिछली बार श्रीमती डैन्वर्स आई थीं। उधर जाकर मैंने कमरे का द्वार खोला। खिड़कियां बन्द होने के कारण कमरे में बिल्कुल अंधेरा था। मैंने बिजली का स्विच टटोलकर दबाया। वह एक छोटा-सा कमरा था, शायद वस्त्र पहनने का। यहां बड़ी-बड़ी आलमारियां दीवारों से सटाकर रखीं हुई थीं और उसमें एक दूसरा द्वार भी था, जो खुला हुआ था और जिससे होकर बड़े कमरे में जाया जाता था। मैं वहां पहुंची और बिजली जलाते ही मैं यह देखकर हक्की-बक्की रह गई कि कमरा इस प्रकार सजा हुआ था, जैसे प्रतिदिन प्रयोग में आता हो। मैंने सोचा था कि वहां सब जगह धूल जम रही होगी, लेकिन ऐसा नहीं

था। सब चीज़ें साफ़-सुथरी थीं। शृंगार-मेज़ पर इत्र, पाउडर, कंघे और ब्रुश रखे थे। बिस्तर ढंग-से लगा हुआ था। शृंगार-मेज पर, बिस्तर के पासवाली मेज़ पर और कार्निस पर फूल सजे हुए थे। एक कुर्सी पर ड्रेसिंग गाउन रखा था और उसके नीचे रात को पहननेवाले सलीपर रखे थे। एक क्षण के लिए मुझे ऐसा लगा कि मेरा दिमाग ख़राब हो गया है—अभी-अभी रेबेका यहां आकर शृंगार-मेज़ पर बैठेगी और अपने बालों में कंघी करती हुई शीशे में मेरी परछाई देखेगी और मैं उसकी परछाई देखूंगी। लेकिन वहां कोई भी नहीं आया और मैं चुपचाप जैसे किसीकी प्रतीक्षा-सी में खड़ी रही। अचानक दीवार पर लगी घड़ी की टिकटिक से मुझे वास्तविकता का भान हुआ। मैंने अपनी घड़ी की ओर देखा। दोनों एक ही समय बता रहीं थीं। चाय का समय होने-वाला था। मैं कमरे के बीच में गई। वहां ऐसा लगा जैसे वह प्रयोग में नहीं लाया जाता था। फूलों की महक भी वहां सीलभरी गंध को दूर नहीं कर सकी थीं। खिड़की, दरवाजे सब बन्द थे और उनपर परदे लटक रहे थे। रेबेका अब वापस नहीं आयेगी, मैंने सोचा। श्रीमती डैन्वर्स चाहे कमरे में फूल सजाये, चाहे बिस्तर पर चादर बिछाये, रेबेका को अब यह वापस नहीं बुला सकती। वह मर चुकी है। उसे मरे हुए एक वर्ष से भी अधिक हो चुका है और वह परिवार के दूसरे मृतकों के साथ कब्र में दबी पड़ी है।

मुझे समुद्र की आवाज साफ़-साफ़ सुनाई दे रही थी। मैंने खिड़की के पास जाकर दरवाजा खोल दिया। यह वही खिड़की थी, जहां आध घंटे पहले फ़ेवेल और श्रीमती डैन्वर्स खड़े थे। दिन के प्रकाश ने बिजली की रोशनी को पीला-सा कर दिया था और उस प्रकाश से कमरा सजीव हो उठा था। मैं वहां अपनेको एक बिना बुलाये हुए मेहमान की तरह अनुभव करने लगी। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं मैन्दरले की स्वामिनी के सोने के कमरे में चोरी से चली आई हूं।

इस कमरे में आने के बाद पहली बार मैंने यह अनुभव किया कि मेरे पांव कांप रहे हैं। मैं शृंगार-मेज के पासवाले स्टूल पर बैठ गई। मेरा दिल उस समय धड़क नहीं रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे उसमें किसीने सीसा भर

दिया हो। मैंने कमरे में चारों तरफ़ नजर दौड़ाई। श्रीमती डैन्वर्स ने ठीक ही कहा था—वह कमरा सचमुच मैन्दरले का सबसे सुन्दर कमरा था। उसकी एक-एक वस्तु मन को मोहनेवाली थी। मैंने ब्रुशों को छूकर देखा और सामने शीशे में मुझे अपना दुबला और सफ़ेद चेहरा दिखाई दिया। मैं धक-से रह गई। क्या मैं ऐसी ही हूं, मैंने सोचा। नहीं-नहीं, मेरे रंग में तो हमेशा थोड़ी-थोड़ी लाली रहती है।

मेरी परछाईं मुझे घूर-घूरकर देख रही थी।

मैं स्टूल पर से उठकर कुरसी के पास आ गई और मैंने ड्रेसिंग गाउन तथा सलीपर को छूकर देखा। बिस्तर पर रखी रज़ाई भी मैंने छूकर देखी। नाइटड्रेस के खोल पर एक मोनोग्राम बना हुआ था और उनमें आर. दि. वि. शब्द फ़ीते से कढ़े हुए थे। मैंने ड्रेस को खोल से बाहर निकाला और अपने गालों पर लगाया। वह बहुत ही महीन था और एकदम ठंडा। भीनी-भीनी सुगंध उससे अब भी आ रही थी। तह करके मैंने उसे फिर उसी खोल में रख दिया।

मैं यह सब कर ही रही थी कि अचानक मेरे पीछे किसीकी पगध्वनि सुनाई दी। मैंने मुड़कर देखा तो वहां श्रीमती डैन्वर्स खड़ी थी। उसके मुख की वह मुद्रा मैं कभी नहीं भूल सकती। उसपर विजय, हर्ष और उत्तेजना का एक बड़ा ही अस्वस्थ भाव था। मैं भय से कांप उठी।

"क्या कोई खास बात है, मैडम?" उसने पूछा।

मैंने मुस्कराने की चेष्टा की। लेकिन मैं मुस्करा न सकी। मैंने बोलने की चेष्टा की, लेकिन बोल भी न सकी।

"क्या आपकी तबीयत कुछ ख़राब है?" उसने बहुत कोमल स्वर में मेरे पास आकर पूछा, मैं उससे दूर हट गई। मुझे लगा कि अगर वह मेरे और निकट आई तो मैं अचेत होकर गिर पड़ूंगी। उसका सांस मेरे मुख पर लग रहा था।

"मैं ठीक हूं, श्रीमती डैन्वर्स," मैंने एक क्षण बाद कहा, "मुझे आशा नहीं थी कि तुम मुझे यहां मिल जाओगी। बात यह है कि जब मैं लॉन में

खड़ी हुई इधर की ओर देख रही थी तब मुझे ऐसा लगा जैसे यहां की खिड़की का एक दरवाजा ठीक से बन्द नहीं है। मैंने सोचा कि चलूं बन्द कर आऊं।"

"मैं बन्द किये देती हूं।" उसने कहा और आगे बढ़कर खिड़की बन्द कर दी। कमरे में फिर अंधेरा छा गया और वह मुझे भयावना-सा लगने लगा।

श्रीमती डैन्वर्स वापस आकर मेरे पास खड़ी हो गई और मुस्कराकर बोली, "आपने यह कैसे कहा कि खिड़की खुल रही थी? कमरे में से जाने से पहले मैं इसे बन्द कर गई थी। उसे आपने खोला है। क्यों खोला है न? आप कमरा देखना चाहती थीं, लेकिन आपने मुझसे तो पहले कभी नहीं कहा। मैं तो उसे किसी भी दिन आपको दिखाने के लिए तैयार थी। आप मुझसे कहभर देतीं।"

मैंने चाहा कि वहां से भाग जाऊं, लेकिन मैं हिल भी नहीं सकी, बस उसे देखती रही।

"अब जबकि आप यहां आ ही गई हैं तब आपको सब चीजें दिखा दूं।" वह बोली। उस समय उसकी आवाज शहद जैसी मीठी थी, लेकिन भयानक और कृत्रिम।

"मैं जानती हूं कि आप बहुत दिनों से यह सब देखना चाह रही थीं, लेकिन आपको यह कहते हुए लज्जा आ रही थी।" उसने फिर कहा, "यह बहुत ही सुन्दर कमरा है। क्यों है न? इससे सुन्दर कमरा आपने कभी नहीं देखा होगा।"

मेरा हाथ पकड़कर वह मुझे बिस्तर के पास ले गई। मैं मना नहीं कर सकी।

"यह उनका बिस्तर था," श्रीमती डैन्वर्स ने कहा, 'कहिये कितना सुन्दर है यह! मैं सदा इसपर सुनहरी चादर बिछाये रखती हूं, क्योंकि यह उन्हें बहुत पसन्द थी। इस खोल में उनका नाइट ड्रेस है। आपने इसे छुआ है न? अपने मरने से पहले उन्होंने इसे अन्तिम बार पहना था। क्या आप इसे फिर छूना चाहेंगी? इसे छूकर देखिये, पकड़कर देखिये। यह कितना मुलायम है। कितना हल्का है! मैंने उस दिन के बाद से इसे धोया नहीं है। मैं ये सारी चीजें उसी तरह रखती हूं, जिस तरह मैंने उस रात रखी थीं जब वह बाहर

जाकर फिर नहीं लौटी थीं, जब वह डूब गईं थीं।...और यह देखिये, यह उनका ड्रेसिंग गाउन है। वह आपसे बहुत लम्बी थीं। उनका शरीर बहुत ही सुन्दर था। ये उनके सलीपर हैं। उनके पांव उनके शरीर को देखते हुए बहुत छोटे थे। इन सलीपरों में हाथ डालकर देखिये, कितने छोटे और कितने तंग हैं ये!"

और यह कहते हुए उसने वे सलीपर जबरदस्ती मेरे हाथों में पकड़ा दिये। वह बराबर मुस्कराती रही और मेरी आंखों की ओर देखती रही। फिर बोली, "आपको आश्चर्य हो रहा होगा कि जब वह इतनी लम्बी थीं तब इतने छोटे-छोटे सलीपर उनके पैरों में कैसे आते होंगे। लेकिन शायद आपको मालूम नहीं कि वह बहुत ही दुबली-पतली थीं—ऐसी कि बिस्तर पर लेटी हुई दिखाई भी नहीं देती थीं।"

उसने सलीपरों को फिर से फर्श पर रख दिया और ड्रेसिंग गाउन को कुरसी पर लटका दिया। फिर वह मुझे शृंगार-मेज़ के पास ले जाकर बोली, "आपने उनके ब्रुश तो देखे ही हैं। ये बिल्कुल वैसे ही रखे हैं, जैसे उन्होंने अन्तिम बार इस्तेमाल करके छोड़े थे। ये न तो धोये गए हैं और न इन्हें फिर-से किसीने छुआ है। हर रोज़ शाम को मैं उस स्टूल के पास खड़ी होकर उनके बालों को लगातार बीस मिनट तक इस ब्रुश से संवारा करती थी। अपने बालों को छोटा तो उन्होंने पिछले दो-तीन साल हुए तभी कराया था। जब वह पहले-पहल दुलहन बनकर आई थीं तब उनके बाल कमर तक लटकते थे और श्री द वितर उन्हें अपने हाथों से संवारा करते थे। 'ज़ोर से, और ज़ोर से, मैक्स,' वह कहा करती थीं और श्री द वितर की ओर देखकर हँस देती थीं। श्री द वितर भी मंत्र-मुग्ध की तरह उनका कहना मानते रहते थे। उन दिनों वह बड़े प्रसन्न रहते थे, दिन-रात हँसते-खेलते रहते थे।"

कहते-कहते श्रीमती डैन्वर्स रुकी, किन्तु उसका हाथ अब भी मेरी बांह पर था।

फिर वह मुझे छोटे कमरे में ले गई और आलमारी खोलकर उसने रेबेका के कपड़े दिखाने शुरू किये। इस सफ़ेद मख़मल की चादर को देखिये।

श्री द विंतर ने इसे बड़े दिन पर उपहार में दिया था। वह ज़्यादातर उन्हें सफ़ेद कपड़ों में ही देखना पसन्द करते थे, लेकिन वह सभी रंगों के कपड़े पहना करती थीं, उनपर सभी रंग फबते थे। मख़मल पहनकर तो वह परी-जैसी लगने लगती थीं। इसे अपने गाल पर लगाकर देखिये, कितनी मुलायम है। इसमें से अब भी सुगन्ध आ रही है।"

बातों-ही-बातों में श्रीमती डैन्वर्स ने बताया, "मरते समय वह पतलून पहने हुए थीं, किन्तु कई सप्ताह बाद जब उनकी लाश मिली तब उनके शरीर पर कोई कपड़ा नहीं बचा था। चट्टानों ने उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये थे। उनका सुन्दर चेहरा पहचाना तक नहीं जाता था। दोनों बाहें कटकर अलग हो गई थीं। श्री द विंतर उन्हें पहचानने गये थे। वह बिल्कुल अकेले गये थे, अपने साथ किसीको भी नहीं ले गये थे। उस समय वह बहुत बीमार थे, किन्तु वह रुके नहीं। क्राउले तक उन्हें नहीं रोक सके।"

यह कहते-कहते उसकी अंगुलियां मेरी बांह पर कसने लगीं। उसकी आंखें लगातार मेरे चेहरे पर गढ़ी हुई थीं।

क्षण-भर को रुककर वह फिर बोली, "उस दुर्घटना के लिए मैं ही अपने को दोषी मानती हूं। श्रीमती द विंतर लन्दन गई हुई थीं और उनके जल्दी लौटने की आशा नहीं थी। इसलिए मैं भी गांव चली गई थी और वहां से लौटने में मुझे देर हो गई। जब साढ़े नौ बजे के क़रीब मैं लौटी तब मुझे पता चला कि वह सात बजे से कुछ पहले ही लौट आई थीं और भोजन करके फिर समुद्र के किनारे चली गईं थीं। उस समय दक्षिण-पश्चिमी हवा चल रही थी, इसलिए मुझे कुछ परेशानी-सी हुई। मैं होती तो उन्हें कभी नहीं जाने देती और मैं जानती हूं कि वह मेरी बात मान जातीं। वह सदा मेरी बात मानती थीं।

उसकी अंगुलियों के दबाव से मेरी बांह दुखने लगी थी।

वह फिर बोली, "श्री द विन्तर उस दिन क्राउले के घर भोजन करने गये थे और शायद ग्यारह बजे के बाद लौटे थे। आधी रात से पहले ही हवा तेज हो गई थी। तबतक श्रीमती द विन्तर वापस नहीं आई थीं। मैं नीचे

गई, किन्तु लाइब्रेरी में प्रकाश नहीं था। मैं फिर ऊपर आई और कपड़े पहननेवाले कमरे के पास पहुंचकर मैंने दरवाज़ा खटखटाया। श्री द विन्तर ने फौरन उत्तर दिया, 'कौन है? क्या चाहिए?' मैंने उनसे कहा कि श्रीमती द विंतर अभी नहीं लौटी हैं और मुझे चिन्ता हो रही है। वह शायद एक मिनट रुके और ड्रेसिंग गाउन पहने हुए बाहर आकर बोले, 'शायद वह नाव-घर में होगी।' वह थके हुए दिखाई दे रहे थे। मैंने कहा, 'आप सो जाइये। अब इतनी रात गये वह शायद नहीं आयंगी।' इस तरह कई बार पहले भी वह वहां रात-रातभर रुक गई थीं। उन्हें हर तरह के मौसम में नाव चलाने की आदत थी। लेकिन हो सकता है कि वह नाव चलाने न गई हों और लंदन से आने के बाद केवल मन बहलाने के लिए नाव-घर में चली गई हों। श्री द विन्तर को नमस्कार करके मैं अपने कमरे में आ गई और सोचती रही कि वह क्या कर रही होंगी।"

बोलते-बोलते वह फिर रुकी। मैं अधिक सुनना नहीं चाहती थी। मैं उस कमरे से, उसके पास से चली जाना चाहती थी। पर उसका बोलना बन्द नहीं हुआ। उसने कहा, "साढ़े पांच बजे तक मैं बिस्तर पर बैठी रही, लेकिन उसके बाद मेरे लिए रुकना असम्भव हो गया। अपना कोट पहनकर मैं जंगल में से होती हुई किनारे की ओर चल दी। कुछ-कुछ प्रकाश होने लगा था, किन्तु झीनी-झीनी वर्षा हो रही थी और हवा रुकी हुई थी। जब मैं किनारे पर पहुंची तब मैंने देखा कि लंगरवाला पीपा तो पानी में तैर रहा था, लेकिन नाव नहीं थी।"

एकाएक श्रीमती डैन्वर्स की अंगुलियां ढीली पड़ गईं और उसने अपना हाथ मेरी बांह पर से हटा लिया। अब उसकी आवाज़ भावना-शून्य और सदा की तरह कठोर तथा नीरस हो गई थी।

वह मेरे पास से हट गई और अलमारियां बन्द करने लगी। फिर तस्वीरें सीधी करते हुए बोली, "अब आप समझ गई होंगी कि श्री द विन्तर इन कमरों में क्यों नहीं रहते। जिस रात को वह डूबी थीं, उसी रात से श्री द विन्तर ने इन कमरों में आना बन्द कर दिया। उन्होंने अपनी चीजें यहां से हटवा लीं

और हमने गैलरी की दूसरी ओर उनके लिए एक कमरा ठीक कर दिया। किन्तु वहां भी वह अधिक नहीं सो पाते थे। वह आराम-कुरसी पर बैठे रहते थे और सुबह चारों ओर सिगरेट की राख पड़ी मिलती थी। दिन के समय भी वह लाइब्रेरी में एक सिरे से दूसरे सिरे तक बेचैनी के साथ चक्कर लगाते रहते थे।"

श्रीमती डैन्वर्स ने दोनों कमरों के बीच का द्वार धीरे-से बन्द कर दिया और बिजली बुझा दी। अब न पलंग दिखाई दे रहा था, न तकिए पर रखा हुआ नाइटड्रेस, न शृंगार-मेज़ और न वे सलीपर।

कमरे को पारकर श्रीमती डैन्वर्स दरवाजे पर खड़ी हो गई और मेरे आने की इन्तजार करने लगी। फिर बोली, "मैं रोज इन कमरों को अपने हाथों से झाड़ती-बुहारती हूं। अगर आप फिर आना चाहें तो मुझे टेलीफोन पर बता दें। मैं यहां नौकरानियों को नहीं आने देती। यहां मेरे सिवा और कोई नहीं आता। श्री द विन्तर के बाहर चले जाने पर जब कभी आपको अकेलापन लगा करे तब यहां आकर बैठ जाया कीजिये। ये बहुत ही सुन्दर कमरे हैं और इन्हें मैं इस तरह रखती हूं, जैसे श्रीमती द विन्तर अभी कहीं बाहर गई हैं और शाम तक वापस आ जायंगी।"

मैंने जबरदस्ती मुस्कराने की चेष्टा की। मैं बोल नहीं सकी, क्योंकि मेरा हलक सूख रहा था।

"इसी कमरे में नहीं, घर के सभी कमरों में, सुबहवाले कमरे में, हॉल में यहांतक कि फूलवाले कमरे तक में मुझे हर समय यही लगता है कि वह अब भी हैं, मरी नहीं हैं। आपको भी ऐसे ही लगता है न ?" श्रीमती डैन्वर्स ने पूछा और कुछ अजीब ढंग से मुझे घूरकर देखा। फिर कुछ फुसफुसाते हुए कहा—

"कभी-कभी तो गैलरी में चलते-चलते मुझे ऐसा लगता है जैसे वह मेरे पीछे-पीछे आ रही हैं। उनके पैरों की तेज़ और कोमल चाप मैं कहीं भी पहचान सकती हूं। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है, जैसे वह खाने के लिए आ रही हैं और सीढ़ियों पर उनके कपड़ों की सरसराहट सुनाई दे रही है। क्या ख़याल

है आपका, क्या वह हमको इस तरह बातें करते हुए देख सकती है ? क्या मरे हुए व्यक्ति कभी यहां आकर जीवित मनुष्यों को देख सकते हैं ?"

"मुझे पता नहीं, कुछ पता नहीं।" मैंने थूक लीलते हुए कहा।

"कभी-कभी मैं सोचती हूं," वह फिर फुसफुसाई, "कभी-कभी मैं सोचती हूं कि कहीं ऐसा तो नहीं कि वह मैन्दरले आकर आपको और श्री द विन्तर को साथ-साथ रहते देखती हों।"

हम द्वार पर खड़े थे और एक-दूसरे की ओर घूर रहे थे। ओह ! उसकी आंखों में कितनी घृणा भरी हुई थी।

गैलरी का दरवाज़ा खोलते हुए वह बोली, "राबर्ट आ गया है और उससे मैंने अखरोट के वृक्ष के नीचे चाय लगाने के लिए कह दिया है।"

वह मेरे लिए रास्ता छोड़कर एक ओर हट गई और मैं बिना सोचे-समझे लड़खड़ाती हुई-सी गैलरी की ओर चल दी। मैं उससे बोली नहीं, सीढ़ी उतरकर अपने कमरे में पहुंची। मैंने अन्दर से दरवाजे का ताला बन्द कर दिया और चाबी अपनी जेब में रख ली।

फिर आंखें बन्द करके मैं अपने बिस्तर पर पड़ गई—थकी, अस्वस्थ, बिल्कुल निर्जीव-सी।

: १७ :

अगले दिन सुबह मैक्सिम का टेलीफ़ोन आया कि वह शाम को सात बजे के करीब आयंगे। मैं सोच नहीं पा रही थी कि सारा दिन मैं कैसे बिताऊंगी। रातभर मुझे ठीक से नींद नहीं आई थी—शायद इसलिए कि मैं अकेली थी। सपने में मुझे मैक्सिम दिखाई दिये थे, जैसे हम जंगल में जा रहे हैं और वह मुझसे आगे हैं। न मैं उनतक पहुंच पा रही हूं और न उनका मुख ही देख पा रही हूं। बस उनका शरीर भर ही दीख रहा है और वह बराबर मुझसे दूर-दूर चल रहे हैं। निश्चय ही मैं सपने में रोई होऊंगी, क्योंकि सुबह मेरा तकिया भीगा हुआ था। जब शीशे में मैंने अपना मुंह देखा तब मुझे अपनी आंखें भारी मालूम दीं और चेहरा भी बड़ा अनाकर्षक लगा। गालों पर रंग लाने के लिए

मैंने थोड़ा-सा रूज़ मला, लेकिन मैं उसे ठीक से लगाना नहीं जानती थी, इस-लिए मेरा मुंह और भी भद्दा लगने लगा और जब मैं नाश्ते के लिए हॉल में से गुज़री तब मैंने देखा कि राबर्ट मेरी तरफ़ घूरकर देख रहा है।

दस बजे के करीब जब मैं गुलाब के बाग में चिड़ियों को चुग्गा डाल रही थी तब टेलीफ़ोन की घंटी फिर बजी। इस बार बीट्रिस ने टेलीफ़ोन किया था। वह मैक्सिम की दादी से मिलने जा रही थीं और उन्होंने पूछा कि क्या मैं भी वहां जाना पसंद करूंगी। मैंने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और साढ़े तीन बजे आने को कहकर बीट्रिस ने टेलीफ़ोन बन्द कर दिया।

मैं बाग में वापस चली गई। शाम को सात बजे तक का समय काटना मुश्किल हो रहा था। मैं कल की बातों की याद करना नहीं चाहती थी, मैं यह भी भुला देना चाहती थी कि श्रीमती डैन्वर्स घर में है और मैन्दरले की अनगिनत खिड़कियों में से किसी एक में से मुझे ताक-झांक रही है। इस-लिए मैक्सिम की दादी के पास जाने का प्रस्ताव मुझे बड़ा अच्छा लगा।

ठीक साढ़े तीन बजे मैंने बीट्रिस की कार की आवाज़ सुनी। मैं जाने के लिए बिल्कुल तैयार बैठी थी। गाड़ी के रुकते ही मैं दौड़कर बीट्रिस के पास गई और उन्होंने कार से बाहर आकर बड़े ज़ोर से मेरा चुम्बन लिया। फिर मुझे ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा, "तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं दिखाई देता। चेहरा बहुत दुबला हो गया है और रंग सफेद पड़ गया है। क्या बात है ?"

"कुछ भी नहीं; मेरे चेहरे पर लाली थी ही कब ?"

"हिश ! जब मैंने तुम्हें पहले देखा था तबसे तो तुम बहुत बदल गई हो।"

"शायद इटली की धूप का प्रभाव दूर हो गया है।" मैंने कार में घुसते हुए कहा।

"तुम भी मैक्सिम जैसी ही हो, अपने स्वास्थ्य के बारे में कुछ आलोचना नहीं सुन सकतीं। दरवाजे को ज़रा जोर-से खींचो, वरना बन्द नहीं होगा।"

कार चल दी। वह फिर बोली, "अच्छा एक बात बताओ। मां बनने

की तैयारी कर रही हो क्या ?''

'नहीं तो ।''

''सुबह को जी-वी तो नहीं मिचलाता ?''

''नहीं ।''

''खैर, ऐसा होना कोई ज़रूरी नहीं है। रोजर की बार तो मुझे नौ महीने तक कोई भी ख़ास बात मालूम नहीं दी थी। जिस दिन वह हुआ था, उस दिन तक मैं गोल्फ़ खेली थी। और यह तो प्राकृतिक बात है, इसमें शर्म नहीं करनी चाहिए। अगर कोई बात हो तो मुझे बता दो।''

''सचमुच बीट्रिस, कोई बात नहीं है ।''

''मैं तो भगवान से मनाती हूं कि जल्दी ही तुम्हारे एक बेटा हो और वह इस जायदाद का वारिस बने। मैक्सिम के लिए तो बहुत ही अच्छा होगा। तुम लोग कोई रोक-राक का काम तो नहीं करते ?''

''नहीं तो ।''

''मेरी बात का बुरा न मानना। आजकल की लड़कियां सबकुछ कर सकती हैं, क्योंकि मां बनने से उनकी मौज-बहार में बाधा पड़ती है। खैर, तुम्हारी तो और बात है। चित्रकारी में तो इससे कोई बाधा पड़ती नहीं। आजकल तुम्हारी चित्रकारी कैसी चल रही है ?''

''मैं कुछ अधिक नहीं कर पा रही हूं ।''

''अच्छा, तुम्हें वे किताबें कैसी लगीं, जो मैंने भेजी थीं ?''

''वह तो बहुत ही सुन्दर उपहार था। मुझे बड़ा अच्छा लगा ।''

यह सुनकर बीट्रिस बहुत प्रसन्न हुईं। फिर वह गाइल्स, रोजर और अपने पड़ोसियों के बारे में बात-चीत करती रही। मैं उनकी बातें सुनती रही और यह सोचती रही कि श्रीमती डैन्वर्स और उस आदमी फ़ेवेल के बारे में मैं इनसे कुछ कहूं या नहीं। मुझे यह डर लग रहा था कि कहीं वह मैक्सिम से कुछ कह न बैठें, लेकिन मुझसे रहा न गया और मैं पूछ ही बैठी, ''आपने कभी जैक फ़ेवेल नाम के किसी आदमी के बारे में भी कुछ सुना है क्या ?''

''जैक फ़ेवेल !'' बीट्रिस ने कुछ सोचते हुए कहा, ''हां, इस नाम से मैं

परिचित तो हूं। ज़रा ठहरो ! जैक फ़ेवेल ! हां, हां, उछल-कूद करनेवाला वह अजीब-सा आदमी। बहुत ज़माना हुआ, तब मैंने उसे एक बार देखा था।"

"वह कल श्रीमती डैन्वर्स से मिलने मैन्दरले आया था।"

"सचमुच ? अच्छा, शायद...।"

"क्यों, क्या बात है ?"

"वह शायद रेबेका का कोई भाई है।"

मुझे यह सुनकर बड़ा ताज्जुब हुआ। मैं सोच भी नहीं सकती थी कि जैक फ़ेवेल जैसा आदमी रेबेका का भाई हो सकता है। बोली, "ओह, मुझे पता नहीं था।"

"वह शायद मैन्डरले में बहुत आया-जाया करता था, लेकिन...लेकिन मैं कुछ ठीक से बता नहीं सकती। मैं मैन्दरले बहुत कम जाती थी।"

उनके बोलने के ढंग से मैं समझ गई कि इस विषय पर वह और किसी तरह की बातचीत करना नहीं चाहतीं, इसलिए मैं समझ नहीं पा रही थी कि उनसे यह कहना ठीक होगा या नहीं कि फ़ेवेल मुझसे अपने आने की बात मैक्सिम से न कहने के लिए कह गया है। शायद इससे कोई जटिलता पैदा जाय, यह सोचकर मैं चुप रही। और फिर, अब हम मैक्सिम की दादी के घर पहुंच भी गये थे। सामने ही दो सफ़ेद फाटक और उनके बीच चिकनी पक्की सड़क दिखाई दे रही थी।

"देखो, दादी करीब-करीब अंधी हैं और इन दिनों वह अधिक प्रसन्न भी नहीं रहती हैं। जरा इस बात का खयाल रखना।" बीट्रिस ने मुझे आगाह करते हुए कहा।

एक चुस्त नौकरानी ने आकर दरवाजा खोला। उससे पूछने पर पता लगा कि दादी का स्वास्थ्य ऐसा ही चल रहा है, किसी दिन ठीक तो किसी दिन गड़बड़।

दादी एक बरामदे में आरामकुरसी पर तकियों और दुशालों में दबी हुई बैठी थीं। मैंने देखा कि उनका चेहरा मैक्सिम से बहुत मिलता-जुलता था। मैक्सिम भी इतने बूढ़े और अंधे होने पर ऐसे ही लगेंगे।

हम दादी के पास पहुंचे। उनके पास पहुंचकर बीट्रिस ने ऊंची आवाज़ में कहा, "दादी, हम आ गये।"

"तू बड़ी अच्छी है, बी" दादी ने हमारी ओर देखते हुए कहा, "यहां तो बिल्कुल सुनसान रहती है।"

बीट्रिस ने झुककर उनका चुम्बन लिया और कहा, "मैं मैक्सिम की बहू को भी तुमसे मिलाने के लिए लाई हूं। वह बहुत पहले ही तुमसे आकर मिलना चाहती थी, लेकिन वह और मैक्सिम बहुत व्यस्त थे।"

यह कहते-कहते बीट्रिस ने मेरी कमर को टहोका और चुपके-से कहा, "उनका चुम्बन लो।" मैंने झट झुककर दादी का गाल चूम लिया।

दादी ने अंगुलियों से मेरा मुंह छूकर कहा, "तुम बहुत अच्छी हो! तुम आईं, यह तुमने बहुत अच्छा किया। तुम्हें देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। तुम्हें मैक्सिम को भी साथ लाना चाहिए था।"

"मैक्सिम लंदन गये है, आज रात को लौटेंगे।"

"अगली बार उसे लाना। इस कुरसी पर बैठ आओ, जिससे कि मैं तुम्हें देख सकूं। बी तुम दूसरी तरफ आ जाओ। रोजर कैसा है? बड़ा शैतान लड़का है! वह मुझसे मिलने नहीं आता।"

बीट्रिस और दादी अपने परिवार और पड़ोसियों की बातचीत करने लगीं। नर्स अपनी बुनाई लाकर मेरे पास आ बैठी और मुझसे बातें करने लगी। बीच-बीच में मैं बीट्रिस और दादी की बातें भी सुनती रही।

थोड़ी देर बाद दादी अचानक चिल्ला उठीं, "मुझे चाय चाहिए, क्या अभी साढ़े चार नहीं बजे हैं? नोरा चाय क्यों नहीं लाई।"

"इतना सारा खाना खाने के बाद क्या आपको फिर भूख लग आई?" नर्स ने उठकर मुस्कराते हुए कहा। उसने उनके तकिए और शाल ठीक किये।

इतने में नौकरानी एक मेज और सफ़ेद मेजपोश ले आई।

"तुमने कितनी देर कर दी, नोरा।" दादी बड़बड़ाई।

"अभी-अभी तो साढ़े चार बजे हैं, मैडम।" नोरा ने मुस्कराते हुए कहा।

हम अपनी कुरसियां मेज के पास खींच लाये और सब चाय पीने लगे।

बीट्रिस ने बातों-वातों में दादी से कहा, "इन लोगों की सुहागरात के लिए इटली का मौसम बहुत अच्छा था। मैक्सिम का तो धूप के कारण रंग ही बदल गया था।"

"आज मैक्सिम क्यों नहीं आया ?" दादी ने पूछा।

"मैंने तुम्हें बताया था न कि मैक्सिम को आज किसी भोज में लंदन जाना पड़ा है। गाइल्स भी गये हैं।" बीट्रिस ने कुछ अधीरता दिखलाते हुए कहा।

"अच्छा, तब तुम यह क्यों कह रही थीं कि मैक्सिम इटली में था ?"

"दादी, अप्रैल के महीने में इटली में था। अब तो वह मैन्दरले वापस आ गया है।"

"श्री द विन्तर और श्रीमती द विन्तर दोनों ही मैन्दरले में हैं।" नर्स ने दुहराते हुए कहा।

"इन दिनों मैन्दरले बड़ा ही सुन्दर लग रहा है। गुलाब खूब फूल रहा है। आपके लिए भी कुछ फूल ले आती तो अच्छा होता।" मैंने दादी के पास खिसककर कहा।

"हां, मुझे गुलाब के फूल पसंद हैं, "उन्होंने कहा और फिर अपनी धुंधली नीली आंखों से मुझे देखते हुए वह बोलीं, "क्या तुम भी मैन्दरले में ही ठहरी हो ?"

मैंने थूक सटका और क्षणभर के लिए सन्नाटा छाया रहा। फिर बीट्रिस ने ऊंची और अधीर आवाज़ में कहा, "दादी, तुम अच्छी तरह जानती हो कि अब यह वहीं रहती है। इसकी और मैक्सिम की शादी हो गई है।"

नर्स ने चाय का प्याला नीचे रखकर दादी की ओर देखा। वह तकियों के सहारे लेट-सी गई थीं और उन्होंने शाल उठाकर ओढ़ लिया था। उनका मुंह कंप-कंपा रहा था।

"तुम सब इतनी बातें करते हो कि मैं कुछ भी नहीं समझ पाती।" वह बोलीं।" फिर उन्होंने मुझे ग़ौर-से देखा। उनके माथे पर बल पड़ गये और उनके होंठ हिलने लगे।

"तुम कौन हो ? मैंने तुम्हें पहले कभी नहीं देखा। मैं तुम्हें नहीं पहचानती।

मैन्दरले में मैंने तुम्हें कभी नहीं देखा। बी यह लड़की कौन है ? मैक्सिम रेबेका को क्यों नहीं लाया ? मुझे रेबेका बहुत अच्छी लगती है। मेरी प्यारी रेबेका कहां है ?"

थोड़ी देर तक सब चुप रहे। वातावरण क्षुब्ध हो उठा था। मेरे गाल लाल हो गये थे। नर्स जल्दी से उठकर दादी के पास चली गई।

"मुझे रेबेका चाहिए, तुमने रेबेका का क्या कर दिया ?" दादी ने फिर दुहराया। हड़बड़ाकर बीट्रिस भी मेज पर से उठ बैठीं। उनका चेहरा भी लाल हो रहा था और उनकी त्यौरियां चढ़ी हुई थीं।

"श्रीमती लेसी, अब आप चली जायं तो अच्छा है। वह कुछ थक गई हैं, वह रह-रहकर इसी तरह उत्तेजित हो उठती हैं और फिर कई घंटे तक ऐसी ही रहती हैं। मुझे बड़ा अफ़सोस है कि यह बात आज ही हुई। मुझे उम्मीद है, श्रीमती द विन्तर, आप सब बातें समझ गई होंगी?" नर्स ने मेरी ओर घूमकर क्षमा मांगते हुए कहा।

"हां-हां, अब हमें चलना चाहिए।" मैंने जल्दी से उत्तर दिया।

मैंने और बीट्रिस ने अपने दस्ताने और बैग उठा लिये। नर्स ने दादी से कहा, "क्या बात है ? मैंने आपके लिए सैन्डविच बनाये हैं। आप लेंगी क्या ?"

"रेबेका कहां है ? मैक्सिम क्यों नहीं आया और अपने साथ रेबेका को क्यों नहीं लाया ?" दादी ने थके और खीजे हुए स्वर में कहा।

हम बाहर निकल आये। बीट्रिस चुपचाप कार में जा बैठी और उसने कार चला दी।

जब हम गांव से बाहर हो गये तब वह मुझसे बोलीं, "मुझे बहुत दुःख है। समझ में नहीं आ रहा है कि क्या कहूं ?"

"भला कोई बात भी हो दुखी होने की।" मैंने झटपट उत्तर दिया।

"मुझे तो सपने में भी ध्यान नहीं था कि वह ऐसा कर बैठेंगी, वरना मैं तुम्हें कभी यहां नहीं लाती। तुम्हारे बारे में उन्हें सबकुछ मालूम था। मैंने उन्हें लिख दिया था और बता भी दिया था। मैक्सिम भी बता चुके थे।

उस समय तो उन्होंने बड़ी दिलचस्पी दिखाई थी। पता नहीं, अब उन्हें क्या हो गया। मुझे बहुत ही दुःख हो रहा है।"

"आप यह भूल जाती हैं कि वह कितनी बूढ़ी हो गई हैं। उन्हें ये सब बातें याद कहां रह सकती हैं। वह तो मैक्सिम के साथ रेबेका का ही नाता जोड़ पाती हैं। मेरा तो उन्हें ध्यान भी नहीं।"

"हां, वह रेबेका को बहुत चाहती थीं। इसका मुझे ध्यान ही नहीं रहा। मैं कितनी मूर्ख हूं कि यह सब जानते हुए भी...।"

"बस करो, बीट्रिस, छोड़ो इस बात को। सच कहती हूं, मैं उनका ज़रा भी बुरा नहीं मानती।"

"रेबेका को उनके साथ बड़ा मजा आता था। वह उन्हें मैन्दरले ले आया करती थी।...रेबेका में एक बहुत बड़ा गुण था, वह अपनेको बड़े-बूढ़ों और बच्चों सभीके साथ प्रिय बनाये रखती थी। दादी उसे अभी तक नहीं भूल पाई हैं। तभी तो...।"

"मैंने कहा न, बीट्रिस कि मुझे इन बातों की रत्ती भर भी परवाह नहीं।"

फिर भी बीट्रिस रास्ते भर इस घटना पर दुःख प्रकट करती आई और मुझे मैन्दरले के फाटक पर छोड़कर क्षमा-याचना करती हुई वह चली गईं। किसी कारणवश उस समय वह मैन्दरले जाना नहीं चाहती थीं।

मकान के पास पहुंचकर मैंने देखा कि मैक्सिम की कार खड़ी है। मेरा दिल धड़कने लगा और मैं जल्दी-से हॉल में गई। वहां मेज़ पर उनका टोप और दस्ताने पड़े थे। मैं लाइब्रेरी की ओर चल दी, लेकिन पास पहुंचने पर मुझे किसीके ज़ोर-ज़ोर-से बोलने की आवाज़ सुनाई दी। यह मैक्सिम की आवाज़ है। दरवाज़ा बन्द था। मैं अन्दर जाने से पहले ज़रा ठिठकी।

"तुम उससे मेरी ओर से कह दो, लिख दो कि 'आइन्दा कभी मैन्दरले न आये।' सुना तुमने ? मुझे किसने बताया, यह तुम्हें जानने की ज़रूरत नहीं, लेकिन मुझे पता लग गया कि कल तीसरे पहर उसकी कार यहां देखी गई थी। अगर तुम उससे मिलना चाहती हो तो मैन्दरले से बाहर जाकर मिलो। मैं उसे दरवाजे में नहीं घुसने दूंगा। समझ गईं न ? याद रखो, तुम्हें मेरी यह

अन्तिम चेतावनी है ।"

तभी मुझे लाइब्रेरी के दरवाजे के खुलने की आवाज सुनाई दी। मैं सीढ़ियों पर चढ़ गई और गैलरी में दीवार से चिपककर खड़ी हो गई। लाइब्रेरी का दरवाजा खुला और श्रीमती डैन्वर्स बाहर आई। उसका मुंह गुस्से से भूरा हो रहा था और बड़ा भयानक लग रहा था। वह जल्दी-से जीने के पास होकर पश्चिमी भाग को जानेवाले दरवाजे से गायब हो गई।

क्षण भर रुककर मैं सीढ़ियों से लाइब्रेरी के पास पहुंची और दरवाजा खोलकर अन्दर चली गई। मैक्सिम खिड़की की ओर मुंह किये खड़े थे। उनके हाथ में कुछ पत्र थे। मेरी ओर उनकी पीठ थी। क्षण भर को मेरे मन में आया कि चुपके-से लौट जाऊं, किन्तु मैक्सिम को शायद मेरे आने की आहट मिल गई थी। वह अधीरता के साथ मुड़े और बोले, "अब कौन है ?"

"हलो।" मैंने कहा और मुस्कराते हुए उनकी ओर हाथ बढ़ा दिया।

"ओह तुम हो..."

उन्हें देखते ही मैं समझ गई कि किसी वजह से वह बहुत क्रुद्ध हो गये थे। उनका चेहरा कठोर हो रहा था और उनके नथुने सिकुड़े हुए थे।

"तुम क्या कर रही थीं ?" उन्होंने पूछा और मेरे सिर का चुम्बन लेकर गले में अपनी बांह डाल दी। मुझे ऐसा लगा मानो उनसे बिछुड़े हुए बहुत समय बीत गया है।

"मैं आपकी दादी से मिलने गई थी। बीट्रिस आज तीसरे पहर मुझे वहां ले गई थीं।"

"दादी कैसी है ?"

"अच्छी तरह है।"

"बी कहां रह गई ?"

"उन्हें गाइल्स से मिलने जाना था।"

हम दोनों खिड़की के पास बैठ गये। मैंने उनका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "तुम्हारा जाना मुझे बड़ा बुरा लगा। मुझे बड़ा सूना-सूना लग रहा था।"

"सच !"

कुछ क्षण तक हम बिल्कुल चुप रहे। बस, मैं उनका हाथ पकड़े रही।

"क्या लन्दन में गर्मी थी ?" मैंने पूछा।

"हां, बहुत ज्यादा। लंदन मुझे पसंद नहीं है।"

मैं सोचने लगी कि पता नहीं वह मुझसे लाइब्रेरी में श्रीमती डैन्वर्स के साथ हुई बातचीत की चर्चा करेंगे या नहीं। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि फ़ेवेल के बारे में उन्हें किसने बताया।

"आप कुछ चिन्तित-से दीख रहे हैं।" मैंने कहा।

"हां, आज का दिन बहुत बुरा बीता। चौबीस घंटों में दो बार इतनी दूर मोटर चलाना कोई हँसी-खेल नहीं है।"

वह उठे और सिगरेट जलाकर घूमने लगे। मैंने समझ लिया कि वह मुझे श्रीमती डैन्वर्स की बात नहीं बतायंगे।

"मैं भी बहुत थक गई हूं।" मैंने धीरे-से कहा, "अजीब दिन था आज का !"

: १८ :

मुझे अच्छी तरह याद है कि एक दिन इतवार को तीसरे पहर हमारे घर पर मेहमानों का आक्रमण-सा हो गया था। उस दिन फ्रैंक क्राउले ने हमारे साथ भोजन किया था और भोजन के बाद हम तीनों अखरोट के वृक्ष के नीचे आराम के साथ बैठे हुए थे। तभी पहले एक कार आई, फिर दूसरी और फिर तो लोगों का तांता लग गया। वे चाय पीने के समय तक ठहरे रहे। चाय पीते समय लेडी क्राउएन ने मैक्सिम से कहा, "मिस्टर द विन्तर, एक बात है, जो मैं आपसे बहुत दिनों से पूछना चाह रही हूं। क्या आप फिर से मैन्दरले में फ़ैन्सी ड्रेस नृत्य का आयोजन नहीं करेंगे ?

एक-दो मिनट रुककर मैक्सिम ने बड़े शान्त भाव से उत्तर दिया, "मैंने इस विषय में सोचा नहीं है और मेरा खयाल है कि इसपर किसी और ने भी विचार नहीं किया है।"

"लेकिन हमें तो उसकी बहुत याद आती है।" लेडी क्राउएन बोलीं, "आप सोच भी नहीं सकते कि उसमें हमें कितना आनन्द आता था। क्या मैं आपसे इस विषय पर विचार करने का आग्रह कर सकती हूं ?"

"मैं कुछ ठीक-ठीक कह नहीं सकता।" मैक्सिम ने रुखाई के साथ उत्तर दिया, "यह सब तो इन्तज़ाम करने की बात है। आप फ्रैंक क्राउले से कहें, उन्हें ही सबकुछ करना पड़ेगा।"

"ओह, मिस्टर क्राउले ! आपको तो मेरा पक्ष लेना ही पड़ेगा।" लेडी क्राउएन ने क्राउले की ओर घूमते हुए आग्रहपूर्वक कहा और दूसरे लोग भी उनकी हां-में-हां मिलाने लगे।

"यदि मैक्सिम को आपत्ति नहीं तो मुझे इन्तज़ाम करने में कोई परेशानी नहीं होगी।" क्राउले ने क्षीण स्वर में उत्तर दिया, "यह तो उनके और श्रीमती द विन्तर के सोचने की बात है। मुझे इसमें क्या करना है।"

और फिर सबने मेरे ऊपर धावा बोल दिया। लेडी क्राउएन कुरसी खिसकाकर मेरे पास आ बैठीं और बोलीं, "अब तो श्रीमती द विन्तर, आपको अपने पति को राजी करना ही होगा। आपकी बात वह कभी नहीं टालेंगे। उन्हें आपके सम्मान में नाच का आयोजन करना चाहिए, आप दुलहन जो हैं।"

"बिल्कुल ठीक है," किसी दूसरे व्यक्ति ने कहा, "ब्याह की धूम-धाम से तो हम वंचित रह ही गये। इस तरह टरका देना ठीक नहीं। जो-जो लोग नाच के पक्ष में हैं, वे सब अपना हाथ उठायें।...अब आपने देखा सब एक मत हैं।"

उसके बाद सब खूब हँसे और खूब तालियां बजीं।

मैक्सिम ने सिगरेट जलाई और उनकी दृष्टि मेरी दृष्टि से मिली।

"तुम्हारी क्या राय है ?" उन्होंने पूछा।

"मैं क्या कह सकती हूं ? मुझे भला क्या आपत्ति हो सकती है ?" मैंने कुछ अनिश्चय के स्वर में उत्तर दिया।

"वह क्यों नहीं चाहेंगी ?" लेडी क्राउएन बोली, "भला किसी लड़की

को अपने सम्मान में धूम-धाम कराना नापसंद हो सकता है ! श्रीमती द विन्तर आप तो गडरनी के वेश में बहुत ही सुन्दर लगेंगी।"

गडरनी ! कैसी बेहूदी बात थी यह ! कोई भी उनसे सहमत नहीं हुआ और क्राउले ने विषय को बदलते हुए कहा, "बात यह है, मैक्सिम, कि एक दिन कोई और भी मुझसे इसके बारे में पूछ रहा था। मैंने कह दिया कि मिस्टर द विन्तर ने मुझे कुछ बताया नहीं है।"

"देखा मिस्टर द विन्तर आपने ! आपके आदमी भी वही कह रहे हैं जो मैं कह रही थी।" लेडी क्राउएन ने विजयोल्लास में भरकर कहा।

मैक्सिम अब भी मेरी ओर शंका की दृष्टि से देख रहे थे। शायद वह यह सोच रहे थे कि झेंपू होने के कारण मैं इस तरह के समारोह का सामना कर सकूंगी या नहीं। किन्तु मैं मैक्सिम को यह सोचने का अवसर नहीं देना चाहती थी कि मैं उनकी आशाएं पूरी नहीं कर सकूंगी।

"मेरी समझ में तो यह समारोह अच्छा रहेगा।" मैंने कहा।

मैक्सिम ने अपने कंधे हिलाये और मुड़कर कहा, "तब तो निश्चय ही हो गया। फ्रैंक इन्तज़ाम शुरू कर दो। श्रीमती डैन्वर्स की भी सहायता ले सकते हो। उसे सब बातों का पता है।"

इसके बाद हम बाहर बरामदे में आ गये। कुछ देर तक यही चर्चा चलती रही कि कौन कैसा वेश बनाकर नाचने आयेगा। फिर लोग जाने लगे और जब हम अकेले रह गये तब मैंने चैन की सांस ली।

मैं ड्राइंग रूम में फिर से एक प्याला चाय पीने के लिए चली गई और फ्रैंक भी आकर कुछ खाने-पीने लगे। मैक्सिम बाहर लॉन में जैस्पर के साथ खेल रहे थे। मैंने फ्रैंक से पूछा, "इस समारोह के बारे में तुम्हारा क्या विचार है ?"

"मैं क्या कहूं ?" क्राउले ने उत्तर दिया, "मैक्सिम को कोई आपत्ति नहीं दिखाई देती। मैं समझता हूं कि उन्होंने सुझाव को सहर्ष स्वीकार किया है।'

'लेकिन इसके सिवा वह और कर ही क्या सकते थे ? लेडी क्राउएन उनके पीछे ही पड़ गईं। मुझे तो ऐसा लगता है कि यहां के लोगों को नाच की कल्पना

में डूबे रहने के सिवा और कोई काम ही नहीं है।"

"हां, लोग किसी-न-किसी तरह का उत्सव अवश्य चाहते हैं। मैं समझता हूं कि लेडी क्राउएन ठीक ही कह रही थीं कि आपके सम्मान में कोई आयोजन होना चाहिए। आखिर आप दुलहन ही तो हैं।"

कैसी मूर्खतापूर्ण बात थी यह! काश कि फ्रैंक सदा इस तरह नग्न सत्य न कहा करते!

"मैं दुलहन नहीं हूं।" मैं बोली, "मेरा तो ब्याह भी पूरी तरह से नहीं हुआ है। मैं अपने सम्मान में कोई समारोह करना नहीं चाहती।"

"उत्सव का वह दृश्य बड़ा ही सुन्दर होता है; आप उसे पसंद करेंगी। आपको कुछ अधिक नहीं करना पड़ेगा। आप तो बस अतिथियों का स्वागत भर कर लीजियेगा, वह काम कुछ मुश्किल नहीं है। एक बार अपने साथ नाचने का अवसर तो देंगी ही आप?"

"क्यों नहीं? जितनी बार चाहो उतनी बार। मैं तुम्हारे और मैक्सिम के सिवा और किसीके साथ नाचूंगी ही नहीं।"

"नहीं-नहीं, यह ठीक नहीं होगा। इससे तो लोग-बाग बुरा मान जायंगे। आपसे तो जो-जो भी कहें, उन सभीके साथ आपका नाचना ठीक होगा।"

"लेकिन क्या लेडी क्राउएन का गडरनीवाला सुझाव अच्छा था?"

"हां, मेरी समझ में तो आप उस वेश में बहुत अच्छी लगेंगी।"

मैं ज़ोर-से हँस पड़ी और आवेश में बोल उठी, "ओह फ्रैंक, तुम तो सचमुच बहुत ही प्यारे हो।"

वह लज्जा से लाल हो गये। शायद मेरे आवेशपूर्ण शब्दों से उन्हें कुछ आश्चर्य हुआ और यह सोचकर उनके मन को चोट लगी कि मैं उनकी हँसी उड़ा रही थी।

तभी मैक्सिम ने खिड़की के पास आकर पूछा, "इतनी हँसी किस बात पर आ रही है?"

"फ्रैंक की राय है कि लेडी क्राउएन ने मुझे गडरनी का वेश बनाने का जो सुझाव दिया था, उसमें कोई हास्यास्पद बात नहीं है।"

"लेडी क्राउएन बिल्कुल बेहूदी हैं। अगर उन्हें सारे निमंत्रण-पत्र लिखने पड़ते और सारी व्यवस्था करनी पड़ती तो उनमें इतना जोश दिखाई न देता। मैं तो समझता हूं कि हमें जिलेभर के लोगों को बुलाना पड़ेगा।"

"दफ़्तर में मेरे पास सब रेकार्ड हैं। कुछ ज्यादा नहीं करना पड़ेगा। सबसे लम्बा काम तो टिकट चिपकाने का होगा।"

"यह काम हम तुम्हें सौंप देंगे।" मैक्सिम ने मेरी ओर मुस्कराते हुए कहा।

"नहीं-नहीं, वह सब हम दफ़्तर में कर लेंगे। श्रीमती द विन्तर को किसी बात की चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी।"

मेरे ऊपर किसी बात की जिम्मेदारी नहीं थी, उसकी मुझे प्रसन्नता थी; लेकिन साथ-ही-साथ मुझे अपनी अयोग्यता का भी आभास हो रहा था। ये लोग समझते हैं कि मैं टिकट भी नहीं चिपका सकती! लेकिन अगर एकाएक मैं यह घोषणा कर दूं कि सारा इन्तजाम मैं स्वयं करूंगी तो ये लोग क्या कहेंगे? शायद हँसेंगे। मैंने बात को बदलने के विचार से मैक्सिम से कहा, "उस दिन आप किसका वेश बनायंगे?"

"मैं कभी कोई वेश नहीं बनाता। मेजवान होने के नाते यही तो एक छूट मिलती है मुझे! क्यों, है न फ्रैंक?"

"लेकिन मैं गडरनी का वेश नहीं बनाऊंगी। कुछ समझ में नहीं आता कि उस दिन क्या पहनूंगी। मुझे तो वैसे भी पहनने-पहनाने का सऊर नहीं।"

"तुम तो बस अपने बालों में रिबन बांधकर उस अद्‌भुत देश की एलाइस जैसी बनी फिरना। अब भी तो तुम मुंह में अंगुली लिये वैसी ही दिखाई दे रही हो।"

"इतनी कड़वी बात मत कहो। मैं जानती हूं कि मेरे बाल सीधे हैं..लेकिन इतने नहीं कि हँसी उड़ाओ। मैं बताये देती हूं कि आपको और फ्रैंक को दोनों को ऐसे अचम्भे में डाल दूंगी कि पहचानी भी नहीं जाऊंगी।"

"लेकिन ऐसा न करना कि अपना मुंह स्याही से पोतकर बन्दरिया बन जाओ।"

"आपने भी क्या बात कही! शर्त लगाती हूं कि मैं अन्तिम क्षण तक

अपनी पोशाक का भेद नहीं बताऊंगी।" और यह कहकर मैं जैस्पर को लेकर बाग की ओर चल दी। मैक्सिम मेरे पीछे ठठाकर हँसे। उन्होंने फ्रैंक से कुछ कहा भी, लेकिन मैं सुन नहीं सकी। यह मुझे अच्छा नहीं लगा। मैं नहीं चाहती थी कि वह मुझे सदा बच्ची ही मानते रहें। क्या सदा ऐसा ही होता रहेगा? क्या कभी ऐसा नहीं होगा कि हम एक स्त्री और पुरुष की तरह कंधे-से कन्धा भिड़ाये, हाथ-में-हाथ लिये जीवन में आगे बढ़ेंगे और हमारे बीच कोई खाई नहीं रहेगी? मैं बच्ची बनी रहना नहीं चाहती थी। मैं उनकी पत्नी, उनकी मां बनना चाहती थी। मैं बूढ़ी होना चाहती थी।

... ...

नाच की खबर जल्दी ही सबको लग गई। मेरी नौकरानी क्लैराइस तो खुशी से बावली हो उठी थी। वह दिनभर इसी बात की चर्चा करती रहती थी। लेकिन मैं तो श्रीमती डैन्वर्स की प्रतिक्रिया जानना चाहती थी। जिस दिन से मैक्सिम ने उसे डांटा-डपटा था, मैं उससे टेलीफोन पर बातें करते भी डरती थी। लाइब्रेरी से जाते समय उसके चेहरे पर जो भाव था, उसे मैं क्षण भर के लिए भी नहीं भूल पाती थी और मुझे इस बात की खुशी थी कि उसने मुझे गैलरी में छिपे हुए नहीं देखा था। फिर भी मुझे डर था कि कहीं वह यह न सोच रही हो कि फ़ेवेल के आने की बात मैंने ही मैक्सिम को बताई है।

... .

नृत्य-समारोह की तैयारियां जोरों पर थीं। सब काम रियासत के दफ्तर में हो रहा था। मैक्सिम और फ्रैंक इंतजाम में लगे हुए थे और मुझे कोई भी काम नहीं करना पड़ता था। लेकिन मुझे अपनी पोशाक की बड़ी चिंता लगी हुई थी। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि नाच की रात क्या पहनना चाहिए। मैं बीट्रिस की भेजी हुई किताबें उठा लाई और उसमें से देखकर मैंने कुछ नमूने तैयार किये, लेकिन वे मुझे जंचे नहीं और मैंने उन्हें तोड़-मरोड़कर रद्दी की टोकरी में फेंक दिया।

संध्या समय जब मैं खाने के लिए कपड़े बदल रही थी, द्वार पर खटखट हुई। मैं समझी कि क्लैराइस है; बोली, "अन्दर, आ जाओ।" दरवाजा खुला

और मैंने देखा कि क्लैराइस नहीं, बल्कि हाथ में एक कागज का टुकड़ा लिये श्रीमती डैन्वर्स खड़ी थी।

"क्षमा कीजियेगा, मैडम!" वह बोली, "मैं जानना चाहती थी कि ये कागज काम के नहीं हैं क्या? बात यह है कि हर रोज शाम को रद्दी की टोकरी मुझे दिखा दी जाती है, जिससे कि भूल से कोई काम की चीज न फेंक दी जाय। राबर्ट कह रहा था कि यह कागज़ लाइब्रेरी की टोकरी में पड़ा था।"

यह कहकर उसने वह कागज मेरी ओर देखने के लिए बढ़ाया। यह वही रद्दी कागज था, जिसपर मैंने नमूना बनाया था। एकाएक मैं बोल न सकी, क्योंकि डैन्वर्स को देखते ही मुझे जूड़ी-सा चढ़ आई था और मैं अभी तक अपने को सम्हाल नहीं पाई थी।

क्षण भर रुककर मैंने कहा, 'इसे फेंक देने में कोई हरज नहीं है, श्रीमती डैन्वर्स! इसकी मुझे आवश्यकता नहीं है।"

"अच्छा! मैंने सोचा कि आपसे मिलकर स्वयं पूछ लूं, जिससे कि कोई गलतफ़हमी न होने पाये।"

"ठीक है।" मैंने कहा और सोचा कि अब वह चली जायगी। किन्तु वह दरवाज़े के पास खड़ी रही।"

"तो अभी आपने यह निश्चय नहीं किया है कि आप क्या पहनेंगी?" उस-ने पूछा। मैंने अनुभव किया कि उसकी आवाज़ में कुछ हँसी उड़ाने का-सा भाव है और साथ ही एक अजीब संतोष का पुट है। मैंने सोचा कि किसी तरह उसे क्लैराइस से मेरी परेशानी का पता लग गया है।

"नहीं, अभी तो कुछ निश्चय नहीं कर पाई हूं।"

"गैलरी में जो तसवीरें लगी हुई हैं, उन्हें एक बार देख लीजिये, शायद उन-में से किसीकी पोशाक आपको पसन्द आ जाय।"

मैं अपने नाखून रेतने का बहाना करती रही, क्योंकि ऐसा करने में मुझे उसकी ओर देखने की ज़रूरत नहीं थी।

"हां, मुमकिन है।" मैंने उत्तर दिया।

मुझे आश्चर्य हो रहा था कि मेरे मस्तिष्क में यह बात पहले क्यों नहीं

आई। यह तो मेरी समस्या का एक अच्छा समाधान था। किन्तु मैं अपनी भूल प्रकट नहीं करना चाहती थी। मै नाखून रेतती रही।

"गैलरी के सब चित्रों की पोशाकें बहुत अच्छी हैं, खास तौर पर उस जवान लड़की की, जिसने सफेद कपड़े पहन रखे हैं और हाथ में टोप ले रखा है।" उसकी आवाज़ अचानक ही बड़ी मित्रतापूर्ण मालूम होने लगी थी। मैं सोचने लगी कि मेरे फेंके हुए कागज को लेकर आखिर वह स्वयं क्यों आई है। कहीं मुझसे मित्रता करना तो नहीं चाहती? या कहीं ऐसा तो नहीं कि उसे यह पता लग गया है कि फ़ेवेल के आने की बात मैक्सिम से मैंने नहीं कही है और उसके लिए वह मुझे इस ढंग से धन्यवाद देना चाहती है।

'क्या मिस्टर द विन्तर ने आपको कोई सुझाव नहीं दिया?"

"नहीं" मैंने एक क्षण रुककर कहा, "मैं उन्हें और मिस्टर क्राउले को अचम्भे में डालना चाहती हूं। मैं उन्हें इस बारे में पहले से कुछ नहीं बताना चाहती।"

"मुझे सुझाव देने का कोई अधिकार तो नहीं है, लेकिन मेरी राय है कि आप जैसी भी पोशाक पसन्द करें, उसे लंदन में तैयार करवायें। वहां बॉन्ड स्ट्रीट में बोस के यहां बड़ा अच्छा काम होता है।"

"मैं ध्यान रखूंगी।"

"अगर मैं आपकी जगह होती," उसने दरवाज़ा खोलते हुए कहा, "तो गैलरी में लगे हुए चित्रों को जरूर देखती, खास तौर से उसे, जिसके बारे में मैंने आपसे अभी कहा है। आप यह न सोचें कि मैं आपका भेद खोल दूंगी। मैं तो किसीके कान में इसकी भनक तक नहीं पड़ने दूंगी।"

"धन्यवाद, श्रीमती डैन्वर्स!" मैंने कहा और वह धीरे-से दरवाज़ा बन्द करके चली गई।

भोजन करने के बाद मैं चित्रशाला में पहुंची। मैं सोच रही थी कि सचमुच मैं कितनी मूर्ख हूं। सफेद कपड़े पहने और हाथ में टोप लिये वह लड़की तो मुझे सदा से ही बड़ी प्यारी लगती थी। वह चित्र कैरोलिन का था, जो मैक्सिम के दादा के दादा की बहन थीं। जिस समय का वह चित्र था, उस समय

कैरोलिन का ब्याह नहीं हुआ था। वैसे ही मैंने निश्चय किया कि मैं उस पोशाक का रेखाचित्र बनाकर वोस की दूकान पर भेज दूंगी। इस निश्चय से मुझे बड़ा इतमीनान हुआ और मुझे लगा कि अब मैं नृत्य-समारोह का पूरा-पूरा आनन्द उठा सकूंगी।

अगले दिन सवेरे ही मैंने रेखाचित्र बनाकर एक पत्र श्रीमती डैन्वर्स के बताये हुए पते पर लंदन की दूकान के नाम भेज दिया। उनका उत्तर भी आ गया। उन्होंने बड़े सम्मान के साथ लिखा कि सब काम समय पर हो जायगा।

... ...

मकान में चहल-पहल बढ़ने लगी और सभी लोग उत्साहित और प्रसन्न दिखाई देने लगे। नाच के लिए बड़े कमरे का फ़र्श ठीक किया जाने लगा, दीवार के सहारे खाने की बड़ी-बड़ी मेजें सजाई जाने लगीं, कुछ चीजें कहीं से हटाई गईं, कुछ चीजें कहीं रखी गईं। गुलाब के बाग और बरामदे में बिजली लगाई गई। फ्रैंक प्रायः प्रतिदिन मैन्दरले में ही भोजन करते और इसी विषय की चर्चा होती रहती। हर जगह आदमी व्यस्त दिखाई देते और श्रीमती डैन्वर्स बात-बात पर लोगों को आदेश देती फिरती। मैं जैसे सबके लिए बेकाम थी, मुझ-से न कोई कुछ पूछता, न कुछ कहता। मैं तो सबको काम करते देखती भर रहती।

और वह दिन आ ही पहुंचा। सवेरे से ही माली घर में फूल लाने में व्यस्त हो गये और श्रीमती डैन्वर्स गुलदस्ते सजाने लगी। जिस फुरती और खूबी के साथ वह गुलदस्तों को सजा-सजाकर फूलवाले कमरे में से लेजाकर दूसरे कमरे में ठीक जगह पर रखती थी, वह सब निश्चय ही प्रशंसनीय था। मैं तो मंत्र-मुग्ध-सी उसे देखती भर रही।

शोरगुल से बचने के लिए उस दिन मैंने और मैक्सिम ने फ्रैंक के कमरे में खाना खाया। हम तीनों बहुत प्रसन्न थे और एक-दूसरे के साथ खूब हँसी-मजाक कर रहे थे। लेकिन रह-रहकर मुझे उसी तरह की घुटन का अनुभव हो रहा था, जैसा ब्याहवाले दिन सुबह को हुआ था, जब मैंने महसूस किया था कि अब मैं इतनी आगे बढ़ गई हूं कि वापस नहीं जा सकती।

संध्या का सामना तो करना ही था। मेरी पोशाक लंदन से तैयार होकर ठीक समय पर आ गई थी। नाश्ते के बाद जब मैंने उसे पहनकर देखा तब मैं अपने बदले हुए रूप पर चकित रह गई। सहसा मुझे विश्वास नहीं हुआ कि यह मैं हूं—इतनी सुन्दर, इतनी आकर्षक, इतनी सजीव !

मैक्सिम और फ्रैंक ने बार-बार पूछा कि मैं क्या वेश बनाऊंगी, लेकिन मैंने कह दिया कि मैं नहीं बताऊंगी, मैं आप दोनों को आश्चर्यचकित कर देना चाहती हूं।

"कहीं ऐसा तो नहीं है कि तुम जोकर बनने की सोच रही हो ? मजाक उड़वाने की चेष्टा मत करना।" मैक्सिम ने उदासी से कहा।

"नहीं-नहीं, मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगी।" मैं बड़प्पन दिखलाते हुए बोली।

"मैंने इसलिए कहा कि पिछली बार बी के साथ भी ऐसा ही हुआ था। उसने मैडम पम्पाडोर का रूप बनाया था, लेकिन जब वह ठुमक-ठुमककर खाने के लिए जा रही थी, उसके बनावटी बाल उतर गये। झुंझलाकर उसने वे बाल कुरसी पर पटक दिये और उस वेश-भूषा में अपने कटे हुए बालों के ही साथ वह घूमती रही। सोचो जरा, कैसी लगी होगी वह ! बेचारे गाइल्स भी उस साल अनमने से ही रहे। वह रसोइया बनकर आये थे और सारी रात मुंह लटकाये शराब पीने की जगह बैठे रहे। शायद बी के कारण ही उनका मन उदास हो गया था।

"नहीं-नहीं, यह बात नहीं थी।" फ्रैंक ने बताया, "एक नई घोड़ी पर चढ़ने की कोशिश करने में उन्होंने अपना एक आगेवाला दांत तोड़ लिया था। इस-लिए शरम के मारे उन्होंने अपना मुंह नहीं खोला।"

"अरे, यह बात थी ! खैर घबराने की कोई बात नहीं। कल सवेरे इस समय तक सब समाप्त हो जायगा।"

"मैं भी दिल से यही चाहता हूं। मैं यह आज्ञा देने ही जा रहा था कि सुबह पांच बजे सबकी कारें आकर खड़ी हो जायं।"

"मुझे तो कुछ अजीब-सा लग रहा है," मैंने अनमनी-सी हँसी हँसते हुए कहा, "तार दे दीजिये कि कोई न आये।" यह कहते-कहते मेरी आंखों में आंसू

आ गये।

"उठो, उठो, साहस से काम लो।" मैक्सिम ने कहा, "अब हम सालों तक दूसरा उत्सव नहीं करेंगे। चलो, घर चलें, देखें वहां क्या हो रहा है।"

और न चाहते हुए भी मुझे मैक्सिम तथा फ्रैंक के साथ घर लौट आना पड़ा। उस समय तक बैंडवाले आ चुके थे और फ्रिथ उन्हें चाय आदि पिला रहा था। सब इन्तज़ाम हो चुका था, इसलिए तीसरा पहर लम्बा दिखाई दे रहा था, ठीक उसी तरह जैसे सामान बंध जाने पर यात्रा से पहले का समय लगा करता है। जैस्पर की तरह मैं भी एक कमरे से दूसरे कमरे में बेकार-बेकार-सी फिर रही थी। ऊबकर मैंने चाहा कि मैं जैस्पर को लेकर दूर घूमने निकल जाऊं; लेकिन तभी मैक्सिम और फ्रैंक ने चाय लाने के लिए कह दिया और चाय के खतम होते ही बीट्रिस और गाइल्स आ पहुंचे।

"बिल्कुल पहले जैसा इन्तजाम है।" बीट्रिस ने मैक्सिम का चुम्बन लेकर अपने चारों ओर देखते हुए कहा। फिर मेरी ओर घूमकर कहा, "बधाई है तुम्हें। तुमने तो छोटी-से-छोटी बात का भी ध्यान रखा है। फूलों की सजावट तो बहुत ही सुन्दर है। तुमने ही सजाये हैं न ?"

"नहीं," मैंने ज़रा लज्जित होते हुए कहा, "सारा इन्तज़ाम श्रीमती डैन्वर्स ने किया है।"

"ओह, तो..." बीट्रिस आगे कुछ कहना ही चाहती थी कि फ्रैंक ने दियासलाई जलाकर उनकी ओर बढ़ा दी और सिगरेट सुलगाते-सुलगाते शायद बीट्रिस को यह याद ही नहीं रहा कि वह क्या कहना चाहती थीं।"

"सब लोग क्या-क्या पहनेंगे ? मैक्सिम तुम तो शायद सदा की तरह इस बार भी कोई भेष नहीं बनाओगे ?" बीट्रिस ने कुछ क्षणों बाद मैक्सिम से पूछा।

"हां, इस बार भी मैं सदा की ही तरह रहूंगा।"

"लेकिन यह तुम्हारी भूल है, अगर तुम भी कोई भेष बनाओ तो नाच में मज़ा आ जाय।"

"क्या ऐसा भी कभी हुआ है कि मैन्दरले के किसी नाच में मजा न आया

हो।"

"नहीं, व्यवस्था तो हमेशा बहुत अच्छी रहती है, लेकिन अगर मेजबान खुद ही पहल करे तो बात ही कुछ और हो जाय।"

"मैं ऐसी मूर्खता करना नहीं चाहता।"

"इसमें मूर्खता की क्या बात है ? तुम तो जो कुछ भी पहन लोगे वही तुम्हें अच्छा लगेगा। तुम्हें गाइल्स की तरह अपनी सूरत की चिन्ता थोड़े ही करनी होगी।"

"गाइल्स क्या पहनेंगे ?" मैंने पूछा।

"मैं अरब के शेख की पोशाक पहनूंगा।" गाइल्स ने कहा।

"हे भगवान !" मैक्सिम बोले।

"और आप क्या पहनेंगी, श्रीमती लेसी ?" फ्रैंक ने पूछा।

"मैं तो किसीकी खास नकल नहीं कर पाई हूं, मैंने तो ऐसे ही पूर्वी ढंग की कुछ चीजें मंगवा लीं हैं, जिससे कि गाइल्स के साथ फब सकूं—यही गले में मूंगों की माला और मुंह पर कुछ घूंघट।"

"तुम क्या पहनोगी ?" बीट्रिस ने मुझसे पूछा।

"उनसे कुछ मत पूछो। वह हममें से किसीको कुछ नहीं बताना चाहतीं।" मैक्सिम बोले।

"हां, मैं मैक्सिम को अचम्भे में डालना चाहती हूं।"

"मैं तुम्हारी पोशाक देखना चाहती हूं।" बीट्रिस ने कहा।

"उसमें कोई भी विशेषता नहीं है।" मैं बोली।

"श्रीमती द विन्तर का कहना है कि हम उन्हें पहचान भी नहीं सकेंगे।" फ्रैंक ने कहा।

इसपर सब लोग मेरी तरफ देखकर मुस्कराने लगे। मुझे मन-ही-मन में बड़ी प्रसन्नता हुई। मुझे यह सोचकर बड़ा गर्व-सा हो रहा था कि यह सब मेरे सम्मान में हो रहा है, मैं दुलहन हूं और मैं लोगों का आतिथ्य करूंगी। मुझे अपने नये कपड़े पहनने की भी बड़ी उतावली हो रही थी और मैं चाह रही थी कि किसी तरह जल्दी से ऊपर जाकर झटपट अपनी पोशाक और अपने बनवटी

बाल पहनकर शीशे में अपनी सूरत देखूं। लेकिन मैंने ऐसा प्रकट किया, जैसे मुझे इसकी बिल्कुल भी चिन्ता नहीं। मैंने जम्हाई लेते हुए कहा, "क्या बज गया ? अब तो शायद ऊपर जाने का समय हो गया।

और बड़े हॉल को पारकर हम अपने-अपने कमरों में पहुंच गये। क्लैराइस बड़ी उत्सुकता के साथ मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। मैंने उसे दरवाजे में भीतर से ताला बन्द कर लेने के लिए कहा। फिर हमने पोशाक को धीरे-धीरे कागज़ के थैले में से बाहर निकाला। हम एक दूसरे से धीरे-धीरे बोल रहे थे जैसे कोई षड्यंत्र रच रहे हों। हम पंजों के बल चल रहे थे, जिससे किसीको हमारे चलने-फिरने की आवाज़ न सुनाई दे। फिर मैंने पोशाक पहनी और वह मेरे बिल्कुल फिट आई।

"यह तो बहुत ही सुन्दर है, मैडम।" क्लैराइस ने आगे झुककर मेरे मुंह को निहारते हुए कहा, "यह तो इंगलैंड की महारानी के लायक है।"

"कैसा लगता है ? मैं कैसी दिखाई दे रही हूं ?" मैंने कहा और क्लैराइस के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही मैं शीशे के सामने खड़ी होकर अपने मुंह पर तरह-तरह के भाव लाने की चेष्टा करने लगी और साथ-ही-साथ मुस्कराती रही। मैं बिल्कुल बदल गई थी, मेरी सूरत अब मेरे लिए बाधा नहीं रह गई थी। मेरा नीरस व्यक्तित्व जैसे उस पोशाक में डूब-सा गया था।

'मेरे बनावटी बाल दो। सम्हालकर, उसके घूंघर खराब न हो जायं।" मैंने क्लैराइस से कहा। वह मेरे पीछे खड़ी थी और सामने शीशे में मुझे उसका खुला हुआ मुंह और चमकती हुई आंखें दिखाई दे रही थीं। अपने बालों को पीछे करके मैंने उन बनावटी घुंघराले बालों को अपनी कांपती हुई अंगुलियों से पकड़ा और मन-ही-मन में प्रसन्न होते हुए क्लैराइस से पूछा, "ओह क्लैराइस, श्री द विन्तर क्या कहेंगे ?"

यह कहते-कहते मैंने उन नकली बालों को पहन लिया। तभी दरवाजे पर धक्का लगा।

"कौन है ?" मैंने घबराकर पूछा, "तुम अन्दर नहीं आ सकते।"

"मैं हूं, घबराओ मत।" बाहर से बीट्रिस बोलीं, "तुमने कितनी तैयारी

कर ली है ? मैं तुम्हें देखना चाहती हूं।"

'नहीं-नहीं, तुम अन्दर नहीं आ सकतीं, मैं अभी तैयार नहीं हो पाई हूं।"

घबराई हुई क्लैराइस अपने हाथ में ढेर-सारे हेयर पिन लिये मेरे पास खड़ी थी। नकली बालों को ठीक से जमाने के लिए मैं उसके हाथ से पिन ले-लेकर खोंसने लगी।

"मैं तैयार होकर स्वयं नीचे आ जाऊंगी, आप सब नीचे जायं, मेरी प्रतीक्षा न करें। मैक्सिम से कह देना वह अन्दर नहीं आ सकते।" मैं कमरे के भीतर से बोली।

"मैक्सिम तो नीचे पहुंच भी गये। वह हमारे साथ आये थे। उन्होंने तुम्हारे गुसलखाने के द्वार पर धक्का भी दिया था, लेकिन वह कहते थे कि तुमने कोई जवाब नहीं दिया। ज्यादा देर मत करना, हम सब बड़े चक्कर में हैं। क्या तुम्हें सचमुच किसीकी सहायता की आवश्यकता नहीं है ?

"नहीं, बिल्कुल नहीं," मैं अधीर होकर चिल्लाई, "आप जाइये, नीचे जाइये।"

शीशे में जो मुख मुझे घूर रहा था, उसे मैं स्वयं ही नहीं पहचान पा रही थी। आंखें बड़ी-बड़ी लग रही थीं, होंठ सिकुड़ गये थे और रंग ज्यादा सफेद और साफ़ दिखाई दे रहा था। बनावटी बालों के घुंघर मेरे सिर पर बादलों की तरह लहरा रहे थे। मुझे विश्वास नहीं हुआ कि यह मेरा मुखड़ा है। मैं मुस्कराई—एक नई मन्द मुसकान।

"दरवाजे का ताला खोल दो, मैं नीचे जा रही हूं। और हां, दौड़कर देखो कि ये लोग वहां हैं या नहीं।"

क्लैराइस मेरी आज्ञा का पालन करने के लिए आगे-आगे चल दी और मैं अपनी पोशाक को हाथ से ज़रा ऊपर को उठाये हुए उसके पीछे-पीछे गैलरी में चलने लगी।

उसने पीछे को मुड़कर इशारा किया, "वे नीचे चले गए हैं—श्री द विन्तर, मेजर और श्रीमती लेसी। मिस्टर क्राउले अभी-अभी आये हैं और सब लोग हॉल में खड़े हैं।"

मैंने ऊपर से नीचे हॉल में झांककर देखा। चारों वहीं खड़े थे—गाइल्स अपनी सफ़ेद अरब-पोशाक में, बीट्रिस हरे रंग के कपड़े और मूंगों की माला पहने हुए और फ्रैंक धारीदार जरसी और जहाजी बूट डांटे हुए। अकेले मैक्सिम ही ऐसे थे, जो शाम को पहने जानेवाले साधारण कपड़ों में थे।

बैंडवाले गैलरी में खड़े थे। मैंने एक सारंगीवाले को इशारे से पास बुलाकर कहा, "ढोलवाले से कह दो कि नगाड़ा बजाकर मेरे आगमन की घोषणा करे और कहे—'कुमारी केरोलिन द विन्तर आती हैं।' मैं उन्हें अचम्भे में डालना चाहती हूं।" वह समझ गया। मेरा दिल धड़क रहा था और मेरे गाल तमतमा रहे थे। मैं क्लैराइस को देखकर मुस्काई और मैंने अपनी पोशाक अपने हाथ से पकड़ ली। तभी बड़े हॉल में नगाड़े की आवाज़ गूंज उठी और मैंने देखा कि सब लोग नीचे हॉल में से ऊपर की ओर अचम्भे के साथ देख रहे हैं।

"कुमारी केरोलिन द विंतर," नगाड़ेवाले ने घोषणा की। मैं सीढ़ियों के सिरे पर आकर खड़ी हो गई और मुस्कराने लगी। फिर धीरे-धीरे नीचे उतरती हुई तालियों की गड़गड़ाहट और लोगों के खिलखिलाकर हँसने की आवाज की प्रतीक्षा करने लगी। किन्तु न तो किसीने ताली बजाई, न कोई अपने स्थान से हिला।

वे सब गूंगों की तरह टकटकी लगाये मुझे देख रहे थे। बीट्रिस के मुंह से एक हलकी-सी चीख निकली और उसने अपने हाथ से अपना मुंह दबा लिया। मैं मुस्कराती रही और सीढ़ियों के हत्थे पर हाथ रखकर खड़ी हो गई। फिर मैं मैक्सिम की ओर देखती हुई शान के साथ बोली, "कहिये मिस्टर द विंतर, कैसे हैं आप ?"

पर मैक्सिम हिले तक नहीं। वह अपने हाथ में गिलास पकड़े मुझे एकटक देख रहे थे। उनका रंग सफ़ेद पड़ गया था। मैंने देखा कि फ्रैंक ने उनके पास जाकर कुछ कहना चाहा, लेकिन मैक्सिम ने उन्हें झकझोरकर एक ओर हटा दिया। मैं अन्तिम सीढ़ी पर एक पैर रखे हुए ठिठकी खड़ी रह गई। मेरी समझ में नहीं आया यह सब क्या हो रहा है। अवश्य ही कोई गड़बड़ हो गई है, मैंने सोचा। मैक्सिम इस प्रकार क्यों देख रहे हैं ? वे सब-के-सब

इस तरह पत्थर की मूर्तियों की तरह अचेत-से क्यों खड़े हैं ?

तभी मैक्सिम सीढ़ियों की ओर बढ़े और कुछ अजीब स्वर में बोले, "यह क्या किया है तुमने ?" उनकी आंखें क्रोध से लाल हो रही थीं और मुंह एकदम सफ़ेद पड़ा हुआ था।

मैं वहां से हिल तक नहीं सकी और ज्यों-की-त्यों हत्थे पर हाथ धरे खड़ी रही।

"यह तो उस चित्र की नक़ल है, वह चित्र जो गैलरी में टंगा है।" मैंने भय से कांपते हुए कहा।

कुछ देर सन्नाटा छाया रहा। हम सब एक-दूसरे को टकटकी बांधे देखते रहे। सबके पैर जैसे पत्थर की तरह गड़ गये थे। मैंने बड़ी कठिनाई से थूक लीला और अपना गला साफ़ करते हुए कहा, "क्या बात है ? क्या हो रहा है ? क्या हो गया है मुझसे ?"

लेकिन सब-के-सब मेरी ओर देखते रहे, तब भी सब चुपचाप खड़े रहे। और जब मैक्सिम बोले तब मैं उनकी आवाज पहचान न सकी।

"जाओ, कपड़े बदलकर आओ। जो मिल जाय, वही पहन लेना, कोई साधारण-सा फ्रॉक हो तब भी कोई बात नहीं। जाओ, जल्दी जाओ। ऐसा न हो कि कोई और आ जाय।" उनकी आवाज़ इतनी शान्त, इतनी धीमी थी, जैसी मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी। मैं कुछ भी नहीं बोल सकी और उन्हें एकटक देखती रही।

"अब तुम खड़ी क्यों हो ?" उन्होंने कठोर स्वर में कहा, "तुमने सुना नहीं, मैंने क्या कहा ?"

मैं मुड़ी और गैलरी की ओर बेतहाशा भागी। मैंने देखा कि जिस नगाड़े-वाले ने मेरे आने की घोषणा की थी उसके, मुख पर आश्चर्य का भाव झलक रहा था। मैं उसके पास से गिरती-पड़ती निकल गई। मुझे पता नहीं था कि मैं कहां जा रही थी। आंसुओं से मेरी आंखें अंधी हो रही थीं। क्लैराइस जा चुकी थी। गैलरी में सन्नाटा छाया हुआ था। तभी मैंने देखा कि पश्चिमी भाग को जानेवाला दरवाजा सपाट खुला पड़ा था और वहां कोई खड़ा था।

वह श्रीमती डैन्वर्स थी। उस समय उसके मुख पर जो भाव था, उसे मैं कभी नहीं भूल सकती। वीभत्स घृणा और विजय का भाव। वह एक किलकती हुई शैतान जैसी लग रही थी। वह चुपचाप खड़ी थी और मुझे देखकर मुस्करा रही थी।

और तब मैं उधर से भाग खड़ी हुई और अपनी पोशाक की झालरों को रौंदती हुई तंग रास्ते को पारकर अपने कमरे में जा पहुंची।

: १६ :

सोनेवाले कमरे में क्लैराइस मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। वह बुरी तरह घबराई हुई थी और बिल्कुल पीली पड़ गई थी। मुझे देखते ही वह फूट-फूटकर रोने लगी। मैं कुछ नहीं बोली और अपने फ्रॉक को उतार फेंकने के लिए हुकों को जोर-जोर-से खींचने लगी। हुक मुझसे खुल नहीं सके और फ्रॉक जगह-जगह से फट गया। क्लैराइस और भी ज़ोर-ज़ोर-से रोने लगी और मेरी सहायता के लिए आई।

"रोती क्यों हो, क्लैराइस? इसमें तुम्हारा दोष थोड़े ही है!" मैंने कहा। उसने अपना सिर हिलाया और आंसू उसके गालों से बहते रहे।

"लेकिन आपकी यह सुन्दर पोशाक, मैडम! आपकी यह सुन्दर सफेद पोशाक!"

"उंह, कोई बात नहीं है, क्लैराइस! क्या तुम्हें हुक नहीं मिल रहे हैं? एक कमर के पीछे और दूसरा वहीं कहीं नीचे है।"

वह कांपते हुए हाथों से हुकों को खोलने लगी, जो सुलझने के बजाय और भी उलझ गये।

"अब आप इसके बदले क्या पहनेंगी, मैडम?

"पता नहीं," मैंने कहा, "पता नहीं।"

इतने में हुक खुल गये और मैंने अपनेको किसी तरह उन कपड़ों से मुक्त किया।

"मैं अकेली रहना चाहती हूं, क्लैराइस! तुम अब जाओ। मेरी चिन्ता न

करो, मैं सब ठीक कर लूंगी। जो कुछ हुआ है, उसे भूल जाओ। मैं चाहती हूं कि तुम जाकर पार्टी का आनन्द उठाओ।"

"आप कहें तो मैं आपके लिए किसी फ्रॉक पर इस्त्री करा दूं, ज़रा-सी देर में हो जायगी।" उसने अपनी सूजी हुई आंखों से मेरी ओर देखते हुए कहा।

"नहीं, परेशान मत होओ। मैं चाहती हूं कि तुम जाओ...और सुनो..."

"जी, मैडम !"

"देखो जो कुछ हुआ है, उसकी किसीसे चर्चा मत करना।"

"नहीं करूंगी, मैडम ! मैं किसीसे चर्चा नहीं करूंगी," और यह कहकर वह एक बार फिर जोर-जोर-से रोने लगी।

"देखो, कोई तुम्हें ऐसी हालत में न देख ले, ग़ुसलखाने में जाकर अपना मुंह धोलो। रोने की कोई बात नहीं है।"

तभी किसीने दरवाजे पर धक्का मारा और क्लैराइस ने सहमी दृष्टि से मेरी ओर देखा।

"कौन है ?" मैंने कहा।

दरवाजा खुला और बीट्रिस तेजी से लपकती हुई एकदम मेरे पास आकर खड़ी हो गईं और मेरी ओर अपना हाथ बढ़ाकर बोली, "ओह, मेरी प्यारी।"

क्लैराइस कमरे से खिसक गई। मेरे पैर अचानक लड़खड़ाने लगे और मेरे लिए खड़ा रहना कठिन हो गया। मैं बिस्तर पर बैठ गई और मैंने अपने बनावटी बाल उतार फेंके। बीट्रिस खड़ी-खड़ी मुझे देखती रहीं।

"तुम्हारी तबीयत तो ठीक है, तुम एकदम सफेद पड़ गई हो।" वह बोली।

"रोशनी की वजह से ऐसा लग रहा होगा।"

"कुछ देर के लिए बैठ जाओ, तुम्हारी तबीयत ठीक हो जायगी, मैं तुम्हारे लिए एक गिलास पानी लाती हूं।"

वह स्नान-घर में जाकर मेरे लिए पानी ले आईं। मुझे पानी की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं मालूम हो रही थी, लेकिन उनके संतोष के लिए मैंने थोड़ा-सा पानी पी लिया।

"मैं देखते ही समझ गई थी कि अरे यह तो एक बड़ी भारी भूल हो गई।

तुम्हें इस बात की खबर भी क्या थी ! खबर हो भी कैसे सकती थी ?"

"किस बात की खबर ?"

"उस पोशाक की, उस तसवीर की, जो गैलरी में है और जिसकी तुमने नक़ल की है। पिछले नाच-समारोह में रेबेका ने ऐसी ही पोशाक पहनी थी। वही चित्र, बिल्कुल वही। जब तुम वहां जीने पर खड़ी थीं तब क्षणभर के लिए मुझे ऐसा लगा कि..."

उन्होंने अपना वाक्य पूरा नहीं किया और वह मेरे कंधे थपथपाने लगीं।

"उफ़, तुम कितनी अभागिन हो ! तुम्हें भला इस बात की खबर भी कैसे हो सकती थी ?"

"लेकिन मुझे इस बात की खबर होनी चाहिए थी, जरूर होनी चाहिए थी।" मैंने कहा।

"लेकिन यह तो एक ऐसी बात थी, जिसका में ध्यान भी नहीं आ सकता था। हम सब सन्न रह गये और मैक्सिम तो .."

"हां, मैक्सिम क्या ?"

"वह समझते है कि यह काम-तुमने जान-बूझकर किया है। तुमने शायद कोई शर्त लगाई थी कि तुम उन्हें आश्चर्य-चकित कर दोगी। क्यों, लगाई थी न ? शायद तुम मज़ाक करना चाहती थीं। लेकिन यह उनकी समझ में ही नहीं आ रहा है। उन्हें बड़ा धक्का लगा है। मैंने तो उनसे फौरन ही कह दिया कि तुम ऐसा काम नहीं कर सकतीं, यह तो दुर्भाग्य की बात थी कि तुमने उसी तस्वीर को चुना।"

"लेकिन मुझे इसकी खबर होनी चाहिए थी। इसमें मेरा ही दोष है। मुझे जानना चाहिए था। मुझे देखना चाहिए था।"

"नहीं-नहीं, तुम नाहक परेशान मत होओ। तुम उन्हें सब बातें शान्ति के साथ समझा देना और सबकुछ ठीक हो जायगा। लोग आने शुरू हो गये हैं। वे शराब पी रहे हैं और सारा काम ठीक-ठीक चल रहा है। मैंने गाइल्स और फ्रैंक से कह दिया है कि वे बात बना दें कि तुम्हारी पोशाक ठीक नहीं बनी है और तुम्हें बड़ी निराशा हुई है।"

मैंने कुछ उत्तर नहीं दिया। अपने हाथ गोद में रखे मैं बिस्तर पर बैठी रही।

"तुम अब क्या पहनोगी ?" बीट्रिस ने पूछा और मेरी आलमारी खोलकर वह मेरे कपड़े देखने लगीं। "यह नीली चीज़ क्या है ? यह तो बहुत ही सुन्दर है। इसीको पहन लो। यह किसीको बुरा नहीं लगेगा। जल्दी पहन लो, मैं तुम्हारी सहायता कर दूंगी।"

"नहीं, मैं अब नीचे नहीं जाऊंगी।"

"अपनी बांह पर नीला फ्रॉक डाले बीट्रिस ने मेरी ओर बड़े दुखी भाव से देखा।

"लेकिन, तुम्हें जाना तो होगा ही, यह नहीं हो सकता कि तुम न जाओ।"

"नहीं, बीट्रिस ! मैं नीचे नहीं जाऊंगी। मैं किसीको मुंह दिखाने लायक नहीं हूं।"

"लेकिन तुम्हारी पोशाक के बारे में तो किसीको कुछ पता नहीं लगेगा। गाइल्स और फ्रैंक इस बारे में एक शब्द भी नहीं कहेंगे। हमने सारी बातें सोच रखी हैं। कह दिया जायगा कि तुम्हारी पोशाक ठीक नहीं बनी, इसलिए तुमने साधारण कपड़े पहने हैं। यह बात सबको बिल्कुल स्वाभाविक लगेगी।"

"आप नहीं समझतीं। मुझे वस्त्रों की चिन्ता नहीं है। मुझे तो जो कुछ हो चुका है, जो कुछ मैं कर चुकी हूं, उसकी चिन्ता है। मैं अब नीचे नहीं जा सकती, बीट्रिस। नीचे नहीं जा सकती।"

"लेकिन सुनो तो ! गाइल्स और फ्रैंक सबकुछ समझ गये हैं और उन्हें तुमसे सहानुभूति है। मैक्सिम भी सब समझ गये हैं। उन्हें एकाएक आघात तो जरूर लगा था, लेकिन...। मैं एक क्षण के लिए उन्हें अकेले में बुलाकर सब समझा दूंगी।"

"नहीं, मैं नहीं जाऊंगी।"

उन्होंने मेरा नीला फ्रॉक मेरे पास बिस्तर पर रख दिया और बहुत ही परेशान होते हुए कहा, "सब लोग आ रहे हैं, तुम्हारा नीचे न आना सबको बड़ा अजीब लगेगा। यह तो मैं कह नहीं सकूंगी कि एकाएक तुम्हारे सिर में

दर्द होने लगा है।"

"क्यों नहीं कह सकेंगी ? इसमें बिगड़ता क्या है ? कुछ भी बहाना कर दीजियेगा। कोई मेरी परवाह नहीं करेगा, उनमें से कोई मुझे नहीं जानता।"

"आओ, कोशिश तो करो। लो, इस फ्रॉक को पहन लो। जरा मैक्सिम का खयाल करो। तुम्हें उनकी खातिर नीचे चलना ही चाहिए।"

"मैं बराबर मैक्सिम के बारे में ही सोच रही हूं।"

"तब तो अवश्य...।"

"नहीं, मैं नहीं चल सकती, मैं नहीं चल सकती।" मैं बिस्तर पर एक घायल चिड़िया की तरह छटपटाती हुई बोली।

इतने में दरवाजे पर फिर धक्का लगा। बीट्रिस ने दरवाजा खोला। गाइल्स खड़े थे। उन्होंने बताया कि सब लोग आ गये हैं और मैक्सिम ने उन्हें यह देखने के लिए भेजा है कि ऊपर क्या हो रहा है।

"यह कह रही हैं कि मैं नीचे नहीं जाऊंगी। समझ में नहीं आता, क्या किया जाय।" बीट्रिस बोलीं।

मैंने देखा कि गाइल्स ने दरवाजे में से मेरी ओर झांका।

'तो फिर मैं मैक्सिम से क्या कह दूं ? आठ बजकर पांच मिनट हो गये हैं।"

"कह देना कि इन्हें बहुत ही घबराहट-सी हो रही है, लेकिन जल्दी ही ठीक हो जायगी। खाने के लिए प्रतीक्षा करना ठीक नहीं। मैं अभी नीचे आकर सब-कुछ सम्हाल लूंगी।"

गाइल्स ने एक बार फिर मेरी ओर झांका और चले गये।

"तुम थोड़ी-सी ब्रांडी ले लो। इससे कभी-कभी बड़ा फ़ायदा होता है।" बीट्रिस ने कहा।

"नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

"मुझे नीचे जाना है। गाइल्स कह रहे थे कि सब लोग भोजन के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन मेरे जाने से कोई गड़बड़ी तो नहीं हो जायगी ?"

"नहीं-नहीं ! आप फ़िकर न करें।"

बीट्रिस ने जल्दी-से शीशे की ओर झुककर अपने मुंह पर पाउडर लगाया

और फिर वह नीचे चली गईं।

उनके जाने के बाद मैं सारी घटना पर विचार करने लगी और मुझे ऐसा लगा कि नीचे जाने से इन्कार करके मैंने बीट्रिस की सहानुभूति खो दी है।

मैक्सिम का सफेद चेहरा और उनकी क्रोध से अंगारे-जैसी दहकती हुई आंखें मेरी दृष्टि के सामने घूमने लगीं। गाइल्स, फ्रैंक, बीट्रिस सभी उनके पीछे खड़े हुए मुझे घूरते हुए-से दिखाई दिये।

मैं बिस्तर पर से उठ खड़ी हुई और खिड़की से बाहर गुलाब के बाग़ की ओर देखने लगी। माली चारों तरफ घूम-फिरकर बिजली देखते फिर रहे थे कि कहीं कोई बल्ब ख़राब तो नहीं है। वे सब खुश दिखाई दे रहे थे और सीटी बजाते हुए अपना काम करते फिर रहे थे। मैं सोचने लगी कि अगर मैं नीचे नहीं गई तो ये लोग क्या कहेंगे। कोई कुछ कहेगा, कोई कुछ। कोई कहेगा—यह पहली श्रीमती द विंतर जैसी नहीं हैं। कोई कहेगा—कपड़े ठीक न बनने का तो बहाना भर है। मिस्टर द विंतर से कुछ कहा-सुनी हो गई है। हम तो पहले ही जानते थे कि यह शादी कभी सुखमय नहीं हो सकती। पता नहीं मिस्टर द विंतर फ्रांस से किसे पकड़ लाये। कहां यह और कहां रेबेका...

इसी तरह विचारों में खोई हुई मैं कुछ देर तक बाग़ में रखी हुई ख़ाली कुरसियों को देखती रही। फिर पलंग के पास आकर मैंने फ़र्श पर पड़ी हुई अपनी सफेद पोशाक को उठाकर डिब्बे में बन्द कर दिया और बीट्रिस ने आलमारी से जो नीला फ्रॉक निकाला था, उसपर मैं धीरे-धीरे और शऊर के साथ उसी तरह इस्त्री करने लगी जैसे पहले कभी मॉन्टी कार्लो में श्रीमती हॉपर के कपड़ों पर किया करती थी। उसके बाद मैंने अपने मुंह पर से पेन्ट हटाया और अपने बालों में कंघी की। फिर हाथ धोकर मैंने वह नीला फ्रॉक और उससे मिलते-जुलते जूते पहने। इसके बाद मैं कमरे का दरवाजा खोल बाहर गैलरी में निकल आई। वहां बिल्कुल सन्नाटा था। हॉल भी ख़ाली पड़ा था। खाने के कमरे से लोगों के बातचीत करने की आवाजें आ रही थीं, जिससे पता चलता था कि अभी भोजन समाप्त हुआ है। तभी गैलरी में से किसी तख्ते के चड़चड़ाने

की आवाज आई और मुंह पर एक हवा का झोंका लगा। जिधर से हवा आ रही थी, मैं उधर ही चल दी और मैंने देखा कि पश्चिमी भाग का दरवाजा खुला हुआ है और कोने की खिड़की से हवा के साथ-ही-साथ समुद्र की आवाज भी आ रही है। कुछ देर तक मैंने दरवाजा बन्द नहीं किया और अपने पतले कपड़ों में वहीं खड़ी-खड़ी कांपती रही। सहसा मैं मुड़ी और जल्दी-से द्वार बन्द कर सीढ़ियों के पास आ गई। अब लोगों के बोलने की आवाज़ तेज हो गई थी। खाने के कमरे का द्वार खुल चुका था और लोग भोजन करके बाहर आ रहे थे। मैंने राबर्ट को द्वार के पास खड़ा देखा।

धीरे-धीरे सीढ़ियां उतरकर मैं लोगों का स्वागत करने खड़ी हो गई।

जब मुझे मैन्दरले की अपनी उस पहली और अन्तिम पार्टी की याद आती है तब उस दिन की कितनी ही छोटी-छोटी घटनाएं भी मेरी आंखों के सामने नाच उठती हैं। देर से आनेवालों का स्वागत करने के लिए मैं मैक्सिम के साथ सीढ़ियों के पास खड़ी थी और नाचते हुए जोड़े जब बार-बार हमारे सामने से गुज़रते तब मुझे ऐसा लगता जैसे कोई अदृश्य हाथ डोरी में फिरकनी बांधकर घुमाये ही चला जा रहा हो, घुमाये ही चला जा रहा हो। लेडी क्राउएन भी वहां थीं और नशे में होने के कारण कुछ अधिक ऊंचे स्वर में लोगों से कह रही थीं, "इस आयोजन के लिए आपको मुझे धन्यवाद देना चाहिए, श्रीमान या श्रीमती द विंतर को नहीं।"

मुझे याद है कि रॉबर्ट के हाथ से बरफ़ की ट्रे गिर गई थी और फ्रिथ को उसकी ओर क्रोध के साथ घूरते देखकर मेरे मन में आया था कि उसके पास जाकर कहूं, "कोई बात नहीं, मैं तो इससे भी बड़ा अपराध कर चुकी हूं।" बीट्रिस बराबर मुझे सहानुभूति की दृष्टि से देख रही थीं। गाइल्स मुझे ज़बर-दस्ती खींचकर नाचने के लिए ले गये और नाचते समय मेरे नीले फ्रॉक की बराबर प्रशंसा करते रहे—शायद यह सोचकर कि मुझे ठीक कपड़े न पहनने का बड़ा दुःख हो रहा है।

फ्रैंक मेरे लिए खाने की चीजें और एक गिलास शैम्पेन ले आये, लेकिन मुझे बिल्कुल भी भूख नहीं थी। फिर भी उनके आग्रह पर मैंने उन्हें प्रसन्न

करने के लिए शैम्पेन की दो-तीन घूंटें पी लीं।

हॉल में बैंड बज रहा था और लोग-बाग नाच रहे थे। मैं उन्हें देख रही थी, लेकिन मेरे मन में कोई भी भाव नहीं उठ रहे थे, जैसे किसी हाड़-मांस के बने मनुष्य के मन में उठने चाहिए। मैं एक निर्जीव प्रतिमा-सी खड़ी थी और मेरे पास जो व्यक्ति खड़ा था, वह भी लकड़ी का बना हुआ मालूम हो रहा था। उसकी मुस्कराहट बनावटी थी, उसकी आंखें उस आदमी की-सी नहीं लग रही थीं, जिसे मैं प्यार करती थी, जिसे मैं जानती थी। वे आंखें मुझसे दूर कहीं आगे की ओर देख रही थीं। उनमें न कोई भाव था, न किसी प्रकार की उष्णता। वे मानों ठंडी पड़ी थीं और वेदना और पीड़ाभरी किसी ऐसी जगह पर टिकी हुई थीं, जहां मैं नहीं पहुंच सकती थी। उस व्यक्ति के अन्तर की उस गुप्त वेदना को मैं बंटा नहीं सकती थी।

वह न मुझसे बोले, न उन्होंने मुझे छुआ। हम साथ-साथ खड़े थे, फिर भी एक दूसरे से अलग थे। मैं देख रही थी कि अतिथियों के साथ वह कैसी शिष्टता से व्यवहार कर रहे हैं। किसीसे वह कुछ कहते, किसीसे मज़ाक कर बैठते, किसीको देखकर मुस्करा देते और किसीको गरदन घुमाकर बुलाते, लेकिन अकेली मैं ही थी, जो समझ रही थी, कि यह सब सिर्फ एक मशीन की तरह हो रहा है। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे हम किसी तमाशे के पात्र हैं, किन्तु एक दूसरे से अलग-अलग काम कर रहे हैं। हमें अलग-अलग ही यह सब सहन करना था और वह दुःखदायी अभिनय सिर्फ उन लोगों की ख़ातिर करना था, जिन्हें न मैं जानती थी, न फिर देखना ही चाहती थी।

लोग-बाग आ-आकर हमसे बातें कर रहे थे और हम उन्हें कुछ-न-कुछ उत्तर दे रहे थे। बीच में फ्रैंक मेरे लिए लेमोनेड लाये, लेकिन मैंने मना कर दिया। उन्होंने मुझसे बैठने को कहा, लेकिन मैंने कह दिया कि मैं खड़ी ही ठीक हूं। उसके कुछ देर बाद बीट्रिस ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा, "तुम बैठ क्यों नहीं जातीं? तुम्हारा रंग मुरदों-जैसा सफेद हो रहा है।"

"मैं बिल्कुल ठीक हूं।" मैंने उत्तर दे दिया।

उसके बाद बाग़ में आतिशबाज़ी छूटने लगी और सब लोग वहां जाकर

तमाशा देखने लगे। सुरियां तीरों की तरह छूट रही थीं और आकाश उनके प्रकाश से सुनहरा हो रहा था। उस प्रकाश के बीच मैन्दरले मंत्रमुग्ध खड़ा था—उसकी हर खिड़की जैसे जल उठी थी और उसकी भूरी दीवारें फटते हुए सितारों से रंगीन हो उठी थीं।

जब आखिरी पटाखा छूट गया और भीड़ की उत्तेजना समाप्त हो गई तब वही रंगीन रात नीरस और बोझिल लगने लगी। लोग लॉन में से हट-हटकर फिर ड्राइंग रूम में इकट्ठे होने लगे और कुछ ही देर बाद कारों के स्टार्ट होने की आवाज सुनाई देने लगी।

लोग अपनी-अपनी गाड़ी की प्रतीक्षा में पंक्ति बांधे खड़े थे। मैक्सिम कमरे की दूसरी ओर थे। अतिथि हमें धन्यवाद देते और नाच-समारोह की प्रशंसा करते हुए विदा ले रहे थे। मैं झुक-झुककर और मुस्कराकर उनका अभिवादन कर रही थी, किन्तु मेरी आंखें मैक्सिम को ढूंढ रही थीं। वह लाइब्रेरी के द्वार पर भीड़ से घिरे खड़े थे। यही दशा बीट्रिस की भी थी। गाइल्स कुछ लोगों को ड्राइंग रूम में ले जाकर खाना खिला रहे थे।

धीरे-धीरे हॉल खाली हो गया। मैक्सिम फ्रैंक के साथ बाहर चले गये। बीट्रिस मेरे पास आईं और बोलीं, "तुम अब जाकर सो रहो, तुम बहुत ही थकी हुई दिखाई दे रही हो। सारी शाम तुम खड़ी रही हो। मर्द लोग कहां गये?"

"बाहर गये हैं।"

"मैं कुछ अंडे, मांस और कॉफी लेना चाहती हूं। तुम भी लोगी?"

"नहीं बीट्रिस, मैं कुछ नहीं लूंगी।"

"तुम इस नीले फ्रॉक में बड़ी ही सुन्दर लग रही हो। सभी ऐसा कह रहे थे और उस घटना की तो किसीको कानों-कान भी खबर नहीं हुई, तुम चिन्ता न करो।"

"नहीं।"

"अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो ऐसी तानकर सोती कि आसानी से उठती ही नहीं। कल सवेरे देर तक सोती रहती। जल्दी उठने की जरूरत भी क्या है? बिस्तर में ही नाश्ता कर लेना।"

"हां, शायद ऐसा ही करूंगी ।"

"अच्छा, अब तुम ऊपर जाओ । मै मैक्सिम से कह दूंगी ।"

"हां, कह देना ।"

"अच्छा जाओ, डटकर सोना ।" यह कहकर वीट्रिस ने मेरे कंधे थपथपाते हुए मेरा चुम्बन लिया और फिर वह गाइल्स को ढूंढने चल दी। मैं धीरे-धीरे, एक-एक सीढ़ी चढ़ने लगी । बैंडवालों ने गैलरी की बिजली बुझा दी थी और वे बाहर कुछ खाने-पीने चले गए थे । कुर्सियां इधर-उधर खिसकी हुई थीं और राखदानी में सिगरेट के टोंटे भरे हुए थे। मेज़ पर खाली गिलासों का ढेर लग रहा था । मैंने कमरे में जाकर अंधेरा करने के लिए खिड़कियों के पर्दे डाल दिये, फिर भी सुबह की लाली पर्दों के इधर-उधर से होकर कमरे में आ रही थी ।

मैं बिस्तर पर पड़ गई। मेरी टांगों और कमर में दर्द हो रहा था। मैंने लेटकर आंखें बन्द कर लीं और चाहा कि मेरा मस्तिष्क भी मेरे शरीर की ही तरह चुपचाप पड़ा रहे । उसमें गाने की गूंज, भीड़ का शोर-गुल और बातचीत की भिनभिनाहट न घुसने पाये । मैंने अपनी आंखों को अपने हाथ से दबा लिया, किन्तु मेरे मस्तिष्क में वही शोरगुल, वही हो-हल्ला करता रहा ।

मैं सोचने लगी कि न जाने मैक्सिम कब आयेंगे । बराबर का बिस्तरा सूना-सूना और ठंडा-ठंडा लग रहा था ।

घड़ी टिकटिक करती रही । सूई आगे बढ़ती रही । घंटे के निशान को पारकर वह नई राह पर चल दी, किन्तु मैक्सिम नहीं आये ।

: २० :

सात बजे के कुछ बाद मैं सो गई । दिन निकल आया था और खुली खिड़की से झांकती हुई सूरज की किरणें दीवार पर अनेक प्रकार के चित्र बना रही थीं । नीचे बाग में आदमियों के मेज़-कुरसियां हटाने की आवाज आ रही थी। मैक्सिम का बिस्तरा अभी तक खाली था । मैं अपनी बाहों से आंखें ढंके बिस्तरे पर चित पड़ी थी । ऐसे ही में न जाने कब नींद आ गई । जब मैं जागी तब

ग्यारह बज चुके थे। मेरे सोते-सोते ही क्लैराइस चाय लाकर रख गई थी, जिसका मुझे पता भी नहीं लगा था। मेरे बराबरवाली मेज़ पर चायदानी बरफ़ जैसी ठंडी पड़ी थी। मेरे कपड़े ठीक कर दिये गए थे और मेरा नीला फ्रॉक आलमारी में रख दिया गया था।

थोड़ी देर की गहरी नींद के बाद मैं उठी और वही ठंडी चाय पीने लगी। मेरी आंखें अब भी झंपी-झंपी-सी थीं और मेरा सिर भारी हो रहा था। मैक्सिम के बिस्तर को खाली देखकर मुझे रात की घटना का स्मरण हो आया। मेरे हृदय को एक चोट-सी लगी और बीती घटनाओं की पीड़ा ने मुझे एक बार फिर आ दबोचा। मैक्सिम रात सोने आये ही नहीं थे। बिस्तर की चादर पर उनका पाजामा तह किया हुआ रखा था। मैं सोचने लगी कि जब क्लैराइस चाय लेकर कमरे में आई होगी तब उसने क्या सोचा होगा। उसकी नजर खाली बिस्तर पर ज़रूर गई होगी और उसने बाहर जाकर दूसरे नौकरों से भी यह बात कही होगी।

लेकिन मुझे नौकरों के कहने-सुनने की इतनी चिन्ता क्यों हो? इसी चिंता के कारण तो कल रात मैं नीला फ्रॉक पहनकर नीचे चली गई थी। निश्चय ही मैं मैक्सिम या बीट्रिस या मैन्दरले की खातिर नीचे नहीं गई थी। मैं इस खयाल से नीचे गई थी कि लोग-बाग यह न समझें कि मेरा मैक्सिम से कुछ झगड़ा हो गया है।

मैं अपने बिस्तर पर बैठी हुई मैक्सिम के खाली बिस्तर को देख रही थी और सोच रही थी कि अगर किसीका ब्याह असफल हो जाय, और वह भी मेरे ब्याह की तरह तीन महीने में ही तो इससे बढ़कर शरम की बात और क्या हो सकती है। रात की घटना ने मेरी आंखों के सामने से परदा हटा दिया था। अब शंका की कोई गुंजाइश नहीं रह गई थी। हमारा ब्याह सफल नहीं हो सका था। हम साथी नहीं थे, हम एक-दूसरे से मेल नहीं खाते थे। मैं मैक्सिम के लिए बहुत छोटी थी, बहुत अनुभवहीन थी और इससे भी बड़ी बात यह थी कि मैं उनके संसार की नहीं थी। मैं उनसे प्रेम करती थी, मैं उनके प्रेम में मतवाली थी, लेकिन उन्हें ऐसे प्रेम की आवश्यकता नहीं थी। वह मुझसे कुछ चाहते थे।

वह मुझसे वही चाहते थे, जो उन्हें पहले मिला था, लेकिन यह सब मैं उन्हें नहीं दे सकती थी। अपनी जवानी के जोश में मैं यह सोचकर मैक्सिम से ब्याह करने को तैयार हो गई थी कि मैं उन्हें प्रसन्न रख सकूंगी। किन्तु यह एक भ्रम था, मन का एक भुलावा मात्र था। श्रीमती हॉपर तक यह समझ गई थीं कि मैं भूल कर रही हूं। उन्होंने कहा था—'तुम्हें इसके लिए पछताना पड़ेगा, तुम एक बहुत बड़ी भूल करने जा रही हो।' मैंने उन्हें कठोर और निष्ठुर समझा था। मैंने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया था, लेकिन उन्होंने जो कुछ कहा था, ठीक ही कहा था। विदा लेते समय उन्होंने चेतावनी दी थी—तुम इस भुलावे में मत रहना कि मिस्टर द विंतर तुमसे प्रेम करते हैं। वह अकेले हैं और सूना-सूना घर उन्हें काटने दौड़ता है।' उनकी यह चेतावनी अक्षरशः सत्य थी। सचमुच ही मैक्सिम मुझसे प्यार नहीं करते थे। जिसे मैं प्यार समझती थी, वह केवल इतना था कि वह पुरुष थे, अकेले थे और मैं उनकी पत्नी थी, जवान थी। वह मेरे नहीं थे, वह रेबेका के थे। वह रेबेका के कारण मुझसे कभी प्रेम नहीं कर सकते थे। श्रीमती डैन्वर्स ने ठीक ही कहा था कि रेबेका अब भी उस घर में है। पश्चिमी हिस्से के कमरे में, लाइब्रेरी में, सुबहवाले कमरे में, ऊपर गैलरी में, सब जगह—हां, सब जगह—फूलवाले कमरे में भी, बाग में, जंगल में, समुद्र के किनारे नाव-घर में उसके चलने-फिरने की आवाज अब भी सुनाई देती थी। उसके कपड़ों में लगे इत्र की सुगन्ध अब भी चारों ओर फैली हुई थी। नौकर अब भी उसीके आदेश मानते थे। हम वही खाना खाते थे, जो उसे पसन्द थे, कमरों में वे ही फूल सजाये जाते थे, जो उसे भाते थे, उसके कपड़े आलमारी में थे, उसके ब्रुश टेबुल पर थे, उसके सलीपर कुरसी के नीचे रखे थे और उसका रात का ड्रेस उसके पलंग पर सजा हुआ था। रेबेका अब भी मैन्दरले की स्वामिनी थी। वह अब भी श्रीमती द विंतर थी। मेरा वहां कोई काम नहीं था। मैं तो वहां एक मूर्ख की तरह घुस आई थी। जब मैं मैक्सिम की दादी से मिलने गई तब उन्होंने चिल्लाकर पूछा था—'रेबेका कहां है ? तुझे रेबेका चाहिए। तुम लोगों ने उसे क्या कर दिया ?' वह मुझे नहीं जानतीं, मुझे नहीं चाहतीं। उन्हें मेरी परवाह नहीं है। हो भी क्यों ? मैं एक अजनबी

हूं, मेरा मैक्सिम से, मैन्दरले से कोई सम्बन्ध नहीं है। बीट्रिस ने भी तो पहली बार यही कहा था, 'तुम रेबेका से बहुत भिन्न हो।' फ्रैंक खुलकर कुछ नहीं कहते, लेकिन मेरे बहुत पूछने पर उन्होंने यही तो कहा था—'उस जैसी सुन्दरी मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखी !'

रेबेका ! जिधर देखो उधर ही रेबेका ! लेकिन जिस तरह वह हर घड़ी, हर क्षण मेरे दिमाग़ पर छाई रहती है, क्या उसी तरह मैं भी उसपर नहीं छाई रहती होऊंगी ? जैसा कि श्रीमती डैन्वर्स ने कहा था, वह भी तो ऊपर गैलरी में से मुझे देखती है—जब मैं मेज़ पर चिट्ठियां लिखने बैठती हूं तब मेरी बगल में आ बैठती है। वह बरसाती, वह रूमाल पहले उसके थे, लेकिन उनका इस्ते-माल अब मैं करती हूं। जैस्पर उसका था, लेकिन अब वह मेरे पीछे-पीछे दौड़ता है। बाग में ये जो गुलाब लहलहा रहे हैं, वे सब उसके थे, लेकिन उन्हें अब मैं तोड़ लेती हूं। तो क्या वह भी इसका वैसा ही बुरा मानती होगी, जैसा मैं मानती हूं ? क्या वह भी मुझसे वैसे ही डरती होगी, जैसे मैं उससे डरती हूं ? क्या वह यह नहीं चाहती होगी कि मैक्सिम एक बार फिर इस घर में उसे अकेले मिलें ? जो जीवित है, उससे तो मैं लड़ सकती हूं, लेकिन जो मर चुकी है, उससे कैसे लड़ूं। अगर लन्दन में कोई ऐसी औरत होती, जिससे मैक्सिम प्रेम करते होते या जिसके पास वह आते-जाते और चिट्ठियां लिखते होते या जिसके साथ वह खाना खाते होते, सोते होते तो मैं उससे लड़ सकती थी, निडर होकर लड़ सकती थी। क्रोध और ईर्ष्या पर तो विजय पाई जा सकती है। कोई-न-कोई तो ऐसा दिन आता ही जब वह औरत बूढ़ी हो जाती, बदल जाती, थक जाती और मैक्सिम फिर कभी उससे प्यार न करते। लेकिन रेबेका तो कभी बूढ़ी नहीं हो सकती, वह तो सदा एक-सी ही बनी रहेगी, मैं उसके साथ नहीं लड़ सकती, वह मुझसे बहुत प्रबल है।

मैंने बिस्तर पर से उठकर परदे खींचकर एक ओर कर दिये। तभी मेरी दृष्टि एक काग़ज़ पर पड़ी, जो मेरे कमरे के दरवाजे के नीचे पड़ा था। मैंने उसे उठा लिया। वह बीट्रिस की लिखावट थी। उसने पेंसिल से घसीट में लिखा था—

मैंने तुम्हारा दरवाजा खटखटाया, लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला ऐसा। लगता है, तुमने मेरी सलाह मान ली और रात खूब सोईं। गाइल्स के पास फोन आया है। उन्हें दो बजे कहीं खेलने जाना है। इसलिए वह जल्दी चलने को कह रहे हैं। फ्रिथ से मालूम हुआ है कि मैक्सिम बहुत तड़के ही नाश्ता करने आ गये थे और अब उनका कोई पता नहीं है। उनसे हमारा स्नेह कह देना। रात की पार्टी के लिए तुम दोनों को बहुत-बहुत धन्यवाद। पोशाक की बात अब फिर मत सोचना (इस वाक्य के नीचे एक मोटी लाइन खींची हुई थी)

—तुम्हारी प्यारी बी

नीचे फिर से लिखा था—तुम दोनों हमसे मिलने जल्दी आना।

पत्र पर उन्होंने साढ़े नौ का समय लिखा था और अब साढ़े ग्यारह का समय था। उन्हें गये हुए दो घण्टे हो चुके थे।

कुछ क्षणों के लिए बीट्रिस और गाइल्स के चित्र मेरी आंखों के सामने खिंच गये। वे दोनों ही प्रौढ़ थे, प्रेम-लीलाओं से दूर। उनका व्याह हुए बीस वर्ष बीत चुके थे, उनके एक लड़का था, जो पढ़ने के लिए ऑक्सफोर्ड जानेवाला था। उनकी शादी बहुत सफल सिद्ध हुई थी, मेरी तरह तीन महीने में ही असफल नहीं हो गई थी।

मैं अब अधिक देर तक बिस्तर पर नहीं बैठ सकी, मैंने सोचा कि नौकरानियां कमरा ठीक करने की इंतजार में होंगी। मैं नहीं चाहती थी कि उन्हें पता लगे कि रात मैक्सिम बिस्तर पर नहीं सोये थे। मैंने उठकर उनके बिस्तर को मसोस दिया, जिससे कि ऐसा लगे जैसे वह वहां सोये हों। फिर मैं नहाई और कपड़े बदलकर नीचे गई। हाल से फरश हटाया जा चुका था, पुराने फूल भी फेंके जा चुके थे। लॉन की सफ़ाई हो रही थी। थोड़ी ही देर में वहां नाच का नाम-निशान भी नहीं रह जानेवाला था। तैयारियों में कितना समय लगा था और सफ़ाई कितनी जल्दी हो गई।

रॉबर्ट खाने की मेज पर पॉलिश कर रहा था। मैंने उससे पूछा—

"रॉबर्ट, क्या मिस्टर द विंतर को कहीं देखा है ?"

"वह तो नाश्ते के तुरन्त बाद ही कहीं चले गये थे, मैडम। उस समय तक

तो मेजर और मिसेज लेसी भी नीचे नहीं आये थे। तबसे वह नहीं लौटे हैं।"

"तुम्हें नहीं पता वह कहां गये हैं ?"

"नहीं, मैडम ! मुझे कुछ पता नहीं।"

मैं हॉल में घूमती-घामती ड्राइंग रूम में से होकर अपने सुबहवाले कमरे में पहुंची। वहां से मैंने दफ्तर को टेलीफोन किया—यह सोचकर कि शायद मैक्सिम फ्रैंक के साथ हों। मैं मैक्सिम से बात करने के लिए आतुर थी, चाहे दो ही मिनट के लिए सही। मैं उनसे स्पष्ट कर देना चाहती थी कि रात मैंने जो कुछ किया था, जान-बूझकर नहीं किया था।

क्लर्क ने बताया, "मैक्सिम वहां नहीं हैं। मिस्टर क्राउले हैं, अगर आप चाहें तो उनसे बात कर सकती हैं।" मैं मना करनेवाली ही थी कि उसने टेलीफोन क्राउले को थमा दिया और उनकी आवाज सुनाई दी, "क्या कोई खास बात है ?"

"फ्रैंक ! मैं बोल रही हूं ! मैक्सिम कहां हैं ?"

"मुझे पता नहीं ! आज सवेरे से ही मैंने उन्हें नहीं देखा।"

"दफ्तर में नहीं आये थे ?"

"नहीं।"

"खैर, कोई बात नहीं।"

"नाश्ते के समय वह आपसे नहीं मिले थे क्या ?"

"नहीं, उस समय तक मैं जागी नहीं थी।"

"उन्हें नींद कैसी आई ?"

मैं कुछ ठिठकी। फ्रैंक ही एक ऐसा आदमी था, जिससे मैं कुछ छिपाना नहीं चाहती थी। बोली—"रात तो वह कमरे में सोने आये ही नहीं।"

कुछ देर के लिए फोन के उस ओर से कोई आवाज नहीं आई। शायद फ्रैंक उत्तर देने के लिए कुछ सोच रहे थे।

"मुझे इसकी कुछ-कुछ पहले से ही आशंका थी।" फ्रैंक ने कुछ क्षरा बाद धीमे स्वर में कहा।

"फ्रैंक ! सब लोगों के चले जाने के बाद उन्होंने कल रात क्या कहा था ?

तुम सब क्या करते रहे थे ?"

"मैंने गाइल्स और श्रीमती लेसी के साथ एक सैन्डविच खाया था। मैक्सिम नहीं आये थे, कुछ बहाना बनाकर वह लाइब्रेरी में चले गये थे। उसके फौरन बाद ही मैं घर लौट आया था। शायद श्रीमती लेसी कुछ बता सकें।"

"वह चली गई हैं। जाने से पहले वह एक परचा छोड़ गई थीं, जिसमें लिखा था कि वह मैक्सिम से नहीं मिल पाईं।"

"अच्छा !"

मुझे फ्रैंक के कहने का ढंग अच्छा नहीं लगा। वह कुछ अमंगल-सूचक-सा मालूम दिया।

"कुछ ख्याल है, वह कहां गये होंगे ?" मैंने पूछा।

"कुछ कह नहीं सकता, शायद घूमने चले गये हों।"

"फ्रैंक, मुझे उनसे मिलना जरूरी है। मुझे उनसे रात की बात साफ करनी है।"

फ्रैंक ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"मैक्सिम का ख्याल है कि ऐसा मैंने जान-बूझकर किया था।" मैं बोली और जिन आंसुओं को मैंने पिछले सोलह घण्टों से बरबस रोक रखा था वे मेरी आंखों से बाढ़ की तरह फूट निकले।

"मैक्सिम सोचते हैं कि मैंने उनसे मज़ाक किया था, एक गन्दा, बेहूदा मज़ाक।" मैंने फिर कहा।

"नहीं-नहीं, ऐसी बात नहीं है।" फ्रैंक ने कहा।

"नहीं, वह यही सोचते हैं। उस समय से वह न मुझसे बोले हैं, न उन्होंने मेरी ओर देखा है। कल शाम हम पास-पास खड़े रहे, लेकिन एक-दूसरे से एक शब्द भी नहीं बोले।"

"इसके लिए कोई अवसर ही न मिला। वहां बहुत सारे आदमी जमा थे। मैंने भी सबकुछ देखा था, लेकिन आप तो जानती हैं कि मैं मैक्सिम को बहुत अच्छी तरह समझता हूं। सुनिये..."

"मैं उन्हें दोष नहीं दे रही हूं, लेकिन अगर उन्हें यह विश्वास है कि मैंने

ऐसा गन्दा मजाक जान-बूझकर किया हैं तो उन्हें अधिकार है कि मेरे बारे में जो कुछ चाहें सोचें, मुझसे कभी बोलें, चाहे न बोलें; मिलें चाहे न मिलें।"

'नहीं-नहीं, आपको ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए। आप नहीं समझतीं कि आप क्या कह रही हैं। मैं अभी आपसे मिलने आ रहा हूं। शायद मैं आपको सब बातें समझा सकूं।"

फ्रैंक के आने से क्या लाभ हो सकता था? यही तो कि वह मेरे पास बैठकर कुछ सान्त्वना देते, कुछ समझाते-बुझाते। लेकिन अब मुझे किसीकी कृपा की आवश्यकता नहीं रह गई थी। इसके लिए बहुत देर हो चुकी थी।

मैं बोली, "नहीं, अब मैं इस बात पर और ज़्यादा माथापच्ची करना नहीं चाहती। जो हो चुका है, वह बदला नहीं जा सकता। शायद वह अच्छा ही हुआ। इससे मुझे वह बात समझ में आ गई है, जो पहले ही आ जानी चाहिए थी, जिसकी ब्याह से पहले ही मुझे कल्पना कर लेनी चाहिए थी।"

"आपका मतलब क्या है?"

इस बार फ्रैंक की आवाज़ बड़ी तीखी थी। मैं सोच नहीं पा रही थी कि अगर मैक्सिम मुझसे प्यार नहीं करते हैं तो इसकी फ्रैंक को क्यों चिन्ता होती है।

"मेरा मतलब उनके और रेबेका के सम्बन्ध से है।" मैंने उत्तर दिया।

फ्रैंक एक क्षण के लिए चुप रहे। फिर और भी तेज आवाज़ में बोले—

"आपका क्या मतलब है? आपका मतलब क्या है?"

"वह मुझे नहीं, रेबेका को प्यार करते हैं। वह उसे भूल नहीं सके हैं। वह दिन-रात उसीके बारे में सोचते रहते हैं। उन्होंने मुझे कभी प्यार नहीं किया। वह सदा रेबेका को, हां रेबेका को, केवल रेबेका को प्यार करते रहे हैं।"

मुझे फोन पर फ्रैंक की अचम्भे से भरी हुई चीख़ सुनाई दी, किन्तु मैंने इस बात की चिन्ता नहीं की और फिर कहा, "अब तो तुम समझ गये कि मैं क्या महसूस करती हूं, समझ गये न?"

"सुनिये, मुझे आपसे मिलने आना ही होगा। सुना आपने? मुझे आना ही पड़ेगा। मेरा आना बहुत आवश्यक है। मैं टेलीफ़ोन पर बातें नहीं कर सकता। श्रीमती द विंतर? श्रीमती द विंतर..."

मैंने रिसीवर पटक दिया और मैं लिखनेवाली मेज़ से उठ खड़ी हुई। मैं फ्रैंक से मिलना नहीं चाहती थी। वह मेरी कुछ भी सहायता नहीं कर सकते थे। इस मामले में मेरे सिवा और कोई मेरी सहायता नहीं कर सकता था। मैं अपने रूमाल के किनारों को दांतों से फाड़ती हुई बड़ी बेचैनी से कमरे में इधर-से-उधर टहलने लगी।

मुझे लग रहा था कि अब मैं मैक्सिम को कभी नहीं देख पाऊंगी। वह कहीं दूर चले गये हैं और अब वापस नहीं आयेंगे। मैं मन-ही-मन में समझ रही थी कि फ्रैंक को भी ऐसी ही आशंका है, लेकिन वह फ़ोन पर यह कहना नहीं चाहते। शायद वह मुझे डराना नहीं चाहते थे।

मैं बाहर बरामदे में चली गई। समुद्र की ओर से एक कुहरा-सा उठता चला आ रहा था और सूरज उसमें डूब गया था।

बरामदे से उतरकर मैं लॉन में पहुंची और फिर जंगल की ओर चल दी। वृक्षों पर से कुहरे की नमी मेरे नंगे सिर पर पतली फुहार जैसी गिर रही थी। जैस्पर मेरे पैरों के पास अपनी गुलाबी जीभ लटकाये खड़ा था। मैं जहां खड़ी थी, वहां से समुद्र का शब्द सुनाई दे रहा था। कुहरा बढ़ रहा था और मैंने घर की ओर देखा तो वह कुहरे में अदृश्य हो चुका था। विशाल मैन्दरले एक छाया-जैसा दिखाई दे रहा था। उसके पश्चिमी भाग के बड़े कमरे की एक खिड़की खुली मालूम देती थी और वहां कोई खड़ा हुआ लॉन की ओर देख रहा था। आकृति बिल्कुल धुंधली थी और एक क्षण के लिए तो मुझे ऐसा लगा जैसे वह मैक्सिम हैं। किन्तु वह सूरत हिली और मुझे खिड़की बन्द करते हुए किसीकी बांह दिखाई दी। मैं समझ गई कि वह श्रीमती डैन्वर्स है और शायद सवेरे से ही छिप-छिपकर मेरी गति-विधि को देख रही है। सम्भव है, फ्रैंक से मैंने टेलीफोन पर जो कुछ कहा था, उसे भी उसने सुना हो और उसे मेरे रोने और रात को मैक्सिम के मेरे कमरे में न आ जाने की बात भी मालूम हो।

सहसा मैं घर की ओर चल दी और लॉन, हॉल, ड्राइंग रूम तथा सीढ़ियों को पार करके पश्चिमी भाग के रेबेका के कमरे में जा पहुंची। श्रीमती डैन्वर्स

अब भी वहां खिड़की के पास खड़ी थी।

"श्रीमती डैन्वर्स।" मैंने पुकारा। मेरी आवाज़ सुनकर वह मेरी ओर मुड़ी और मैंने देखा कि उसकी आंखें भी रोने के कारण मेरी ही तरह लाल हो रही थीं और सूजी हुई थीं। उसके सफेद चेहरे पर काले धब्बे पड़े हुए थे।

"क्या बात है?" वह बोली। उसकी आवाज़ आंसुओं के कारण भर आई थी।

मुझे उसे इस दशा में देखने की बिल्कुल भी आशा नहीं थी। मैं सोच रही थी कि वह मुस्करा रही होगी—कल की तरह, एक दुष्टा की भांति। किन्तु इस समय तो वह एक थकी हुई, बीमार-सी बूढ़ी औरत दिखाई पड़ रही थी। मेरी समझ में नहीं आया कि उससे क्या कहूं और मैं दरवाजे की मूठ पर हाथ रखे खड़ी रही। वह अपनी लाल सूजी हुई आंखों से मुझे देखती हुई बोली, "मैंने भोजन की सूची सदा की तरह मेज़ पर रख दी है। क्या आप उसमें कुछ बदलना चाहती हैं?"

उसके शब्दों से मुझमें कुछ साहस आया और मैं दरवाजे को छोड़कर कमरे के बीच में आ गई।

"श्रीमती डैन्वर्स," मैं बोली, "मैं तुमसे भोजन की सूची के बारे में बात करने नहीं आई हूं और यह बात शायद तुम जानती हो।"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

"तुम जो कुछ करना चाहती थीं, वह तुमने कर लिया न? तुमने यह सब जान-बूझकर किया। अब तो तुम प्रसन्न हो। अब तो तुम्हें चैन पड़ गया?"

उसने फिर अपना मुंह खिड़की की ओर मोड़ लिया और बाहर की ओर देखते हुए कहा, "आप यहां आई ही क्यों? मैन्दरले में आपकी किसीको जरूरत नहीं थी। आपके न आने तक हम सब मजे में थे। आप फ्रांस में ही क्यों नहीं रहीं, जहां आप पहले थीं?"

"शायद तुम भूल रही हो कि मैं श्री द विंतर से प्रेम करती हूं।"

"अगर आपको उनसे प्रेम होता तो आप उनसे कभी ब्याह नहीं करतीं।"

मेरी समझ में नहीं आया कि मैं क्या उत्तर दूं। सबकुछ मुझे स्वप्न-सा,

अस्वाभाविक-सा दिखाई दे रहा था और वह उसी तरह मेरी ओर से मुंह फेरे बोलती चली जा रही थी—

"मुझे खयाल था कि मैं आपसे नफ़रत करती हूं, लेकिन मुझमें अब कोई भावना ही नहीं रह गई है, सबकुछ समाप्त हो चुका है।"

"तुम्हें मुझसे नफरत क्यों है ? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?"

"आपने श्रीमती द विंतर का स्थान लेना चाहा।"

"मैंने तो कोई परिवर्तन नहीं किया। मैन्दरले सदा से जैसा था वैसा ही है। मैंने कोई आज्ञा नहीं दी, सब काम तुमपर छोड़ दिया और अगर तुमने चाहा होता तो हमारी मित्रता भी हो गई होती, लेकिन तुमने पहले दिन से ही मेरा विरोध किया, तुमसे पहली बार हाथ मिलाते ही मैंने तुम्हारे मुंह पर यह भाव देख लिया था।"

वह बोली नहीं और खिड़की का दरवाजा खोलती-बन्द करती रही।

"बहुत-से लोग दुबारा शादी करते हैं, पुरुष भी, स्त्रियां भी। हर रोज ही हजारों दूसरी शादियां होती हैं। लेकिन तुम तो ऐसे कह रही हो, जैसे मैंने श्री द विंतर से ब्याह करके कोई अपराध किया है। क्या हमें भी दूसरों की ही तरह प्रसन्न रहने का अधिकार नहीं है ?"

"लेकिन श्री द विंतर प्रसन्न नहीं हैं, यह बात तो कोई मूर्ख भी समझ सकता है। उनकी आंखों में झांककर देखिये। वह अब भी नरक-जैसी यातना भोग रहे हैं। जबसे श्रीमती द विंतर मरी हैं तबसे उनकी यही दशा है।"

"नहीं, यह सत्य नहीं है, यह सत्य नहीं है। जब हम फ्रांस में थे तब वह बहुत प्रसन्न थे, वह बहुत जवान मालूम देते थे और हर समय हँसते-खेलते रहते थे।"

"वह एक पुरुष हैं और कोई भी पुरुष सुहागरात के आनन्द को खोना नहीं चाहता। श्री द विंतर तो अभी छियालीस वर्ष के भी नहीं हैं।" यह कहकर श्रीमती डैन्वर्स एक घृणित हँसी हँसी और उसने अपने कंधे हिलाये।

"तुम्हें मुझसे इस तरह बोलने की हिम्मत कैसे हो रही है ?" मैंने उसके पास जाकर उसे झकझोरते हुए कहा। अब मुझे उससे डर नहीं लग रहा था।

"रात तुमने मुझे जान-बूझकर वह पोशाक पहनाई !" मैंने कहा, "अगर तुम न बतातीं तो उसकी ओर मेरा ध्यान भी न जाता। तुमने यह काम सिर्फ इसलिए किया कि तुम श्री द विंतर को चोट पहुंचाना चाहती थीं। क्या तुम समझती हो कि तुम्हारी इन हरकतों से श्रीमती द विंतर फिर वापस आ सकती हैं ?"

उसने अपनेको झटके के साथ मुझसे छुड़ा लिया और उसका सफेद, निर्जीव चेहरा क्रोध से लाल हो गया, "मुझे श्री द विंतर की पीड़ा की कोई चिन्ता नहीं है। उन्होंने मेरी पीड़ा की कब चिन्ता की ? क्या आप सोच सकती हैं कि जब मैं आपको रेबेका के स्थान पर बैठे देखती हूं, उनके रास्तों पर चलते देखती हूं, उनकी चीजों को छूते देखती हूं, तब मुझे कैसा लगता है ? आपने महीनों उनकी मेज पर बैठकर उनके कलम से लिखा है, उनके टेलीफोन से बातें की है। क्या आप सोच सकती हैं कि जब रॉबर्ट, फ्रिथ और दूसरे नौकर आपको श्रीमती द विंतर कहकर पुकारते हैं तब मुझपर क्या बीतती है ? वे कहते हैं, 'श्रीमती द विंतर घूमने गई हैं,' 'श्रीमती द विंतर को आज तीन बजे कार चाहिए', 'श्रीमती द विंतर पांच बजे तक चाय पीने नहीं आयंगी', और उस समय मेरी श्रीमती द विंतर, सुन्दर मुखड़े और मोहक मुस्कानोंवाली असली श्रीमती द विंतर कब्र में निर्जीव और ठंडी पड़ी होती हैं। अगर श्री द विन्तर को पीड़ा होती है तो ठीक ही तो है। उन्होंने जैसा किया, वैसा भरें। दस महीने बाद ही उन्होंने तुम जैसी कम उम्र की लड़की से विवाह कर लिया। अब उन्हें इसका फल मिल रहा है। मैं उनकी आंखें देखती हूं, उनका चेहरा देखती हूं, लेकिन मैं क्या कर सकती हूं। उन्होंने अपने ही हाथों अपने लिए गढ़ा खोदा है। वह जानते हैं कि रेबेका उन्हें देखती हैं, वह जानते हैं कि वह रात को आती हैं और उन्हें करुणा की दृष्टि से नहीं, बल्कि प्रतिहिंसा की दृष्टि से देखती हैं। वह उन आदमियों में से नहीं थीं, जो चुपचाप खड़े रहकर अपने प्रति अन्याय होते देखें। उनमें मर्दों जैसा साहस था और मैं उनसे अक्सर कहा करती थी कि आप लड़की नहीं लड़का हैं। मैंने उनकी अपने बच्चे की तरह देखरेख की थी। आप भी जानती हैं इस बात को। क्यों जानती हैं न ?"

"लेकिन यह सब कहने से लाभ क्या होगा, श्रीमती डैन्वर्स, मैं अधिक सुनना नहीं चाहती, आखिर मेरे पास भी हृदय है, मुझमें भी भावनाएं हैं। क्या तुम सोच सकती हो कि तुम्हारा इस तरह रेबेका के बारे में बातें करना मुझे कैसा लग रहा होगा ?"

उसने जैसे कुछ सुना ही नहीं। वह पागलों की तरह अपनी लम्बी अंगुलियों से अपने कपड़ों के काले धागों को खींचती और मरोड़ती हुई बड़बड़ करती रही—

"वह सुन्दर थीं, तस्वीर की तरह सुन्दर। अभी वह बारह बरस की भी नहीं हो पाई थीं कि उनके आस-पास से आने-जानेवाले लोग उन्हें घूर-घूरकर देखते थे। वह इन बातों को समझती थीं और एक शैतान बच्ची की तरह मेरी ओर आंखें मारकर कहती थीं—'डैनी, मैं एक सुन्दरी बनूंगी।' उस छोटी-सी उमर में ही उनमें बड़ों-जैसी बुद्धि थी। वह लोगों से ऐसी चपलता और चतुराई से बातें करती थीं जैसे अठारह वर्ष की युवतियां करती हैं। अपने पिता को तो वह अपनी कनकी अंगुली पर नचा देती थीं। मां जीवित होतीं तो उन्हें भी वह ऐसे ही नचातीं। उनमें जोश था, उमंग थी, जिसकी बराबरी आप नहीं कर सकतीं। उन्होंने अपनी चौदहवीं सालगिरह पर घुड़सवारी में अपने चचेरे भाई फ़ेवेल को बुरी तरह पछाड़ दिया था। उनकी जोड़ी बहुत अच्छी थी, रेबेका की और जैक फ़ेवेल की। फ़ेवेल समुद्री सेना में भेज दिये गए थे, लेकिन वहां के नियम वह नहीं निभा सके, जिसके लिए मैं उन्हें दोषी नहीं ठहराती। वह किसी की आज्ञा में बंधकर नहीं रह सकते थे, ठीक रेबेका की ही तरह।"

मंत्रमुग्ध और भयभीत-सी मैं श्रीमती डैन्वर्स को देखे जा रही थी। उसके होठों पर एक विचित्र मुस्कान खेल रही थी—एक ऐसी मुसकान, जिसके कारण वह और भी बूढ़ी लगने लगी थी और उसकी बड़ी खोपड़ी और भी उभर आई थी। वह कहे जा रही थी—

"उनके जो जी में आता था, वही करती थीं। जैसे मन में आता था वैसे ही रहती थीं। उनमें एक शेर के बच्चे जैसी शक्ति थी। अपनी सोलहवीं सालगिरह पर उन्होंने अपने पिता के एक घोड़े को, एक बड़े जंगली घोड़े को सवारी करके बस में कर लिया था। मुझे अच्छी तरह याद है—उनके बाल हवा में उड़ रहे

थे, घोड़ा बेतहाशा भागा जा रहा था और वह थीं कि उसे कोड़े-पर कोड़े लगाये जा रही थीं, उसकी जांघ में कस-कसकर एड़ लगाये जा रही थीं, और जब वह उसकी पीठ पर से उतरी थीं तब घोड़ा थर-थर कांप रहा था, उसका मुंह झागों और खून से भरा हुआ था। 'अब इसे जन्म भर याद रहेगा', उन्होंने कहा था और वह शान्ति के साथ अपने हाथ धोने चली गई थीं। ठीक यही साहस, यही वीरता उन्होंने बड़े होकर अपने जीवन में दिखाई थी। उन्होंने किसी बात की, किसी आदमी की परवाह नहीं की और अन्त में जब उनकी हार हुई, तब किसी पुरुष से नहीं, किसी स्त्री से नहीं, वह समुद्र से हारीं। समुद्र उनके लिए बहुत शक्तिशाली सिद्ध हुआ।"

यह कहते-कहते श्रीमती डैन्वर्स फूट-फूटकर रोने लगी। उसका मुंह खुला हुआ था और आंखें सूखी थीं।

"श्रीमती डैन्वर्स," मैं बोली, "श्रीमती डैन्वर्स।" मैं उसके सामने बिल्कुल असहाय खड़ी थी। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं? उस समय न मुझे उसपर अविश्वास हो रहा था, न उससे डर लग रहा था। किंतु उसके इस तरह रोने से मुझे कंपकंपी छूट रही थी, मैं बड़ी बेचैन हो रही थी। "श्रीमती डैन्वर्स," मैंने कहा, "तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है, तुम्हें जाकर आराम करना चाहिए। जाओ तुम अपने कमरे में जाओ और लेट रहो।"

वह क्रोध में भरकर मेरी ओर मुड़ी और बोली, "मुझे अकेली छोड़ दीजिये। अगर मुझे रंज हो रहा है तो उससे आपको क्या? मुझे इस तरह रोने में शर्म नहीं आती। मैं कमरे में बन्द होकर नहीं रोती हूं। मैं श्री दविंतर की तरह दरवाजा बन्द करके कमरे के चक्कर नहीं काटती।"

"तुम्हारा क्या मतलब है? श्री द विंतर तो कभी ऐसा नहीं करते।"

"उन्होंने ऐसा किया था, रेबेका के मरने के बाद ऐसा किया था। वह लाइब्रेरी को बन्द करके चक्कर काटते रहते थे, चक्कर काटते रहते थे। मैंने उनके पैरों की आवाज सुनी थी, ताले के सूराख में से झांककर देखा था। ऐसा लगता था जैसे पिंजरे में कोई जानवर बन्द हो।"

"लेकिन मैं यह सब नहीं सुनना चाहती, नहीं जानना चाहती।"

"और आप कहती हैं कि आपने सुहागरात के दिनों में उन्हें सुखी बना दिया था। एक अनुभवहीन बच्ची ने, जो उनकी बेटी होने लायक है! आप जीवन के विषय में क्या जानें? आप पुरुषों के बारे में क्या जानें? आपने यहां आकर सोचा कि आप श्रीमती द विन्तर का स्थान ले सकती हैं। आप जब मैन्दरले आई थीं तब आपपर नौकर तक हँसे थे। मेरी समझ में नहीं आता कि सुहागरात मनाने के बाद जब श्री द विन्तर आपको यहां लाये तब उनपर क्या बीती? जब उन्होंने आपको पहले-पहल खाने की मेज पर बैठे देखा तब उनके मन में क्या भाव उठे?"

"बस करो, श्रीमती डैन्वर्स, बस करो। जाओ तुम अपने कमरे में चली जाओ।"

"अपने कमरे में चली जाऊं, अपने कमरे में चली जाऊं।" उसने नक़ल बनाते हुए कहा, 'घर की स्वामिनी सोचती हैं कि मेरा कमरे में चला जाना ही अच्छा है, जिससे कि वह दौड़ती हुई श्री द विन्तर के पास पहुंचे और शिकायत करें कि श्रीमती डैन्वर्स ने मेरे साथ बुरा व्यवहार किया है। मैं जानती हूं कि आप उनके पास दौड़ी हुई जायंगी, ठीक वैसे ही जैसे फ़ेवेल के मुझसे मिलने आने पर दौड़ी गई थीं।"

"मैंने उनसे कभी यह बात नहीं कही।"

"यह झूठ है। आपने नहीं तो और किसने उन्हें बताया? वहां आपके सिवा और था ही कौन? रॉबर्ट और फ्रिथ बाहर गये हुए थे और दूसरे नौकरों को पता नहीं था। मैंने तभी तै कर लिया था कि इसका मैं आपसे और श्री द विन्तर से बदला लिये बिना नहीं रहूंगी। अगर श्री द विन्तर को पीड़ा होती है तो होने दो, इससे मुझे क्या! मैं जैक फ़ेवेल से यहां मैन्दरले में क्यों नहीं मिलूं? एक वही तो अब मेरे और श्रीमती द विन्तर के बीच की कड़ी रह गये हैं। और श्री द विन्तर कहते हैं—मैं फ़ेवेल को यहां नहीं आने दूंगा, मैं तुम्हें अन्तिम बार चेतावनी दे रहा हूं। अभी तक वह उससे ईर्ष्या करते हैं। जब श्रीमती द विन्तर जीवित थीं तब भी उससे ईर्ष्या होती थी और अब जब वह मर गई हैं तब भी ईर्ष्या होती है। अब भी वह जैक फ़ेवेल को पहले की ही तरह यहां

आने से मना करते हैं। किन्तु श्रीमती द विन्तर इसकी चिन्ता नहीं करती थीं, वह हँसकर मुझसे कहा करती थीं—'मैं जैसे रहना चाहूंगी वैसे ही रहूंगी, सारी दुनिया मिलकर भी मुझे नहीं रोक सकती।' जो भी उन्हें एक बार देख लेता था वही उनके पीछे दीवाना हो जाता था। लोग उनसे लन्दन में मिलते थे और उन्हें वह अपने साथ मैन्दरले ले आती थीं। नाव में उन्हें नहलाने ले जाती थीं और समुद्र के किनारे अपनी कॉटेज में उनके साथ पिक-निक करती थीं। वे उनसे प्रेम की बातें करते थे। कौन ऐसा था, जो अपने को रोक सकता। वह हँसा करती थीं और वापस आने पर मुझे बताती थीं कि लोगों ने क्या-क्या कहा, क्या-क्या किया। वह इन बातों की रत्ती भर भी परवा नहीं करती थीं। उनके लिए तो यह सब एक खेल था। सभी उनसे ईर्ष्या करते थे, सभी उनके पीछे दीवाने रहते थे—मिस्टर द विंतर, मिस्टर जैक, मिस्टर क्राउले—वे सभी लोग, जो उन्हें जानते थे, वे सभी लोग जो मैन्दरले आते थे।

"मैं यह सब जानना नहीं चाहती। मैं कहती हूं, मैं यह सब जानना नहीं चाहती।" मैंने अधीर होकर कहा।

लेकिन श्रीमती डैन्वर्स मेरे और भी पास आ गई और अपना मुंह मेरे पास लाकर बोलीं, "इससे कुछ काम नहीं बनेगा। आप उनपर हावी नहीं हो सकतीं। मरकर भी वही यहां की स्वामिनी हैं। वही असली श्रीमती द विंतर हैं, आप नहीं। छाया तो आप हैं, वह नहीं, भुलाई तो आप जा चुकी हैं, वह नहीं। आपकी यहां कोई आवश्यकता नहीं है। आप उनके लिए मैन्दरले क्यों नहीं छोड़ देतीं? आप यहां से चली क्यों नहीं जातीं?"

मैं उसके पास से हटकर खिड़की के पास खड़ी हो गई और मुझे उससे पहले की ही भांति फिर भय लगने लगा। लेकिन उसने मेरे पास आकर मेरी बांह को एक पापात्मा की तरह कसकर पकड़ लिया और कहा, "आप चली क्यों नहीं जाती हैं? इनमें से किसीको आपकी जरूरत नहीं है। मिस्टर द विंतर को भी आपकी जरूरत नहीं है। उन्हें कभी आपकी जरूरत नहीं रही है, वह श्रीमती द विंतर को भूल नहीं सकते। वह एक बार फिर उनके साथ

इस घर में अकेले रहना चाहते हैं। उस कब्र में तो आपको जाकर सोना चाहिए, मौत तो आपकी होनी चाहिए, श्रीमती द विंतर की नहीं।

उसने मुझे खुली खिड़की की ओर को ढकेला। मैंने नीचे की ओर देखा। कुहरे की सफ़ेद दीवार के बीच चबूतरा धुंधला-धुंधला दिखाई दे रहा था।

"नीचे की ओर देखिये," श्रीमती डैन्वर्स बोली, "कूदना कितना आसान है, है न ? तो फिर आप कूद क्यों नहीं पड़तीं ? आपको चोट नहीं लगेगी। गिरते ही आपकी गर्दन टूट जायगी और सबकुछ बड़ी जल्दी, बड़ी आसानी से समाप्त हो जायगा। इसमें डूबने जैसा कष्ट नहीं होगा। आप कोशिश क्यों नहीं करतीं, आप कूद क्यों नही पड़ती ?"

खुली खिड़की में से कुहरा घुस आया और मेरी आंख-नाक में भर गया। मैंने अपने दोनों हाथों से खिड़की की चौखट पकड़ ली।

"डरियें मत, मैं आपको धक्का नहीं दूंगी, मैं आपके पास खड़ी भी नहीं रहूंगी। आप अपने-आप कूद जाइये। यहां मैन्दरले में रहने से आपको लाभ ही क्या है ? आप प्रसन्न नहीं हैं। श्री द विंतर आपसे प्यार नहीं करते। आपके लिए जीवन बिल्कुल निस्सार है। आप कूदकर उसे समाप्त क्यों नहीं कर देतीं ?"

मैं नीचे की ओर झुककर पत्थरों को देखने लगी। वे ऊबड़-खाबड़ नहीं बल्कि चिकने थे और इतने दूर नहीं थे, जितने कुहरे के कारण दिखाई दे रहे थे। खिड़की भी बहुत ज्यादा ऊंची नहीं थी।

"आप कूद क्यों नहीं जातीं ?" श्रीमती डैन्वर्स ने मेरे कान के पास फुस-फुसाते हुए कहा, "आप कोशिश क्यों नहीं करतीं ?'

कुहरा और भी घना हो गया और नीचे का चबूतरा मेरी आंखों से ओझल हो गया। चिकने कटे हुए पत्थर अब दिखाई नहीं दे रहे थे। चारों ओर कुहरा-ही-कुहरा था, सफ़ेद घना कुहरा। श्रीमती डैन्वर्स ने ठीक ही कहा था—यदि मैं कूदूं तो नीचे के पत्थर मुझे दिखाई नहीं देंगे, कष्ट बहुत ही क्षणिक होगा। गिरने से मेरी गर्दन टूट जायगी और सबकुछ क्षण में ही समाप्त हो जायगा। मैक्सिम मुझे प्यार नहीं करते; वह फिर अकेले रेबेका के

साथ रहना चाहते हैं ।

"बढ़िये, डरिये मत ।" श्रीमती डैन्वर्स फिर फुसफुसाई ।

मैंने अपनी आंखें बन्द कर लीं । चबूतरे को देखते-देखते मुझे चक्कर आने लगे थे और चटखनी पकड़े-पकड़े मेरी अंगुलियां दुखने लगी थीं । कुहरा मेरी नाक में भरा जा रहा था और उसका खारा स्वाद मेरे होठों पर मालूम हो रहा था । उससे मेरा दम घुटा जा रहा था, मैं बेहोश-सी होती जा रही थी। मैं भूलने लगी थी कि मैं अप्रसन्न हूं, मैं भूलने लगी थी कि मै मैक्सिम को प्यार करती हूं । मैं रेबेका को भी भूलने लगी थी...

जैसे ही मैंने हाथ ढीले किये और लम्बा-सा सांस खींचा, अचानक एक धड़ाके की आवाज़ हुई और उससे मेरे पास की खिड़की और उसके शीशे हिल उठे । कुहरा एकदम फट गया और मैंने आंखें खोल दीं । श्रीमती डैन्वर्स सामने खड़ी थी। मैंने उसकी ओर घूरकर देखा । तभी दूसरा धड़ाका हुआ, और फिर तीसरा और चौथा। धड़ाकों की आवाज हवा में गूंज उठी और चिड़ियां शोर मचाती हुई जंगल में से उड़कर घर के पास चक्कर काटने लगीं ।

"यह क्या है ?" मैंने पूछा, "क्या हो गया है? "

श्रीमती डैन्वर्स ने मेरी बांह पर से अपनी पकड़ को ढीला कर दिया और खिड़की में से कुहरे की ओर देखते हुए कहा, "ये रॉकेट हैं, निश्चय ही कोई डूबा हुआ जहाज़ खाड़ी में उतर आया है ।"

हमने देखा, नीचे चबूतरे पर कुछ लोग दौड़े हुए जा रहे थे ।

: २१ :

वह मैक्सिम थे। मैं उन्हें देख तो नहीं सकी, किन्तु मुझे उनकी आवाज सुनाई दी । वह दौड़ते जा रहे थे और फ्रिथ को पुकार रहे थे । फ्रिथ ने हॉल में से उत्तर दिया और वह चबूतरे पर निकल आया । नीचे कुहरे में उनकी सूरतें चमक रही थीं ।

"जहाज किनारे पर ठीक से आ लगा है। मैं उसे ऊपर से देख

रहा था। वह सीधे खाड़ी में आकर चट्टानों की ओर बढ़ रहा था। लहरों के इस उतार के समय वे उसे ऊपर नहीं ले जा सकते। वे भूल से इस खाड़ी को ही कैरिथ बन्दरगाह समझ बैठे हैं। घर में कह देना कि खाने-पीने का इन्तजाम रखें। शायद जहाज के आदमियों को जरूरत पड़ जाय। और हां, दफ्तर में क्राउले को भी टेलीफोन करके इस घटना की सूचना दे देना। मैं वहां फिर जा रहा हूं, शायद मैं उनके लिए कुछ कर सकूं। मेरे लिए कुछ सिग-रेटें तो ले आओ।"

श्रीमती डैन्वर्स खिड़की से हट गई। उसका चेहरा फिर पहले ही जैसा भावहीन और सफेद हो गया था।

"अब नीचे चलना चाहिए। खाने-पीने का इन्तजाम करने के लिए फ्रिथ मुझे ढूंढेगा। शायद श्री द विंतर उन आदमियों को घर पर ले आयें। अपना हाथ हटा लीजिये। मैं दरवाजा बन्द कर रही हूं।"

मैं खिड़की से हटकर कमरे में आ गई और उसने खिड़की बन्द कर दी। मैं कुछ समझ नहीं पा रही थी। उसने कमरे में चारों ओर नजर दौड़ाई—यह देखने के लिए कि कहीं कोई चीज अस्त-व्यस्त तो नहीं हो गई है। फिर उसने बड़े पलंग की चादर ठीक की और दरवाजे के पास जाकर उसे मेरे लिए खोलकर खड़ी हो गई। मैंने उसकी ओर शून्य दृष्टि से देखा और एक काठ की पुतली की तरह मैं बाहर निकल आई।

"जब आप श्री द विंतर से मिलें तो कह दीजियेगा कि अगर वह चाहें तो आदमियों को घर ले आयें, उनके लिए गरम खाना हर समय तैयार मिलेगा।" उसने मुझसे कहा और फिर वह गैलरी की ओर जाकर अदृश्य हो गई। मैं धीरे-धीरे नीचे हॉल में पहुंची। वहां फ्रिथ भोजन के कमरे की ओर जाता हुआ दिखाई दिया। मुझे आते देखकर वह रुक गया और मेरे पहुंचने पर बोला, "अभी-अभी श्री द विन्तर आये थे। वह कुछ सिगरेटें लेकर फिर समुद्र के किनारे चले गये हैं। ऐसा लगता है कि वहां कोई जहाज आ फंसा है।"

"हां, ऐसा ही लगता है।"

"श्री द विंतर को गये अभी दो मिनट भी नहीं हुए। वह सीधे लॉन की

तरफ़ गये हैं। आप चाहें तो उन्हें पकड़ सकती हैं।"

"धन्यवाद फ्रिथ !" मैंने कहा और मैं बाहर चबूतरे पर पहुंची। मैंने सिर उठाकर ऊपर की खिड़कियों की ओर देखा। अभी पांच मिनट पहले मैं बीच-वाली बड़ी खिड़की के पास खड़ी थी। ओह ! वह मेरे सिर से कितनी ऊंची थी। मेरे पैरों के नीचे के पत्थर पक्के और कठोर थे। मैंने उन पत्थरों को ग़ौर से देखा और ऊपर खिड़की पर नज़र डाली। अचानक मुझे ऐसा लगा जैसे सिर चकरा रहा है। गरदन के पीछे से पसीने की धार बह निकली और आंखों के सामने काले-काले धब्बे दिखाई देने लगे। मैं हॉल में जाकर एक कुरसी पर घुटने पकड़कर बैठ गई। मेरे हाथ एकदम गीले हो रहे थे।

"फ्रिथ, फ्रिथ ! तुम खाने के कमरे में हो क्या ?"

"हां मैडम !" और वह फ़ौरन मेरे पास आया।

"फ्रिथ, मुझे थोड़ी-सी ब्रांडी ला दो।"

"अच्छा मैडम !" फ्रिथ फौरन गया और एक चांदी की तश्तरी में ब्रांडी की गिलसिया रख लाया।"

"क्या आपकी तबीयत कुछ खराब है, मैडम ? क्लैराइस को बुला दूं ?"

"नहीं, कोई ख़ास बात नहीं है, मैं अभी ठीक हो जाऊंगी। योंही कुछ गरमी-सी लग रही थी।"

"आज सवेरे-ही-सवेरे बड़ी गरमी हो रही है, मैडम ! दम-सा घुट रहा है।"

"हां फ्रिथ, मुझे भी ऐसा ही लग रहा है।"

मैंने ब्रांडी पीकर गिलसिया को फिर चांदी की तश्तरी में रख दिया।

"शायद आप धड़ाकों की आवाज़ से कुछ चौंक गई हैं। अचानक ही तो छूटने लगे थे।"

"हां, बिल्कुल ही अचानक।"

"कल सारी रात आप खड़ी भी तो रही थीं और ऊपर से सुबह-ही-सुबह इतनी ऊमस हो गई। इसीलिए शायद तबीयत ठीक नहीं होगी।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है।"

"आप लाइब्रेरी में चलकर घंटे-आध घंटे आराम कर लें। वहां अच्छी ठंडक है।"

"नहीं फ्रिथ ! मैं अभी दो-चार मिनट में ही बाहर जाऊंगी। तुम चिन्ता मत करो।"

"बहुत अच्छा।"

फ्रिथ चला गया और मैं हॉल में अकेली रह गई। कल की पार्टी का वहां नामनिशान भी नहीं रह गया था। मैं फिर बाहर चबूतरे पर निकल आई और सीटी बजाकर जैस्पर को बुलाने लगी। लेकिन वह नहीं आया, शायद वह मक्सिम के साथ चला गया था। मैंने घड़ी पर नजर डाली, एक बजने में क़रीब-क़रीब बीस मिनट थे। कल ठीक इसी समय मैं मैक्सिम और फ्रैंक के साथ बाग़ में खड़ी उनसे शर्त लगा रही थी—"मैं आप दोनों को आश्चर्यचकित कर दूंगी।"

इन शब्दों को याद कर मुझे अपने ऊपर लज्जा आई और मुझे यह सोचकर प्रसन्नता हुई कि मैक्सिम कहीं चले नहीं गये, जैसा कि मुझे भय था। चबूतरे पर उनकी जो आवाज सुनाई दी थी, वह बिल्कुल शान्त और स्वाभाविक थी। मेरी सारी आशंकाएं निर्मूल थी, मैक्सिम कुशलपूर्वक थे। ओफ़ ! अभी कुछ क्षण पहले मैं कैसा पागलपन का काम करने जा रही थी। अब तो उसे याद तक करना मुझे बुरा मालूम दे रहा था।

मैं भी उसी ढलवां रास्ते से होकर नीचे समुद्र-तट की ओर चल दी। उस समय कुहरा हट गया था और जहाज़ साफ दिखाई पड़ रहा था। किनारे से वह क़रीब दो मील दूर था। और उसके मस्तूल चट्टानों की ओर झुके हुए थे। पहाड़ी पर भीड़ जमा हो गई थी। कुछ लोग चट्टानों से उतरकर जहाज़ के ठीक सामने जा पहुंचे थे। जहाज़ बिल्कुल टेढ़ा पड़ा हुआ था और कोई आदमी खड़ा-खड़ा भोंपू में से कुछ कह रहा था। मैं भी उधर ही चल दी। किन्तु मैक्सिम मुझे कहीं दिखाई नहीं दिये। फ्रैंक वहां थे और किसी पहरुए से बातें कर रहे थे। मुझे देखकर उन्होंने हाथ हिलाया और मैं उनके पास जा पहुंची।

पहरुआ मुझे जानता था। मुस्कराकर बोला, "तमाशा देखने आई हैं, श्रीमती द विंतर ? मेरी समझ में उसे निकालना मुश्किल है, वह बुरी तरह फंस गया है। लीजिये दूरबीन से देखिये।"

मैंने दूरबीन लेली और कुछ देर तक जहाज को देखने के बाद दूरबीन पहरुये को लौटा दी।

फ्रैंक ने बताया कि जब धड़ाकों की आवाज हुई थी तब वह घाटी के पास ही थे। मैं समझ गई कि वहां वह मैक्सिम को ढूंढने गये थे, क्योंकि मेरी ही तरह उन्हें भी मैक्सिम की ओर से कुछ आशंका हो गई थी।

"मैक्सिम कहां हैं ?" मैंने पूछा।

"वह एक मल्लाह को लेकर कैरिथ गये हैं। जैसे ही जहाज टकराया, मल्लाह का दिमाग़ फिर गया और वह समुद्र में कूद पड़ा। हमें वह यहां चट्टान पर चिपका हुआ मिला। उसके चोट लग गई थी और उसमें बुरी तरह ख़ून बह रहा था। मैक्सिम उसे मरहम-पट्टी कराने कैरिथ ले गये हैं।"

"वह कब गये ?

"आपके आने से ज़रा पहले, शायद पांच मिनट पहले। आपने उनकी नाव को जाते हुए नहीं देखा ?"

"उस वक्त मैं शायद चट्टान पर चढ़ रही होऊंगी।"

"ऐसी बातों में मैक्सिम बड़े उदार हैं। मुसीबत में फंसे हुए लोगों की जितनी भी सहायता हो सकती है, वह जरूर करते हैं। आप देखेंगे कि वह इन सब लोगों को मैन्दरले ले जायंगे और उन्हें खिलाने-पिलाने के साथ-साथ रात को आराम से सुलायेंगे भी।"

"आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं। वक़्त पड़ने पर वह अपना कोट तक उतारकर दे सकते हैं। काश, ऐसे आदमी और भी होते !" पहरुए ने कहा।

कुछ देर बाद फ्रैंक बोले, "मेरे ख़याल में तो यहां ठहरना अब बेकार है। हम कुछ कर तो सकते नहीं और फिर भूख भी लग रही है।"

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। वह ज़रा झिझके और उन्होंने मेरी ओर देखा।

"आप क्या करेंगी ?"

"मैं तो अभी यहां ठहरूंगी ! खाना तो मैं किसी समय भी खा लूंगी। मैं देखूंगी कि ग़ोताख़ोर क्या करते हैं।"

"आप कुछ भी नहीं देख पायंगी। चलिये, मेरे साथ चलकर कुछ खा लीजिये।"

"नहीं, मैं नहीं जाऊंगी।"

"ख़ैर! यह तो आप जानती ही हैं कि ज़रूरत पड़ने पर मैं कहां मिल सकता हूं। शाम तक मैं दफ़्तर में ही रहूंगा।"

"बहुत अच्छा।"

वह चले गए और मैं पहाड़ी पर बैठकर उस जहाज़ को देखने लगी। लोग आते-जाते रहे और जहाज़ को निकालने की कोशिश चलती रही। बहुत देर बाद मैंने अपनी घड़ी की ओर देखा। तीन बज चुके थे। मैं उठ खड़ी हुई और चट्टान से उतरकर खाड़ी की ओर चल दी।

जब मैं घर के पास पहुंची तब वहां का वतावरण बड़ा शान्त और सुहावना था। शायद पहली बार मेरे मन में गर्व की यह भावना उदित हुई कि मैन्दरले जैसे विशाल और सुन्दर भवन की मैं स्वामिनी हूं। मैं हॉल में से होकर भोजन के कमरे में पहुंची। वहां मेरा खाना रखा था, लेकिन मैक्सिम की मेज़ साफ़ कर दी गई थी। मैंने घंटी बजाई। परदे के पीछे से राबर्ट आया तब मैंने पूछा, "श्री द विंतर आये थे क्या ?

"हां, वह दो बजे के कुछ ही बाद आये थे और जल्दी-जल्दी भोजन करके फिर बाहर चले गये। वह आपको पूछ रहे थे। फ्रिथ ने उन्हें बताया कि शायद आप जहाज देखने गई हैं।"

"वह कबतक लौटेंगे, कुछ बता गये हैं ?"

"नहीं, मैडम!"

मैंने ठंडे खाने की ओर देखा। मेरा पेट खाली था, लेकिन मुझे भूख नहीं थी। उस समय ठंडा गोश्त खाने को जी भी नहीं हो रहा था। मैंने राबर्ट को लाइब्रेरी में चाय और डबल रोटी-मक्खन लाने को कहा।

मैं लाइब्रेरी में जाकर खिड़की के पास बैठ गई। जैस्पर के बिना अजीब-सा लग रहा था। वह शायद फिर मैक्सिम के साथ चला गया था। बूढ़ी कुतिया अपनी टोकरी में पड़ी सो रही थी। मैंने अखबार उठा लिया और योंही उसके पन्ने पलटने लगी। मेरा जी किसी भी काम में नहीं लग रहा था और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे कोई अनहोनी घटना घटनेवाली है। सुबह श्रीमती डैन्वर्स के साथ वह भंयकर घटना, उसके बाद जहाज़ का खाड़ी में आ फंसना, मेरा सारे दिन खाना न खाना—ये सारी बातें मेरे मन में किसी अज्ञात आशंका का संचार कर रही थीं।

राबर्ट चाय के साथ मक्खन, डबलरोटी के अलावा और भी कई चीजें ले आया। मैंने उन्हें जी भरकर खाया। मुझे अचानक ध्यान आया कि सवेरे साढ़े ग्यारह बजे मैंने सिर्फ़ ठंडी चाय का एक प्याला लिया था और नाश्ता नहीं किया था।

जैसे ही मैंने चाय का तीसरा प्याला पीकर समाप्त किया, राबर्ट अन्दर आया।

"श्री द विन्तर अभी तक नहीं लौटे हैं न ?" उसने पूछा।

"नहीं। क्यों, क्या कोई उनसे मिलना चाहता है ?"

"हां कप्तान सीरले का टेलीफ़ोन आया है। वह कैरिथ बन्दरगाह के अफ़-सर हैं। वह जानना चाहते हैं कि क्या वह स्वयं आकर श्री द विन्तर से मिल सकते हैं।"

"समझ में नहीं आता कि उन्हें क्या जवाब दिया जाय। हो सकता है, मैक्सिम बहुत देर तक न आयें। उनसे कह दो कि वह पांच बजे फिर फोन करके पूछ लें।"

राबर्ट कमरे में गया और कुछ ही क्षण बाद वापस आकर बोला—

"वह कहते हैं कि अगर कोई असुविधा न हो तो वह आकर आपसे ही मिल लेंगे। बहुत जरूरी काम है। उन्होंने श्री क्राउले को टेलीफ़ोन किया था, लेकिन वह भी नहीं मिले,"

"हां-हां, अगर कोई जरूरी बात है तो मैं उनसे जरूर मिलूंगी। उनसे

फ़ौरन आने के लिए कह दो। उनके पास कार तो है न?"

"हां, मेरे ख़याल में तो है।"

राबर्ट चला गया और मैं सोचने लगी कि कप्तान से क्या बातें करूंगी। उन्हें शायद फंसे हुए जहाज़ के बारे में कुछ कहना होगा। लेकिन उससे मैक्सिम का क्या सरोकार? वह भाग मैन्दरले की सीमा में तो है नहीं, जो उसके लिए मैक्सिम से किसी तरह की अनुमति लेने की आवश्यकता हो।

पन्द्रह मिनट बाद कप्तान मेरे कमरे में आये। उन्होंने अब भी अपनी वरदी पहन रखी थी। मैंने उठकर उनसे हाथ मिलाया।

"मुझे खेद है, कप्तान कि मेरे पति अभी तक नहीं लौटे हैं। शायद वह पहाड़ी पर फिर चले गये हों। उससे पहले वह कैरिथ गये थे। आज सारे दिन मैं उनसे नहीं मिल पाई हूं।"

"हां, मैंने सुना था कि वह कैरिथ गये थे। लेकिन वह मुझे वहां नहीं मिले। मिस्टर क्राउले भी कहीं नहीं मिल पा रहे हैं।"

"जहाज़ ने सबको अस्त-व्यस्त कर दिया है। मैं भी पहाड़ी पर ही थी और मैंने आज खाना भी नहीं खाया। पहले तो क्राउले भी वहां थे। पता नहीं, जहाज़ का क्या होगा। क्या उसे खींचकर ऊपर लाया जा सकेगा?"

कप्तान ने अपने हाथों से एक गोल चक्कर बनाकर कहा—"उसकी तली में नीचे एक सूराख हो गया है और वह अब कभी हैम्बर्ग नहीं जा सकेगा। उसकी चिन्ता मत कीजिये। मैं आपसे उसके बारे में बातचीत करने नहीं आया हूं। बात यह है कि श्री द विन्तर के लिए मैं एक ज़रूरी खबर लाया हूं और समझ नहीं पा रहा हूं कि उन्हें यह ख़बर किस तरह सुनाऊं?" उन्होंने अपनी नीली-नीली आंखों से मेरी आंखों की ओर गहराई के साथ देखा।

"किस तरह की खबर है, कप्तान?"

कप्तान ने जेब से एक बड़ा-सा सफेद रूमाल निकाला और नाक साफ़ करते हुए कहा, "आपसे भी कुछ कहते हुए मुझे अच्छा तो नहीं लग रहा है। बात यह है कि मैं आपको या आपके पति को किसी प्रकार का कष्ट देना नहीं चाहता। कैरिथ में हम सभी लोग श्री द विन्तर को बहुत चाहते हैं। मुझे बड़ा अफ़सोस

है कि पिछली बातों को अब बिना उखाड़े रहा नहीं जा सकता। मैं जानता हूं कि इससे आपको और श्री द विन्तर दोनों को बड़ा दुःख होगा, लेकिन समझ में नहीं आता कि इस परिस्थिति में क्या किया जा सकता है ?"

वह रुक गये और रूमाल को अपनी जेब में रखकर धीमी आवाज़ में बोले—

"हमने गोताख़ोर को नीचे जहाज की तली की जांच करने के लिए भेजा था। उसने देखा कि जहाज़ की तली में एक छेद हो गया है। लेकिन जब वह उसे दूसरी ओर से देखने को गया तब उसे वहां एक छोटी नाव पड़ी हुई दिखाई दी। वह बिल्कुल ठीक दशा में थी और कहीं से टूटी-फूटी नहीं थी। वह यहीं का रहनेवाला है, इसलिए उसने नाव को एकदम पहचान लिया। वह स्वर्गीय श्रीमती द विन्तर की नाव है।"

इस समाचार को सुनकर मेरे मन में जो पहली भावना आई, वह थी ईश्वर के प्रति कृतज्ञता की कि मैक्सिम उस समय वहां नहीं थे। रात की घटना के फौरन बाद ही यह नया आघात उनके लिए कितना भंयकर होता, यह मैं समझ सकती थी।

"मुझे बड़ा अफ़सोस है," मैंने धीमे स्वर में कहा, "ऐसी घटना की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। क्या श्री द विन्तर को यह बात बताना आवश्यक है ? क्या उस नाव को वहीं नहीं रहने दिया जा सकता ? उससे कोई हरज तो हो नहीं रहा है ?"

"साधारण रूप से उसे वहां छोड़ा जा सकता था, श्रीमती द विन्तर। जहां-तक मेरा बस है, मैं श्री द विन्तर को हर तरह की परेशानियों से बचाने को तैयार हूं। लेकिन बात इतनी ही नहीं है। मुझे एक और चीज का पता चला है। गोताखोर ने बताया है कि नाव के कमरे का द्वार कसकर बन्द था। रोशन-दान भी बन्द थे। उसने पत्थर मारकर रोशनदान तोड़ा और अन्दर को झांक-कर देखा। कमरे में पानी भरा हुआ था। शायद तली के किसी छेद में से समुद्र का पानी आया होगा। लेकिन और कहीं कोई टूट-फूट नजर नहीं आई और तब उसे अपने जीवन की सबसे भयानक चीज़ दिखाई दी।"

कप्तान ने रुककर अपने कंधों के पीछे की ओर देखा कि कहीं कोई नौकर उसकी बात तो नहीं सुन रहा है और फिर चुपके-से कहा, "वहां कमरे के फ़र्श पर एक लाश पड़ी थी। वह गल चुकी थी, उसपर मांस नहीं था, लेकिन वैसे वह पूरी-की-पूरी थी। गोताखोर को सिर और दूसरे अंग दिखाई दिये। वह सीधा ऊपर आया और उसने मुझे यह बात बताई। अब आप समझ गई होंगीं, श्रीमती द विन्तर कि मैं आपके पति से मिलने क्यों आया हूं।"

मैंने उनकी ओर घूरकर देखा। पहले मेरे मन में हैरानी की भावना आई, फिर मुझे एक आघात-सा लगा और बाद में मैं अपनेको अस्वस्थ-सी अनुभव करने लगी।

"ख़याल तो यह किया जाता है कि वह अकेली ही नौका चला रही थीं।" मैंने फुसफुसाते हुए कहा, "लेकिन अब ऐसा लगता है कि उनके साथ कोई और भी था, जिसका किसीको पता नहीं लगा।"

"ऐसा ही मालूम पड़ता है।" कप्तान ने कहा।

"लेकिन यह कौन हो सकता है? अगर कोई सम्बन्धी होता तब तो उसकी अनुपस्थिति का पता लग ही जाता, क्योंकि उस समय तो सारे समाचारपत्रों में इसकी ख़बर छपी थी। बात समझ में नहीं आती कि दोनों में से एक आदमी नाव में कैसे बन्द रह गया, जबकि श्रीमती द विंतर की लाश कई महीनों बाद मीलों दूर मिली।"

कप्तान ने अपना सिर हिलाया, "मैं भी कुछ नहीं कह सकता। हमें तो बस इतना मालूम है कि उस नाव में एक लाश है, जिसकी रिपोर्ट करनी होगी। निश्चय ही सर्वसाधारण में इसकी चर्चा फैलेगी, इसलिए मैं सोच नहीं पा रहा हूं कि इसे कैसे टाला जा सकता है। आपके और श्री द विन्तर के लिए यह बड़ी ही कष्टदायी बात होगी। आप दोनों यहां शान्तिपूर्वक जीवन बिता रहे हैं और प्रसन्न रहना चाहते हैं और इधर यह घटना आ घटी।"

अब मुझे ध्यान आया कि मुझे अमंगल की आशंका क्यों हो रही थी। कैसी अजीब बात थी कि जिस समय गोताखोर समुद्र के गहरे ठंडे पानी की तह में घुसकर रेबेका की नाव और उसके मृत साथी से टकराया था, मैं ऊपर

पहाड़ी पर बैठी थी और मुझे पता भी नहीं था कि नीचे क्या हो रहा है।

"क्या ऐसा नहीं हो सकता कि यह बात हम उनसे न कहें, सबकुछ उनसे छिपा लें ?" मैंने कहा।

"अगर संभव होता तो मैं अवश्य ऐसा करता, श्रीमती द विंतर ! लेकिन ऐसे मामलों में निजी भावनाओं को कहां स्थान मिल सकता है ! मुझे अपने कर्त्तव्य का पालन करना होगा। मुझे उस लाश की रिपोर्ट करनी ही पड़ेगी।" कहते-कहते कप्तान रुक गये, क्योंकि तभी सामने से दरवाजा खुला और मैक्सिम अंदर आये।

"हलो, क्या बातें हो रही हैं ?" मैक्सिम ने कहा, "मुझे पता नहीं था, कप्तान कि तुम यहां हो। क्या कोई विशेष बात है ?"

मेरे लिए अब सहन करना असम्भव था। एक कायर की भांति मैं वहां से बाहर चली गई और मैंने दरवाज़ा बन्द कर दिया। मैंने मैक्सिम के मुख की ओर देखा भी नहीं। बस इतनी-सी झलक मिल पाई कि वह बिना टोप के अस्त-व्यस्त और थके हुए-से थे।

मैं जाकर हॉल के सामनेवाले दरवाजे पर खड़ी हो गई। वहां जैस्पर ज़ोर-ज़ोर-से अपने प्याले में पानी पी रहा था। मुझे देखकर उसने दुम हिलाई और पानी पी चुकने के बाद मेरे कपड़ों पर पंजे रखकर वह खड़ा हो गया। मैंने उसे प्यार किया और फिर मैं चबूतरे पर जा बैठी। खतरे का क्षण आ पहुंचा था और मुझे उसका सामना करना था। मेरी कायरता, हिचकिचाहट, झेंप, हीनता की भावना के दूर हटने का समय आ पहुंचा था। मुझे उनपर विजय प्राप्त करनी थी। यदि इस समय मैं सफल न हो सकी तो जीवन भर न हो सकूंगी। मैंने निराश भाव से ईश्वर से शक्ति देने की प्रार्थना की और लगभग पांच मिनट तक वहां हरी घास और फूलों को देखती रही। तभी मुझे कार के स्टार्ट होने की आवाज़ सुनाई दी। कप्तान मैक्सिम को खबर सुनाकर जा रहे थे। मैं उठकर धीरे-धीरे लाइब्रेरी के पास पहुंची। मैक्सिम खिड़की की तरफ मुंह किये खड़े थे। मेरी ओर उनकी पीठ थी। मैंने द्वार पर प्रतीक्षा की, किन्तु उन्होंने मुड़कर नहीं देखा। मैं जाकर उनके पास खड़ी हो गई और उनका हाथ

पकड़कर मैंने अपने गाल पर रख लिया। वह कुछ बोले नहीं, चुपचाप वहीं खड़े रहे।

"मुझे अफसोस है, मुझे बहुत-बहुत अफसोस है।" मैंने फुसफुसाते हुए कहा।

उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। उनका हाथ बरफ जैसा ठंडा हो रहा था। मैंने उसका पिछला भाग चूम लिया और फिर एक-एक करके मैंने उनकी अंगुलियों को चूमा।

"मैं नहीं चाहती कि आप सबकुछ अकेले ही सहन करें। मैं भी उसमें हिस्सा बंटाना चाहती हूं। चौबीस घंटों में ही मैं बड़ी हो गई हूं और अब फिर से मैं कभी कोई बचपना नहीं करूंगी।"

उन्होंने मुझे अपनी बांह में कसकर अपने बिल्कुल पास खींच लिया। मेरे संयम का बांध टूट गया, मेरी लज्जा भी जाती रही, मैं उनकी छाती पर अपना सिर रखे खड़ी रही।

"आपने मुझे क्षमा कर दिया न ?" मैं बोली।

और अब वह भी मुझसे बोले बिना न रहे, "क्षमा कर दिया ? क्षमा करने की क्या बात थी ?"

"पिछली रात आपने समझा था कि मैंने सब-कुछ जान-बूझकर किया था।"

"ओह ! मैं तो भूल भी गया था। मैं तुमपर नाराज हुआ था न ?"

"हां।"

वह कुछ नहीं बोले और मुझे अपनी छाती से चिपटाये रहे।

"मैक्सिम," मैं बोली, "क्या हम फिर से जीवन आरम्भ नहीं कर सकते ? आज से ही ? क्यों न हम सब बातों का सामना साथ-साथ करें ? मैं यह नहीं चाहती कि आप मुझे प्रेम करें। मैं आपसे असम्भव बातों के लिए कभी नहीं कहूंगी। मैं आपकी मित्र और साथी बनकर रहूंगी, उससे अधिक मैं कुछ नहीं चाहूंगी।"

उन्होंने अपने दोनों हाथों में मेरा मुंह लेकर मेरी ओर देखा। पहली बार

मैंने देखा कि उनका चेहरा कितना दुबला हो रहा था और उसपर कितनी झुर्रियां पड़ी हुई थीं। आंखों के नीचे बड़े-बड़े काले निशान पड़े हुए थे।

"ओह, तुम मुझे कितना प्यार करती हो।"

मैं उत्तर नहीं दे सकी और उनकी वेदनाभरी काली आंखों और उनके पीले मुख को देखती रही।

"बहुत देर हो गई, प्रिय! अब बहुत देर हो गई। हमारी प्रसन्नता की थोड़ी-बहुत जो कुछ भी सम्भावना थी वह भी समाप्त हो गई।"

"नहीं मैक्सिम! ऐसा मत कहो।"

"सचमुच, अब सबकुछ समाप्त हो गया। वह घटना घट गई।"

"कौन-सी घटना?"

"वही जिसकी मुझे सदा आशंका बनी रहती थी, जिसके मैं दिन-रात स्वप्न देखा करता था। प्रसन्नता हमारे भाग्य में नहीं है, मेरे न तुम्हारे।" कहते-कहते वह खिड़की के पास बैठ गये। मैं उनके सामने ही घुटनों के बल बैठ गई। मेरे हाथ उनके कंधों पर थे।

"तुम मुझसे क्या कहने की चेष्टा कर रहे हो, मैक्सिम?"

उन्होंने मेरे हाथों पर अपने हाथ रख दिये और मेरी ओर देखते हुए कहा—

"रेबेका जीत गई।"

मैंने उनकी ओर देखा। मेरा दिल कुछ अजीब तरह से धड़क रहा था और उनके हाथों के नीचे मेरे हाथ ठंडे पड़ गये थे।

"उसकी छाया सदा हम दोनों के बीच में रहती रही है। उसकी मनहूस छाया सदा हम दोनों को अलग रखती रही है। जब मेरे हृदय में दिन-रात इस घटना के घटने की आशंका बनी रहती थी तब, मेरी प्रियतमे, मैं तुम्हें कैसे इस प्रकार छाती से चिपटा सकता था। मरने से पहले उसने जिस तरह मुझे देखा था, वह मेरी आंखों के सामने नाचता रहता है। उसकी वह धीमी और विश्वास-घाती मुस्कराहट मैं भूल नहीं पाता। उसे उस समय भी पता था कि ऐसा ही होगा, वह जानती थी कि अन्त में विजय उसीकी होगी।"

"मैक्सिम तुम क्या कह रहे हो ? तुम मुझसे क्या कहने की चेष्टा कर रहे हो ?" मैंने धीमे स्वर में कहा।

"उसकी नाव आज तीसरे पहर एक गोताखोर को मिल गई है।"

"मुझे पता है, कप्तान ने मुझे बताया है। तुम उस लाश के बारे में सोच रहे हो न, जो गोताखोर को केबिन में मिली है ?"

"हां।"

"इसका मतलब यह है कि वह अकेली नहीं थीं, उस समय रेबेका के साथ कोई दूसरा भी नाव में था। तुम्हें यही तो मालूम करना है कि वह कौन था।"

"नहीं, तुम नहीं समझतीं।"

"इस बात में मैं तुम्हारा साथ देना चाहती हूं, प्रियतम ! मैं तुम्हारी सहायता करना चाहती हूं।"

"रेबेका के साथ कोई नहीं था, वह अकेली थी। केबिन के फ़र्श पर रेबेका की ही लाश पड़ी है।"

"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।"

"ऐसा ही है, बिल्कुल ऐसा ही है, प्रिये ! कब्र में जो लाश दबी पड़ी है, वह रेबेका की नहीं है, वह किसी अनजान औरत की है, जिसका कोई दावेदार नहीं है। दुर्घटना तो कभी कोई हुई ही नहीं। रेबेका डूबी नहीं थी, मैंने उसे मार डाला था। नावघर में मैंने उसे गोली से मार डाला था। इसके शरीर को मैं केबिन में उठाकर ले गया था और नाव को बाहर ले जाकर मैंने उसे उस जगह डुबा दिया था, जहां वह आज मिली है। केबिन के फर्श पर जो मरी पड़ी है वह रेबेका है। अब तुम एक बार मेरी आंखों में देखो और बताओ कि क्या तुम अब भी मुझसे प्रेम करती हो।"

: २२ :

लाइब्रेरी में एकदम सन्नाटा था। केवल जैस्पर के पैर चाटने की आवाज सुनाई दे रही थी। शायद उसके पैर में कांटा गड़ गया था। तभी मुझे मैक्सिम के हाथ की घड़ी की टिक-टिक अपने कान के पास सुनाई दी—

वही साधारण टिक-टिक, जो प्रतिदिन सुनाई देती थी। अनायास ही मुझे स्कूल के दिनों की एक कहावत याद आ गई—समय और समुद्र की लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करते। बार-बार ये शब्द मुझे याद आते रहे और रह-रहकर मैक्सिम की घड़ी की टिक-टिक और जैस्पर के पैर चाटने की आवाज कानों में पड़ती रही।

जब किसी मनुष्य को कोई बहुत बड़ा आघात लगता है तब, मैं समझती हूं, एकाएक उसे उसकी अनुभूति नहीं होती। अगर हमारा हाथ कट ही जाय तो सहसा हमें कुछ क्षण तक यह पता ही नहीं चलता कि हमारा हाथ हमारे शरीर से अलग हो गया है। कुछ ऐसी ही अवस्था उस समय मेरी थी। मैं मैक्सिम की बगल में घुटनों के बल बैठी हुई थी; मेरा शरीर उनके शरीर से सटा हुआ था, मेरे हाथ उनके कंधों पर रखे हुए थे, किन्तु मुझे किसी प्रकार की अनुभूति नहीं हो रही थी, न कोई पीड़ा थी, न भय और न ही मन के भीतर कोई कंपकंपी। मैं तो बस यह सोच रही थी कि जैस्पर के पैर से कांटा कैसे निकाला जाय और राबर्ट अबतक चाय के बर्तन उठाने क्यों नहीं आया। मुझे स्वयं आश्चर्य हो रहा था कि इस प्रकार के भाव-शून्य विचार मेरे मस्तिष्क में इस समय क्यों घूम रहे हैं, किन्तु मैंने सोचा कि धीरे-धीरे मेरी अनुभूति जाग उठेगी और सबकुछ मेरी समझ में आने लगेगा। फिर भी उस क्षण तो जैसे मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं था, न मेरे पास हृदय था, न मस्तिष्क और न विचार-शक्ति। मैक्सिम के हाथों में मैं एक लकड़ी की पुतली जैसी पड़ी थी।

तभी अचानक उन्होंने मेरा चुम्बन लेना आरम्भ किया। इस प्रकार का चुम्बन उन्होंने पहले कभी नहीं लिया था। अपनी बाहें उनकी गर्दन में डालकर मैंने आंखें बन्द कर लीं।

"मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूं।" उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा, "सचमुच मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूं।"

ये ही तो वे शब्द थे, जिन्हें सुनने के लिए मैं दिन-रात लालायित रहा करती थी और आज आखिरकार वे ही शब्द उनके मुंह से निकल रहे थे। मॉन्टी

कार्लो में, इटली में और यहां मैन्दरले में मैं उनसे ये ही शब्द सुनने की आशा रखती आई थी और अब मैं वे ही शब्द सुन रही थी। मैंने आंखें खोलीं और मैं उनके सिर के पास लटकते हुए पर्दे के एक धब्बे को देखने लगी। वह मेरा चुम्बन लिये जा रहे थे, लिये जा रहे थे—बड़े आवेश में आकर, बड़ी उत्तेजना के साथ, जैसे न मालूम कबसे वह इसके लिए भूखे हों। मैं चुपचाप उसी धब्बे को देखती रही। उस समय मैं कितनी शान्त थी, कितनी निर्लिप्त। वह मेरा चुम्बन कर रहे थे, पहली बार कह रहे थे कि वह मुझसे प्यार करते हैं और मैं थी कि परदे को ही देखे चली जा रही थी।

सहसा वह रुक गये। उन्होंने मुझे अपने से अलग कर दिया और खिड़की के पास जाकर कहा, "देखा तुमने! मैं ठीक कह रहा था न! बहुत देर हो चुकी है। अब तुम्हें मुझसे प्रेम नहीं रह गया है। और रहे भी क्यों?" यह कहते हुए वह कुछ आगे बढ़ गये और कार्निस के पास जाकर खड़े हो गये।

फिर बोले, "हमें यह सब भूल जाना होगा, अब ऐसा नहीं होगा।"

स्थिति की गम्भीरता मेरे सामने बिजली की तरह कौंध गई और आकस्मिक भय से मेरा दिल जोर-जोर-से धड़कने लगा।

"नहीं, अभी देर नहीं हुई है।" मैंने फ़र्श पर से जल्दी से उठकर उनके गले में बाहें डालते हुए कहा, "तुम समझ नहीं पा रहे हो। मैं तुमसे कितना प्रेम करती हूं, यह मैं ही जानती हूं। लेकिन अभी-अभी जब तुम मेरा चुम्बन कर रहे थे, मैं कुछ अजीब चकित-सी, सुन्न-सी हो रही थी और मुझे किसी प्रकार की अनुभूति ही नहीं हो रही थी। मेरी कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मुझमें अनुभव करने की कोई शक्ति ही नहीं रह गई है।"

"तुम्हें मुझसे प्रेम नहीं है, इसीलिए तो तुम्हें कोई अनुभूति नहीं हुई। मैं जानता हूं, मैं समझता हूं, अब देर हो चुकी है। बहुत देर हो चुकी है।"

"नहीं, ऐसा मत कहो।"

"यह सबकुछ चार महीने पहले हो जाना चाहिए था, मुझे समझ लेना चाहिए था कि स्त्रियां पुरुषों की तरह नहीं होतीं।"

"तुम ऐसी बातें क्यों कह रहे हो, मैक्सिम ! मैं चाहती हूं कि तुम मेरा फिर चुम्बन लो। आओ, मेरे पास आओ।"

"नहीं, अब सबकुछ बेसूद है।"

"लेकिन अब हम एक दूसरे से अलग नहीं हो सकते, मैक्सिम ! अब हमें सदा साथ रहना होगा, अब हमारे बीच कोई छाया, कोई भेद नहीं रह सकता।"

"अब समय नहीं है, अब शायद कुछ घण्टे या कुछ दिन ही हम साथ-साथ रह सकेंगे। इस घटना के बाद हम साथ कैसे रह सकते है। मैं तुम्हें बता चुका हूं कि लोगों को नाव का पता लग गया है, लोगों को रेबेका मिल गई है।"

मेरी समझ में कुछ नहीं आया और मैं मूर्खों की तरह उनकी ओर ताकती रही।

"वे क्या करेंगे ?" मैंने पूछा।

"वे उसकी लाश को पहचान लेंगे। केबिन में उसकी सब चीजें हैं—कपड़े जो वह पहन रही थी, पैरों में जूते, अंगुलियों में अंगूठियां। वे उसे पहचान लेंगे, जरूर पहचान लेंगे।"

"तुम क्या करने की सोच रहे हो ?"

"मैं कुछ नहीं जानता, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।"

जैसा कि मैंने सोचा था, मुझमें अनुभूति की शक्ति धीरे-धीरे जागने लगी। मेरे हाथ अब ठंडे नहीं थे, वे गरम हो गये थे और मैं अनुभव कर रही थी कि मेरे चेहरे पर लाली की एक लहर-सी दौड़ती आ रही है। मेरे गाल आग की तरह जलने लगे थे। एक-एक करके मुझे कप्तान सीरले, ग़ोताखोर, कैरिथ के दूकानदारों, अखबार बेचनेवाले छोकरों—सबका ध्यान आ रहा था। ओह ! थोड़ी ही देर बाद सबको पता चल जायगा—कुछ घण्टों में ही कल सुबह जल-पान के समय तक। 'श्रीमती द विंतर की नाव मिल गई है और उसमें एक लाश पड़ी है।' नाव में लाश ! रेबेका की लाश ! रेबेका डूबी नहीं थी, मैक्सिम ने उसे मार डाला था। उन नाव-घर में मार डाला था। उसके शरीर

को वह नाव में ले गये थे और नाव को वहीं खाड़ी में डुबो आये थे। मेरी आंखों के सामने तरह-तरह के चित्र आने लगे। मैक्सिम दक्षिणी फ्रांस में कार में मेरे बराबर बैठे हुए कह रहे थे—'क़रीब एक साल हुआ, एक ऐसी घटना घटी, जिसने मेरे सारे जीवन को ही बदल दिया। मुझे अपना जीवन फिर से आरम्भ करना होगा।'—मैक्सिम की खामोशी! उनका खोये-खोये-से रहना! उनका रेबेका के विषय में कभी बात न करना! उसका कभी नाम तक न लेना! उस नावघर और खाड़ी के प्रति उनकी घृणा और उनका कहना, "अगर तुम्हारे दिल में भी मेरी ही तरह यादगारें छिपी होतीं तो तुम भी वहां कभी जाना पसन्द नहीं करती!" रेबेका के मर जाने पर उनका लाइब्रेरी में चक्कर लगाना—इस कोने से उस कोने तक, उस कोने से इस कोने तक। 'मैं ज़रा जल्दी में आया हूं।' उन्होंने श्रीमती हॉपर से कहा था और उनकी भौंहों के बीच एक सिकुड़न पड़ गई थी। 'सुनते हैं कि अपनी मरी पत्नी की याद वह भुला नहीं सके हैं।' श्रीमती हॉपर ने बताया था। और फिर उस रात वह नाच-समारोह! मेरा रेबेका-जैसे कपड़े पहनकर जीने पर आना! 'रेबेका को मैंने मारा था।' मैक्सिम ने कहा था, 'उस नाव-घर में मैंने उसे गोली से उड़ा दिया था।' और अब ग़ोताखोर को उसकी लाश मिल गई है, वह केबिन के फ़र्श पर पड़ी है! ..

"हमें अब क्या करना होगा। हमें अब क्या कहना होगा?" मैं बोली।

मैक्सिम ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह कार्निस के पास खड़े रहे। उनकी आंखें फैली हुई थीं और वह एकटक अपने सामने की ओर देख रहे थे।

"क्या किसी और को भी यह बात मालूम है?" मैंने पूछा।

उन्होंने गरदन हिलाकर कहा, "नहीं।"

"मेरे और आपके सिवाय किसी भी और को नहीं?"

"नहीं, मेरे और तुम्हारे सिवाय किसीको भी नहीं।"

"फ्रैंक को भी नहीं? क्या आपको विश्वास है कि फ्रैंक को भी पता नहीं है?"

"उसको कैसे पता हो सकता है? वहां मेरे सिवाय और कोई नहीं था।

गुप अंधेरा था।" वह रुक गये और कुरसी पर बैठकर उन्होंने अपना मुंह अपने दोनों हाथों में छुपा लिया। मैं उनके पास जाकर उनकी बगल में घुटनों के बल बैठ गई। क्षणभर वह बिल्कुल निश्चल बैठे रहे। मैंने उनके मुंह पर से उनके हाथ हटाये और उनकी आंखों में आंखें डालकर धीरे-से कहा, "मैं तुमसे प्रेम करती हूं, मैं सच कहती हूं, मैं तुमसे प्रेम करती हूं। क्या तुम्हें विश्वास नहीं है मुझपर ?"

उन्होंने मेरे मुख को चूम लिया और मेरे हाथों को कसकर पकड़े रखा।

फिर वह बोले, "मैं सोचता था कि इस तरह यहां बैठे-बैठे किसी घटना की आशंका करते रहने से मैं पागल हो जाऊंगा। सहानुभूति के ढेर सारे पत्रों का उत्तर देना, समाचार-पत्रों में नोटिसों का छपना, लोगों का मुलाकात के लिए आना—मृत्यु के बाद की ये छोटी-छोटी बातें मुझे निश्चय ही पागल बना देंगी। खाना, पीना और अपनेको शान्त प्रमाणित करना—फ्रिथ का, दूसरे नौकरों-चाकरों का और श्रीमती डैन्वर्स का दिन-रात सामना करना—ये सभी बातें दिमाग को पागल बनानेवाली थीं। श्रीमती डैन्वर्स को निकालने का मुझमें साहस नहीं था, क्योंकि रेबेका के बारे में वह इतना अधिक जानती थी कि उसे बड़ी आसानी से सन्देह हो सकता था। फ्रैंक सदा मेरे साथ रहता था—शान्त, सहानुभूति से परिपूर्ण। 'आप कहीं चले क्यों नहीं जाते हैं ?' वह कहा करता था, 'मैं यहां सब बातों की देखभाल कर लूंगा, आपको चले जाना चाहिए।' और गाइल्स और बी—सीधी-सादी बी ! वह मुझसे कहती—'तुम बहुत बीमार दिखाई देते हो। किसी डाक्टर को क्यों नहीं दिखाते अपनेको ?' मुझे इनसब लोगों का, इनसब बातों का सामना करना पड़ता था और मैं जानता था कि मैं जो कुछ भी बोलता हूं, उसका एक-एक शब्द झूठ है।"

मैं कसकर उनका हाथ पकड़े रही और उनके बिल्कुल पास झुक गई। वह कहते रहे, "एक बार मैं तुम्हें ये सब बातें बताने ही जा रहा था। यह बात उस दिन की है, जिस दिन जैस्पर खाड़ी के पास चला गया था और तुम कॉटेज में रस्सी लेने गई थीं। हम यहां इसी तरह बैठे थे, लेकिन तभी फ्रिथ और राबर्ट चाय लेकर आ गये थे।"

"हां, मुझे याद है। आपने उस दिन मुझे बताया क्यों नहीं ? इतने दिन, इतने सप्ताह, जो हमें मिल-जुलकर बिताने चाहिए थे, हमने योंही नष्ट कर दिये।

"तुम मुझसे अलग-अलग रहती थीं और सदा जैस्पर के साथ अपने-आप-में मस्त बाग में घूमती रहती थीं। मेरे पास तुम कभी इस प्रकार आईं ही नहीं।"

"तुमने मुझसे कहा क्यों नहीं," मैंने फुसफुसाते हुए कहा, "तुमने मुझसे कहा क्यों नहीं ?"

"मैंने सोचा, तुम दुखी और ऊबी-ऊबी-सी रहती हो, क्योंकि मैं तुमसे इतना बड़ा हूं। मुझसे ज्यादा तो तुम फ्रैंक से अपने मन की बातें कहना पसन्द करती थीं। मेरे साथ तो तुम कुछ अजीब-सी रहती थीं—रूखी-रूखी शरमाती-सी।"

"मैं तुम्हारे पास कैसे आ सकती थी जब मैं जानती थी कि तुम दिन-रात रेबेका के बारे में सोचते रहते हो। मैं तुमसे प्रेम करने के लिए कैसे कह सकती थी जब मैं जानती थी कि तुम अब भी रेबेका से प्रेम करते हो।"

उन्होंने मुझे और भी अपने पास को खींच लिया और मेरी आंखों में कुछ खोजते हुए कहा, "तुम क्या कह रही हो ? तुम्हारा क्या मतलब है ?"

मैंने उनके पास सीधे बैठते हुए कहा, "जब कभी तुम मुझे छूते थे, मैं यही सोचती थी कि तुम रेबेका से मेरा मुकाबला कर रहे हो। जब कभी तुम मुझसे बातें करते थे, मुझे देखते थे, मेरे साथ घूमते थे, मेरे साथ खाना खाते थे, मुझे ऐसा लगता था जैसे मुझसे कह रहे हो—'यह काम मैंने रेबेका के साथ किया था, यह भी, यह भी।' "

उन्होंने मेरी ओर हैरानी के साथ घूरकर देखा, मानो वह कुछ समझ नहीं सके।

"क्यों, यही बात थी न ?"

"या मेरे भगवान।" उन्होंने कहा और मुझे अपने पास से हटाकर वह कमरे में मुट्ठियां बांधे चक्कर काटने लगे।

"क्या बात है ?" मैंने कुछ घबराहट के साथ पूछा।

उन्होंने घूमकर मेरी ओर देखा और कहा, "तो तुम सोचती थीं कि मैं रेबेका से प्रेम करता था। लेकिन मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि मैं उससे घृणा करता था। हमारा ब्याह तो पहले दिन से ही एक स्वांग था। वह दुष्टा थी, तिरस्कार करने योग्य थी, उसकी रग-रग में गन्दगी भरी हुई थी। हमने कभी एक-दूसरे को प्रेम नहीं किया, हँसी-खुशी का एक क्षण कभी साथ-साथ नहीं बिताया। रेबेका इस योग्य थी ही नहीं कि कोई उससे प्रेम करे, कोई उससे मृदुता का व्यवहार करे।"

मैं फर्श पर घुटने पकड़े बैठी रही और एकटक उन्हें देखती रही।

"हां, वह चतुर अवश्य थी, बहुत चतुर। जो उससे मिलता था, वह यही समझ बैठता था कि उससे अधिक दयालु, उससे अधिक उदार और उससे अधिक योग्य इस संसार में और कोई नहीं। वह खूब अच्छी तरह जानती थी कि किस व्यक्ति से क्या कहना चाहिए। वह हर आदमी की प्रकृति के साथ अपने को मिला लेती थी। अगर वह तुमसे मिलती तो तुम्हारी बांह में बांह डाले बागों में घूमा करती, तुमसे फूलों, संगीत, चित्रकारी और तुम्हारे मन को भाने-वाले सभी विषयों पर बातचीत करती—यहांतक कि तुम उसके जाल में फंस जातीं और उसके चरणों में बैठकर उसकी पूजा करने लगतीं।"

वह लाइब्रेरी के एक कोने से दूसरे कोने तक घूमते रहे।

"वह इतनी सुन्दर, इतनी योग्य और इतनी हँसमुख थी कि जब मैंने उससे विवाह किया तब सबने मुझसे कहा, 'मैक्स, तुम इस संसार के सबसे भाग्य-शाली व्यक्ति हो।' दादी तक, जिन्हें उन दिनों प्रसन्न रखना एक टेढ़ी खीर थी, उसपर शुरू से ही मुग्ध थीं। वह मुझसे कहा करती थीं—'इसमें वे तीनों बातें हैं, जो एक पत्नी में होनी चाहिए—उच्चवंश, बुद्धि और सुन्दरता।' मैं उसपर विश्वास करता था, या यों कहो जबरदस्ती विश्वास करने की चेष्टा करता था। लेकिन मेरे दिमाग में हमेशा सन्देह का एक बीज छिपा रहता था। उसकी आंखों में कोई ऐसी बात थी..."

मैक्सिम कहते जा रहे थे और लाइब्रेरी में चक्कर लगाते जा रहे थे—"मैंने

उसे एकदम भांप लिया, शादी के पांच दिन बाद ही। तुम्हें याद होगा कि उस दिन मॉन्टी कार्लो में मैं तुम्हें एक पहाड़ी की चोटी पर ले गया था। वहां खड़ा-खड़ा मैं पिछली बातों को याद करने की चेष्टा कर रहा था। एक दिन वह भी मेरे साथ वहीं आकर बैठी थी। वह हँस रही थी और उसके काले नागिन-जैसे बाल हवा में लहरा रहे थे। उस समय उसने मुझे अपने विषय में ऐसी-ऐसी बातें बताईं, जिन्हें मैं कभी किसी दूसरे से नहीं कह सकता। तब मुझे पता लगा कि मैंने क्या कर डाला है, मैंने किसके साथ ब्याह कर लिया है! सुन्दरता, बुद्धि और उच्च कुल! ओह! मेरे ईश्वर!"

एकाएक वह रुक गये और खिड़की के पास खड़े होकर बाहर लॉन की तरफ देखने लगे। उन्होंने हँसना शुरू किया और वह खड़े-खड़े हँसते ही चले गये। मेरे लिए यह असह्य हो गया, मैं भयभीत हो उठी और चिल्लाई—"मैक्सिम, मैक्सिम!"

उन्होंने सिगरेट सुलगाई और बिना बोले-चाले वह उसे पीते रहे। फिर वह एकाएक मुड़े और कमरे में पहले की ही तरह एक कोने से दूसरे कोने तक चक्कर काटने लगे। "मैं उसे तभी मार डालता।" वह बोले, "और उस समय उसे मारना कितना आसान था। एक गलत क़दम, पैर का ज़रा-सा फिसलना, बस सबकुछ हो जाता। तुम्हें तो उस ढाल की याद होगी। तुम डर गई थीं। तुमने सोचा था कि मैं पागल हो गया हूं। शायद मैं हो भी गया था। शैतान के साथ रहकर क्या किसीकी बुद्धि ठिकाने रह सकती है।"

वह चक्कर लगाते रहे और मैं वहीं बैठी-बैठी उन्हें देखती रही।

"उस ढाल के पास बैठकर उसने मेरे साथ मोल-भाव किया था। उसने कहा था—'मैं तुम्हारे घर की देखभाल करूंगी, तुम्हारे बहुमूल्य मैन्दरले को देश की सबसे सुन्दर वस्तु बना दूंगी। लोग-बाग उसे देखने आयेंगे, हमसे मिलने आयेंगे, हमसे ईर्ष्या करेंगे और कहेंगे कि हम इंगलैंड के सबसे अधिक भाग्यशाली, सबसे अधिक प्रसन्न और सबसे अधिक सुन्दर दम्पत्ति हैं।' वह उसी पहाड़ी पर बैठी हुई हँस रही थी और अपने हाथों से एक फूल को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर रही थी।"

मैक्सिम ने चौथाई सिगरेट पीकर झंझरी में फेंक दी।

"मैंने उसकी हत्या नहीं की, मैं उसे देखता रहा। मैंने उससे कुछ नहीं कहा और उसे हँसते रहने दिया। फिर हम साथ-साथ कार में बैठकर चले आये और वह समझ गई कि जो कुछ उसने कहा है, मैं वही करूंगा। वह जानती थी कि शादी के एक सप्ताह बाद ही उसके रहस्य का भंडाफोड़ करके मैं अपनेको बद-नाम कराने की बजाय, अपने अभिमान, अपनी मर्यादा, अपने हृदय की भाव-नाओं—इस संसार की सभी चीजों को त्यागने को तैयार हो जाऊंगा। वह जानती थी कि मैं कभी भी तलाक के लिए अदालत में नहीं जाऊंगा, क्योंकि मैं लोगों का अपनी ओर अंगुली उठाना बरदाश्त नहीं कर सकता।"

"मुझे मैन्दरले का सदा से बहुत ध्यान रहा है।" वह कहते रहे, "मैं मैन्दरले को सब बातों से अधिक महत्व देता रहा हूं। और फिर, क्या कभी इस तरह का प्रेम फलता-फूलता है ?"

"ओह प्रियतम ! ओह मेरे मैक्सिम ! मेरे हृदयेश !" मैंने उनके हाथों को अपने मुंह के पास खींचकर उनपर अपने अधर रख दिये।

"तुम कुछ समझीं ? क्यों, कुछ समझीं ?" उन्होंने पूछा।

"हां प्रियतम, मैं सबकुछ समझ गई।" मैंने कहा, किन्तु मैंने उनकी ओर देखा नहीं, जिससे कि वह मेरे चेहरे को न देख सकें। मैं उनकी बातों को समझी या नहीं समझी, इससे क्या अन्तर पड़ सकता था। यह जानकर कि उन्होंने रेबेका से कभी प्रेम नहीं किया था, मेरा हृदय उस समय एक पंख की तरह हलका हो रहा था।

"मैं पिछली बातों की याद करना नहीं चाहता।" उन्होंने फिर कहना शुरू किया, "मैं तो उनके सम्बन्ध में तुमसे कुछ कहना भी नहीं चाहता। ओफ़ ! कैसा शर्मनाक और नीचता का जीवन था वह ! स्वांग, बिल्कुल स्वांग। हमें अपने मित्रों, सम्बन्धियों और नौकरों तक के सामने स्वांग रचना पड़ता था। वे सब उसका विश्वास करते थे, उसकी प्रशंसा करते थे, उन्हें इस बात का पता ही नहीं था कि पीठ-पीछे वह उनकी कितनी हँसी उड़ाती थी और उनकी कैसी नक़ल बनाती थी। उन दिनों घर में कोई-न-कोई समारोह होता ही रहता

था और वह मेरी बांह-में-बांह डाले, होंठों पर फ़रिश्ते-जैसी मुस्कान लिये सबका स्वागत करती थी, छोटे बच्चों में इनाम बांटती थी और उससे अगले दिन मुंह-अंधेरे ही लन्दन को रवाना हो जाती थी। वहां पांच दिन बिताकर वह सप्ताह के अन्त में लौटती थी। फिर भी मैंने अपनी ओर से समझौते को पूरी तरह निभाया और कभी उसका भेद प्रकट नहीं होने दिया। आज मैन्दरले जो कुछ भी है, उसीका बनाया हुआ है। बाग़, झाड़ियां, आनन्द-घाटी के फूल-पौधे—वे सब उसीके लगाये हुए हैं। घर के सब कमरे और कमरों की मेज़-कुरसियां और तस्वीरें सब रेबेका की ही रुचि के नमूने हैं। जिस मैन्दरले की सुन्दरता आज तुम देख रही हो, जिस मैन्दरले की चर्चा आज गली-गली में है, जिसके फोटू खींचे जाते हैं और जिसके चित्र बनाये जाते हैं, वह मैन्दरले रेबेका के कौशल का ही नमूना है।

"इस प्रकार महीने-पर-महीने और बरस-पर-बरस बीतते रहे। मैन्दरले के कारण मैं सबकुछ सहता रहा। वह लन्दन में जो कुछ भी करती, उसकी मैं चिन्ता नहीं करता था, क्योंकि उससे मैन्दरले को कुछ क्षति नहीं पहुंचती थी। शुरू-शुरू में तो वह कुछ सावधान भी रहती थी, कहीं भी उसके विषय में कोई काना-फूंसी नहीं होती थी। लेकिन धीरे-धीरे वह असावधान होने लगी। वह अपने मित्रों को यहां बुलाने लगी और खाड़ीवाले नाव-घर में उनके साथ रंगरेलियां मनाने लगी।

"एक बार शिकार खेलकर मैं स्काटलैंड से लौटा तो मैंने उसे वहीं नाव-घर में पाया। उसके साथ छः आदमी और थे, जिन्हें मैंने पहले कभी नहीं देखा था। मैंने उसे चेतावनी दी, पर उसने अपने कंधे हिलाते हुए कहा—'इससे तुम्हारा क्या सरोकार?' मैंने उससे कहा कि तुम अपने मित्रों से लंदन में मिल सकती हो, पर ध्यान रखो, मैन्दरले मेरा है और तुम्हें समझौते का पालन करना है। वह मुस्कराई और उसने कोई उत्तर नहीं दिया। फिर उसने फ्रैंक पर डोरे डाले—बेचारा फ्रैंक—इतना लजीला, इतना वफ़ादार। एक दिन फ्रैंक ने आकर मुझसे कहा कि वह मैन्दरले से चला जाना चाहता है। मैंने उससे दो घंटे तक बहस की और तब उसने बताया कि रेबेका उसे

कभी अकेला नहीं छोड़ती थी। वह सदा उसके घर जाती रहती थी और उससे नाव-घर में चलने का आग्रह किया करती थी। बेचारा फ्रैंक तो सदा यही समझता रहा था कि हम एक सुखी दम्पत्ति हैं।

"जब मैंने रेबेका से इस बात की शिकायत की तब वह एकदम क्रोध से भभक उठी और मुझे ऐसी गन्दी-गन्दी बातें कहने लगी कि पूछो मत। उसके बाद वह लन्दन चली गई और वहां एक महीने तक रही। जब वहां से लौटी तब शुरू-शुरू में शान्त दिखाई दी। तभी बी और गाइल्स आये और मुझे पहली बार पता लगा कि बी उसे पसन्द नहीं करती। रेबेका गाइल्स को लेकर नाव में चली गई और जब वह लौटी तब उसके और गाइल्स के व्यवहार से मुझे साफ़ मालूम हो गया कि रेबेका ने गाइल्स के साथ भी वही काम शुरू कर दिया है, जो उसने फ्रैंक के साथ किया था।"

अब मुझे पिछली सब बातें समझ में आ रही थीं और मैं अपनेको धिक्कार रही थी कि मैंने अपने संकोच और झेंप के कारण कितनी यातना भोगी। अगर मुझमें साफ़-साफ़ बातें कहने और पूछने का साहस होता तो मैक्सिम ने सारी बातें मुझे आज से चार-पांच महीने पहले ही बता दी होतीं।

"उसके बाद बी और गाइल्स कभी हमारे घर अलग-से नहीं आये।" मैक्सिम ने आगे कहा, "मैं उन्हें सिर्फ पार्टियों और उत्सवों के समय बुलाया करता था। बी ने कभी मुझसे कुछ नहीं कहा, न मैंने ही उससे कुछ कहा। पर वह सबकुछ समझ गई थी। रेबेका फिर से चतुराई से काम लेने लगी थी। बाहरी दिखावे में तो उसके व्यवहार में कोई कमी नहीं होती थी, लेकिन जब कभी मैं बाहर जाता था तब मुझे यही डर लगा रहता था कि पता नहीं मैन्दरले में क्या हो जाय। फ्रैंक और गाइल्स पर तो वह अपना जाल फेंक ही चुकी थी, मुझे डर लगा रहता था कि कहीं वह मैन्दरले के किसी कर्मचारी पर या कैरिथ के किसी आदमी पर डोरे न डालने लगे और फिर चारों ओर बदनामी फैले।"

"उसके एक चचेरा भाई था," मैक्सिम ने धीरे-से कहा, "जो विदेशों की सैर करके लौटा था और इंगलैंड में रहता था। जब कभी मैं मैन्दरले में

नहीं होता तब वह जरूर आता। फ्रैंक उसे देखता था। उसे जैक फ़ेवेल कहते थे।"

"मैं उसे जानती हूं, जिस दिन तुम लन्दन गये थे, वह आया था।" मैंने कहा।

"तुमने भी उसे देखा था? मुझे बताया क्यों नहीं? मुझे तो फ्रैंक ने बताया था, उसने उसकी कार देखी थी।"

"मैंने इसलिए नहीं कहना चाहा कि तुम्हें रेबेका की याद आ जायगी।"

"मुझे याद आ जायगी? जैसे मुझे याद दिलाने की आवश्यकता थी!"

वह अपनी बात को रोककर एकटक सामने की ओर देखने लगे। शायद मेरी ही तरह उस समय वह भी खाड़ी में डूबी हुई नाव की बात सोच रहे थे।

"हां, तो फ़ेवेल को वह नाव-घर में बुलाती थी।" मैक्सिम ने फिर कहना शुरू किया, "नौकरों से वह कह जाती थी कि वह नाव चलाने जा रही है और सबेरे से पहले नहीं लौटेगी। और तब, वह नाव-घर में फ़ेवेल के साथ रात भर रहती। मैंने एक बार फिर रेबेका को चेतावनी दी और कहा कि अगर मैंने फ़ेवेल को फिर कहीं मैन्दरले में देखा तो उसे गोली से उड़ा दूंगा। वह बहुत बदनाम आदमी था और उसके मैन्दरले में आने मात्र से मैं पागल हो उठता था। मैंने रेबेका से कह दिया कि मैं फ़ेवेल का आना सहन नहीं कर सकता। इसपर उसने अपने कंधे मटका दिये, लेकिन उसने कोई गन्दी बात नहीं कही। मैंने देखा कि वह कुछ पीली होती जा रही थी और कुछ घबराई-घबराई-सी रहती थी। मैं सोचा करता कि जब यह बूढ़ी लगने लगेगी तब इसका क्या हाल होगा। इसी तरह समय बीतता गया। इस बीच कोई खास बात नहीं हुई। फिर एक दिन वह लन्दन गई और उसी दिन वापस आ गई, जैसा कि वह कभी नहीं करती थी। मुझे उसके आने की आशा नहीं थी। उस रात मैंने फैंक के साथ भोजन किया था। हमें काम बहुत करना था।"

अब मैक्सिम रुक-रुककर बोलने लगे थे। मैं उनके हाथों को अपने हाथों में कसकर दबाये हुए थी।

"साढ़े दस बजे के करीब मैं खाना खाकर लौटा तो मैंने रेबेका के दस्ताने और मफलर हॉल में कुरसी पर पड़े देखे। मेरी समझ में नहीं आया कि वह वापस क्यों आ गई है। मैं सुबहवाले कमरे में गया, लेकिन वह वहां नहीं थी। मैंने अनुमान लगा लिया कि वह नाव-घर में गई होगी और उस समय मैंने अनुभव किया कि इस तरह छल और गन्दगी से भरा झूठा जीवन मैं अधिक नहीं सहन कर सकता। बात इधर या उधर तै हो जानी चाहिए। मैंने सोचा कि मैं बन्दूक लेकर चलूं और दोनों को डराऊं-धमकाऊं। मैं सीधा नाव-घर में पहुंचा। नौकरों को मेरे लौटकर आने का पता ही नहीं था। मैं बाग़ और जंगल में होकर चुपचाप खिसक गया। नाव-घर की खिड़की से प्रकाश आ रहा था। मैं सीधा अन्दर चला गया। मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि रेबेका अकेली थी। वह एक सोफे पर पड़ी थी और उसके पास की राखदानी सिगरेट के टोंटों से भरी पड़ी थी। वह बीमार-सी दिखाई दे रही थी।

"मैं जाते ही फ़ेवेल के बारे में बातें करने लगा और वह चुपचाप सुनती रही। 'इस तरह का घृणित जीवन हम बहुत बिता चुके हैं।' मैंने कहा, 'अब उसका अन्त समय आ गया है, समझीं? तुम लन्दन में क्या करती हो, इससे मुझे कोई वास्ता नहीं। वहां तुम फ़ेवेल के साथ या जिसके साथ भी चाहो रह सकती हो, लेकिन यहां मैन्दरले में नहीं।'"

"एक क्षण तक वह चुपचाप मेरी ओर देखती रही और फिर मुस्कराकर बोली, 'और अगर मुझे यहीं रहना अधिक सुविधाजनक महसूस हो, तब?'"

"'तुम शर्तें जानती हो,' मैंने कहा, 'मैंने उस गन्दे समझौते की शर्तें अपनी ओर से कभी नहीं तोड़ीं। लेकिन तुमने मुझे धोखा दिया। तुम सोचती हो कि तुम मेरे घर को अपनी लन्दन की गन्दी कोठरी की तरह इस्तेमाल कर सकती हो। मैंने काफी सहन कर लिया, लेकिन ईश्वर की सौगंध खाकर कहता हूं, रेबेका कि तुम्हें यह मेरी अंतिम चेतावनी है।'

"मुझे याद है कि उसने सिगरेट सोफे के पासवाले टब में डाल दी और सीधी खड़ी होकर अपनी बांहों को अपने सिर पर रखते हुए कहा, 'ठीक है मैक्स, अब समय आ गया है कि मैं अपनी जिन्दगी का नया पन्ना पलटूं।'

वह बहुत दुबली और पीली दिखाई पड़ रही थी। अपनी पतलून की जेब में हाथ डाले वह कमरे में इधर से उधर घूमने लगी। नाविक के उन कपड़ों में वह एक लड़के-जैसी दिखाई दे रही थी।

''क्या तुमने कभी यह भी सोचा है कि अगर तुमने मुझे तलाक़ देना चाहा तो मेरे खिलाफ मुकदमा चलाने में तुम्हें किस तरह नाकों चने चबाने पड़ेंगे ? मेरे खिलाफ तुम्हारे पास पहले दिन से ही एक भी सबूत नहीं रहा है। तुम्हारे मित्रों, यहांतक कि तुम्हारे सभी नौकरों को यही विश्वास है कि हमारा ब्याह बहुत ही सुखमय और सफल है।'

"'लेकिन फ्रैंक और गाइल्स के बारे में क्या कहती हो ?'

"वह अपने सिर को पीछे की ओर झटकाते हुए हँसी और बोली, 'फ्रैंक भला मेरे बारे में क्या कह सकता है। रही बीट्रिस की बात, सो कौन नहीं समझ जायगा कि वह ईर्ष्यावश गवाही देने आई है ? नहीं मैक्स, मेरे विरुद्ध कुछ भी साबित करने में तुम्हारे दिमाग़ ठण्डे हो जायंगे।'

"वह अपनी एड़ियों पर झूलती हुई मेरी ओर एकटक देखती रही। उसके हाथ उसकी जेब में थे और उसके होंठों पर मुस्कान नाच रही थी।

"'तुमने यह भी सोचा,' वह बोली, 'कि मैं जो चाहूंगी वही शपथ डैनी से लिवा दूंगी और सब नौकर अपने अज्ञान के कारण आंखें बन्द करके डैनी का साथ देने को तैयार हो जायंगे। उन्हें पता है कि मैन्दरले में हम पति-पत्नी की तरह रहते हैं और यही बात तुम्हारे सब मित्र जानते हैं। तुम यह किस तरह प्रमाणित करोगे कि हम पति-पत्नी की तरह नहीं रहते ?'

"वह मेज के सिरे पर बैठकर अपनी टांगें हिलाने लगी और मुझे देखती रही।

"'क्या हमने एक प्रेमी दम्पति का स्वांग खूबी के साथ नहीं निभाया है ?'

"मुझे याद है कि मैं उसके पैरों को हिलते हुए देखता रहा और एकाएक मेरी आंखों में और मेरे दिमाग़ में एक अजीब ढंग की जलन होने लगी।

"'मैं और डैनी मिलकर तुम्हें बहुत अच्छी तरह मूर्ख बना सकते हैं, इतना

मूर्ख कि कोई भी तुमपर विश्वास नहीं करेगा, कोई भी नहीं, मैक्स।'

"अब भी उसके वे मनहूस पैर फीतेदार नीले और सफेद सैन्डल पहने इधर-उधर हिल रहे थे।

"अचानक वह मेज से उतरकर अपनी जेबों में हाथ डाले मेरे सामने आकर खड़ी हो गई और मुस्कराती हुई बोली, 'अगर मेरे बच्चा हो, मैक्स, तो न तो तुम और न ही इस दुनिया का कोई दूसरा आदमी, यह साबित कर सकेगा कि वह तुम्हारा नहीं है। वह तुम्हारा नाम धारण करेगा और यहीं मैन्दरलें में पलेगा। तुम कुछ भी नहीं कर सकोगे और तुम्हारे मरने पर वह मैन्दरले का स्वामी बनेगा। तुम जायदाद के इस नियम को तोड़ नहीं सकते। तुम्हें एक उत्तराधिकारी की आवश्यकता भी है। क्यों है न, अपने मैन्दरले के लिए ? तुम्हें मेरे बेटे को अखरोट के वृक्ष के नीचे गाड़ी में लेटे देखकर, लॉन में कूदते-फिरते देखकर और आनन्द-घाटी में तितलियां पकड़ते देखकर प्रसन्नता होगी ? क्यों ! होगी न ? वह तुम्हारे जीवन की सबसे बड़ा रोमांचकारी घटना होगी, जब तुम मेरे बेटे को दिन-प्रतिदिन बड़ा होते देखोगे और अनुभव करोगे कि जब तुम मर जाओगे तब यह सबकुछ उसका हो जायगा।'

"वह अपनी एड़ियों के सहारे झूलती हुई एक क्षण तक प्रतीक्षा करती रही और फिर एक सिगरेट जलाकर खिड़की के पास खड़ी हो गई। वह हँसने लगी और हँसती ही चली गई। मुझे लगा मानो उसकी हँसी अब बन्द ही नहीं होगी।"

"'ओह कितनी मजेदार बात है, कितनी बढ़िया ! कितनी आश्चर्यजनक ! अभी मैंने तुमसे कहा था न कि मैं अपने जीवन का नया पन्ना उलटने जा रही हूं। तुम मेरा मतलब समझ गये न ? सब लोग प्रसन्न होंगे और आनन्द में झूमते हुए कहेंगे, इसीकी तो हम आशा लगाये बैठे थे, श्रीमती द विन्तर। और मैं एक पूर्ण मां बन जाऊंगी, ठीक वैसे ही जैसे मैं एक पूर्ण पत्नी हूं। कोई भी कुछ नहीं अनुमान लगा सकेगा, कोई भी कुछ नहीं जान सकेगा।'

"वह मेरी ओर को मुंह करके खड़ी हो गई और मुस्कराने लगी। उसका एक हाथ उसकी जेब में था और दूसरे से उसने सिगरेट पकड़ रखी थी। जब

मैंने उसे गोली मारी तब भी वह मुस्करा रही थी। मैंने उसके दिल को निशाना बनाया और गोली आर-पार हो गई। वह फौरन ही नहीं गिरी, वह मेरी ओर देखती हुई खड़ी रही। उसके मुख पर वह हल्की मुस्कराहट थी और उसकी आंखें फटी हुई थीं..."

अब मैक्सिम की आवाज धीमी पड़ गई थी, इतनी धीमी कि फुसफुसाहट जैसी लग रही थी। उनका हाथ, जो मैंने पकड़ रखा था, ठंडा हो गया था। मैंने उनके मुख की ओर नहीं देखा। मैं जैस्पर को देखती रही, जो फर्श पर पड़ा सो रहा था।

"मुझे इस बात का ध्यान नहीं रहा था कि किसीको गोली मारने पर इतना खून निकलता है!" मैक्सिम ने थकी हुई धीमी आवाज में कहा।

"मुझे पानी लेने के लिए बार-बार खाड़ी में जाना पड़ा। आतिशदान के पास तक खून का धब्बा पड़ गया था। जहां वह पड़ी थी, उसके चारों तरफ खून-ही-खून था और अब हवा भी तेज चलने लगी थी। खिड़की में रोक नहीं थी, वह हवा के झोंकों के साथ खुलती और बन्द होती रही! फिर रेबेका की लाश को मैं बाहर नाव में ले गया। उस समय साढ़े ग्यारह या बारह बजे होंगे। घुप अंधेरा था। पश्चिम से तूफानी हवा चल रही थी। मैं उसे नाव के केबिन में ले गया और वहां उसे छोड़ आया। फिर मैं पतवार लेकर लहरों और तूफान से लड़ता-झगड़ता नाव को खाड़ी में ले गया। किन्तु तेज हवा ने उसके पाल फाड़ डाले और वे मेरे हाथों से छूट गये। हवा के तेज झोंके उस नाव को पहाड़ों की कतार के पास ले गये। अंधेरा इतना गहरा था कि कुछ भी दिखाई नहीं देता था। मेरे हाथ में एक लम्बी कील थी। मैंने सोचा कि अगर मैंने अब भी कोई कोशिश नहीं की तो छः-सात मिनट में हम गहरे पानी में पहुंच जायंगे। यह सोचकर मैंने नाव के छेद खोल दिये और पानी अन्दर आने लगा। उसके बाद मैंने तली के तख्तों में लम्बी कील घुसाकर उनमें से पानी ऊपर आने की जगह बना दी। पानी मेरे पैरों तक आ गया। मैंने रेबेका को वहीं फर्श पर पड़ा छोड़ दिया। इसके बाद मैंने दोनों झरोखों और दरवाजे को बन्द कर दिया। जब मैं ऊपर आया तब मैंने देखा कि हम चट्टानों की कतार से करीब

बीस गज दूर थे। मैं डिंगी में चढ़ गया और धीरे-धीरे नाव को डूबते देखता रहा। मुझे भय लग रहा था कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा है। अचानक चक्कर काटकर नाव डूब गई। मैं क्षण भर तक उस स्थान को टकटकी बांधे देखता रहा। फिर मैं खाड़ी में वापस आ गया। उस समय वर्षा होने लगी थी।"

कहते-कहते मैक्सिम कुछ रुके और मेरी ओर देखते हुए बोले--

"बस, और कुछ कहने को बाकी नहीं है। मैंने किनारे पर डिंगी छोड़ दी और मैं वापस नाव-घर में आया। फर्श नमकीन पानी से भीग रहा था। समुद्र ने सारी सफाई स्वयं कर दी थी। मैं जंगल के रास्ते से होकर घर आ गया। ऊपर चढ़कर मैं अपने कपड़े बदलनेवाले कमरे में गया। और वहां मैंने अपने कपड़े बदल डाले। इस समय बहुत जोर की आंधी चल रही थी और वर्षा भी हो रही थी। मैं बिस्तर पर बैठा था। तभी श्रीमती डैन्वर्स ने आकर दरवाजे पर धक्का दिया। मैंने द्वार खोला और नाइट गाउन पहनकर उससे जाकर बातें कीं। वह रेबेका के कारण परेशान थी। मैंने उसे जाकर आराम करने की सलाह दी। फिर मैंने दरवाजा बन्द कर लिया और अपना ड्रेसिंग गाउन पहने खिड़की के पास बैठा हुआ बारिश को देखता रहा, खाड़ी में टकराती हुई समुद्र की लहरों की आवाज सुनता रहा।"

हम दोनों चुपचाप बैठे रहे। उनके ठंडे हाथ अब भी मेरे हाथ में थे।

"नाव बहुत ही पास डूब गई थी।" मैक्सिम ने कहा, "मैं उसे दूर ले जाना चाहता था, वहां उसका किसीको भी पता नहीं लगता।"

"यह सब तो उस जहाज के कारण हुआ है, नहीं तो किसीको कुछ भी पता नहीं चलता, किसीको भी नहीं, बिल्कुल नहीं।" मैंने कहा।

"नाव बहुत ही पास डूब गई थी।" मैक्सिम ने कहा और हम फिर चुप हो गये। मुझे बड़ी थकावट अनुभव होने लगी।

"मैं जानता था कि एक दिन ऐसा अवश्य होगा। जब मैंने उस दूसरी स्त्री की लाश को रेबेका की लाश बताया था तब भी मैं जानता था कि इससे कोई लाभ नहीं होगा। प्रश्न केवल समय का था। मैं जानता था कि अन्त में जीत

रेबेका की होगी। तुम्हें पाकर भी कुछ अन्तर नहीं पड़ा। तुम्हें प्रेम करके भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ। रेबेका जानती थी कि अन्त में विजय उसकी होगी। मरते समय मैंने उसके मुख पर मुस्कराहट देखी थी।

"रेबेका मर चुकी है।" मैंने कहा, "हमें यही याद रखना चाहिए कि रेबेका मर चुकी है। वह न अब बोल सकती है, न गवाह बुला सकती है। वह अब तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकती।"

"लेकिन केबिन के फर्श पर उसकी लाश पड़ी है, गोताखोर ने उसे देखा है।"

"हमें इस बात को साफ करना होगा, हमें इस बात को साफ करने का उपाय सोचना होगा। हमें यह कहना होगा कि वह लाश किसी ऐसे व्यक्ति की है, जिसे न तुमने कभी देखा है, न तुम जानते हो।"

"उसकी सारी चीजें अब भी वहीं होंगी, अंगूठियां उसकी अंगुलियों में होंगी और कपड़े चाहे पानी में गल गये हों, फिर भी कुछ तो होगा ही। सब वस्तुएं ज्यों-की-त्यों होंगी, क्योंकि तबसे ही नाव वहां डूबी पड़ी है और किसीने उसे छेड़ा नहीं है।"

"लाश तो पानी में गल जाती है न ? अगर वह बिना किसीके छेड़े पड़ी भी रहे तब भी पानी तो उसे गला ही देता होगा ?" मैंने धीरे-से कहा।

"मुझे पता नहीं, मैं कुछ नहीं जानता।"

"तुम्हें कैसे पता लगेगा, तुम कैसे जान पाओगे ?"

"कल सुबह साढ़े पांच बजे गोताखोर फिर वहां जायगा। कप्तान ने सब इन्तजाम कर दिया है। वे नौका को ऊपर निकालकर लाने की चेष्टा करेंगे। वहां और कोई नहीं होगा। मैं उनके साथ जाऊंगा। वह खाड़ी में मुझे लेने के लिए साढ़े पांच बजे अपनी नाव भेजेंगे।"

"और नाव को ऊपर लाने के बाद क्या होगा ?"

"कप्तान अपना जहाज तैयार रखेंगे और अगर नाव की लकड़ियां बिल्कुल गल नहीं गई हैं तो लोग उसे क्रेन से उठाकर जहाज पर रख देंगे। कप्तान कहते हैं कि नाव में से पानी को निकालना होगा जससे कि केबिन बिल्कुल

सूख जाय। फिर वह डाक्टर को बुलायंगे।"

"डाक्टर क्या करेगा ?"

"मुझे पता नहीं।"

"अगर उन्हें मालूम हो जाय कि वह रेबेका की लाश है तो तुम कह देना कि दूसरी लाश को पहचानने में तुमसे भूल हो गई थी! तुम कह देना कि जब तुम उस लाश को पहचानने गये थे तब तुम बीमार थे, तुम्हें पता नहीं था कि तुम क्या कर रहे हो। क्यों कुछ ऐसा ही कहोगे न ?"

"हां, कुछ ऐसा ही कहूंगा।"

"वे तुम्हारे खिलाफ कोई बात साबित नहीं कर सकते। रात को किसीने तुम्हें नहीं देखा था। तुम तो अपने कमरे में सो रहे थे। मेरे और तुम्हारे सिवाय किसीको कुछ पता नहीं। संसार में हम ही दो व्यक्ति इस बात को जानते हैं। इसलिए कोई कुछ साबित नहीं कर सकेगा।"

"हां," वह बोले, "हां!"

"वे समझेंगे कि जब वह केबिन में थी तभी नाव भवंर में फंस गई और डूब गई। वे समझेंगे कि वह नीचे कोई रस्सी आदि लेने गई होगी, तभी आंधी का थपेड़ा आया होगा, नाव चक्कर काटने लगी होगी और रेबेका फंस गई होगी। वे यही सोचेंगे। क्यों यहीं सोचेगे न ?"

"मुझे कुछ पता नहीं, मैं कुछ नहीं जानता।"

अचानक लाइब्रेरी के पीछेवाले छोटे कमरे में टेलीफोन की घंटी बजने लगी।

: २३ :

मैक्सिम ने कमरे में जाकर दरवाजा बन्द कर लिया। कुछ देर बाद ही राबर्ट आकर चाय के बरतन उठाने लगा। मैंने खड़े होकर उसकी तरफ पीठ कर ली, जिससे कि वह मेरे मुंह के भावों को न देख सके।

छोटे कमरे से मैक्सिम के टेलीफोन पर बोलने की आवाज आ रही थी और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं मैक्सिम के बराबर बैठी हुई उनकी बातें

सुन रही हूं, उनका हाथ मेरे हाथ में है और मेरे गाल उनके कन्धों पर टिके हुए हैं। मैं उनकी जीवन-कथा सुन चुकी थी और मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे उनके प्रत्येक कार्य में मैंने भी योग दिया है, जैसे मैंने भी रेबेका को मारने और उसकी नाव को डुबाने में हाथ बंटाया है। लेकिन जहां एक ओर मेरा एक भाग इस तरह मैक्सिम में एकाकार हो रहा था, वहां दूसरी ओर मेरा दूसरा भाग वहीं कालीन पर निश्चल, निर्लिप्त बैठा केवल एक बात सोच रहा था, केवल एक वाक्य दुहरा रहा था—'वह रेबेका से प्रेम नहीं करते थे, वह रेबेका से प्रेम नहीं करते थे।' इतनी सारी परेशानियों और दुविधाओं के होते हुए भी मुझे अपना हृदय हलका-हलका लग रहा था, जैसे उसपर से कोई बोझ हट गया हो। अब मुझे रेबेका का भय नहीं था। अब मुझे उससे घृणा नहीं रह गई थी, अब जब मैं जान गई थी कि वह दुष्टा और नीच थी मेरे मन में उसके लिए घृणा नहीं रह गई थी। अब वह मुझे कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकती थी। अब मैं उसके कमरे में जाकर उसकी सब चीजों का प्रयोग कर सकती थी। यहां-तक कि पश्चिमी भाग में निडर होकर खड़ी हो सकती थी। रेबेका की शक्ति अब हवा में कुहरे की तरह विलीन हो चुकी थी। अब मैं मैक्सिम के साथ रहने, उन्हें छूने, उन्हें पकड़ने और उनसे प्रेम करने के लिए पूरी तरह आज़ाद थी। मैं अब बच्चा नहीं रह गई थी, अब मैं 'मैं' नहीं रह गई थी रह गई थीं अब मैं 'हम' हो गई थी। अब हम अपनी कठिनाइयों का साथ-साथ सामना करेंगे। कप्तान सीरले, गोताखोर, फ्रैंक, श्रीमती डैन्वर्स, बीट्रिस, कैरिथ के लोग— अब कोई भी हमें अलग नहीं कर सकेंगे। अब मैं झेंपूगी नहीं, अब मैं डरूंगी नहीं, अब मैं मैक्सिम के लिए लड़ूंगी, झूठ बोलूंगी, कसमें खाऊंगी, प्रार्थना करूंगी। रेबेका विजयी नहीं हुई है, रेबेका हार गई है।

राबर्ट चाय के बरतन ले गया और मैक्सिम ने कमरे में आकर बताया कि कर्नल जूलियन का फोन था और कल वह भी हमारे साथ नाव में जायेंगे, कप्तान सीरले ने उनसे कहा है।

"कर्नल जूलियन क्यों जायंगे?"

'वह कैरिथ के मैजिस्ट्रेट हैं, उन्हें वहां रहना ही होगा।"

"वह क्या कह रहे थे ?"

"पूछ रहे थे कि क्या मुझे कुछ अन्दाजा है कि वह लाश किसकी हो सकती है ।"

"तुमने क्या कहा ?"

"मैंने कह दिया कि मैं नहीं जानता । मुझे तो यही पता है कि उस समय रेबेका अकेली थी, उसके साथ किसी मित्र के होने की बात का मुझे पता नहीं ।"

"इसपर उन्होंने कुछ और पूछा क्या ?"

"हां, उन्होंने पूछा कि मैंने लाश पहचानने में ग़ल्ती तो नहीं की है ?"

"अच्छा तो उन्होंने यह बात कह ही दी !"

"हां ।"

"तुमने क्या उत्तर दिया ?"

"मैंने कहा कि ऐसा हो सकता है ।"

"तो कल तुम्हारे साथ वह, कप्तान और डाक्टर होंगे ?"

"इन्स्पेक्टर वेल्श भी होंगे ।"

"क्यों, इन्सपेक्टर वेल्श क्यों होंगे ?"

"किसी लाश के मिलने पर इन्स्पेक्टर को वहां होना ही पड़ता है ।"

मैं चुप हो गई और कुछ क्षणों तक हम एक दूसरे को देखते रहे । इसके बाद उन्होंने खिड़की की ओर नजर डाली । आसमान बादलों से घिरा हुआ था, लेकिन हवा बन्द थी । "मैं समझता था कि हवा चलने लगेगी, लेकिन वह तो बिल्कुल बन्द हो गई । कल गोताखोर को खाड़ी बहुत ही शान्त मिलेगी ।" उन्होंने कहा । इतने में टेलीफोन की घण्टी फिर बज उठी । हमने एक-दूसरे की ओर देखा । फिर उन्होंने दूसरे कमरे में जाकर पहले की तरह दरवाजा बन्द कर लिया । मेरे पेट में एक अजीब तरह का दर्द हो रहा था ।

मैक्सिम ने वापस आकर धीरे-से कहा, "शुरुआत हो गई ।"

"क्या मतलब ? किस चीज की शुरुआत हो गई ?" मैंने सहसा ठण्डे पड़ते हुए पूछा ।

"'काउन्टी क्रॉनिकल' का संवाददाता था। पूछ रहा था कि क्या यह सच है कि श्रीमती द विन्तर की नाव मिल गई है।"

"तुमने क्या कहा ?"

"मैंने कहा कि मैं इतना ही जानता हूं कि एक नाव मिली है, हो सकता है वह उनकी ही हो। फिर उसने पूछा कि क्या यह अफवाह सच है कि केबिन में कोई लाश पड़ी है। मैंने कह दिया कि मुझे कुछ पता नहीं, मैं कोई बयान नहीं दूंगा, बड़ी कृपा होगी यदि आप मुझे फिर टेलीफोन न करें।"

"इस तरह तो आप उन्हें चिढ़ा देंगे, वे आपके खिलाफ हो जायंगे।"

"मैं क्या करूं! मैं अखबारवालों को बयान नहीं दिया करता। मैं नहीं चाहता कि वे लोग बार-बार टेलीफोन करें और मुझसे प्रश्न पूछें।"

"हमें शायद उनकी जरूरत पड़े।"

"नहीं, अगर लड़ने का सवाल आयेगा तो मैं अकेला लड़ूंगा, मैं किसी अखबारवाले की सहायता नहीं लूंगा।"

"अच्छा हो, अगर हम यहां बेकार बैठे-बैठे कल सुबह की इन्तजार करने के बजाय कुछ करें।"

"हम कुछ कर ही नहीं सकते।"

हम लाइब्रेरी में ही बैठे रहे। मैक्सिम ने एक किताब उठा ली, लेकिन मैं जानती हूं कि वह उसे पढ़ नहीं रहे थे। उनके कान बराबर टेलीफोन की घंटी पर लगे हुए थे। पर किसीने फिर टेलीफोन नहीं किया। हमने खाने के लिए कपड़े बदले और फ्रिथ खाना परोसने आया। उसका मुख गम्भीर था, जिसे देखकर मेरे मन में शंका हुई कि कहीं वह केरिथ तो नहीं गया था और उसे सब बातों का पता तो नहीं लग गया।

खाने के बाद हम फिर लाइब्रेरी में चले गये। अपना सिर मैक्सिम के घुटनों से लगाकर मैं उनके पास फर्श पर बैठ गई। वह मेरे बालों में अपनी अंगुलियां फिराते रहे। बीच-बीच में वह मेरा चुम्बन ले लेते और कभी-कभी बातें करने लगते। अब हमारे बीच में कोई भेद नहीं रह गया था। लेकिन मुझे आश्चर्य हो रहा था कि जब हमारे चारों ओर का संसार इतना अंधकारमय

हो रहा है, मुझे इतनी प्रसन्नता क्यों हो रही है। वह एक अजीब तरह की प्रसन्नता थी—उत्तेजनाभरी नहीं, बिल्कुल शान्त।

अगले दिन मेरी नींद सात बजे के बाद खुली। उठकर मैंने खिड़की से बाहर झांका तो देखा कि घास और फूल-पत्ते भीगे हुए थे। हवा में कुहरे और सीलेपन की बदबू थी। निश्चय ही रात बारिश हुई थी।

मैक्सिम सुबह पांच बजे ही उठ बैठे थे। उन्होंने मुझे नहीं जगाया था। वह चुपचाप उठकर और कपड़े बदलकर चले गये थे। इस समय वह खाड़ी में कर्नल, कप्तान, डाक्टर और इन्स्पेक्टर के साथ होंगे, मैंने सोचा। शायद नाव बाहर निकाल ली गई होगी और रेबेका केबिन के फर्श पर पड़ी होगी।

मैं उठकर नहाई और कपड़े बदलकर प्रतिदिन की भांति नौ बजे नीचे नाश्ता करने चली गई। फ्रिथ ने पूछा कि क्या मालिक के लिए नाश्ता गरम रखा जायगा। मैंने कह दिया कि मुझे पता नहीं वह कबतक लौटेंगे, वह बहुत सवेरे ही चले गये थे। फ्रिथ ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह बहुत गम्भीर दिखाई पड़ रहा था। मुझे फिर खयाल हुआ कि कहीं इसे सब बातों का पता तो नहीं लग गया है।

नाश्ते के बाद मैं सुबहवाले कमरे में गई। उसकी खिड़कियां अभी तक नहीं खोली गई थीं। कार्निस पर के फूल मुरझा गये थे और फर्श पर उनकी पत्तियां बिखरी हुई थीं। मैंने घंटी बजाकर नौकरानी को बुलाया और उसके आने पर कहा, "सुबह से इस कमरे को किसीने छुआ तक नहीं है। खिड़कियां बन्द थीं और वह देखो, सारे फूल मुरझा गये हैं, इन्हें हटाओ यहां से।"

नौकरानी बड़ी घबराई हुई-सी दिखाई दी। वह क्षमा मांगती हुई बोली, "मुझे इसके लिए खेद है, मैडम!" और उसने कार्निस के पास जाकर फूलदानों को उठा लिया।

"ऐसा फिर नहीं होना चाहिए।"

"कभी नहीं होगा, मैडम।" वह बोली और फूल लेकर बाहर चली गई।

मुझे पता नहीं था कि कठोर बनना इतना सरल है और मैं समझ नहीं पा रही थी कि पहले मैं ऐसी क्यों नहीं हो पाई थी। लिखने की मेज पर भोजन

की सूची रखी हुई थी। उसमें नृत्यवाली रात के ही सब व्यंजन थे। स्पष्ट था कि अभी तक बचा हुआ सामान ही खिलाया जा रहा था। मैंने सूची पर पेंसिल फेर दी और घंटी बजाकर राबर्ट को बुलाया। उसके आने पर मैंने कहा, "श्रीमती डैन्वर्स से कहना कि ताजा खाना बनवायें, अगर बासी चीजें अभी तक बची हुई हैं तो उन्हें भोजन के समय न भेजें।"

"बहुत अच्छा, मैडम !" वह बोला।

मैं उसके पीछे-पीछे फूलवाले कमरे में से कैंची लेने गई। फिर बाग में जाकर मैंने कुछ नई कलियां काटीं। इस बीच बराबर मुझे खाड़ी का ध्यान आता रहा और मैं सोचती रही कि पता नहीं वहां क्या हो रहा होगा ? मैक्सिम अभी आते होंगे और मुझे सारी बातें बतायंगे। जो कुछ भी हो, मुझे शान्त रहना चाहिए, डरना नहीं चाहिए। यह सोचकर मैं गुलाब के फूल लेकर सुबहवाले कमरे में चली गई। वहां सफाई हो चुकी थी। राबर्ट फूलदानों में पानी भर गया था। मैं उनमें फूल लगाने लगी।

तभी दरवाजे पर धक्का लगा !

"अन्दर आ जाओ।" मैंने कहा।

हाथ में भोजन की सूची लिये श्रीमती डैन्वर्स आई। वह बहुत पीली और थकी हुई दिखाई दे रही थी और उसकी आंखों के चारों तरफ बड़ी-बड़ी झाइयां पड़ गई थीं।

"मैं नहीं समझ सकी कि आपने यह सूची बाहर क्यों भेजी ?" उसने कहा, "आपने राबर्ट के ज़रिए संदेशा क्यों भेजा ? आपने ऐसा क्यों किया ?"

मैंने हाथ में गुलाब का फूल पकड़े हुए उसकी तरफ देखा और कहा, "ये ही चीजें कल भी भोजन में आई थीं। आज मैं गरम भोजन चाहती हूं। अगर नौकर-चाकर ठंडी चीज़ें खाना पसन्द नहीं करते तो उन्हें कूड़े में फेंक दो। इस घर में जब रोज ही इतनी चीजें बरबाद जाती है तब इससे ही क्या अन्तर पड़ेगा ?"

वह मुझे देखती रही और कुछ बोली नहीं। मैंने गुलाब का फूल गुलदस्ते में लगा दिया। "क्या सोच रही हो ?" मैंने कहा, "क्या यह कहना चाहती हो

कि और कोई चीज़ तैयार नहीं हो सकती ? ऐसी कौन-सी चीज़ है, जो तैयार नहीं हो सकती ?"

"मुझे राबर्ट के जरिए संदेसा पाने की आदत नहीं है। यदि श्रीमती द विंतर को कुछ बदलवाना होता था तो वह टेलीफोन करके मुझे स्वयं बता देती थीं।"

"मुझे इससे कोई मतलब नहीं कि श्रीमती द विन्तर क्या किया करती थीं। अब मैं श्रीमती द विन्तर हूं और अगर मैं रॉबर्ट के हाथ संदेसा भेजना चाहूंगी तो जरूर भेजूंगी।"

तभी रॉबर्ट ने आकर बताया कि 'काउन्टी क्रॉनिकल' से फोन आया है।

"उनसे कह दो कि मैं घर पर नहीं हूं।" मैंने कहा।

"अच्छा," कहकर वह चला गया। श्रीमती डैन्वर्स वहीं खड़ी रहीं।

"और क्या काम है ?" मैंने कहा।

वह चुपचाप मेरी ओर घूरती रही।

"अगर और कुछ नहीं कहना है तो जाओ रसोइए से गरम खाना बनाने को कह दो। इस वक्त मुझे फुरसत नहीं है।"

"'कॉउन्टी क्रॉनिकल' वाले आपसे क्यों बात करना चाहते थे ?"

"मुझे कुछ पता नहीं।"

"तो क्या फिथ जो कुछ केरिथ से सुनकर आया है, वह सच है ? क्या श्रीमती द विन्तर की नाव मिल गई है ?"

"क्या ऐसी कोई खबर है ? मुझे तो कुछ पता नहीं।"

"कल यहां कप्तान सीरले आये थे न ? रॉबर्ट कह रहा था कि वह उन्हें आपके पास ले गया था। फिथ कह रहा था कि केरिथ में यह खबर फैली हुई है कि जो गोताख़ोर खाड़ी में जहाज को देखने गया था, उसे श्रीमती द विन्तर की नाव मिली है।"

"शायद ऐसी बात हो। जब श्री द विन्तर लौटकर आयें तब उन्हींसे सब बातें पूछ लेना।"

"श्री द विन्तर आज इतनी जल्दी क्यों जाग गये ?"

"यह तो वही जानें।"

वह मुझे देखती रही।

"फ्रिथ कह रहा था कि यह अफ़वाह है कि नाव के केबिन में कोई लाश पड़ी है। वहां किसीकी लाश क्यों होगी ? श्रीमती द विन्तर तो सदा अकेले ही नाव पर जाती थीं।"

"मुझसे पूछने से कुछ लाभ नहीं होगा, मैं भी उतना ही जानती हूं जितना तुम।"

"आप नहीं जानतीं ?" उसने धीरे-से कहा। वह लगातार मेरी ओर देखती रही। मैं दूसरी ओर मुड़ गई और खिड़की के पासवाली मेज पर फूलदान रखने लगी।

"मैं खाना तैयार करने के लिए आज्ञा दे दूंगी।" वह बोली और क्षण भर रुककर कमरे से बाहर चली गई। मैंने सोचा कि अब यह मुझे भयभीत नहीं कर सकेगी, रेबेका के साथ इसकी भी शक्ति नष्ट हो गई है। मैं जानती थी कि वह मेरी दुश्मन है, लेकिन मुझे अब उसकी चिन्ता नहीं थी। लेकिन अगर उसे लाश के असली रहस्य का पता लग गया और वह मैक्सिम की भी दुश्मन बन गई तब ?

मैं कुरसी पर बैठ गई और सोचने लगी। पता नहीं मैक्सिम क्या कर रहे होंगे, पता नहीं 'काउन्टी क्रॉनिकल' के सम्वाददाता ने हमें फिर से क्यों फोन किया। मैंने फिर अपने भीतर कुछ अस्वस्थता का अनुभव किया और मैं खिड़की के पास खड़ी होकर बाहर की ओर झांकने लगी। बड़ी ऊमस थी, मुझसे कमरे में बैठा नहीं गया, मैं बाहर जाकर इधर-उधर घूमने लगी।

साढ़े ग्यारह बजे के करीब फ्रिथ ने आकर बताया कि श्री द विन्तर का फोन आया है। मैं लाइब्रेरी से होकर छोटे कमरे में गई। जब मैंने रिसीवर उठाया तब मेरे हाथ कांप रहे थे।

"क्या तुम हो ? मैं मैक्सिम हूं, ऑफ़िस से बोल रहा हूं, फ्रैंक मेरे साथ हैं।"

"हां, कहिये।"

"मैं एक बजे के करीब फ्रैंक और कर्नल जूलियन को अपने साथ खाने पर ला रहा हूं।"

"अच्छा।"

"उन लोगों ने नाव निकाल ली है, मैं अभी-अभी वहां से लौटा हूं।"

"अच्छा।"

"तो एक बजे हमारी प्रतीक्षा करना।"

मैंने रिसीवर रख दिया और फ्रिथ को बुलाकर कह दिया कि खाने के समय हमारे साथ दो और व्यक्ति होंगे।

आगे का एक घंटे का समय बहुत ही धीरे-धीरे घिसटकर बीता। ऊपर जाकर मैंने कपड़े बदले और फिर नीचे आकर ड्राइंग-रूम में बैठी-बैठी उनकी प्रतीक्षा करने लगी।

एक बजने से पांच मिनट पहले कार की आवाज़ सुनाई दी। मैंने शीशे में देखकर अपने बाल ठीक किये। मेरा मुंह एकदम सफेद हो रहा था। गालों पर थोड़ा-सा रूज रगड़कर मैं उन लोगों के कमरे में आने की प्रतीक्षा करने लगी। पहले मैक्सिम आये, फिर फ्रैंक और तब कर्नल जूलियन।

"आप कुशल से तो हैं?" कर्नल ने शान्त भाव से डाक्टरों जैसी गम्भीरता के साथ पूछा।

"फ्रिथ से शेरी लाने को कहो। मैं ज़रा मुंह-हाथ धो आऊं।" मैक्सिम बोले।

"मैं भी मुंह हाथ धोऊंगा।" फ्रैंक ने कहा।

मेरे घंटी बजाने से पहले ही फ्रिथ शेरी लेकर आ गया। कर्नल ने नहीं ली, लेकिन मैंने हाथ में कुछ पकड़े रहने के विचार से एक गिलास में थोड़ी-सी शेरी ले ली। कर्नल मेरे पास आकर खड़े हो गये और बोले, "यह बहुत ही दु:खदायी घटना है, श्रीमती द विन्तर। मुझे आपके और श्री द विन्तर के साथ बड़ी हमदर्दी है।"

"धन्यवाद," मैंने कहा और मैं शेरी की चुस्की लेने लगी। फिर गिलास

मैंने मेज पर रख दिया, क्योंकि मुझे भय था कि वह यह न देख लें कि मेरा हाथ कांप रहा था।

"यह बात जटिल इसलिए बन गई है कि एक साल पहले आपके पति उस पहली लाश की शनाख्त कर चुके हैं।"

"मैं समझी नहीं।" मैंने कहा।

"अच्छा तो अभी आपने नहीं सुना कि आज सुबह हमें किस चीज का पता लगा है ?'

"मुझे इतना तो पता है कि वहां गोताखोर को एक लाश मिली है।"

"हां," और तब अपने कंधों के ऊपर से हॉल की तरफ को झांकते हुए वह धीमे स्वर में बोले, "इसमें सन्देह नहीं कि वह लाश उन्हींकी है। मैं अधिक बातें तो आपको नहीं बता सकता, लेकिन वहां जो कुछ भी प्रमाण था वह आपके पति और डाक्टर फ़िलिप्स द्वारा उस लाश के पहचाने जाने के लिए काफ़ी था।"

कर्नल एकाएक चुप होकर मेरे पास से हट गये। मैक्सिम और फ्रैंक कमरे में आपस आ गये थे।

"खाना तैयार है, अन्दर चलें ?" मैक्सिम ने कहा।

मैं सबसे आगे-आगे चली। मेरा हृदय पत्थर जैसा बोझिल और शून्य हो रहा था। कर्नल मेरी दाईं ओर बैठे और फ्रैंक बाईं ओर। मैंने मैक्सिम की ओर नहीं देखा। फ्रिथ और रॉबर्ट भोजन परसने लगे और हम मौसम की बात-चीत करने लगे।

कुछ देर तक हम इधर-उधर की बातें करते रहे और फिर चुपचाप भोजन करने लगे। फ्रिथ मेरी कुरसी के पीछे खड़ा था। हम सब एक ही बात सोच रहे थे, किन्तु फ्रिथ के कारण चर्चा नहीं कर रहे थे। मेरे ख़याल में फ्रिथ भी वही बात सोच रहा था।

कुछ क्षणों बाद कर्नल ने उस रात के नृत्य-समारोह की चर्चा छेड़ दी और उसके बाद, खेल, कविता और अन्य विषयों पर बातचीत होती रही।

भोजन समाप्त होने के बाद रॉबर्ट और फ्रिथ ने हमें पनीर, बिस्कुट और काफी तथा सिगरेट दी और फिर वे दरवाज़ा बन्द करके बाहर चले गये। हम

चुपचाप कॉफी पीने लगे और मैं अपनी प्लेट को घूरती रही।

"भोजन से पहले मैं आपकी पत्नी से कह रहा था," कर्नल ने अपनी शान्त और दृढ़ आवाज़ में कहा, "कि इस सारे मामले में गड़बड़ी इस बात की है कि आपने पहली लाश को शनाख्त करके उसे श्रीमती द विन्तर की लाश बताया था।"

"यह तो ठीक है," मैक्सिम ने कहा।

"लेकिन उन परिस्थितियों में ऐसी भूल का होना स्वाभाविक था।" फ्रैंक जल्दी से बोला, "अधिकारियों ने उन्हें बुलाया और यह पहले से ही सोच लिया कि लाश श्रीमती द विन्तर की है। मैक्सिम उस समय अस्वस्थ थे। मैंने उनके साथ जाना चाहा था, लेकिन उन्होंने अकेले ही जाने की ज़िद की। उस समय उनकी हालत ऐसी नहीं थी कि वह इस तरह का कोई भी काम ठीक से कर सकते।"

"यह बेकार की बात है। मैं बिल्कुल स्वस्थ था।" मैक्सिम ने कहा।

"अब उन बातों में पड़ने से कोई लाभ नहीं, आपने पहले शनाख्त की थी और अब सिर्फ यही चारा रह गया है कि आप अपनी भूल स्वीकार कर लें। इस बार तो लाश को पहचानने में संदेह की कोई गुंजाइश ही नहीं दिखाई देती।"

"नहीं।" मैक्सिम बोले।

"मैं चाहता हूं कि आप जांच-पड़ताल के झगड़ों से बच जायं, लेकिन यह असम्भव-सा लगता है।"

"सो तो है ही।"

"मैं समझता हूं कि इस काम में अधिक समय नहीं लगेगा। आपको तो बस फिर से शनाख्त भर करनी होगी और फिर टैब को बुलाना पड़ेगा। आप कहते हैं कि जब आपकी पत्नी फ्रांस से वह नाव लाई थीं तब टैब ने ही उसमें परिवर्तन किये थे। टैब को यह गवाही देनी होगी कि उस समय वह नाव समुद्र में चलने योग्य और अच्छी दशा में थी। आप तो जानते ही हैं कि यह सब लाल फीताशाही है, लेकिन यह करना तो होगा ही। मुझे तो परेशानी इस बात की

है कि इस मनहूस घटना की चर्चा व्यर्थ ही चारों ओर फैलेगी।"

"सो तो हम जानते हैं।"

"यह मनहूस जहाज भी न जाने कहां से आ टपका, नहीं तो सारी बातें शान्ति से दबी पड़ी रहतीं।"

"हां।"

"लेकिन इस बात की तसल्ली जरूर है कि बेचारी श्रीमती द विन्तर की मृत्यु उतनी कष्टप्रद नहीं रही होगी, जितनी कि हम सोचा करते थे, उनकी मृत्यु एकाएक और फौरन हो गई होगी। तैरने के लिए चेष्टा करने की तो कोई गुंजाइश ही नहीं थी।"

"बिल्कुल नहीं।"

"वह नीचे कुछ लेने गई होंगी तभी द्वार बन्द हो गया होगा और मस्तूल के पास किसीके न होने से नाव आंधी में फंस गई होगी। ओफ़! कैसी भयानक बात है!"

"हां।"

"तो इस समस्या का बस यही हल हो सकता है। क्यों है न क्राउले?" कर्नल ने फ्रैंक की ओर देखकर कहा।

"हां, बिल्कुल यही।" फ्रैंक ने कहा।

मैंने ऊपर को दृष्टि उठाई और देखा कि फ्रैंक मैक्सिम की ओर देख रहा था। उसने फौरन ही दृष्टि हटा ली, लेकिन इससे पहले ही मैं उसकी आंखों के भाव समझ गई। मैं जान गई कि फ्रैंक को सब कुछ पता है, जबकि मैक्सिम समझते हैं कि उसे कुछ पता नहीं। मैं अपनी कॉफी चलाती रही। मेरा हाथ गरम हो रहा था और पसीज रहा था।

"मैं समझता हूं कि हम सभी अपने जीवन में कभी-न-कभी भूल कर ही बैठते हैं। निश्चय ही श्रीमती द विन्तर को पता होगा कि खाड़ी में हवा झोंके के साथ आती है और इतनी छोटी नाव के मस्तूल को छोड़ना खतरे से खाली नहीं होता। बीसियों बार उन्होंने वहां अकेले नाव चलाई होगी। लेकिन आखिर वह भी समय आया जब वह चूक गईं और उस चूक ने उनका अन्त कर दिया।

इससे हम सबको शिक्षा लेनी चाहिए।"

"दुर्घटनाएं तो अच्छे-से-अच्छे अनुभवी आदमियों के साथ भी होती हैं। सोचिये न, हर साल शिकार करते हुए कितने शिकारी मारे जाते हैं?" फ्रैंक ने कहा।

"मुझे पता है, लेकिन घुड़दौड़ में जब हार होती है तब ज्यादातर घोड़ा गिरने के कारण ही होती है। अगर श्रीमती द विन्तर अपनी नाव का मस्तूल न छोड़तीं तो यह दुर्घटना न होती। कैसा असाधारण काम किया उन्होंने। मैंने उन्हें कई बार केरिथ की शनीचरवाली दौड़ में नाव चलाते देखा था और उन्होंने एक बार भी इस तरह की भूल नहीं की। ऐसी भूल तो सिर्फ सिखतड़ों से ही हो सकती है और वह भी ऐसी जगह में—पहाड़ी के बिल्कुल पास।"

"वह बड़ी तूफानी रात थी, कहीं कुछ खराबी हो गई होगी, कहीं कोई पुरज़ा जकड़ गया होगा और वह चाकू लेने नीचे चली गई होंगी?" फ्रैंक ने कहा।

"अवश्य-अवश्य, लेकिन यह सब हम कभी नहीं जान सकेंगे और जान भी लेंगे तो अब लाभ क्या होगा। जैसा मैंने कहा, मैं तो इस छानबीन को रोक देना चाहता था, लेकिन मैं ऐसा कर नहीं सकता। मैं चाहता हूं कि यह काम मंगल को सुबह-ही-सुबह और कम-से-कम समय में खत्म हो जाय। होगी तो यह रिवाजी कार्रवाई ही, लेकिन हम शायद सम्वाददाताओं को अलग नहीं रख सकेंगे।"

फिर खामोशी छा गई और मैंने सोचा कि अब मेरे कुरसी पर से उठने का समय आ गया है।

"चलिये बाग में चलें।" मैंने उठते हुए कहा।

हम सब खड़े हो गये और चबूतरे पर पहुंच गये। मिनट-दो मिनट वहां खड़े रहकर कर्नल ने अपनी घड़ी की ओर देखा और कहा, "अच्छा, अब चलता हूं, बहुत-से काम करने हैं। इतने बढ़िया भोजन के लिए धन्यवाद।" कर्नल के साथ ही फ्रैंक ने भी हमसे विदा ली। चलते-चलते उसने मुझसे हाथ मिलाया और कहा, "मैं आपसे फिर मिलूंगा।"

"हां-हां," मैंने कहा, लेकिन उसकी ओर देखा नहीं। मुझे भय था कि मेरी आंखें देखकर वह समझ जायगा कि मैं सबकुछ जानती हूं। मैक्सिम दोनों को कार तक छोड़ने गये। लौटकर उन्होंने मेरी बांह-में-बांह डाल ली और कहा, "सबकुछ ठीक हो जायगा। तुमने कर्नल और फ्रैंक की बातें तो सुन ही लीं, जांच के काम में कोई कठिनाई न होगी, सब ठीक हो जायगा।"

मैं कुछ बोली नहीं और उनका हाथ कसकर पकड़े रही।

"लाश के किसी और की होने का तो कोई सवाल ही नहीं था। जो कुछ भी वहां था, उसे देखकर डाक्टर फिलिप्स मेरी सहायता के बिना ही लाश की शनाख्त कर सकते थे। लेकिन मैंने जो किया था, उसका वहां कोई नाम-निशान भी नहीं था। गोली हड्डी में नहीं लगी थी।"

तभी एक तितली उड़ती हुई आई और हमारे बिल्कुल पास से पंख फड़-फड़ाती निकल गई।

"तुमने सुना वे क्या कह रहे थे? उनका ख्याल है कि वह किसी तरह केबिन के अन्दर फंस गई थी। जांच के समय जूरी को भी यही विश्वास करना होगा। डाक्टर फिलिप्स उनसे यही कहेंगे।" कहते-कहते मैक्सिम रुक गये। मैं फिर भी चुप रही।

"मुझे सिर्फ तुम्हारा ध्यान है।" वह फिर बोले, "मुझे और किसी बात का अफसोस नहीं। अगर ऐसी बात फिर हो तो मैं दुबारा ऐसा ही करूंगा। मुझे खुशी है कि मैंने रेबेका को मार डाला। मुझे इसका अफसोस नहीं होगा, कभी नहीं। मुझे तो चिन्ता केवल तुम्हारी है। मैं देख रहा हूं कि इसका तुमपर क्या प्रभाव पड़ा है। मैं भोजन के समय बराबर तुम्हें देख रहा था। तुम्हारी वह अल्हड़ जवानी की खोई-खोई-सी दृष्टि, जिसे मैं प्यार करता था, सदा के लिए खो गई है। वह अब वापस नहीं आ सकती। रेबेका के बारे में सब बातें बताकर मैंने तुम्हारी उस भोली-भाली दृष्टि की भी हत्या कर दी है। वह चली गई है। चौबीस घंटे के भीतर ही वह लुप्त हो गई है। अब तुम एकाएक इतनी बड़ी दिखाई देने लगी हो...।"

: २४ :

शाम को जब फ्रिथ एक स्थानीय समाचार-पत्र लाया तब मैंने देखा कि उसके मुख पृष्ठ पर मोटे-मोटे अक्षरों में पूरे पृष्ठ की सुर्खियां छपी हुई हैं। उसने पत्र को चुपचाप मेज पर रख दिया। मैक्सिम वहां नहीं थे। वह खाने के लिए कपड़े बदलने ज़रा जल्दी चले गये थे। फ्रिथ एक क्षण तक मेरे कुछ कहने की प्रतीक्षा करता रहा। मुझे यह बात बड़ी मूर्खतापूर्ण-सी प्रतीत हुई कि जिस विषय का मैन्दरले के एक-एक आदमी से बड़ा गहरा सम्बन्ध था, उसके बारे में मैं इस प्रकार उपेक्षा की भावना दिखलाऊं। मैं बोली, "यह बड़ी ही भयानक बात है, फ्रिथ !"

"हां, मैडम ! बाहर हम सब बहुत ही परेशान हैं।"

"इन सब बातों का फिर से सामना करना श्री द विन्तर के लिए बहुत ही दुःखदायी होगा।"

"हां, मैडम ! बहुत ही दुःखदायी। मेरी समझ में तो अब इसमें कोई सन्देह नहीं रह गया है कि नाव में जो लाश है, वह स्वर्गीय श्रीमती द विन्तर की ही है।"

"हां, फ्रिथ ! अब तो कोई सन्देह नहीं रह गया है।"

"हम लोगों को यह बात बड़ी अजीब-सी लग रही है कि नाव चलाने में इतनी अनुभवी होते हुए भी उन्होंने अपनेको इस तरह केबिन में फंस जाने दिया।"

"यही बात हम सब भी सोच रहे हैं, फ्रिथ ! लेकिन दुर्घटनाएं तो होती ही रहती हैं। वह कैसे हुई, यह शायद हममें से कोई भी नहीं जान सकेगा।"

"ऐसा लगता है कि कुछ छान-बीन होगी।"

"हां, नियम तो निबाहना ही पड़ेगा।"

"क्या हममें से किसीको गवाही देनी होगी ?"

"मेरा तो ऐसा ख्याल नहीं है।"

"आप सबकी सहायता के लिए अगर मुझसे कुछ सेवा बन सके तो मैं

अपनेको बडा भाग्यवान समझूगा, श्री द विन्तर यह जानते है।"

"हां, फ्रिथ ! वह जरूर जानते है।"

"मैने नौकरों-चाकरों को इसकी चर्चा करने को मना कर दिया है, लेकिन उनपर नजर रखना बड़ा मुश्किल है, खास तौर से नौकरानियों पर। रॉबर्ट से तो मै भुगत सकता हू, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि श्रीमती डैन्वर्स को इस सूचना से बड़ा धक्का पहुंचा है।"

"हां, फ्रिथ ! मुझे भी ऐसी ही आशा थी।"

"वह खाने के बाद सीधी अपने कमरे में चली गई और अबतक बाहर नहीं आई है। एलाइस उनके पास एक प्याला चाय और अखबार लेकर गई थी। वह कहती थी कि वह बहुत बीमार दिखाई पडती है।"

"उसके लिए लेटे रहना ही ठीक है। अगर उसकी तबीयत ठीक नहीं है तो एलाइस से कह दो कि उससे उठकर आने को और घर का कामकाज देखने-भालने के लिए मना कर आये। हम सब मिल-जुलकर सारी व्यवस्था कर लेंगे।"

"मैं समझता हूं कि वह अस्वस्थ नही है, मैडम ! उन्हें श्रीमती द विन्तर की लाश के मिलने का समाचार पाकर आघात पहुंचा है। वह उनकी बहुत वफ़ादार थी।"

"हां, मुझे पता है।"

उसके बाद फ्रिथ बाहर चला गया और मैक्सिम के आने से पहले मैंने समाचार-पत्र पर एक उचटती-सी दृष्टि डाली। पहले पृष्ठ पर एक बडा-सा कॉलम इस खबर से भर रहा था और मैक्सिम का एक बहुत ही धुंधला-सा चित्र था, जो कम-से-कम दस-पन्द्रह साल पहले लिया गया होगा। सबसे नीचे मेरे विषय में एक लाइन लिखकर यह बताया गया था कि मैक्सिम ने दूसरी शादी इनसे की है और इन्हींके सम्मान में अभी-अभी उन्होंने मैन्दरले में नृत्य-समारोह किया था।

अखबार में जो कुछ लिखा था, वह था तो सब सच; लेकिन उसमें पाठकों के मनोरंजन के लिए काफी मिर्च-मसाला मिलाया गया था। उसे पढ़कर ऐसा

लगता था, जैसे मैक्सिम एक बुरे आदमी हैं। उसमें उनपर एक प्रकार से व्यंग्य कसा गया था। इसलिए मैंने अखबार को कुर्सी की गद्दी के नीचे छिपा दिया। लेकिन सवेरे जो अखबार आये, उन्हें मैं उनसे नहीं छिपा सकी। लन्दन के पत्रों में भी इसकी खबर थी और उनमें मैन्दरले का चित्र भी था। सभी पत्रों ने विशेष रूप से यही बात लिखी थी कि रेबेका की लाश नृत्य-समारोह के अगले दिन मिली, मानो ऐसा जान-बूझकर किया गया हो।

सुबह को चाय की मेज पर मैंने देखा कि पत्र पढ़ते-पढ़ते मैक्सिम का रंग सफेद पड़ने लगा। वह कुछ बोले नहीं, उन्होंने मुझे देखा और मैंने उनकी ओर अपना हाथ बढ़ा दिया।

"भाड़ में जायं ये सब! भाड़ में जायं।" वह बुदबुदाये।

नाश्ते के बाद फ्रैंक आये। वह थके हुए दिखाई दे रहे थे, जैसे रात भर सो न सके हों। उन्होंने आते ही मैक्सिम से कहा, "मैंने एक्सचेंज से कह दिया है कि वह मैन्दरले के लिए आनेवाले सब टेलीफ़ोन दफ्तर में मिला दिया करे। किसीका भी टेलीफ़ोन हो मैं सबसे खुद निबट लूंगा। मैं नहीं चाहता कि आप दोनों में से कोई परेशान हो। कई लोगों ने टेलीफ़ोन किया था और मैंने सबसे यही कह दिया कि आपकी सहानुभूति के लिए श्रीमती द विन्तर बहुत कृतज्ञ हैं और उन्हें आशा है कि उनके मित्र यह समझ लेंगे कि दो-चार दिन तक वह किसीसे फ़ोन पर बातचीत करना पसन्द नहीं करेंगे। साढ़े आठ बजे के करीब श्रीमती लेसी ने भी फ़ोन किया था। वह एकदम आना चाहती थीं।"

"हे भगवान..." मैक्सिम कुछ कहने को हुए, तभी फ्रैंक बोले, "मैंने उन्हें रोक दिया, मैंने उन्हें साफ-साफ बता दिया कि उनके आने से कोई लाभ नहीं होगा और यह भी कह दिया है कि इस समय आप श्रीमती द विन्तर के सिवा और किसीसे मिलना पसन्द नहीं करेंगे। वह जानना चाहती थीं कि अदालती जांच कब होगी। मैंने कह दिया कि यह अभी तय नहीं हुआ है। लेकिन अगर उन्होंने अखबारों में पढ़ लिया तो हम उन्हें उस समय आने से रोक नहीं सकेंगे।"

"ये बेहूदे संवाददाता..." मैक्सिम बोले।

"ठीक है, बस चले तो हम इनकी गर्दन मरोड़ दें, लेकिन हमें उनके दृष्टि-

कोण से भी सोचना है । अगर वे ऐसा न करें तो उनकी रोजी कैसे चले। लेकिन मैंने आपके लिए ऐसी व्यवस्था कर दी है कि आपको न उनसे मिलना पड़े, न बातचीत करनी पड़े । आप तो अपना सारा ध्यान यह सोचने में लगाइये कि अदालती जांच के समय आप क्या कहेंगे ।"

"मुझे क्या कहना है, यह मैं जानता हूं ।"

"हां, यह तो ठीक है । लेकिन जांच का काम बूढ़े हाकिम के हाथों में है। वह बड़ा अड़ियल आदमी है और अपनी योग्यता दिखाने के लिए वह बड़े ऊट-पटांग सवाल किया करता है ।"

मैं फ्रैंक से आंख मिलाने में कतरा रही थी, लेकिन अब मुझे इस बात का पहले से भी अधिक विश्वास हो गया था कि वह सब कुछ जानते हैं, आरम्भ से ही उन्हें सब बातों का पता है । लेकिन मैक्सिम ऐसा नहीं समझते थे और फ्रैंक भी नहीं चाहते थे कि मैक्सिम को मालूम हो जाय कि उन्हें सब बातों का पता है ।

अब हमें टेलीफोन सुनने जाने की परेशानी नहीं थी । सब टेलीफोन दफ्तर में आते थे । हम तो चुपचाप मंगल तक प्रतीक्षा कर रहे थे ।

इस बीच मैं श्रीमती डैन्वर्स से नहीं मिली । भोजन की सूची रोज आती थी और मैं उसमें कोई परिवर्तन नहीं करती थी । क्लैराइस से पूछने पर मालूम हुआ कि श्रीमती डैन्वर्स अपना काम तो पहले की ही तरह करती रहती थी, लेकिन किसीसे बोलती-चालती नहीं थी, अपने कमरे में ही खाना मंगाकर अकेली खाती थी ।

चारों ओर एक ही चर्चा थी—रसोईघर में, रियासत में, नौकरों के घर में, खेतों पर, सारे केरिथ में । हम मैन्दरले में ही रहते थे या बहुत-से-बहुत पास के बागों में चले जाते थे । हम जंगल तक में घूमने नहीं जाते थे ।

अदालती जांच मंगल को दो बजे होनेवाली थी । हमने पौन बजे खाना खा लिया । फ्रैंक आ गये । शुक्र है कि बीट्रिस नहीं आ सकी । उसका फोन आ गया कि उसके लड़के को खसरा निकल आया है, इसलिए वह आने में मजबूर है।

खाना जल्दी-जल्दी घबराहट के साथ खाया गया था । हममें से कोई भी

ज़्यादा बातचीत नहीं कर रहा था। मेरी नाभी के नीचे फिर दर्द होने लगा था।

खाने के बाद मैक्सिम ने कार स्टार्ट की। फ्रैंक अपनी कार में हमारे पीछे थे। सारे रास्ते मैं अपना हाथ मैक्सिम के घुटने पर रखे रही। वह बिल्कुल शान्त दिखाई पड़ रहे थे। घबराहट का कोई भी चिह्न उनके चेहरे पर नहीं था। मेरे हाथ ठंडे हो रहे थे और मेरा दिल अजीब तरह से धड़क रहा था। जांच लेनियन में होनेवाली थी, जो केरिथ से छः मील आगे था। हमें अपनी कार बाजार के पास खड़ी करनी पड़ी। डाक्टर और कर्नल की कारें वहां पहले से ही मौजूद थी। दूसरी कारें भी खड़ी थीं। मैंने एक रास्ता चलनेवाली को मैक्सिम की ओर उत्सुकता से ताकते देखा, उसने अपने साथी की बांह को टहोका।

"मेरे ख्याल में मैं यहीं ठहर जाऊं।" मै बोली, "मैं आपके साथ अन्दर जाना नहीं चाहती।"

"मैं तो यही नहीं चाहता था कि तुम हमारे साथ आओ। मैं तो शुरू से ही इसके खिलाफ था। तुम्हारा मैन्दरले में ही रुके रहना ठीक था।"

"नहीं, मैं यहां कार में ही बैठी रहूंगी।"

फ्रैंक ने आकर खिड़की में से झांकते हुए पूछा, "क्या श्रीमती द विन्तर नहीं आ रही हैं?"

"नहीं, वह कार में ही ठहरना चाहती हैं।"

"वह ठीक कहती हैं। उनके वहां मौजूद रहने की कोई जरूरत नहीं है। हमें देर नहीं लगेगी।"

"ठीक है।" मैंने कहा।

"वैसे मैं आपके लिए एक सीट रखूंगा, कभी आपका इरादा बदल जाय।"

वे दोनों साथ-साथ चले गये और मै वहीं बैठी रही। मिनट-पर-मिनट बीतते गए और मैं सोचती रही कि पता नहीं अन्दर सब लोग क्या कर रहे होंगे। मैं कार से उतर गई और बाजार का चक्कर काटने लगी। मैंने एक दूकान के शीशे में उचक-कर देखा, पर एक सिपाही को अपनी ओर उत्सुकता से ताकते हुए देखकर मैं उससे बचने के लिए पासवाली गली में मुड़ गई।

न जाने किस तरह मैं उस भवन की ओर चलती चली गई, जहां अदालती जांच हो रही थी। वहां अधिक भीड़ नहीं थी। मैं सीढ़ियों पर चढ़कर दरवाजे के अन्दर को खड़ी हो गई। न जाने कहां से एक पुलिस का सिपाही आ टपका। "आपको कुछ चाहिए ?" उसने पूछा।

"नहीं-नहीं।"

"आप यहां प्रतीक्षा नहीं कर सकती।"

"मुझे खेद है।" कहकर मैं फिर गली की ओर बढ़ गई।

"क्षमा कीजियेगा, क्या आप श्रीमती द विन्तर है ?"

"हां।"

"तब बात दूसरी है, आप चाहें तो प्रतीक्षा कर सकती हैं। चलकर कमरे में क्यों न बैठ जायं।

"धन्यवाद।"

वह मुझे एक छोटे-से खाली कमरे में ले गया, जिसमें एक डेस्क पड़ी थी। वह स्टेशनों के प्रतीक्षालय जैसा लगता था। मैं वहां बैठ गई। पांच मिनट मुश्किल से कटे। मुझे ऐसा लगा कि यहां से तो बाहर या कार में ही बैठकर प्रतीक्षा करना अच्छा था।

मैं उठकर गली में आ गई। सिपाही अब भी वहीं खड़ा था।

"कितनी देर और लगेगी ?" मैंने पूछा।

"मैं अभी पूछकर बताता हूं आपको।"

यह कहकर वह फौरन चला गया और क्षणभर बाद ही आकर बोला, "मैं समझता हूं कि अब ज्यादा देर नहीं लगेगी। श्री द विन्तर ने अभी-अभी अपना बयान दिया है। कप्तान, गोताखोर और डाक्टर के बयान हो चुके हैं। अब तो सिर्फ मिस्टर टैब का बयान बाकी है।"

"तब तो खत्म ही होनेवाला है।"

"हां, मुझे तो ऐसी ही आशा है।" वह बोला और फिर कुछ सोचकर उसने कहा, "अगर आप बाकी बयान सुनना चाहती हों तो वहां एक सीट है, दरवाजे के पास ही। आप चुपचाप वहां जा बैठिये, किसीको पता भी नहीं लगेगा।"

मैक्सिम का बयान हो चुका था। उन्हींका बयान मैं सुनना नहीं चाहती थी, इसीलिए मैं उनके साथ नहीं गई थी। अब कोई बात नहीं थी। मैं सिपाही के साथ जाकर चुपके-से अन्दर सीट पर बैठ गई। मैक्सिम और फ्रैंक आगे दूसरे कोने पर बैठे थे। मैं इधर-उधर दृष्टि दौड़ाने लगी। सहसा मेरा दिल धड़कने लगा। मैंने देखा कि श्रीमती डैन्वर्स और फेवेल भी वहां मौजूद थे। इतने में नाव बनानेवाला कारीगर टैब बयान देने खड़ा हो गया।

"हां मैंने ही श्रीमती द विन्तर की छोटी नाव को बदला था। वह मूल रूप से मछली मारने की एक फ्रांसीसी नाव थी। श्रीमती द विन्तर ने उसे मुझे पाल से चलनेवाली नाव की शक्ल में बदल देने के लिए दिया था।"

"क्या नाव समुद्र में चलने योग्य थी ?" अफसर ने पूछा।

"हां, पिछले साल अप्रैल के महीने में जब मैंने उसे अन्तिम बार ठीक किया था तब वह बिल्कुल ठीक थी।"

"क्या पहले कभी यह नाव उलटी थी ?"

"नहीं, अगर ऐसा होता तो मुझे जरूर पता चल जाता। श्रीमती द विन्तर उससे बहुत संतुष्ट थीं।"

"शायद उस नाव को चलाने में अधिक सावधानी की आवश्यकता थी ?"

"बात यह है साहब, कि नाव चलाते समय सबको बुद्धि तो ठिकाने रखनी ही पड़ती है, फिर भी वह नाव ऐसी तो नहीं थी कि क्षणभर की असावधानी से ही डूब जाती। वह काफी मजबूत थी और तेज-से-तेज हवा में भी आसानी से नहीं उलट सकती थी। श्रीमती द विन्तर ने इससे भी बुरे और भयानक मौसम में उसे चलाया था। ऐसी रात में नाव का डूब जाना मेरी समझ में नहीं आता।"

"लेकिन, जैसाकि ख्याल है, अगर श्रीमती द विन्तर नीचे अपना कोट लेने चली गई हों और पहाड़ी पर से एकदम आंधी का झोंका आया हो तो वह नाव डूब ही सकती थी।"

"मेरे ख्याल में तो नहीं डूब सकती थी।"

"लेकिन हुआ ऐसा ही होगा। यह न समझो कि श्रीमती द विन्तर या हम-में से कोई तुम्हारी कारीगरी को दोष देना चाहता है। हम तो सिर्फ यह जानना

चाहते थे कि जब तुमने नाव ठीक करके दी थी तब वह ठीक दशा में थी या नहीं। ऐसी दुर्घटनाएं तो पहले भी हो चुकी हैं। मैं फिर कहना चाहता हूं कि हम तुम्हारी कारीगरी को दोष देना नहीं चाहते।"

"लेकिन क्षमा करें, श्रीमान, एक श्रौर बात है, जो, आप श्राज्ञा दें तो, मैं बयान करूं।"

"हां-हां, कहो।"

"बात यह है कि पिछले वर्ष इस नाव के डूब जाने के कारण मेरी बड़ी बदनामी हुई थी श्रौर मेरे कई ग्राहक छूट गये थे। लेकिन चूंकि नाव डूब गई थी, इसलिए मैं किसीके सामने अपनी सफाई न दे सका। अब जब वह नाव मिली तब कप्तान की आज्ञा लेकर मैंने उसे देखा, जिससे कि मुझे इस बात की तसल्ली हो जाय कि मेरी कारीगरी में तो कोई दोष नहीं था।"

"यह तो स्वाभाविक ही था, आशा है तुम संतुष्ट हो गये होगे।"

"हां, मैंने उसके हर हिस्से को अच्छी तरह से देख-भाल लिया है। गोताखोर ने मुझे बताया है कि वह डूबकर रेतीले पेंदे में पहुंच गई थी। पहाड़ी तो उससे छुई भी नहीं थी। वह उससे पांच फुट की दूरी पर थी। चट्टान से टकराने का तो उसपर कोई निशान तक नहीं था।"

यह कहते-कहते वह रुक गया। अफसर ने उसकी श्रोर उत्सुकता के साथ देखा श्रौर पूछा, "कुछ श्रौर कहना है क्या तुम्हें ?"

"हां, एक बात श्रौर कहनी है, श्रीमान, मेरी समझ में नहीं आता कि नाव के तख्तों में छेद कैसे हो गये ? चट्टानों ने तो ऐसा किया नहीं। पास-से-पास की चट्टान भी उससे पांच फुट दूर थी। श्रौर फिर ये सूराख ऐसे नहीं हैं, जैसे पहाड़ी से टकराने से होते हैं। वे तो किसी भाले जैसी नुकीली चीज से बनाये गए हैं।"

मैंने उसकी श्रोर नहीं देखा। मैं फर्श पर नजर गड़ाये बैठी रही।

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा। फिर अफसर बोला, "इससे तुम्हारा क्या मतलब है ?"

"नाव के तख्तों में कुल मिलाकर तीन सूराख हैं। नाव को सीधा रखने के

लिए जो लोहा लगाया गया था, वह भी खोलकर हटा दिया गया है। इतना ही नहीं, बल्कि उसकी टोटियां तक खुली पड़ी हैं। ऐसी हालत में इतनी छोटी-सी नाव को डूबने में देर ही कितनी लग सकती थी ? मैं समझता हूं, दस मिनट भी नहीं। इसलिए मेरी अपनी राय तो यह है कि नाव उलटी नहीं, उसे जान-बूझकर डुबोया गया था।"

एकाएक लोग शोर मचाने लगे। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। गर्मी के मारे मेरा सिर चकरा रहा था। अफसर सबसे चुप रहने को कह रहे थे। वह श्री द विन्तर के बारे में कुछ कह रहे थे। मैक्सिम खड़े थे, लेकिन एक औरत का टोप मेरे सामने था, मैं उन्हें देख नहीं पा रही थी। मैं उन्हें देखना चाहती भी नहीं थी। मेरे सारे शरीर में गर्मी की लहर दौड़ रही थी।

"श्री द विन्तर, आपने जेम्स टैब का बयान तो सुन ही लिया। क्या आप इन सूराखों के विषय में कुछ बता सकते हैं ?"

"मैं कुछ नहीं बता सकता।"

"उनका कोई कारण सोच सकते हैं ?"

"नहीं।"

"क्या आपने इनके बारे में पहली बार ही सुना है ?"

"हां।"

"तब तो आपको बड़ा धक्का लगा होगा ?"

"मुझे पहले ही इस बात से काफी धक्का लग चुका है कि एक बरस पहले मैंने अपनी पत्नी की लाश शनाख्त करने में भूल की थी। अब जब मुझे यह मालूम हुआ है कि मेरी पत्नी अपनी नाव के केबिन में डूबी नहीं थी, बल्कि उसकी नाव को डुबाने के लिए उसमें जान-बूझकर छेद किये गए थे, तब क्या आप समझते हैं कि मुझे चोट नहीं लगेगी ? आपको इसपर आश्चर्य क्यों हो रहा है ?"

मैक्सिम की इस बदली हुई आवाज से मैं कांप गई और मन-ही-मन में कहने लगी, 'नहीं, मैक्सिम नहीं, तुम्हें इस तरह नहीं बोलना चाहिए। इस

तरह क्रोध में नहीं आना चाहिए। हे भगवान! उनका स्वभाव मत बिगड़ने दे।'

तभी अफ़सर बोल उठा, "मिस्टर द विन्तर! आपको विश्वास होना चाहिए कि हम सबकी आपके साथ सहानुभूति है। हम जानते हैं कि आपको यह जानकर बहुत ही धक्का लगा है कि आपकी पत्नी डूबी नहीं थीं, बल्कि डुबाई गई थीं। हम भी तो आपकी ही तसल्ली के लिए यह छानबीन कर रहे हैं, अपने आनन्द के लिए तो नहीं।"

"वह तो स्पष्ट है।"

"स्पष्ट तो है, किन्तु अभी टैब ने बताया कि नाव में तीन छेद हैं और उसकी पानी की टोंटियां खुली हुई हैं। क्या आपको उसके बयान में कोई शंका है?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं। वह नाव बनानेवाला है, वह जो कुछ भी कह रहा है, समझ-बूझकर कह रहा है।"

"श्रीमती द विन्तर की नाव की देख-भाल कौन करता था?"

"वह स्वयं करती थीं।"

"इस काम के लिए उन्होंने कोई नौकर नहीं रखा था?"

"नहीं।"

"नाव मैन्दरले के निजी बन्दरगाह में ही बांधी जाती थी?"

"हां।"

"तो इसका मतलब यह है कि अगर कोई अजनबी नाव में कोई गड़बड़ी करने की चेष्टा करता तो वह पकड़ लिया जाता। वहां कोई आम रास्ता तो है नहीं?"

"नहीं।"

"बन्दरगाह बिलकुल शान्त जगह में है और चारों तरफ़ से दरख़्तों से घिरा हुआ है, क्यों है न ऐसा ही?"

"हां।"

"तब तो अगर वहां कोई घुसे तो दिखाई न पड़े?"

"शायद न पड़े।"

"फिर भी जेम्स टैब ने हमें बताया है और उसकी बात पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं कि जिस नाव में इतने सूराख होंगे, वह दस मिनट से ज्यादा तैरती नहीं रह सकती।"

"हां।"

"तब तो यह सोचना बेकार है कि श्रीमती द विन्तर के नाव में जाने से पहले किसी आदमी ने उसमें शत्रुतावश कोई गड़बड़ी की है, क्योंकि अगर ऐसा होता तो नाव जहां बंधी थी, वहीं डूब जाती।"

"बिल्कुल ठीक।"

"इसलिए हमें यह मानना पड़ेगा कि जिसने भी उस रात को वह नाव बन्दरगाह में खोली, उसीने उसमें छेद किये और उसकी टोटियां खोलीं।"

"मेरा भी यही विश्वास है।"

"आपने अभी बताया है कि केबिन का दरवाजा और उसके रोशनदान बंद थे और आपकी पत्नी की लाश फ़र्श पर पड़ी हुई थी। यही बयान डाक्टर कप्तान ने भी दिये हैं।"

"हां।"

"अब इसमें यह बात और शामिल हो गई कि तली में किसी नुकीली चीज से छेद किये गए हैं और टोटियां खोली गई हैं। क्या इसमें आपको कोई अद्भुत बात दिखाई नहीं देती, श्री द विन्तर?"

"अवश्य दिखाई देती है।"

"क्या आपको कोई सुझाव देना है?"

"नहीं।"

"श्री द विन्तर, आपको कष्ट तो होगा, लेकिन अपने कर्त्तव्य-पालन के लिए मुझे आपसे एक निजी प्रश्न पूछना पड़ रहा है।"

"कोई बात नहीं, पूछिये।"

"क्या आपके और श्रीमती द विन्तर के आपसी सम्बन्ध बिल्कुल सुखपूर्ण थे?"

तो आखिर इन बातों की पूछताछ होने ही लगी। मेरी आंखों के सामने अंधेरा छा गया। गर्मी के मारे मेरा दम घुटने लगा। मुझे ऐसा लगने लगा

जैसे दरवाज़ा मुझसे बहुत दूर है, जैसे मेरे पैरों तले की भूमि मुझसे मिलने के लिए ऊपर उठी आ रही है।

और तभी मुझे अपने चारों ओर के कुहासे के बीच में मैक्सिम की तेज आवाज़ सुनाई दी, "कोई मेरी पत्नी को बाहर ले जाय, वह अचेत हुई जा रही है।"

: २५ :

मैं छोटे कमरे में बैठी थी। सिपाही मेरे ऊपर को झुका हुआ मुझे पानी का गिलास पकड़ा रहा था और फ्रैंक ने मेरी बांह पकड़ रखी थी। मैं बिल्कुल चुपचाप बैठी थी और मेरी आंखों के सामने सबकी सूरतें साफ़ होती आ रही थीं।

"मुझे खेद है कि मैं ऐसा मूर्खतापूर्ण काम कर बैठी। कमरे में बहुत गर्मी थी।"

"हां, वहां हवा बिल्कुल नहीं आती है।" सिपाही बोला, "यह शिकायत तो लोगों को अक्सर होती है, लेकिन उसे दूर करने के लिए कभी कुछ किया नहीं जाता। पहले भी कई बार यहां स्त्रियों को गश आ चुका है।"

"अब तो तबीयत कुछ सुधर रही है, श्रीमती द विन्तर ?" फ्रैंक ने पूछा।

"हां-हां, बहुत काफी। अब मैं ठीक हो जाऊंगी। तुम मेरी प्रतीक्षा न करो।"

"मैं आपको वापस मैन्दरले ले जाऊंगा।"

"नहीं।"

"मैक्सिम ने मुझसे कहा है।"

"नहीं, तुम्हें यहीं उनके साथ रहना चाहिए।"

"मैक्सिम ने मुझसे आपको मैन्दरले ले जाने के लिए कहा है।" यह कहते हुए उन्होंने अपनी बांह का सहारा देकर मुझे उठाया।

"कार तक चल सकती हैं, या कार यहीं लाऊं ?" फ्रैंक ने पूछा।

"मैं चल तो सकती हूं, लेकिन मैं यहीं ठहरना चाहती हूं, मैं मैक्सिम की

प्रतीक्षा करना चाहती हूं ।"

"शायद मैक्सिम को अधिक देर लगे।" फ्रैंक ने कहा और मेरी बांह पकड़े-पकड़े आगे चलना शुरू कर दिया। हम एक-दूसरे से कुछ बोले नहीं और फ्रैंक की कार के पास पहुंच गये। फ्रैंक ने दरवाजा खोल दिया और मुझे सहारा देकर अन्दर बैठाया। फिर स्वयं बैठकर उन्होंने कार स्टार्ट कर दी।

जब हम कस्बे से बाहर हो गये तब मैंने फ्रैंक से पूछा, "अब अधिक समय क्यों लगेगा? अब और क्या बाकी है?"

"शायद वे फिर से गवाही लेंगे।" फ्रैंक ने अपने सामने कठोर सफेद सड़क की ओर देखते हुए कहा।

"किन्तु वे तो सबके बयान ले चुके हैं, अब किसीको नई बात तो कहनी नहीं है।"

"शायद उन्हीं सवालों को अब दूसरे ढंग से पूछा जायगा। टैब ने सारी स्थिति ही बदल दी है। अफसर को अब दूसरे दृष्टिकोण से पूछताछ करनी पड़ेगी।"

"किस दृष्टिकोण से? तुम्हारा क्या मतलब है?"

"आपने टैब का बयान तो सुना है, अब वे लोग इसे दुर्घटना मानने को तैयार नहीं हैं।"

"कैसी बेवकूफी की बात! कैसी बेहूदी बात! बारह महीने बाद अब कौन बता सकता है कि नाव में छेद कैसे हो गये? वे आखिर साबित क्या करना चाहते हैं?"

"मुझे पता नहीं।"

"वह अफसर प्रश्न-पर-प्रश्न करके मैक्सिम को चिढ़ा देगा। उन्हें अपने स्वभाव पर काबू नहीं रहेगा और जिन बातों को वह कहना नहीं चाहेंगे वे भी कह डालेंगे। मैक्सिम यह सब बरदाश्त नहीं कर सकते, मैं जानती हूं उनसे यह सब बरदाश्त नहीं हो सकता।"

फ्रैंक ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह मोटर बहुत तेज चला रहे थे। मैं जानती थी कि साधारण रूप से उन्हें बहुत ही धीमी चाल से मोटर चलाने

की आदत है और हर चौराहे पर वह मोटर रोक-सी लेते हैं और हर मोड़ पर भोंपू बजाये बिना नहीं रहते। इसका मतलब यह था कि वह परेशान थे, बहुत परेशान।

"वह आदमी भी तो वहां बैठा था, वही जो एक बार श्रीमती डैन्वर्स से मिलने मैन्दरले आया था।" मैंने कहा।

"कौन, फ़ेवेल ? हां मैंने उसे देखा था।"

"वह वहां क्यों आया था ? उसे अदालती जांच में जाने का क्या अधिकार था ?"

"वह उनका चचेरा भाई है।"

"उसका और श्रीमती डैन्वर्स का वहां बैठकर गवाही सुनना ठीक नहीं था, मुझे उनपर विश्वास नहीं है, वे कुछ गड़बड़ कर सकते हैं।"

फ्रैंक ने फिर कोई उत्तर नहीं दिया। मैं समझ गई कि मैक्सिम के प्रति उनकी स्वामि-भक्ति इतनी अधिक है कि इस विषय पर वह मुझसे भी वाद-विवाद करना नहीं चाहते। हम चुपचाप चलते रहे और थोड़ी देर बाद मैन्दरले पहुंच गये।"

"अब आप बिल्कुल ठीक हैं न ? आप जाकर लेट जाइये।" फ्रैंक ने कहा।

"हां, मैं ठीक हूं।"

"मैं फिर वहां जा रहा हूं, शायद मैक्सिम को मेरी आवश्यकता पड़े।"

कुछ और न कहकर वह एकदम कार में बैठकर चल दिये। मैं अपने कमरे में जाकर अपनी आंखों पर हाथ रखकर लेट गई। लेकिन मेरी आंखों के सामने अदालत का दृश्य घूमता रहा और मैं सोचती रही कि पता नहीं वहां क्या हो रहा होगा। अगर फ्रैंक अकेले ही लौटे तो ? शायद मैक्सिम को जेल हो जाय। फिर क्या होगा ? शायद उन्हें फांसी हो जाय। और तब फांसी पर लटकाये जाने की एक-एक बात मेरी आंखों के सामने घूमने लगी। मैं घबरा उठी—हे भगवान्, मैं क्या सोच रही हूं, मुझे यह सब कुछ नहीं सोचना चाहिए।

शायद मुझे नींद आ गई। पांच बजे के करीब बिजली बड़े जोरों से कड़की और मैं हक-बकाकर उठ बैठी। मैं खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गई।

बादलों के मारे घना अंधेरा हो रहा था और हवा एकदम बन्द थी। मैं बाहर चबूतरे पर चली गई। बिजली फिर कड़की और एक बड़ी-सी बूंद मेरे हाथ पर गिरी। फिर एक बूंद और फिर बिजली की कड़क। किसी नौकरानी ने दौड़कर ऊपर खिड़कियां बन्द करनी शुरू कीं। राबर्ट ने आकर मेरे पीछे के कमरे की खिड़कियां बन्द कीं।

"राबर्ट, क्या वे लोग अभी तक वापस नहीं आये ?"

"नहीं, अभी तो नहीं आये। मुझे तो खयाल था कि आप भी उनके साथ होंगी।"

"नहीं, मैं कुछ देर हुई लौट आई।

"आप चाय लेंगी !"

"नहीं, मैं उनकी प्रतीक्षा करूंगी।"

यह कहकर मैं लाइब्रेरी में जाकर बैठ गई। साढ़े पांच बजे रॉबर्ट ने आकर कहा, "अभी-अभी कार आई है।"

"किसकी कार ?"

"श्री द विन्तर की।"

"क्या श्री द विन्तर स्वयं चला रहे हैं ?"

"हां।"

मैंने उठने की चेष्टा की, किन्तु मेरे पैर लड़खड़ाने लगे। मैं सोफे पर झुक गई। मेरा हलक सूख रहा था। एक मिनट बाद मैक्सिम कमरे में आ गये। वह बहुत ही थके हुए और बूढ़े-से लग रहे थे।

"जांच खत्म हो गई।" वह बोले।

मैं न तो बोल सकी, न उनके पास जा सकी।

"आत्म-हत्या ! अदालत का फैसला है कि रेबेका ने आत्म-हत्या की थी।"

"आत्म-हत्या ? लेकिन आत्म-हत्या का कारण ?" मैं सोफे पर बैठते हुए बोली।

"भगवान जाने ! उनकी समझ में कारण जानना आवश्यक नहीं है। उन्होंने मुझसे पूछा—क्या रेबेका को रुपये-पैसे का कष्ट था। रुपये-पैसे का कष्ट !

भला यह भी कोई प्रश्न था।"

"फिर क्या हुआ ? अफसर ने क्या कहा ? तुम्हें इतनी देर कैसे लग गई ?"

"वे ही प्रश्न बार-बार पूछता रहा और मीन-मेख निकालता रहा। ऐसी-ऐसी बेतुकी बातें कि मुझे अपने स्वभाव को बस में रखना कठिन हो गया। लेकिन तुम्हारा ध्यान करके मैं अपनेको सम्हाले रहा। अगर तुम बेहोश न हुई होतीं तो शायद मैं ऐसा न कर पाता। ओफ ! मैं बहुत थक गया हूं, इतना कि मुझे न कुछ दिखाई दे रहा है, न सुनाई दे रहा है, न कुछ अनुभूति ही हो रही है.।"

वह खिड़की के पास अपने दोनों हाथों से माथा पकड़े बैठ गये। रॉबर्ट और फ्रिथ प्रतिदिन की भांति चाय ले आये। मैं मैक्सिम के लिए चाय बनाकर खिड़की के पास ले गई।

"फ्रैंक कहां हैं ?" मैंने पूछा।

"वह पादरी से मिलने गये हैं। मैं भी जाता, लेकिन मैं सीधा तुम्हारे पास चला आया। मुझे तुम्हारा ध्यान रहा था कि तुम यहां अकेली बैठी प्रतीक्षा कर रही होगी और सोच रही होगी कि पता नहीं क्या हो रहा है।"

"पादरी से मिलने क्यों गये हैं ?"

"आज शाम को गिरजाघर में कुछ होगा।"

क्षण भर के लिए मैंने उनकी ओर शून्य दृष्टि से घूरकर देखा। फिर मैं समझ गई कि वह रेबेका को दफ़नाने जायंगे।

"साढ़े छ: बजे का समय निश्चित हुआ है। फ्रैंक, कर्नल, पादरी और मेरे सिवा इस बात की किसीको खबर नहीं है। यह बात कल ही तै हो गई थी।"

"लेकिन मैं चाहती थी कि आपको फिर से जाना न पड़े।"

उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। वह बड़े ही थके हुए दिखाई दे रहे थे।

"शाम को लौटकर हमें बहुत-सी बातें करनी हैं। हमें बहुत-से काम अब मिलकर करने होंगे। सबकुछ फिर से आरम्भ करना होगा। ओफ़ ! मैं तुम्हारे लिए कितना बुरा पति साबित हुआ !"

"नहीं, ऐसा मत कहिये।"

"हम फिर से आरम्भ करेंगे। एक बार इस घटना की छाया मिट जाने

पर तुम और मैं फिर से अपना जीवन आरम्भ करेंगे। अगर हम साथ-साथ रहेंगे तो अतीत हमें कोई हानि नहीं पहुंचा सकेगा। तुम्हारे बच्चे भी होंगे। अच्छा, अब समय हो गया है। मैं जल्दी ही आ जाऊंगा, आधे घंटे से अधिक नहीं लगेगा।"

फिर वह कमरे से बाहर चले गये और रॉबर्ट आकर चाय के बरतन उठा ले गया।

उनके चले जाने के बाद लाइब्रेरी में सन्नाटा छा गया और मैं चुपचाप बैठी-बैठी कल्पना करने लगी कि गिरजाघर में क्या हो रहा होगा।

सात बजे के थोड़ी देर बाद बारिश होने लगी। पहले तो हल्की-हल्की बूंदें पड़ीं, लेकिन देखते-ही-देखते मूसलाधार वर्षा होने लगी। मैंने खिड़कियां खुली रहने दीं और उनके सामने खड़ी होकर मैं ठंडी हवा लेती रही। मुझे पता भी नहीं चला कि फ्रिथ कब अन्दर आया। उसने मेरे बिल्कुल पास आकर पूछा, "क्षमा कीजियेगा, क्या श्री द विन्तर देर से लौटेंगे?"

"नहीं, बहुत देर से तो नहीं।"

"बाहर एक साहब खड़े हैं और श्री द विन्तर से मिलने का आग्रह कर रहे हैं। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं उनसे क्या कहूं।"

"कौन हैं? तुम उन्हें जानते हो?"

फ्रिथ कुछ परेशान-सा हुआ। फिर झिझकते हुए बोला, "हां मैडम! जब श्रीमती द विन्तर जिन्दा थीं तब वह अक्सर आया करते थे। उन्हें फ़ेवेल कहते हैं।"

मैंने खिड़की का दरवाजा बन्द कर दिया, क्योंकि बारिश का पानी अन्दर आ रहा था और मुड़कर फ्रिथ से कहा, "शायद फ़ेवेल से मेरा मिल लेना ठीक होगा?"

"बहुत अच्छा।"

मैंने सोचा कि मैक्सिम के आने से पहले ही मैं फ़ेवेल से निबट लूंगी। मैं यह तो नहीं समझ पा रही थी कि मैं उससे क्या बातें करूंगी। लेकिन मेरे मन में भय की कोई भावना नहीं थी। वह अन्दर आ गया।

"मैक्सिम यहां नहीं हैं और पता नहीं कब लौटेंगे। ज्यादा अच्छा हो कि आप दफ्तर को फ़ोन करके उनसे कल सुबह मिलने का समय निश्चित कर लें।"

"इन्तजार करने में मुझे कोई परेशानी नहीं होगी और शायद मुझे ज्यादा देर इन्तजार करनी भी न पड़े, क्योंकि आते हुए मैंने खाने के कमरे में झांककर देखा था। वहां मैक्स की सीट भी लगी हुई है।"

"हमारा कार्यक्रम कुछ बदल गया है। सम्भव है, मैक्सिम इस शाम को लौटें ही नहीं।"

"तो क्या वह कहीं भाग गये हैं?" फ़ेवेल ने मुस्कराते हुए कहा, जो मुझे अच्छा नहीं लगा।

"इस समय की परिस्थिति में ऐसा करना ही बुद्धिमानी की बात है।" उसने फिर कहा, "कुछ लोगों को अफ़वाहें अच्छी नहीं लगतीं और वे उनसे बचना ही ठीक समझते हैं।"

"मैं समझ नहीं सकी कि आपका क्या मतलब है?"

"यह न समझिये कि मैं विश्वास कर लूंगा कि आप कुछ नहीं समझीं। अच्छा यह बताइये, अब आपकी तबीयत तो ठीक है! मुझे बड़ा अफसोस है कि अदालती जांच के समय आपको गश आ गया। मैं आपकी सहायता के लिए आना चाहता था, लेकिन मैंने देखा कि एक वीर तो वहां पहले से ही मौजूद थे। निश्चय ही फ्रैंक को बड़ा आनन्द आया होगा। क्या वह आपको अपनी गाड़ी में घर तक पहुंचाने आया था। मेरे साथ तो आपने पांच गज भी चलने को मना कर दिया था।"

"आपको मैक्सिम से किस बात के लिए मिलना है?"

उसने आगे बढ़कर एक सिगरेट उठा ली और कहा, "उम्मीद है, मेरे सिगरेट पीने से आपको कोई असुविधा नहीं होगी। अब तो आप कुछ बड़ी लगने लगी हैं। क्या करती रहती हैं? फ्रैंक के साथ बाग में चहल-कदमी?" यह कहकर उसने धुएं का एक गुब्बारा उड़ाया और फिर कहा, "क्या फ्रिथ से कहकर मेरे लिए ह्विस्की-सोडे का एक गिलास मंगा सकती हैं?"

मैंने चुपचाप उठकर घंटी बजाई और राबर्ट से ह्विस्की-सोडा लाने को कहा। राबर्ट के आने पर फ़ेवेल उससे गंदे और अश्लील मजाक करता रहा। जब वह चला गया तब बोला, "अगर मैक्स खाना खाने न भी आयें तो कोई परवा नहीं। कहिये, आपका क्या विचार है ?"

मुझे यह सब अच्छा नहीं लगा और मैं कह उठी, "मिस्टर फ़ेवेल, मैं आपसे अशिष्ट बनना नहीं चाहती, किन्तु मैं बहुत थकी हुई हूं, अगर आप मुझे यह नहीं बताना चाहते कि आपको मैक्सिम से क्या काम है तो आपका यहां बैठना व्यर्थ है। जैसा मैं कह चुकी हूं, आप कल सुबह उनसे दफ्तर में मिल लीजिये।"

वह सोफे पर से उछलकर मेरे पास आकर खड़ा हो गया और बोला, "नहीं-नहीं, इतनी निष्ठुर न बनिये। मैं भी बहुत थका हुआ हूं। यहां से भागिये मत, मैं बिल्कुल भी खतरनाक आदमी नहीं हूं। मैक्स तो मेरे बारे में झूठी-सच्ची बातें कहते ही होंगे।"

मैंने उत्तर नहीं दिया।

उसने शराब को पीकर गिलास पास की मेज पर रखते हुए कहा, "इस घटना से मुझे बड़ा आघात लगा है। रेबेका मेरी चचेरी बहन थी और मुझे वह बहुत पसन्द थी।"

"हां, मुझे आपसे सहानुभूति है।"

"हम साथ-साथ पले थे। हर बात में हमारी आदतें एक जैसी थीं। इस संसार में मैं जितना प्यार उससे करता था, उतना किसी और से नहीं। वह भी मुझसे बहुत प्रेम करती थी। इसलिए इस दुर्घटना से मुझे कितनी चोट लगी होगी, यह आप सोच सकती हैं।"

"हां, ठीक है।"

"इसके बारे में मैक्सिम क्या करने जा रहे हैं, यही जानने मैं आया हूं। क्या वह समझते हैं कि इस दिखावटी अदालती जांच के बाद वह निश्चिंत होकर बैठ सकते हैं ?"

इस समय वह मुस्करा नहीं रहा था।

मेरी ओर झुकते हुए उसने कुछ और भी तेज आवाज में कहा, "मैं रेबेका

के साथ न्याय करवाकर रहूंगा। आत्महत्या ! हुंह ! उस बूढ़े अफसर ने जूरी से आत्महत्या का फैसला करवाया है ! मैं जानता हूं और आप भी जानती हैं कि रेबेका ने आत्महत्या नहीं की थी।"

वह और भी मेरे निकट आ गया और झुककर धीरे-से बोला, "क्या आप नहीं जानतीं ?"

तभी दरवाजा खुला और मैक्सिम कमरे में आ गये। उसके पीछे-पीछे फ्रैंक थे। मैक्सिम खड़े-के-खड़े रह गये और फ़ेवेल को घूरते हुए बोले, 'तुम यहां क्या कर रहे हो ?"

फ़ेवेल जेबों में हाथ डाले हुए मुड़ा। क्षणभर रुककर वह मुस्कराया और बोला, "बात यह है, मैक्स कि आज के अदालती फैसले के लिए मैं तुम्हें बधाई देने आया हूं।"

"तुम फौरन कमरे से बाहर निकल जाओ। उम्मीद है, मुझे और क्राउले को तुम्हें धक्के देकर बाहर निकालने की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

"ठहरो, जरा ठहरो," फ़ेवेल ने कहा और यह कहते हुए उसने दूसरी सिगरेट सुलगाई। फिर वह सोफे के हत्थे पर बैठ गया और बोला, "निश्चय ही तुम यह नहीं चाहोगे कि मैं जो कुछ कहने जा रहा हूं, उसे फ्रिथ भी सुन ले। अगर दरवाजा बन्द नहीं हुआ तो वह जरूर सुन लेगा।"

मैक्सिम हिले-डुले नहीं, लेकिन मैंने देखा कि फ्रैंक ने चुपचाप पीछे जाकर दरवाजा बन्द कर दिया।

"अब सुनो, मैक्स ! तुम इस मामले से बिल्कुल अछूते बच निकले हो। इतनी तो शायद तुम्हें भी आशा नहीं थी। मैं अदालत में था और मैंने सारी कार्रवाई देखी थी। मुझे विश्वास है कि तुमने भी मुझे देखा था। तुम्हारी पत्नी एक बड़े ही नाजुक मौके पर बेहोश हो गई थीं, यह बात मैंने देखी थी। लेकिन इसके लिए मैं उन्हें दोष नहीं दूंगा। उस समय देखना तो यह था कि जांच का रुख क्या होता है और तुम्हारे भाग्य से उसका रुख तुम्हारी ओर ही रहा। निश्चय ही तुमने उन्हें कोई रिश्वत नहीं दी थी। क्यों दी थी क्या ? मुझे तो कुछ ऐसा ही लगा।"

मैक्सिम ने फ़ेवेल की ओर बढ़ना चाहा, किन्तु फ़ेवेल ने उनका हाथ पकड़ लिया।

"जरा ठहरो, मैंने बात अभी खत्म नहीं की है। इतना तो तुम जानते ही हो कि अगर मैं चाहूं तो तुम्हारा जीना दूभर कर सकता हूं।"

मैं आतिशदान के पासवाली कुरसी पर बैठ गई और कसकर उसके हत्थे को पकड़े रही। फ्रैंक मेरे पीछे आकर खड़े हो गये। मैक्सिम अपने स्थान से नहीं हिले, वह फ़ेवेल को घूरते हुए बोले, "तुम किस तरह मेरा जीना दूभर कर सकते हो ?"

"सुनो मैक्स, मेरे ख़याल में तुम्हारे और तुम्हारी पत्नी के बीच में कोई भेद नहीं है और जैसा कि मैं समझता हूं क्राउले भी सब बातों से अपरिचित नहीं हैं। इसलिए अब मैं सारी बातें स्पष्ट कर देना चाहता हूं। आप सब लोग जानते हैं कि मैं और रेबेका एक दूसरे से प्रेम करते थे। मैंने इस बात से कभी इन्कार नहीं किया और न कभी करूंगा। ख़ैर, अबतक मैं भी दूसरों की तरह यही समझने की मूर्खता करता रहा कि रेबेका खाड़ी में नाव चलाते हुए डूब गई थी। लेकिन दो-तीन दिन पहले मैंने अखबार में पढ़ा कि उसकी नाव मिल गई है और उसके केबिन में एक लाश पड़ी है। मेरी समझ में नहीं आया कि रेबेका का साथी कौन हो सकता था। मैंने श्रीमती डैन्वर्स से आकर पूछा तो उसने बताया कि वह लाश किसी और की नहीं, बल्कि रेबेका की है। फिर भी मैंने दूसरों की तरह यही समझा कि वह किसी प्रकार कमरे में फंसकर डूब गई होगी। मैं अदालत में गया और जबतक टैब ने बयान नहीं दिया था तबतक सारी बातें आसान-सी लगती रहीं। किन्तु उसके बाद ? अब बताओ मैक्स कि तुम्हें उन सूराखों और उन टोंटियों के बारे में क्या कहना है ?"

"तुम समझते हो कि इस बारे में घंटों तक मगजपच्ची कर चुकने के बाद अब मैं तुम्हारे साथ सिर खपाऊंगा ? तुमने अदालत में सबकुछ देखा-सुना है। जब अफ़सर को फ़ैसले से संतुष्टि हो गई तो तुम्हें भी हो जानी चाहिए।"

"आत्म-हत्या ? ऐह ! रेबेका और आत्म-हत्या ! तुम समझते हो कि वह इस तरह का काम कर सकती थी ? तुम्हें पता नहीं है कि मेरे पास एक परचा

है, जिसे मैंने उसकी अंतिम निशानी समझकर रख छोड़ा है। मैं तुम्हें पढ़कर सुनाता हूं। इसमें शायद तुम्हें भी दिलचस्पी हो।"

और यह कहकर उसने अपनी जेब से एक कागज निकाला। उसपर लिखी हुई उस तिरछी लिखावट को मैं फौरन पहचान गई। उसने पढ़ना शुरू किया—

"मैंने तुम्हें टेलीफ़ोन किया, लेकिन उत्तर नहीं मिला। मैं सीधी मैन्दरले जा रही हूं। आज शाम मैं कॉटेज में रहूंगी। अगर यह परचा तुम्हें समय पर मिल जाय तो तुम फौरन कार में मेरे पीछे-पीछे आ जाना। रात को मैं कॉटेज में ही रहूंगी और तुम्हारे लिए दरवाजा खुला रखूंगी। मुझे तुमसे कुछ कहना है और मैं तुमसे जल्दी-से-जल्दी मिलना चाहती हूं।"

इसके बाद परचे को जेब में रखते हुए उसने कहा, "जो आत्म-हत्या करना चाहता है, वह इस तरह के पत्र नहीं लिखता, मैक्स! यह परचा मुझे घर लौटने पर सुबह चार बजे मिला। मुझे पता नहीं था कि उस दिन वह लंदन आई थी, वरना मैं उससे अवश्य मिलता। यह भाग्य का खेल था कि मुझे उस रात एक पार्टी में जाना पड़ गया था। पत्र पढ़कर मैंने सोचा कि अब इतनी देर से वहां जाना व्यर्थ है। दिन में टेलीफ़ोन करने का निश्चय करके मैं सो गया। बारह बजे के करीब मैंने फोन किया और तब मुझे पता चला कि रेबेका डूब गई है।"

वह बैठ गया और मैक्सिम को घूरता रहा। हममें से कोई भी नहीं बोला।

"अगर यह परचा अफ़सर की नजरों में आ जाता तो तुम्हारे लिए आफ़त आ जाती, मैक्स!"

"तुमने खड़े होकर यह परचा उन्हें दे क्यों नहीं दिया?" मैक्सिम बोले।

"ठहरो, मैं तुम्हें बरबाद करना नहीं चाहता। ईश्वर जानता है कि तुम कभी मेरे मित्र नहीं रहे, लेकिन इसके कारण मुझे तुमसे कोई द्वेष नहीं है। सभी विवाहित पुरुष अपनी पत्नियों की ओर से ऐसे ही ईर्ष्यालु होते हैं। वे होते ही ऐसे हैं। मैं उन्हें दोष नहीं देता, इस मामले में मैं कुछ-कुछ समाजवादी विचारों का हूं। मेरी समझ में नहीं आता कि अगर लोग अपनी पत्नी को

मारने की बजाय उसे दूसरों की भी साझीदार बनने दें तो इसमें हरज क्या है। खैर, मैंने सब बातें तुम्हारे सामने रख दीं। आओ, अब हम समझौता कर लें। तुम जानते हो कि मैं अमीर नहीं हूं। अगर मेरे लिए जीवन भर को हर साल दो-तीन हजार रुपये का इन्तजाम हो जाय तो मैं आराम से जिन्दगी काट सकता हूं। फिर मैं तुम्हें कभी परेशान नहीं करूंगा; इस बात की मैं भगवान के सामने शपथ ले सकता हूं।"

"मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूं कि इस घर से फ़ौरन बाहर निकल जाओ। मैं इस बात को दुहराऊंगा नहीं। दरवाजा तुम्हारे पीछे है, खुद खोलकर बाहर निकल जाओ।"

"जरा ठहरिये, मिस्टर द विन्तर, "फ्रैंक ने कहा, "बात इतनी सीधी-सादी नहीं है।"

फिर फ़ेवेल की ओर मुड़ते हुए उन्होंने कहा, "तुम्हारा मतलब मैं खूब समझ रहा हूं। दुर्भाग्य की बात है कि तुम बातों को तोड़-मरोड़कर मैक्सिम के लिए कठिनाई उत्पन्न कर सकते हो। शायद वह इसे इतने स्पष्ट रूप से नहीं देख पा रहे हैं, जितना मैं देख रहा हूं। तुम कितना रुपया चाहते हो ?"

मैक्सिम एकदम सफेद पड़ गये। उनकी माथे की नसें उभर आईं। वह बोले, "इस मामले में मत पड़ो, फ्रैंक ! यह बिल्कुल मेरा निजी मामला है। मैं किसीकी बन्दर घुड़की का शिकार नहीं बन सकता।"

"मेरी समझ में तुम्हारी पत्नी अपने लिए यह कहलवाना नहीं चाहेंगी कि वह देखो, वह रही एक हत्यारे की विधवा—एक ऐसा हत्यारा, जिसे फांसी दे दी गई है।" फ़ेवेल ने कहा और फिर वह मेरी ओर देखकर हँसा।

"तुम समझते हो, फ़ेवेल कि तुम मुझे डरा सकते हो लेकिन तुम गलती पर हो। मैं तुम्हारी किसी बात से नहीं डरता। क्या मैं फोन करके कर्नल को बुला लूं ? वह मैजिस्ट्रेट हैं, तुम्हारी कहानी में उन्हें दिलचस्पी होगी।"

फ़ेवेल मैक्सिम की ओर देखकर हँसा और बोला, "खूब गीदड़-भड़की दी तुमने, लेकिन मेरे साथ तुम्हारी यह चाल चलेगी नहीं। मैं कहता हूं कि तुममें कर्नल को फोन करने का साहस नहीं है। तुम्हें फांसी के तख्ते पर लट-

कवा देने के लिए मेरे पास काफी सबूत है।"

मैक्सिम ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह धीरे-धीरे कमरे को पारकर छोटे कमरे में चले गये और मैंने टेलीफोन की कर्र-कर्र सुनी।

"उन्हें रोको," मैंने फ्रैंक से कहा, "भगवान के लिए उन्हें रोको।"

फ्रैंक ने मुझे देखा और वह तेज़ी से दरवाजे की तरफ चले गये।

मुझे मैक्सिम की शांत और संयत आवाज सुनाई दी, "मुझे केरिथ का १७ नम्बर चाहिए।"

फ़ेवेल दरवाजे की ओर ताक रहा था। उसके मुख पर एक अजीब कठोरता का भाव था।

"मुझे अकेला छोड़ दो।" मैंने मैक्सिम को फ्रैंक से कहते सुना।

और दो मिनट बाद—"क्या कर्नल बोल रहे हैं? मैं द विन्तर हूं। क्या आप एकदम यहां आ सकते हैं? हां, मैन्दरले में। एक बहुत ही आवश्यक काम है। टेलीफोन पर नहीं, यहां आने पर बताऊंगा। आपको इस तरह घसीट बुलाने के लिए क्षमा चाहता हूं। धन्यवाद। नमस्कार।"

वह कमरे में वापस आकर बोले, "कर्नल अभी आ रहे हैं।" इसके बाद वह खिड़की खोलकर खड़े हो गये। बाहर तेज़ बारिश हो रही थी।

"मैक्सिम", फ्रैंक ने धीरे-से कहा, "मैक्सिम!"

उन्होंने उत्तर नहीं दिया। फ़ेवेल ने हँसकर दूसरी सिगरेट उठाते हुए कहा, "यदि तुम स्वयं ही फांसी के तख्ते पर लटकना चाहते हो तो मुझे क्या है!" फिर वह अखबार उठाकर सोफ़े पर पड़ गया और पन्ने उलटने लगा। फ्रैंक ने झिझकते हुए पहले मेरी ओर और फिर मैक्सिम की ओर देखा। फिर वह मेरे पास आकर खड़े हो गये।

"क्या तुम कुछ नहीं कर सकते?" मैंने फुसफुसाकर कहा," बाहर जाकर कर्नल को रोक दो, कह देना यह सब भूल से हो गया।"

मैक्सिम ने खिड़की के पास ही खड़े-खड़े चिल्लाकर कहा, "फ्रैंक, इस कमरे से बाहर नहीं जा सकते। मैं अकेला ही इस बात को भुगत लूंगा। दस मिनट में कर्नल यहां आ जायंगे।"

मैं और फ्रैंक लाचार-से होकर चुपचाप कर्नल के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

कुछ क्षण पश्चात् कर्नल आ गये। मैक्सिम ने खिड़की से मुड़कर उन्हें नमस्कार करते हुए कहा, "हम फिर मिल गये। आप बड़ी जल्दी आगये।"

"हां, आपने कहा जो था कि काम बड़ा ज़रूरी है, इसीलिए मैं एकदम चला आया।"

"आप यह तो समझ ही गये होंगे कि इस बारिश और तूफान में मैंने आपको योंही मनोरंजक के लिए नहीं बुलाया है। यह फ़ेवेल हैं, मेरी पहली पत्नी के चचेरे भाई। पता नहीं आप इनसे कभी मिले हैं या नहीं। हां फ़ेवेल, अब कह डालो, जो तुम्हें कहना हो।"

फ़ेवेल ने सोफे से उठकर अख़बार को मेज पर रख दिया। इन दस मिनटों में वह शायद कुछ शान्त हो गया था। अब वह मुस्करा नहीं रहा था और मुझे ऐसा लग रहा था कि स्थिति के इस तरह बदल जाने से वह खुश नहीं था और न ही वह कर्नल जूलियन से मिलने के लिए तैयार था। उसने अचानक ही बड़े ऊंचे स्वर में बोलना आरम्भ कर दिया, "बात यह है, कर्नल जूलियन कि इधर-उधर की बातें करने से कोई लाभ नहीं। मैं यहां इसलिए आया हूं कि मुझे अदालती फैसले से संतोष नहीं है।"

"किन्तु यह बात तो श्री द विन्तर कह सकते थे, आप नहीं।"

"नहीं, मुझे भी बोलने का अधिकार है। रेब्रेका के भाई होने के नाते ही नहीं, बल्कि अगर वह जीवित रहती तो उसके होनेवाले पति के नाते भी।"

कर्नल सहसा चौंक पड़े। "ओह, यह अलग बात है। क्या यह सच है, श्री द विन्तर?" उन्होंने पूछा।

मैक्सिम ने कंधे हिलाकर कहा, "मैं यह बात पहली बार सुन रहा हूं।"

कर्नल ने मैक्सिम और फ़ेवेल की ओर बारी-बारी से सन्देह के साथ देखा और कहा, "सुनो फ़ेवेल! असल में तुम्हें शिकायत क्या है?"

फ़ेवेल ने क्षण भर के लिए कर्नल की ओर देखा और फिर धीरे-से परचा जेब से निकालकर उन्हें पकड़ाते हुए कहा, "यह परचा रेबेका ने आत्महत्या

से कुछ ही पहले लिखा था। मैं चाहता हूं, आप इसे पढ़कर देखें कि जो औरत आत्म-हत्या करनेवाली हो, वह क्या इस तरह का पत्र लिख सकती है।"

कर्नल ने परचा पढ़कर फ़ेवेल को वापस कर दिया और कहा, 'नहीं, इसे देखकर तो ऐसा ही लगता है। लेकिन मेरी समझ में नहीं आया कि इस परचे में जिस बात की चर्चा है, वह क्या है? शायद आप या श्री द विन्तर कुछ बता सकें।"

मैक्सिम कुछ नहीं बोले। फ़ेवेल ने परचे को अंगुलियों से मोड़ते हुए कहा, "मेरी बहन ने इस परचे में मिलने के लिए एक समय निश्चित किया था। उसने मुझे मैन्दरले बुलाया था। वह मुझसे कुछ कहना चाहती थी, किन्तु वह क्या कहना चाहती थी, यह बात हम कभी नहीं जान पायेंगे। उसका इरादा नाव-घर में रात बिताने का था, इसलिए आश्चर्य नहीं कि वह नाव चलाने चली गई हो। लंदन से लौटकर वह अक्सर ऐसा किया करती थी। लेकिन नली में छेद करके अपने-आपको डुबा देना, यह एक ऐसी पागलपने की बात है, जो रेबेका नहीं कर सकती थी, हरगिज नहीं कर सकती थी, कर्नल जुलियन!"

"इस तरह मुझसे बिगड़ने से कोई लाभ नहीं होगा। इस समय न तो मैं अदालत का अफसर हूं, न जूरी। मैं तो केवल मैजिस्ट्रेट हूं। मैं तो तुम्हारी और द विन्तर की जितनी भी सहायता कर सकता हूं, करूंगा। तुम कहते हो कि तुम्हें इस बात पर विश्वास नहीं है कि तुम्हारी बहन ने आत्म-हत्या की, लेकिन अदालती जांच से यह प्रमाणित हो चुका है। लेकिन छोड़ो इस बात को, तुम्हारी क्या राय है?"

फ़ेवेल ने घूमकर मैक्सिम की ओर देखा, फिर कहा, "रेबेका ने न टोंटियां खोलीं, न तली में छेद किये, उसने आत्म-हत्या नहीं की, कदापि नहीं की। मुझे यह विश्वास है कि उसकी हत्या की गई है और अगर आप जानना चाहते हों कि हत्यारा कौन है तो वह देखिये मुंह पर मनहूस मुस्कान लिये वह खिड़की के पास खड़ा है। उससे एक साल भी नहीं ठहरा गया और जिस पहली लड़की पर उसकी दृष्टि पड़ी, उसीसे ही उसने ब्याह कर लिया। वह खड़ा है हत्यारा—मिस्टर मैक्सिम मिलीएन द विन्तर। फांसी पर लटकते हुए

वह बड़ा सुन्दर लगेगा।" और यह कहते-कहते फ़ेवेल ने एक शराबी की तरह, एक मूर्ख की तरह ज़ोर-ज़ोर से हँसना शुरू कर दिया। और इस बीच वह रेबेका के परचे को बराबर अंगुलियों के बीच उमेठता रहा।

: २६ :

फ़ेवेल का इस प्रकार हँसना, इस प्रकार अंगुलियों से इशारे करना, उसका भर्राया हुआ सुर्ख चेहरा, उसकी घूरती हुई लाल आंखें, उसका खड़े-खड़े झूमना—इन सभी बातों ने कर्नल को उसका विरोधी बना दिया और वह हमारे पक्ष में हो गये। कर्नल को उसकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ।

"इसने शराब पी रखी है।" कर्नल ने धीमे-से कहा, "यह खुद नहीं जानता कि यह क्या कह रहा है ?"

"मैंने शराब पी रखी है ?" फ़ेवेल चीखा, "नहीं, मेरे मित्र, नहीं ! आप चाहे मैजिस्ट्रेट हों, चाहे कर्नल, उससे मेरा कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। कानून मेरे पक्ष में है और मैं उसका इस्तेमाल करने जा रहा हूं। इस प्रान्त में आपके सिवा और भी दूसरे मैजिस्ट्रेट हैं और वे न्याय का मतलब समझते हैं। वे उन सिपाहियों की तरह नहीं हैं, जो बरसों पहले अयोग्यता के कारण निकाल दिये गए थे, लेकिन आज भी छाती पर तमगों की पेटी लगाये फिरते हैं। मैक्स द विन्तर ने रेबेका की हत्या की है और मैं इसे प्रमाणित करके रहूंगा।"

"ज़रा ठहरो, मिस्टर फ़ेवेल", कर्नल ने शान्त भाव से कहा, "आज अदालती जांच के समय तुम उपस्थित थे न ? अब मुझे याद आ रहा है कि मैंने तुम्हें वहां देखा था। अगर तुम्हारी समझ में फैसला न्यायपूर्ण नहीं था तो तुमने उसी समय अफसर से या जूरी से क्यों नहीं कहा ? यह पत्र तुमने अदालत में क्यों नहीं दिखाया ?"

फ़ेवेल ने कर्नल की ओर घूरकर देखा और हँसते हुए कहा, "क्यों ? क्योंकि मैंने यह नहीं चाहा। मैंने यहां आकर द विन्तर से खुद बातें करना ज्यादा पसंद किया।"

"इसीलिए तो मैंने आपको फोन किया था।" खिड़की से आगे आकर

मैक्सिम ने कहा, "हम फ़ेवेल के आरोप पहले ही सुन चुके हैं। मैंने भी इससे यही प्रश्न किया था। इसने उत्तर दिया कि यह अमीर आदमी नहीं है और अगर मैं इसके लिए दो-तीन हज़ार रुपये प्रति वर्ष की व्यवस्था कर दूं तो यह फिर कभी मुझे तंग नहीं करेगा। फ्रैंक और मेरी पत्नी यहां थे। दोनों ने इसकी बात सुनी है। पूछ लीजिये।"

"यह बिल्कुल सच है, बदनामी का डर दिखलाकर रुपये ऐंठने की यह एक सीधी और पक्की चाल है।" फ्रैंक ने कहा।

"हूं! लेकिन बात इतनी सीधी-सादी नहीं है, जितनी आप समझते हैं, इस तरह की चाल से बहुत-से लोगों के लिए परेशानी खड़ी हो सकती है, चाहे अंत में अपराधी को जेल की ही हवा क्यों न खानी पड़े। कभी-कभी निर्दोष लोगों को भी जेल का मुंह देखना पड़ जाता है। मैं चाहता हूं कि इस मामले में ऐसा न हो। पता नहीं, फ़ेवेल, इस समय तुम प्रश्नों का उत्तर देने की स्थिति में हो या नहीं। अगर तुम व्यर्थ की बातें न करो तो मामला जल्दी निपट जाय। तुमने अभी-अभी श्री द विन्तर पर एक भीषण आरोप लगाया है। क्या उसको साबित करने के लिए तुम्हारे पास कोई प्रमाण है।"

"प्रमाण ? आप क्या प्रमाण चाहते हैं ? क्या नाव के वे छेद काफी सबूत नहीं हैं ?"

"बिल्कुल नहीं। जबतक तुम कोई ऐसा गवाह न ला सको, जिसने श्री द विन्तर को छेद करते देखा हो तबतक तुम्हारी बात साबित नहीं हो सकती। बोलो, है कोई गवाह ?"

"गवाह की ऐसी की तैसी! यह काम द विन्तर ने ही किया है। दूसरा कौन रेबेका की हत्या करता ?"

"केरिथ में हजारों आदमी हैं। दरवाजे-दरवाजे जाकर पूछ क्यों नहीं लेते ? हो सकता है, मैंने ही ऐसा किया हो। श्री द विन्तर के खिलाफ़ तुम्हारे पास उतना ही प्रमाण है जितना मेरे खिलाफ़ हो सकता है।"

"अच्छा तो आप मैक्सिम की सहायता इस तरह करना चाहते हैं ? और

हां, सहायता करें भी क्यों नहीं, दोनों एक-दूसरे के यहां दावतें जो उड़ाते हैं। मैक्सिम एक बड़े आदमी हैं—मैन्दरले के स्वामी और आप ठहरे पक्के मतलबी।"

"होश सम्हालकर बातें करो, फ़ेवेल ! होश सम्हालकर बातें करो।"

"आप समझते हैं कि आप मुझे दबा लेंगे। यह न सोचिये कि अदालत में जाने के लिए मेरे पास सबूत नहीं है। मैं आपको बताना चाहता हूं कि द विन्तर ने रेबेका की हत्या मेरे कारण की है। वह जानते थे कि रेबेका मुझसे प्रेम करती थी। उनके मन में डाह थी, जबरदस्त डाह। उस रात वह नाव-घर में मेरा इंतजार कर रही थी। यह बात द विन्तर को मालूम हो गई थी और तभी उन्होंने वहां जाकर उसे मार डाला। फिर उसकी लाश को नाव में रखकर उन्होंने नाव डुबोदी।"

"कहानी तो तुमने खूब गढ़ी है, फ़ेवेल ! लेकिन मैं फिर यही कहूंगा कि तुम्हारे पास कोई सबूत नहीं है। कोई गवाह लाओ, जिसने यह सब कुछ अपनी आंखों से देखा हो और तब मैं तुम्हारी बातों पर गम्भीरता के साथ सोचना शुरू करूंगा।"

"ठहरिये", फ़ेवेल ने कुछ सोचते हुए धीरे-से कहा, "जरा ठहरिये ! हो सकता है, एक आदमी ने उस रात द विन्तर को यह काम करते हुए देखा हो। इसकी काफ़ी सम्भावना है। पता लगाना चाहिए। अगर मैं कोई गवाह पेश कर दूं तो ?"

कर्नल ने अपने कंधे हिलाये। मैंने देखा कि फ्रैंक ने मैक्सिम पर एक जिज्ञासा-भरी दृष्टि डाली। मैक्सिम कुछ नहीं बोले। वह फ़ेवेल को देख रहे थे। मैं फौरन समझ गई कि फ़ेवेल का संकेत किससे है। मैं घबरा उठी, क्योंकि मुझे इसमें संदेह नहीं रह गया कि फ़ेवेल का अनुमान ठीक है। मुझे बेन के टूटे-फूटे वे शब्द याद आने लगे, जिन्हें उस समय मैंने एक मूर्ख की बेमानी बातें भर समझ लिया था—'वह वहां नीचे चली गई है।' 'वह फिर वापस नहीं आयेगी', 'मैंने किसीसे कुछ नहीं कहा', 'वे उसको वहां ढूंढ लेंगे, हैं न ?'—बेन जानता है, मैंने सोचा, बेन ने सब-कुछ देखा है, वह एक गवाह हो सकता है। यह ध्यान आते ही मेरे चेहरे का रंग उड़ने लगा और मैं कुरसी की गद्दी पर पीठ लगाकर

बैठ गई।

"एक पागल-सा आदमी है", फ़ेवेल ने कहा, "जो दिन-रात समुद्र के किनारे पर ही रहता है। जब-कभी मैं रेबेका से मिलने आता था तब उसे पास ही इधर-उधर घूमते पाता था। रात को जब गरमी होती थी तब वह वहीं जंगल में या समुद्र के किनारे पर सोता था। उसका दिमाग़ बिल्कुल खराब है और वह अपनी ओर से कुछ बताने को तैयार नहीं होगा। लेकिन अगर उसने उस रात कुछ देखा होगा तो मैं ज़रूर उससे कहलवा लूंगा।"

"कौन है वह ? यह किसकी बात कर रहे हैं ?" कर्नल ने पूछा।

"उनका मतलब बेन से होगा।"फ्रैंक ने कहा और मैक्सिम पर फिर एक दृष्टि डाली। वह हमारे एक आसामी का बेटा है, लेकिन वह जन्म से ही पागल-सा है और वह जो कुछ भी कहता या करता है, उसके लिए उसे ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता।"

"तो उससे क्या होता ?" फ़ेवेल ने कहा, "उसकी आंखें तो हैं और वह जो देखता है वह जानता भी है। उसे तो केवल 'हां' या 'ना' में उत्तर देना होगा। अब तुम्हारी पोल खुलने लगी न ?"

"क्या उस आदमी को बुलाकर कुछ पूछा जा सकता है ?" कर्नल ने पूछा।

"हां-हां, क्यों नहीं ? मैक्सिम के उत्तर दिया। फ्रैंक राबर्ट से कहो कि उसकी मां की झोंपड़ी में जाकर उसे पकड़ लाये।"

फ्रैंक कुछ झिझके और उन्होंने आंख की कोर से मेरी ओर देखा।

"जाओ फ्रैंक, ईश्वर के लिए जल्दी जाओ, हम इस झगड़े को जल्दी निबटाना चाहते हैं।" मैक्सिम ने कहा।

फ्रैंक कमरे से बाहर चले गये और मेरी नाभी के नीचे फिर दर्द होने लगा।

कुछ क्षण बाद फ्रैंक लौट आये। उन्होंने कहा, "राबर्ट मेरी कार ले गया है, अगर बेन घर पर मिला तो उसे लाने में दस मिनट से ज्यादा नहीं लगेंगे।"

"बारिश के मारे वह घर से बाहर नहीं निकला होगा।" फ़ेवेल ने कहा, "वह वहां ज़रूर होगा और देखना मैं उसे किस तरह बुलवाता हूं।"

यह कहकर फ़ेवेल हँसा और उसने मैक्सिम पर एक नज़र फेंकी। उसका

चेहरा अब भी लाल हो रहा था और उत्तेजना के कारण उसे पसीना आ रहा था। उसने एक और सिगरेट उठाकर सुलगाई और कहा, "यहां मैन्दरले में तो सबकी एक-दूसरे से मिली-भगत रहती है। कोई एक-दूसरे का भेद खोलने को तैयार नहीं होगा, यहांतक कि मैजिस्ट्रेट साहब भी उसी गुट में शामिल हैं। दुल-हन की तो बात दूसरी है, भला कोई पत्नी अपने पति के ख़िलाफ़ कभी कोई गवाही देती है। रही फ्रैंक की बात, सो वह तो पटा लिया गया है। वह जानता है कि अगर उसने सच बात बता दी तो उसे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा। और फिर अगर मेरा ख़याल ग़लत नहीं है तो मेरे लिए उसके मन में थोड़ी-सी डाह भी है। क्यों क्राउले, तुम्हें तो रेबेका के साथ कुछ अधिक सफलता मिली नहीं न ? लेकिन जब की बात छोड़ो, अब तो काम आसान है। दुलहन जब कभी बेहोश हुआ करेंगी तो उन्हें तुम्हारी बांहें सदा सहारे के लिए मिल ही जाया करेंगी। जब वह जज के मुंह से अपने पति को प्राण-दण्ड मिलते सुनेंगी तब तो तुम्हारी बांहें और भी फुरती से उन्हें सहारा देंगी।"

इसके बाद मैक्सिम ने जो किया वह इतनी तेज़ी से हुआ कि मैं उन्हें ऐसा करते देख न पाई। मैं तो सिर्फ़ इतना ही देख पाई कि फ़ेवेल लड़खड़ाता हुआ सोफ़े के हत्थे से टकराकर ज़मीन पर जा पड़ा और मैक्सिम उसके बिल्कुल पास खड़े थे। मैंने बहुत ही अस्वस्थ-सा अनुभव किया। मैक्सिम का फ़ेवेल को इस तरह मारना मुझे उनकी शान के ख़िलाफ़ मालूम हुआ। काश यह सब देखने के लिए मैं वहां न होती!

कर्नल बिल्कुल मौन थे और बड़े गम्भीर दिखाई देते थे। उन्होंने उनकी ओर पीठ कर ली और मेरे पास आकर धीरे-से कहा, "ज्यादा अच्छा हो कि आप ऊपर चली जायं।"

मैंने सिर हिलाकर फुसफुसाते हुए कहा, "नहीं, मैं नहीं जाऊंगी।"

"इस आदमी की हालत इस वक्त ऐसी है कि यह कुछ भी कह सकता है। जो कुछ अभी हुआ है वह शोभनीय नहीं था। आपके पति ने ठीक ही किया, लेकिन अफ़सोस है कि सब आपकी नज़रों के सामने हुआ।"

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मैं फ़ेवेल को देख रही थी, जो धीरे-धीरे ज़मीन

पर से उठकर धम्म-से सोफ़े पर बैठ गया था। उसने अपने मुंह पर रूमाल रख लिया था।

फ़ेवेल ने एक गिलास शराब का मांगा और जब फ्रैंक ने लाकर उसे शराब दी तब वह उसे एक जानवर की तरह गट-गट करके पी गया। मैक्सिम फिर खिड़की के पास जाकर खड़े हो गये थे। मैंने देखा कि कर्नल उन्हें बड़े ग़ौर से टकटकी लगाये देख रहे हैं। मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। कर्नल मैक्सिम को इस तरह क्यों देख रहे हैं! क्या उनके मन में भी कुछ संदेह पैदा होने लगा है?

कुछ देर बाद फ्रैंक ने कर्नल से कहा कि रॉबर्ट आ गया दीखता है। यह कह-कर वह बाहर चले गये। फ़ेवेल यह सुनकर एकाएक उठ खड़ा हुआ और दर-वाज़े की ओर देखने लगा। इतने में दरवाज़ा खुला और फ्रैंक ने कमरे में आकर पीछे की ओर देखते हुए कहा, "चले आओ, बेन, मिस्टर द विन्तर तुम्हें कुछ सिगरेट देना चाहते हैं, डरो मत।"

बेन कुछ अजीब बेढंगेपन से कमरे में दाखिल हुआ। उसने अपने हाथों में अपनी टोपी ले रखी थी और नंगे सिर होने के कारण वह बेहूदा-सा दिखाई दे रहा था। कमरे की रोशनी से शायद उसकी आंखें चुंधिया रही थीं। उसने भोंड़े-पन से कमरे में इधर-उधर देखा। उसकी नज़र मेरे ऊपर पड़ी। बदले में मैं धीमे-से घबराहट के साथ मुस्कराई। पता नहीं उसने मुझे पहचाना या नहीं। उसने अपनी आंखें मिचमिचाईं। फ़ेवेल उसके पास पहुंचा और उसके सामने खड़ा होकर बोला, "कहो, जब हम पिछली बार मिले थे, तबसे तुम्हारे क्या हाल-चाल हैं?"

बेन ने उसे घूरकर देखा, लेकिन उसके मुंह के भाव से ऐसा लगा कि वह उसे पहचान नहीं रहा है। उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

"तुम तो मुझे जानते हो, बेन! जानते हो न?" फ़ेवेल ने कहा।

"ऐंह", बेन ने टोपी को मरोड़ते हुए उत्तर दिया।

"लो, एक सिगरेट तो लो।" उसे बक्स पकड़ाते हुए फ़ेवेल ने कहा।

बेन ने मैक्सिम और फ्रैंक की ओर देखा।

"हां-हां, जितनी चाहे ले लो।" मैक्सिम ने कहा।

बेन ने चार सिगरेट निकालकर दो सिगरेट अपने दोनों कानों के पीछे खोंस लीं और फिर से वह अपनी टोपी मरोड़ने लगा।

"तुम तो जानते हो, मैं कौन हूं ? क्यों जानते हो न ?" फ़ेवेल ने फिर कहा।

फिर भी बेन ने कोई उत्तर नहीं दिया। कर्नल उसके पास पहुंचे और बोले, "हम तुम्हें जल्दी ही वापस घर भेज देंगे, बेन ? कोई तुम्हें तकलीफ़ देना नहीं चाहता। तुमसे दो-चार बातें पूछनी हैं, बस। तुम मिस्टर फ़ेवेल को जानते हो न ?"

"मैंने उन्हें कभी नहीं देखा।" बेन ने सिर हिलाकर कहा।

"ज्यादा पागल बनने की कोशिश मत करो।" फ़ेवेल कठोरता से बोला, "तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुमने मुझे देखा है। तुमने मुझे समुद्र के किनारे श्रीमती द विन्तर के नाव-घर में जाते देखा है। बताओ देखा है न ?"

"नहीं, मैंने किसीको नहीं देखा।" बेन ने उत्तर दिया।

"झूठा ! पागल ! क्या तू यह कहने की हिम्मत करता है कि तूने मुझे पिछले साल श्रीमती द विन्तर के साथ उस जंगल में घूमते नहीं देखा था और क्या हमने एक बार तुझे खिड़की में से अपनी ओर झांकते हुए नहीं पकड़ा था ?"

"ऐंह," बेन बोला।

"वाह ! कैसा पक्का गवाह है आपका ?" कर्नल ने व्यंग्य किया।

"किसीने इसे पहले से ही समझा-बुझा दिया है और इसे घूंस दी है।" फ़ेवेल ने कर्नल की ओर घूमते हुए कहा, "मैं कहता हूं कि इसने मुझे दसियों बार देखा है। अच्छा, यह देख, क्या इसे देखकर तुझे कुछ याद आया ?" फ़ेवेल ने अपनी पतलून की जेब से एक बटुवा निकाला और एक पौंड का नोट निकालकर बेन को पकड़ाते हुए कहा, "अब भी तुझे मेरी याद आई या नहीं ?"

बेन ने सिर हिलाकर कहा, "मैंने तुम्हें कभी नहीं देखा।" और फिर वह

फ्रैंक की बांह पकड़कर बोला, "क्या वह मुझे पागलखाने ले जाने के लिए आया है ?"

"नहीं बेन," फ्रैंक ने कहा," हरगिज नहीं ।"

"मैं पागलखाने जाना नहीं चाहता," बेन बोला, "वहां बड़ा दुःख दिया जाता है । मैं घर पर ही रहना चाहता हूं । मैने कोई कसूर नहीं किया है ।"

"ठीक है, बेन ! तुम्हें कोई पागलखाने नहीं भेजेगा, क्या तुम्हें विश्वास है कि तुमने इस आदमी को कभी नहीं देखा है ?" कर्नल ने पूछा ।

"नहीं, मैंने उसे कभी नहीं देखा ।"

"तुम्हें श्रीमती द विन्तर की तो याद है न ?" कर्नल ने पूछा ।

बेन ने शंकाभरी दृष्टि से मेरी तरफ देखा ।

"नहीं, यह नहीं । वह पहली श्रीमती द विन्तर जो नाव-घर में जाया करती थीं ।"

"ऐंह !"

"तुम्हें उस महिला की याद है, जिसके पास नाव थी ?"

"वह चली गई ।" बेन ने आंखें मिचमिचाकर कहा ।

"हां, वह तो हमें पता है । वह नाव चलाया करती थीं । क्यों ठीक है न ? जब वह आखिरी बार नाव चलाने गई थीं, तब क्या तुम किनारे पर थे ? करीब एक साल पहले, जिसके बाद फिर वह वापस नहीं आई ? कुछ याद है ?" बेन ने अपनी टोपी मरोड़ते हुए पहले फ्रैंक और फिर मैक्सिम पर दृष्टि डाली ।

"ऐंह," वह बोला ।

"तुम वहां थे, थे न ?" फ़ेवेल ने आगे की ओर झुकते हुए कहा," तुमने श्रीमती द विन्तर को नाव-घर में जाते देखा था और उसके बाद ही श्री द विन्तर को भी । वह उसके पीछे नाव-घर में गये थे । उसके बाद क्या हुआ ? बताते चलो, उसके बाद क्या हुआ ?"

बेन पीछे को हटकर दीवार से चिपक गया, "मैंने कुछ नहीं देखा । मैं घर में ही रहना चाहता हूं, पागलखाने जाना नही चाहता, मैंने तुम्हें कभी नहीं देखा । मैंने तुम्हें और उन्हें जंगल में साथ-साथ नहीं देखा ।" और वह एक बच्चे

की तरह रोने लगा।

"पागल, सिडी, सौदाई कहीं का।" फ़ेवेल बड़बड़ाया।

बेन अपने कोट की बांहों से अपनी आंखें पोंछने लगा।

"तुम्हारे गवाह ने तो तुम्हारी कुछ भी मदद नहीं की, बेकार में ही वक्त बरबाद गया। क्या तुम उससे कुछ और पूछना चाहते हो?" कर्नल ने फ़ेवेल की ओर देखकर कहा।

"यह एक षड्यन्त्र है।" फ़ेवेल चिल्लाया, "मेरे खिलाफ यह एक षड्यन्त्र है और तुम सब उसमें शामिल हो। इस पागल को झूठ बोलने के लिए घूंस दी गई है।"

"मेरी समझ में अब बेन को जाने दिया जाय।" कर्नल ने कहा।

"अच्छा बेन," मैक्सिम बोले, "अब तुम जाओ। राबर्ट तुम्हें तुम्हारे घर पहुंचा देगा। डरो मत, तुम्हें कोई पागलखाने नहीं भेजेगा। राबर्ट से कहना वह उसे रसोई में से कुछ खाने को दे दे।" उन्होंने फ्रैंक से कहा।

"आज की उसकी सेवा का इनाम! क्यों ठीक है न?" फ़ेवेल ने कहा, "तुम्हारे लिए आज उसने बहुत बड़ा काम किया है, मैक्स!"

फ्रैंक बेन को कमरे से बाहर ले गये। तब कर्नल फ़ेवेल से बोले, "तुम्हारे मामले में उसने कोई मदद नहीं दी। हम जहां थे वहीं हैं। श्री द विन्तर के विरुद्ध तुम कोई प्रमाण नहीं जुटा सके, यह बात तुम खूब अच्छी तरह जानते हो। तुम कहते हो, तुम श्रीमती द विन्तर के होनेवाले पति थे और अक्सर छिपकर नाव-घर में उनसे मिला करते थे, लेकिन यह मूर्ख तक भी सौगन्ध खाकर कह गया कि उसने तुम्हें कभी नहीं देखा। तुम अपनी बात तक प्रमाणित नहीं कर सकते।"

"मैं प्रमाणित नहीं कर सकता?" फ़ेवेल ने मुस्कराकर कहा और कर्नल के पास जाकर घंटी बजाई।

"तुम क्या कर रहे हो?" कर्नल ने पूछा।

"एक मिनट ठहरिये, आपको पता लग जायगा।"

मैं समझ गई कि वह क्या करने जा रहा है। घंटी सुनकर फ्रिथ कमरे

में आया।

"श्रीमती डैन्वर्स को यहां आने के लिए कहो।" फ़ेवेल ने उससे कहा।

फ्रिथ ने मैक्सिम की ओर देखा। मैक्सिम ने धीरे-से सिर हिला दिया। फ्रिथ कमरे से बाहर चला गया।

"श्रीमती डैन्वर्स घर की नौकरानी है न ?" कर्नल ने पूछा।

"वह रेबेका की मित्र भी थी।" फ़ेवेल ने बताया, "वह ब्याह से कई साल पहले से उसके साथ थी और एक तरह से उसीने उसे पाला-पोसा था। आप डेनी को बेन से एक बिल्कुल दूसरी तरह का गवाह पायेंगे।"

बेन को बाहर छोड़कर जब फ्रैंक वापस आये तब फ़ेवेल ने कहा, "खिला-पिलाकर सुला आये उसे। लेकिन सम्हल जाओ, अबकी मामला टेढ़ा है।"

"फ़ेवेल ने श्रीमती डैन्वर्स को बुलाया है।" कर्नल ने कहा, "उन्हें खयाल है कि श्रीमती डैन्वर्स से कुछ मतलब की बातें मालूम हो सकेंगी।"

फ्रैंक ने तेजी के साथ मैक्सिम की ओर देखा। कर्नल ने उन्हें ऐसा करते देख लिया और उनके होंठ कुछ भिच-से गये। मुझे यह अच्छा नहीं लगा और मैं दांतों से अपने नाखून काटने लगी।

हम सब श्रीमती डैन्वर्स के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे!

: २७ :

श्रीमती डैन्वर्स कमरे में आई और सिकुड़ी-सिकुड़ी-सी दरवाजे के पास खड़ी हो गई।

अभिवादन के बाद कर्नल ने उससे पूछा, "मैं तुमसे एक सवाल पूछना चाहता हूं। क्या तुम्हें श्री फ़ेवेल और स्वर्गीय श्रीमती द विन्तर के आपसी सम्बन्ध की कुछ जानकारी है ?"

"वे चचरे बहन-भाई थे।"

"खून के रिश्ते की बात नहीं पूछ रहा हूं। मैं जानना चाहता हूं कि उनमें इससे भी कुछ अधिक निकटता थी क्या ?"

"मैं आपका मतलब नहीं समझी।"

"सुनो डैनी," फ़ेवेल बोला, "तुम अच्छी तरह जानती हो कि यह क्या जानना चाहते हैं ? मैं कर्नल को पहले ही बता चुका हूं, लेकिन उन्हें मेरी बात पर यक़ीन नहीं आ रहा है। मैं और रेबेका बरसों तक साथ रहे हैं और रेबेका मुझसे प्रेम करती थी। क्यों यह बात ठीक है न ?"

मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि श्रीमती डैन्वर्स ने फ़ेवेल पर एक तिरस्कारभरी दृष्टि डाली।

"नहीं, वह तुमसे प्रेम नहीं करती थीं।" उसने क्षण भर रुककर कहा।

"सुन, बुढ़िया..." फ़ेवेल ने कुछ कहना चाहा, लेकिन श्रीमती डैन्वर्स उसे बीच में ही रोककर बोली, "वह तुमसे प्रेम नहीं करती थीं, श्री द विन्तर से भी नहीं करती थीं। वह किसीसे प्रेम नहीं करती थीं। वह सब पुरुषों से घृणा करती थीं।"

फ़ेवेल ने क्रोध से लाल होकर कहा, "तो क्या वह अक़्सर रात में जंगल के रास्ते होकर मुझसे मिलने नहीं आया करती थीं ? क्या तुम उनके लिए प्रतीक्षा में नहीं बैठी रहा करती थीं ? क्या वह अपने शनीचर अक्सर मेरे साथ लन्दन में नहीं बिताया करती थीं ?"

"तो फिर क्या हुआ ?" सहसा श्रीमती डैन्वर्स ने उत्तेजित होकर कहा, "उन्हें अपना मनोरंजन करने का पूरा-पूरा अधिकार था। प्रेम तो उनके लिए सिर्फ़ एक खेल था। वह सब-कुछ मुझसे कहा करती थीं। वह प्रेम इसलिए करती थीं कि इससे उन्हें हँसने का मौक़ा मिलता था। वह तुमपर भी उसी तरह हँसा करती थीं जैसे दूसरों पर। मुझे पता है कि वापस आकर वह ऊपर के कमरे में अपने पलंग पर बैठ जाती थीं और तुम सबपर हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाती थीं।"

किसीने ऐसी बात सुनने की आशा नहीं की थी। सबके-सब हक्के-बक्के रह गये। मैक्सिम का रंग सफेद पड़ गया। फ़ेवेल ऐसे देखने लगा जैसे कुछ समझ न पाया हो और कर्नल अपनी मूंछें ऐंठने लगे। कुछ क्षणों तक सब चुप रहे। तभी श्रीमती डैन्वर्स ने अचानक रोना शुरू कर दिया। कोई कुछ

नहीं बोला, वह रोती रही और सब चुपचाप देखते रहे। मेरा जी चाहा, मैं चीख पड़ूं, कमरे से बाहर निकल जाऊं और चीखती रहूं, चीखती रहूं।

धीरे-धीरे उसने अपनेको सम्हाला और जब वह बिल्कुल चुप हो गई तब कर्नल बोले, "श्रीमती डैन्वर्स ! क्या तुम कोई ऐसा कारण बता सकती हो, जिससे श्रीमती द विन्तर खुद अपनी हत्या करने के लिए विवश हो गई हों ?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं।"

"यह असम्भव है," फ़ेवेल ने तेजी से कहा, "मेरी तरह यह भी जानती है कि रेबेका का आत्म-हत्या करना एक असम्भव बात है।"

"चुप रहिये," कर्नल ने कहा, "श्रीमती डैन्वर्स को सोचने का समय दीजिये। यह तो सब मानते हैं कि ऊपर से देखने में यह बात बिल्कुल बेतुकी मालूम देती है। मैं तुम्हारे परचे को झूठा नहीं ठहरा रहा हूं। वह तो हमें दिखाई दे ही रहा है। यह भी साफ़ है कि श्रीमती द विन्तर ने यह परचा लन्दन में लिखा था। वह तुमसे कुछ कहना चाहती थीं। अगर किसी तरह यह मालूम हो जाय कि वह तुमसे क्या कहना चाहती थीं तो सारी समस्या हल हो जाय। परचा श्रीमती डैन्वर्स को पढ़ने को दे दो, शायद वह कुछ बता सकें।"

फ़ेवेल ने परचे को जेब से निकालकर श्रीमती डैन्वर्स के सामने फरश पर फेंक दिया। उसने झुककर परचे को उठा लिया और उसे दो बार पढ़ा, फिर सिर हिलाते हुए कहा, "मेरी समझ में नहीं आया कि उनका मतलब क्या था। अगर उन्हें फ़ेवेल से कोई जरूरी बात कहनी थी तो जरूर ही वह पहले मुझसे कहतीं।"

"क्या आपमें से कोई यह नहीं बता सकता कि उस दिन वह लन्दन में कहां-कहां गईं और किस-किससे मिलीं ?"

"उनकी डायरी मेरे पास है। डायरी में वह सब बातें लिखती थीं, इसमें कभी ढील नहीं करती थीं। शायद उससे कुछ पता लग जाय, कहिये तो उसे ले आऊं?" श्रीमती डैन्वर्स ने कहा।

"क्या हम उनकी डायरी देख सकते हैं, श्री द विन्तर ?" कर्नल ने पूछा।

"हां-हां, जरूर देखिये।"

कर्नल ने उनकी ओर कुछ अजीब ढंग से देखा। फ्रैंक ने उन्हें इस तरह देखते देख लिया और मेरी ओर देखा। मैं उठकर खिड़की के पास जा खड़ी हुई। ऊपर कमरे में नौकरानियां प्रतिदिन की भांति हमारे सोने का कमरा ठीक कर रही थीं और हम लाइब्रेरी में चुपचाप बैठे-बैठे सोच रहे थे कि मैक्सिम को अपने जीवन की कड़ी-से-कड़ी परीक्षा का सामना करना पड़ रहा है।

तभी श्रीमती डैन्वर्स डायरी लिये हुए आई और बोली, "मैंने ठीक कहा था, उन्होंने सबकुछ लिख रखा है। यह वह तारीख है, जिस दिन उनकी मृत्यु हुई थी।"

कर्नल उस पृष्ठ को पढ़ने लगे और हम सब चुपचाप खड़े रहे।

"हां, यह लिखा है—१२ बजे बाल कटवाने जाना—खाना क्लब में—बेकर के पास दो बजे। बेकर! बेकर कौन था?" कर्नल ने मैक्सिम से पूछा। मैक्सिम ने सिर हिला दिया। फिर उन्होंने श्रीमती डैन्वर्स से पूछा।

"बेकर! मैंने तो कभी पहले उसका नाम नहीं सुना।" उसने उत्तर दिया।

"देखो यह लिखा है और इसके आगे एक बड़ा-सा क्रॉस भी बना है, जिसके माने हैं कि वह उससे मिली भी थीं।"

श्रीमती डैन्वर्स ने डायरी में उस नाम को पढ़ा और सोचते हुए कहा, "बेकर...बेकर।"

"यदि हमें पता चल जाय कि यह बेकर कौन है तो हम बात की तह तक पहुंच सकते हैं।" कर्नल बोले, "वह किसी महाजन के फंदे में तो नहीं थीं?"

श्रीमती डैन्वर्स ने उनकी ओर तिरस्कार के साथ देखते हुए कहा, "हुंह।"

"या डरा-धमकाकर रुपये ऐंठनेवालों के चक्कर में?" कर्नल ने पूछा और फ़ेवेल की ओर देखा।

श्रीमती डैन्वर्स ने सिर हिला दिया।

"उनका कोई शत्रु तो नहीं था, जिससे वह डरती हों?" कर्नल ने फिर पूछा।

"नहीं, वह किसी चीज से, किसी आदमी से नहीं डरती थीं। सिर्फ एक बात थी, जिसकी उन्हें चिन्ता थी और वह बात बुढ़ापा, बीमारी और बिस्तर पर पड़े-पड़े मरना। वह मुझसे कहा करती थीं कि मैं चाहती हूं कि मरूं तो ऐसे मरूं जैसे फूंक मारने से मोमबत्ती बुझ जाती है। उनके मरने के बाद बस इसी बात की तो मुझे तसल्ली थी। कहते हैं, डूबने में कष्ट नहीं होता।"

यह कहकर उसने कर्नल की ओर खोजभरी दृष्टि से देखा। हममें से कोई नहीं बोला। श्रीमती डैन्वर्स डायरी के पन्ने उलटती रही, फिर एकाएक बोली, "देखिये इधर इस पृष्ठ पर बेकर के नाम के आगे एक नम्बर भी लिखा है—०४८८। यह टेलीफोन का नम्बर है, लेकिन एक्सचेंज का नाम तो लिखा ही नहीं है। फिर भी, शायद कोशिश करने से पता लग जाय कि बेकर कौन है ?"

फ्रैंक ने दो बार नम्बर मिलाने की चेष्टा की और कुछ समय बाद आकर बताया कि यह पता लगा है कि यह नम्बर किसी डाक्टर का है, जो ब्लूम्सबरी में छः महीने पहले तक प्रैक्टिस करता था और अब उसने प्रैक्टिस छोड़ दी है, लेकिन हम उसके पास जा सकते हैं; चौकीदार ने मुझे उसके घर का पता बता दिया है और मैंने कागज़ पर लिख लिया है।"

मैक्सिम ने मेरी ओर देखा। उस शाम यह पहला अवसर था जब उन्होंने मेरी ओर दृष्टि फेरी। उनकी आंखों में विदाई का संदेश था, जैसे वह जहाज़ में बैठकर दूर जा रहे हों और मैं नीचे खड़ी उनसे विदा ले रही हूं। दो सेकन्ड तक फ़ेवेल, श्रीमती डैन्वर्स, कर्नल जूलियन, फ्रैंक सभी जैसे मेरे लिए वहां नहीं थे, बस मैं थी और मैक्सिम।

अचानक मैक्सिम ने फ्रैंक की तरफ़ हाथ बढ़ाकर कहा, "बड़ा काम किया तुमने। क्या पता है ?"

"लंदन के उत्तर में बारनेट के आस-पास। लेकिन वहां टेलीफोन नहीं है, हम फ़ोन नहीं कर सकते।"

"कहो, श्रीमती डैन्वर्स ! अब कुछ बता सकती हो तुम ?" कर्नल ने पूछा।

श्रीमती डैन्वर्स ने सिर हिलाकर कहा, "नहीं, श्रीमती द विन्तर को कभी डाक्टर की आवश्यकता नहीं थी। सब तन्दुरुस्त आदमियों की तरह वह भी

डाक्टरों से घृणा करती थीं। डाक्टर बेकर का नाम उन्होंने कभी मेरे सामने नहीं लिया।"

"उंह, होगा कोई क्रीम बनानेवाला या बाल ठीक करनेवाला ! रेबेका को पता लगा होगा और वह चली गई होगी उसके पास, योंही उत्सुकता के कारण।" फ़ेवेल ने कहा।

"नहीं, तुम्हारा ख़याल ग़लत है। चौकीदार ने मुझे बताया है कि वह स्त्रियों के रोगों का एक प्रसिद्ध विशेषज्ञ है।" फ्रैंक ने बताया।

"हूं", कर्नल अपनी मूंछें मरोड़ते हुए बोले, "तो उन्हें कुछ-न-कुछ गड़बड़ी जरूर रही होगी। बड़े आश्चर्य की बात है कि उन्होंने किसीसे इस बारे में कुछ भी नहीं कहा, तुमसे भी नहीं, श्रीमती डैन्वर्स ?"

"वह बहुत दुबली थी।" फ़ेवेल बोला, "मैं उससे कहता तो वह हँस देती और कहती कि उसे ऐसे ही अच्छा लगता है। शायद वह बेकर से कुछ खाने-पीने के बारे में पूछने गई होगी।"

"क्या यह सम्भव है, श्रीमती डैन्वर्स ?" कर्नल ने पूछा।

श्रीमती डैन्वर्स ने गरदन हिलाई। बेकर के बारे में सबकुछ सुनकर वह चकित-सी, भ्रमित-सी लग रही थी। बोली, "मेरी समझ में कुछ नहीं आता। अगर बेकर कोई डाक्टर था तो उन्होंने मुझे उसके बारे में क्यों नहीं बताया ? वह मुझसे सब बातें बता देती थीं, कुछ नहीं छिपाती थीं।"

"हो सकता है, वह तुम्हें परेशान करना न चाहती हों।" कर्नल ने कहा, "डाक्टर से वह मिली थीं, यह तो पता लग ही गया। उस रात लौटकर शायद वह तुम्हें कुछ बतातीं।"

"हां, और मिस्टर फ़ेवेल को उन्होंने परचा लिखा था। उनसे भी वह कुछ कहनेवाली थीं।" श्रीमती डैन्वर्स ने कहा।

"ठीक ! उस परचे की बात तो हम भूल ही गये थे।" परचा निकालकर फ़ेवेल ने कहा और पढ़ा, 'मुझे तुमसे कुछ कहना है, मैं तुमसे जल्दी-से-जल्दी मिलना चाहती हूं।—रेबेका।'

"बिल्कुल ठीक ! इसमें कोई संदेह नहीं है कि डाक्टर से मिलने के बाद

जो कुछ बात मालूम हुई थी वही वह मिस्टर फ़ेवेल से कहना चाहती थीं।" कर्नल ने मैक्सिम की ओर देखते हुए कहा।

"मुझे विश्वास है कि अब आप ठीक रास्ते पर आ गये हैं," फ़ेवेल बोला, "परचे का और डाक्टर से मुलाक़ात का आपस में जरूर कोई गहरा सम्बन्ध है, लेकिन वह सम्बन्ध क्या है, यही तो मैं जानना चाहता हूं। आखिर उसके साथ गड़बड़ी क्या थी ?"

"यह मालूम करना तो आसान है।" फ्रैंक ने कहा, "पता तो हमारे पास ही, मैं डाक्टर को पत्र लिखकर पूछ सकता हूं कि क्या पिछले साल श्रीमती द विन्तर ने उनसे मुलाक़ात की थी ?"

"मेरी समझ में बेकर पत्र की परवा नहीं करेगा। डाक्टरों की बातें बड़ी गुप्त रहती हैं। अगर श्री द विन्तर वहां निजी रूप से जायं और सब बातें उसे समझाकर पूछें तब शायद वह कुछ बता सकें। आपकी क्या राय है, मिस्टर द विन्तर ?"

"आप जो कुछ भी करने को कहेंगे, मैं उसके लिए तैयार हूं।" मैक्सिम ने उत्तर दिया।

"समय मिल जाय, इसके लिए वह सबकुछ कर सकते हैं। चौबीस घंटे में बहुत-कुछ हो सकता है, रेल पकड़ी जा सकती है, जहाज़ में जाया जा सकता है, हवाई जहाज़ उड़ सकता है।" फ़ेवेल ने कहा।

श्रीमती डैन्वर्स ने तीक्ष्ण दृष्टि से पहले फ़ेवेल और फिर मैक्सिम की ओर देखा और उस समय मुझे पहली बार पता चला कि फ़ेवेल ने मैक्सिम पर जो आरोप लगाया है, उसका उसे पहले पता नहीं था। उसके मुख के भाव से मैंने जान लिया कि अब उसकी समझ में कुछ-कुछ आने लगा है। पहले उसके चेहरे पर शंका का भाव था, फिर आश्चर्य और घृणा का मिला-जुला भाव और अब दृढ़ विश्वास था। वह मैक्सिम को घूरने लगी, किन्तु मैक्सिम ने उस ओर ध्यान नहीं दिया। वह कर्नल से बातें करते रहे।

"तो फिर आप क्या कहते हैं ? क्या कल सवेरे मैं इस पते पर बेकर से मिलने जाऊं ?" उन्होंने कर्नल से पूछा।

"वह अकेले नहीं जायंगे," फ़ेवेल ने ज़रा हँसकर कहा, "उन्हें इंस्पेक्टर के साथ भेजा जाय तो मुझे कोई ऐतराज़ नहीं होगा।"

"मेरी समझ में अभी इन्स्पेक्टर को इस मामले में घसीटने की ज़रूरत नहीं है।" कर्नल ने कुछ बदली हुई कठोर आवाज़ में कहा। उन्होंने 'अभी' शब्द जिस ढंग से कहा, वह मुझे अच्छा नहीं लगा। उन्होंने यह कहा ही क्यों ?

"अगर श्री द विन्तर के साथ मैं जाऊं और बराबर उनके साथ रहूं और अपने साथ ही उन्हें वापस ले आऊं तब तो तुम्हें इत्मीनान रहेगा ?" कर्नल ने पूछा।

फ़ेवेल ने मैक्सिम की ओर देखा और फिर कर्नल की ओर। उसकी आंखों में विजय की चमक थी। "हां", वह धीरे-से बोला, "हां, मेरे ख़याल से ठीक रहेगा, लेकिन अगर सुरक्षा के खयाल से मैं भी आपके साथ रहूं तो क्या आप-को कुछ ऐतराज़ होगा।"

"नहीं, तुम्हें यह मांग करने का अधिकार है, लेकिन अब तुम चलोगे तो तुम्हें गम्भीर रहना पड़ेगा।"

"इसकी चिन्ता न कीजिये, मैं गम्भीर रहूंगा, इतना ही गम्भीर जितना जज श्री द विन्तर को सज़ा सुनाते समय होगा। डाक्टर बेकर से मेरी बात की पुष्टि होगी, ऐसा मुझे विश्वास है।"

फिर उसने हँसते हुए हम सबकी ओर देखा।

"हां, तो हम सुबह कितने बजे चलेंगे।" उसने पूछा।

"आप सुबह कितनी जल्दी तैयार हो सकते हैं ?" कर्नल ने मैक्सिम से पूछा।

"जब भी आप कहें।"

"नौ बजे ?"

"हां, नौ बजे।"

"लेकिन यह कैसे विश्वास किया जाय कि रात को यह कहीं भाग नहीं जायंगे," फ़ेवेल बोला।

"क्या मेरा कहना आपके लिए काफ़ी नहीं होगा ?" मैक्सिम ने कर्नल की

ओर मुड़कर कहा। कर्नल पहली बार झिझके। उन्होंने फ्रैंक की ओर देखा। मैक्सिम का मुख लाल हो गया और उनके माथे की नसें उभर आईं। "श्रीमती डैन्वर्स," वह बोले, "जब मैं और श्रीमती द विन्तर रात को सोने चले जायं तब तुम स्वयं आकर बाहर से ताला लगा देना और सुबह खुद ही आकर सात बजे खोल देना।"

"बहुत अच्छा," श्रीमती डैन्वर्स ने उनकी ओर देखते हुए कहा।

"अच्छा, अब और कोई बात तो करनी नहीं है। मैं ठीक नौ बजे सुबह आ जाऊंगा। आपकी कार में मुझे स्थान मिल जायगा न, श्री द विन्तर।"

"हां, हां।"

कर्नल ने आकर मुझसे हाथ मिलाया और नमस्कार करते हुए कहा, "मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि इस सारे मामले में मुझे आप सबका कितना खयाल है। हो सके तो अपने पति को जल्दी सुलाने की कोशिश कीजियेगा। कल सारा दिन लग जायगा।" उन्होंने मुझसे आंख नहीं मिलाई और वह घूमकर दरवाज़े की ओर चले गये। फ्रैंक ने उनके जाने के लिए दरवाज़ा खोल दिया। फ़ेवेल ने अपना डिब्बा सिगरेटों से भर लिया और व्यंग्य के साथ कहा, "यह तो क्या उम्मीद करूं कि कोई मुझसे खाना खाने के लिए ठहरने को कहेगा।"

किसीने उत्तर नहीं दिया। सिगरेट जलाकर वह जाते-जाते बोला, "डैनी! द विन्तर के कमरे में ताला लगाना न भूलना।"

वह हँसता हुआ चला गया और उसके पीछे-पीछे श्रीमती डैन्वर्स भी चली गई। मैं और मैक्सिम कमरे में अकेले रह गये। वह खिड़की के पास ही खड़े रहे। मेरे पास नहीं आये। मैं बोली, "मैं भी सुबह आपके साथ चलूंगी।"

क्षणभर वह चुप रहे और खिड़की से बाहर देखते रहे। फिर बोले, "हां, हमें साथ-साथ रहना चाहिए।" उनकी आवाज़ बिल्कुल भाव-शून्य थी।

फ्रैंक ने वापस आकर कहा, "वे दोनों चले गये। मैंने जाते हुए उन्हें देखा है।"

"बहुत ठीक, फ्रैंक!" मैक्सिम ने कहा।

"क्या मैं कुछ करूं? कहीं तार देना हो, कुछ इन्तज़ाम करना हो?

मैं सारी रात ठहरने को तैयार हूं।"

"चिन्ता न करो, फ्रैंक! अभी तुम्हें कोई काम करने को नहीं है—कल के बाद शायद ढेरों हो जायं। समय आने पर हम सब कुछ करेंगे। आज की रात हम साथ रहना चाहते हैं, समझ गये न ?"

"हां, ठीक है।"

एक क्षरण रुककर वह अभिवादन करके चले गये।

दरवाज़ा बन्द हो जाने पर मैक्सिम मेरे पास आये। मैंने अपनी बांहें उनकी तरफ़ फैला दीं और वह एक बालक की तरह मेरे अंक में समा गये। मैंने उन्हें बांहों में लपेट लिया। बहुत देर तक हम कुछ नहीं बोले।

"कार चलाते समय हम पास ही बैठेंगे।" उन्होंने कहा।

"हां, क्यों नहीं ?"

"हमें कल की रात भी मिलेगी, वे एकदम थोड़े ही कुछ करेंगे।"

"हां।"

"अब वे इतनी सख्ती नहीं करते। वे लोग-बागों से मिलने देते है। और फिर मुक़दमे में बहुत समय लगता है। मैं हेस्टिंग्स को अपना वकील बनाऊंगा। वह सबसे योग्य हैं और उनकी मेरे पिता से भी जान-पहचान थी।"

"हां"

"और मैं उन्हें सब बातें सच-सच बता दूंगा, इससे आसानी रहती है। वकील को ध्यान रहता है कि उसे कहां क्या करना है।"

"हां।"

"तभी फ्रिथ ने आकर खाना तैयार होने की सूचना दी। भोजन के बाद जब हम कॉफ़ी पी रहे थे तब बीट्रिस का फोन आया। मैंने उससे बातें की। उसे अख़बार में यह पढ़कर बड़ा आश्चर्य हुआ था कि रेबेका ने आत्महत्या की है। उसने कहा कि यह असम्भव है, रेबेका ऐसा कभी नहीं कर सकती थी। मैक्सिम को इसके विरुद्ध कुछ करना चाहिए। इस फ़ैसले से परिवार की बदनामी होगी आदि-आदि। बीच में टेलीफ़ोन कट गया, नहीं तो पता नहीं, कबतक उसकी बातें चलती रहतीं।

कार्निस की घड़ी ने दस बजाये। मैक्सिम ने मुझे अपनी भुजाओं में बांध लिया और हम एक-दूसरे का चुम्बन करने लगे—बड़ी उग्रता से, बड़ी उत्तेजना से।

: २८ :

अगले दिन सुबह जब ६ बजे के करीब मैं जागी और खिड़की के पास गई तब मैंने देखा कि लॉन पर ओस की बूंदें चमक रही थीं। रात की वर्षा के बाद चारों ओर नया जीवन दिखाई पड़ रहा था। बाग में चिड़ियों का चहचहाना, तितलियों का उड़ना और ठंडी हवा के झोंके एक बड़ा ही सुहावना वातावरण उपस्थित कर रहे थे। हमारी परेशानियों का उनपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। मैंने सोचा कि अभी थोड़ी देर में मैन्दरले में प्रतिदिन की भांति चहल-पहल शुरू हो जायगी, माली बाग में, नौकरानियां कमरों में और बावरची रसोई-घर में अपना-अपना काम शुरू कर देंगे। फ्रिथ और राबर्ट नाश्ता लायेंगे, कुत्ते आकर लाइब्रेरी में बैठ जायंगे, मधु-मक्खियां अपने काम में संलग्न हो जायंगी। मैन्दरले का सौंदर्य, मैन्दरले का जीवन सदा ऐसा ही रहेगा। इसके जंगलों में प्रति वर्ष नये फूल खिलेंगे, वृक्षों पर चिड़ियां अपने घोंसले बनायेंगी और समुद्र की लहरें खाड़ी में जाकर टकरायेंगी।

मैक्सिम सो रहे थे। मैंने उन्हें जगाया नहीं। हमारे सामने सारे दिन का सफर था, सारे दिन की परेशानियां थीं। पता नहीं था कि आज की यात्रा के अंत में क्या होगा। भविष्य हमारे लिए अनजान था। लन्दन के उत्तर में कहीं कोई आदमी रहता था बेकर, जिसने कभी हमारे विषय में कुछ नहीं सुना था, लेकिन जिसकी मुट्ठियों में आज हमारा भाग्य बन्द था। मैं उठकर स्नानघर में गई और नहा-धोकर मैंने कपड़े बदल डाले। हर काम को करते हुए मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं अन्तिम बार यह सब कुछ कर रही हूं। एक-एक क्षण हमारे लिए बहुमूल्य था। जब मैं सोने के कमरे में वापस आई तब किसीकी हल्की-सी पदचाप सुनाई पड़ी। उसके बाद ताले में चाभी घुमाने का शब्द हुआ। क्षणभर निस्तब्धता छाई रही, फिर किसीके वापस जाने की आवाज सुनाई दी। यह श्रीमती डैन्वर्स थी। वह अपना काम भूली नहीं थी।

रात भी कमरे में आने के थोड़ी देर बाद मैंने यही पद-चाप, यही ताले में ताली के घूमने की आवाज़ सुनी थी।

थोड़ी ही देर में क्लैराइस चाय लेकर आई और मैंने मैक्सिम को जगाया। उन्होंने एक घबराये हुए बच्चे की तरह मेरी ओर देखा और अपनी बांहें फैला दीं। चाय पीने के बाद वह स्नानघर में चले गये और मैं सूटकेस में अपना सामान जमाने लगी। मैंने सोचा कि हो सकता है, हमें कुछ दिन लन्दन में ही ठहरना पड़े।

जैसे-जैसे मैं अपने काम की चीजें सूटकेस में रखती गई, वैसे-वैसे वह सोने का कमरा उजाड़-सा लगने लगा। मैंने अपना टोप ओढ़ लिया, और अपने दस्ताने और बैग भी ले लिया, जिससे मुझे फिर उस कमरे में न आना पड़े। कुहरा फट रहा था और सूरज की किरणें चमकने लगी थीं। गैलरी में आधी दूर चलने के बाद मुझे ऐसा लगा कि एक बार मैं कमरे को फिर देख आऊं। मैं लौट आई और क्षण-दो क्षण चुपचाप कमरे में खड़ी रही। खुली हुई आलमारी, खाली पलंग और मेज पर रखी हुई चाय की ट्रे—इन सबको मैं टकटकी बांधकर देखती रही। पता नहीं क्यों, उन्हें देख-देखकर मेरा मन उदास होने लगा, मानो वे मेरे बच्चे हों और उन्हें मेरा जाना अच्छा न लग रहा हो।

फिर मैं लौट पड़ी और जीना उतरकर नाश्ता करने चली गई। खाने के कमरे में बड़ी ठंड थी, क्योंकि सूरज अभी खिड़कियों पर नहीं चमका था, हम दोनों चुपचाप नाश्ता करते रहे। बीच-बीच में मैक्सिम घंटे की ओर देख लेते थे।

हॉल में राबर्ट ने सूटकेस और कम्बल लाकर रख दिया और तभी दरवाज़े पर कार के आने की आवाज सुनाई दी। मैं बाहर आकर चबूतरे पर खड़ी हो गई और मुझे अपने पिछले दिन याद आने लगे कि किस तरह हम भोजन से पहले घाटी में घूमा करते थे और फिर अखरोट के वृक्ष के नीचे किताबें और अखबार लेकर बैठ जाते थे। मैंने क्षण भर के लिए आंखें बन्द कर लीं और अपने मुंह तथा हाथों पर धूप की गरमाई का अनुभव करती रही। तभी मुझे

मैक्सिम ने पुकारा। मैं अन्दर गई और फ्रिथ ने मुझे मेरा कोट पहनने में सहायता दी। उसी समय दूसरी कार का शब्द सुनाई दिया। वह फ्रैंक की कार थी। फ्रैंक ने आकर बताया कि कर्नल बाहर फाटक पर प्रतीक्षा कर रहे हैं।

"मैं सारे दिन दफ़्तर में रहूंगा और आपके टेलीफ़ोन की प्रतीक्षा करता रहूंगा।" फ्रैंक ने कहा, "बेकर से मिलने के बाद शायद आपको मुझे लंदन बुलाना पड़े।"

"हां, हो सकता है।" मैक्सिम ने कहा।

"अभी ठीक नौ बजे हैं। आप समय पर तैयार हो गये, यह अच्छा हुआ। आज का दिन भी साफ़ है, सफ़र अच्छा रहेगा।"

"हां।"

"आशा है, आप अधिक थकेंगी नहीं, श्रीमती द विन्तर! शायद आज का सारा दिन लग जायगा।"

"मैं ठीक रहूंगी", मैंने जैस्पर की ओर देखते हुए कहा, जो कान लटकाये उदास-सा मेरे पास खड़ा था।

"जैस्पर को अपने साथ दफ़्तर में ले जाना, यह बड़ा परेशान दिखाई पड़ रहा है।" मैंने कहा।

"हां-हां, मैं ले जाऊंगा।"

"अच्छा अब चलें, कर्नल बेचैन हो रहे होंगे।" मैक्सिम ने कहा।

मैं कार में मैक्सिम के पास बैठ गई और फ्रैंक ने दरवाजा बन्द करते हुए पूछा—

"आप मुझे टेलीफोन करेंगे न?"

"जरूर।" मैक्सिम ने कहा।

मैंने मुड़कर घर की ओर देखा। फ्रिथ सीढ़ियों के ऊपर खड़ा था और राबर्ट उसके जरा ही पीछे खड़ा था। मेरी आंखों में बरबस ही आंसू भर आये, जिन्हें छिपाने के लिए मैं मुड़कर नीचे से अपना बैग उठाने लगी। मैक्सिम ने कार चला दी और देखते-ही-देखते घर आंखों से ओझल हो गया।

फाटक पर कर्नल के लिए हमने कार रोकी। मुझे देखकर वह कुछ शंकित

होते हुए से बोले, "सारा दिन लग जायगा, आपको चलना नहीं चाहिए था, आप जानती हैं कि मैं आपके पति का पूरा-पूरा ध्यान रखता।"

"मेरी चलने की इच्छा थी।" मैंने कहा।

"फ़ेवेल ने हमें चौराहे पर मिलने को कहा है, अगर वह नहीं मिला तो हम उसकी प्रतीक्षा नहीं करेंगे, वह न चले तो अच्छा ही रहेगा। मुमकिन है अभी वह सो ही रहा हो।" कर्नल ने कहा।

किन्तु जब हम चौराहे पर पहुंचे तब उसकी हरी गाड़ी वहां खड़ी थी। हमें देखकर वह मुस्कराया और अपनी गाड़ी में हमारे पीछे हो लिया।

आगे की यात्रा के लिए तैयार होकर मैं मैक्सिम के घुटने पर हाथ रखकर बैठ गई। हम चुपचाप रहे। समय बीतता गया। कर्नल पीछे सीट पर बैठे-बैठे बीच-बीच में झपकियां लेते रहे। फ़ेवेल की गाड़ी बराबर हमारे साथ-साथ रही, कभी आगे, कभी पीछे। एक बजे हम पुराने ढंग के एक होटल में खाना खाने रुके। फ़ेवेल सामने के एक दूसरे होटल में घुस गया। खाने के बाद हम फिर चल दिये और तीन मिनट बाद फ़ेवेल की कार भी हमें अपने पीछे आती हुई दिखाई दी। तीन बजे के करीब हम लंदन के बाहरी हिस्से में पहुंचे। इस समय मुझे थकावट लगने लगी थी। लंदन में गरमी थी और आस-पास का शोर मुझे बुरा लग रहा था। यहां बारिश नहीं हुई थी।

लंदन में से होकर निकलना एक अनन्त यात्रा-सा लग रहा था। हेम्पस्टेड पहुंचते-पहुंचते मेरे सिर में ढोल-सा बजने लगा और मेरी आंखें जलने लगीं।

मैंने सोचा कि मैक्सिम भी कितने थक गये होंगे। उनका रंग पीला पड़ रहा था और आंखों के नीचे काले धब्बे दिखाई दे रहे थे। लेकिन वह कुछ बोल नहीं रहे थे। कर्नल जूलियन पीछे बैठे-बैठे अंगड़ाइयां ले रहे थे। हेम्पस्टेड को पार करते ही कर्नल ने एक नक़्शा निकालकर अपने घुटनों पर रख लिया और वह मैक्सिम को बारनेट का रास्ता बताने लगे। सड़क साफ़ थी और जगह-जगह रास्ता बतानेवाले खम्भे लग रहे थे। फिर भी, कर्नल हर मोड़ पर मैक्सिम को इशारा करके बताते हुए चल रहे थे और जहां कहीं भी सन्देह होता वह खिड़की से बाहर झांककर किसी राहगीर से पूछ-ताछ कर लेते।

बारनेट पहुंचकर तो वह हर दो-चार मिनट बाद मैक्सिम को रोक देते और किसी भी चलनेवाले को ठहराकर डॉक्टर बेकर के मकान का पता पूछने लगते। इसी प्रकार पूछते-पाछते हम चले जा रहे थे। मैक्सिम बड़े थके हुए दिखाई दे रहे थे। अन्त में एक डाकिए ने हमें डॉक्टर बेकर के घर का पता बताया। उस घर के पास से हम दो बार निकल चुके थे। उसपर कोई साइनबोर्ड नहीं लगा हुआ था। कुछ क्षण तक हम चुपचाप कार में बैठे रहे। फिर कर्नल बोले, "पांच बजकर बारह मिनट हुए हैं। शायद वह चाय पी रहे होंगे। कुछ देर ठहर जाना ठीक होगा।"

मैक्सिम ने एक सिगरेट जला ली और अपना हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया। वह कुछ बोले नहीं। कर्नल नक्शा मोड़ने लगे।

"यहां हम लंदन से बाहर-बाहर होकर आ सकते थे। इससे चालीस मिनट बच जाते। दो-सौ मील तक तो हम अच्छी स्पीड से आये, उसके बाद से हमें देर होने लगी।" कर्नल ने कहा।

कुछ देर तक हम फिर चुप रहे। इसके बाद कर्नल कार से उतरे और सड़क पर खड़े होकर बोले, "कहो श्री द विन्तर, क्या इरादे हैं ?"

"मैं तैयार हूं।" मैक्सिम ने कहा और हम भी उतर पड़े। फ़ेवेल भी हमारे पास आ गया।

आगे चलकर हम फाटक के अन्दर दाखिल हुए। द्वार पर हम कुछ ठिठके। फिर कर्नल ने घंटी बजाई और एक नौकरानी ने आकर दरवाजा खोला।

"डॉक्टर बेकर यहीं रहते हैं ?" कर्नल ने पूछा।

"जी हां, अन्दर आ जाइये।" कहकर उसने बाईं ओर हॉल का दरवाजा खोल दिया और हम कमरे में दाखिल हो गये। फ़ेवेल वहां खड़ा होकर एक मूर्ति को देखने लगा। कर्नल खाली कार्निस के पास जाकर खड़े हो गये। मैं और मैक्सिम खिड़की से बाहर की ओर देखने लगे। घर के पीछे से टेनिस खेलने की आवाज आ रही थी। पांच मिनट की प्रतीक्षा के बाद डॉक्टर कमरे में आये।"

"क्षमा करें, आपको प्रतीक्षा करनी पड़ी, मैं हाथ धोने चला गया था। जब नौकरानी ने मुझे बताया तब मैं टेनिस खेल रहा था। बैठिये न ?" यह कहकर डॉक्टर

ने मेरी ओर देखा। मैं पासवाली कुरसी पर बैठ गई।

"आपको तो ऐसा लग रहा होगा, जैसे हमने आपपर आक्रमण कर दिया, डॉक्टर बेकर!" कर्नल बोले, "आपको कष्ट देने के लिए मैं क्षमा चाहता हूं। मेरा नाम जूलियन है, यह श्री द विन्तर हैं, यह श्रीमती द विन्तर और यह श्री फ़ेवेल। आपने इन दिनों समाचार-पत्रों में श्री द विन्तर का नाम तो पढ़ा होगा?"

"हां हां, पढ़ा तो है शायद! कोई अदालती जांच आदि का क़िस्सा था न! मेरी पत्नी उसके बारे में सबकुछ पढ़ती रही हैं।"

"जूरी ने इसे आत्महत्या का मामला घोषित किया है।" फ़ेवेल ने आगे बढ़कर कहा, "लेकिन मैं कहता हूं कि यह बिल्कुल असम्भव है। श्रीमती द विन्तर मेरी चचेरी बहन थी। मैं उसे बहुत अच्छी तरह जानता था। वह यह काम नहीं कर सकती थी और सबसे बड़ी बात तो यह है कि इसका कोई कारण नहीं था। हम जानना चाहते हैं कि जिस दिन उसकी मृत्यु हुई थी, उस दिन वह आपसे मिलने क्यों आई थी?"

"यह बात जूलियन और मुझपर छोड़ दो। तुम क्या कह रहे हो, यह डॉक्टर की समझ में बिल्कुल नहीं आया।" मैक्सिम बोले।

वह डॉक्टर की ओर मुड़े, जिनके माथे पर बल पड़े हुए थे और जिनकी मुस्कान होंठों पर ही गायब हो चुकी थी।

"मेरी मृत पत्नी का चचेरा भाई अदालत के फ़ैसले से संतुष्ट नहीं है।" मैक्सिम ने कहा, "हम आपके पास इसलिए आये हैं कि मेरी पत्नी की डायरी में आपका नाम और आपके पुराने स्थान का टेलीफ़ोन नम्बर लिखा हुआ मिला है। वह उस दिन दो बजे आपसे मिलने आई थी। लंदन में वह उसका अंतिम दिन था। क्या आप इसकी कुछ पुष्टि कर सकते हैं?"

डॉक्टर बेकर बड़ी उत्सुकता के साथ सुनते रहे, किन्तु जब मैक्सिम कह चुके तब सिर हिलाकर बोले, "मुझे बहुत दुःख है, आपने यहां आकर गलती की है। मैंने अपने जीवन में कभी श्रीमती द विन्तर नाम की किसी स्त्री का इलाज नहीं किया।"

कर्नल ने उन्हें वह पन्ना दिखाया, जो वह डायरी से फाड़ लाये थे और कहा, "देखिये, इसपर यहां आपका नाम और टेलीफ़ोन नम्बर लिखा है। दो बजे का समय दिया गया है। इसके आगे के क्रास से पता लगता है कि वह आपसे मिली थीं।"

डॉक्टर ने परचे को देखते हुए कहा, "बड़ी ही अजीब बात है! नम्बर तो बिल्कुल ठीक है।"

"हो सकता है, वह आपसे किसी दूसरे नाम से मिलने आई हों?" कर्नल ने कहा।

"हां, हो तो सकता है, लेकिन साधरण तौर पर ऐसा होता नहीं है। मैं ऐसी बात को कभी प्रोत्साहन नहीं देता।"

"आपकी पिछली फ़ाइलों में मुलाक़ात के रिकार्ड तो होंगे ही। मैं जानता हूं कि आपसे उन्हें देखने के लिए कहना अशिष्टता है, लेकिन मामला बहुत ही असाधारण है। हम सोचते हैं कि आपसे की गई मुलाक़ात का उनकी आत्महत्या से कोई सम्बन्ध अवश्य है।"

"आत्महत्या नहीं, हत्या।" फ़ेवेल ने बीच में कहा।

डॉक्टर ने अपनी दृष्टि उठाकर मैक्सिम की ओर जिज्ञासा की दृष्टि से देखा। फिर कहा, "मुझसे जितना हो सकेगा, मैं आपकी सहायता करने की चेष्टा करूंगा। आप जरा ठहरिये, मैं अभी अपनी फ़ाइलें देखकर आता हूं। इतने आप लोग सिगरेट पीजिये।" यह कहकर डाक्टर बेकर अन्दर चले गये।

हम सब चुपचाप बैठे रहे। कुछ क्षण बाद डाक्टर एक बड़ी किताब और फ़ाइलें लिये कमरे में आये। उन्हें मेज पर रखते हुए वह बोले, "पिछले वर्ष की सारी फ़ाइलें मैं उठा लाया हूं। छः महीने पहले ही मैंने प्रैक्टिस छोड़ी है। तबसे मैंने इन्हें नहीं देखा है।" किताब खोलकर वह पन्ने पलटने लगे और आप-ही-आप 'सात, आठ, दस, यहां कुछ नहीं है।' बुड़बुड़ाते रहे। "आपने १२ तारीख बताई थी न! दिन के दो बजे? उस दिन मैंने श्रीमती डैन्वर्स नाम की एक स्त्री से मुलाक़ात की थी।"

"डैनी? क्या मतलब?" फ़ेवेल कुछ और कहने को हुआ कि मैक्सिम ने

उसे बीच में ही रोक दिया।

"यह तो स्पष्ट हो गया कि उसने ग़लत नाम दिया था।" मैक्सिम ने कहा, क्या आपको उसकी मुलाक़ात की कुछ बात याद है, डाक्टर ?"

"डाक्टर अपनी फाइलें ढूंढ़ रहे थे। अचानक वह कुछ देखकर बोल उठे, "हां श्रीमती डैन्वर्स, अब मुझे याद आ गया।"

"लम्बी, पतली, बहुत सुन्दर ?" जूलियन ने धीरे-से बताया।

"हां," डाक्टर ने कहा, फिर मैक्सिम की ओर मुड़कर बोले, "देखिये हमारे पेशे के लिए यह सब बताना अनुचित है। हम बीमारों की बातें गुप्त रखा करते हैं। लेकिन आपकी पत्नी मर चुकी हैं और यह मामला असाधारण है। आप चाहते हैं कि मैं कोई ऐसा कारण बता सकूं, जिससे सम्भवत: आपकी पत्नी को आत्महत्या करने की प्रेरणा मिली हो। शायद मैं बता सकता हूं। उस स्त्री को, जिसने अपनेको श्रीमती डैन्वर्स बताया था, एक बड़ी ख़तरनाक बीमारी थी।"

डाक्टर रुक गये और हम सबकी ओर देखने लगे।

"मुझे उनकी अच्छी तरह याद है। सबसे पहले वह मेरे पास आपकी बताई हुई तारीख से एक सप्ताह पहले आई थीं। उन्होंने कुछ तकलीफें बताईं और मैंने उनके कुछ एक्स-रे लिये। दूसरी बार वह एक्स-रे का परिणाम जानने आई थीं। मुझे उस समय की अच्छी तरह याद है, जब वह मेरे कमरे में एक्स-रे का फोटू लिये खड़ी थीं और कह रही थीं, 'मैं सच बात जानना चाहती हूं। मैं तसल्ली दिलानेवाले शब्द और हीले-हवाले की बात पसन्द नहीं करती। आप जो कुछ भी बात है, मुझे एकदम ठीक-ठीक बता दें।' " इतना कहकर डाक्टर रुक गये।

फिर वह बोले, "उन्होंने सच बात जाननी चाही और मैंने उन्हें सच बात बता दी। कुछ बीमार ऐसे होते हैं, जिनसे टाल-मटोल करना ठीक नहीं होता। यह श्रीमती डैन्वर्स या श्रीमती द विन्तर झूठी बातों में आनेवाली स्त्री नहीं थीं; यह बात तो आप भी जरूर जानते होंगे। उन्होंने सुना और सुनकर बड़े धैर्य के साथ उसे सहन किया। वह रत्तीभर भी नहीं घबराईं और बोलीं कि

उन्हें स्वयं ही कुछ समय से उस बीमारी की शंका हो रही थी। वह मेरी फ़ीस देकर चली गई और उसके बाद मैंने उन्हें नहीं देखा।"

डाक्टर बेकर ने किताब बन्द करते हुए कहा, "दर्द तो उस समय तक थोड़ा ही था, लेकिन रोग की जड़ गहरी पहुंच चुकी थी और तीन-चार महीने बाद उन्हें बेहोशी की दवा देकर जीवित रखना पड़ता। आपरेशन से लाभ की कोई आशा नहीं थी, यह मैंने उन्हें बता दिया था। बीमारी जड़ पकड़ चुकी थी और ऐसी हालत में बेहोश करके रखने के सिवा और कोई दूसरा इलाज नहीं होता। बाहर से वह स्वस्थ मालूम पड़ती थीं। दुबली अवश्य थीं और काफी पीली भी, लेकिन आजकल तो दुबली रहने का फैशन ही हो गया है। बीमार की ऊपरी दशा को देखकर इस बीमारी का कुछ पता नहीं चलता। लेकिन दर्द धीरे-धीरे बढ़ता रहता है और जैसा कि मैंने बताया चार-पांच महीने में बीमार को दवा देकर बेहोश रखना पड़ता है। एक्स-रे में उनके गर्भाशय में एक फोड़ा दिखाई दिया था, जिसके माने यह थे कि बच्चा तो उन्हें कभी हो ही नहीं सकता था।"

कुछ क्षण सब चुप रहे। फिर कर्नल जूलियन बोले, "जो कुछ हम मालूम करना चाहते थे वह सब आपने बता दिया। अगर हमें आपकी फाइल में लिखी बात की नक़ल मिल जाय तो बहुत काम देगी।"

"हां-हां, जरूर।" डाक्टर ने कहा।

हम सब खड़े हो गये और एक-एक करके सबने डाक्टर से हाथ मिलाया। चलते समय डाक्टर बोले, "रिपोर्ट मैं आपके पास भेजूं या श्री द विन्तर के पास।"

"हो सकता है, हमें उसकी आवश्यकता ही न पड़े। मैं या श्री द विन्तर आपको पत्र लिखेंगे।" कर्नल ने कहा।

"मुझे प्रसन्नता है कि मैं आपके किसी काम आ सका। यह बात तो मेरे दिमाग़ में ही नहीं आई थी कि श्रीमती डैन्वर्स और श्रीमती द विन्तर एक हो सकती हैं।"

"यह तो स्वाभाविक ही है।" कर्नल ने कहा।

और डाक्टर को धन्यवाद देकर हम सब बाहर निकल आये।

: २६ :

बाहर निकलकर हम कार के पास खड़े हो गये। कोई किसीसे नहीं बोला। एक बाजा बजानेवाले फ़कीर ने मैक्सिम के आगे अपनी टोपी बढ़ाई और मैक्सिम ने उसमें दो शिलिंग डाल दिये। कर्नल ने सबको सिगरेट पेश की। फ़ेवेल ने जब माचिस पकड़ी तब उसका हाथ कांप रहा था। वह हमसे आंखें नहीं मिला रहा था। अपनी सिगरेट पर टकटकी लगाये उसने पूछा, "यह कैंसर की बला कहां से आ टपकी। यह बीमारी छूत की तो नहीं होती ?"

किसीने उत्तर नहीं दिया। कर्नल ने अपने कंधे हिला दिये।

"मुझे तो इसका सपने में भी ख्याल नहीं था।" फ़ेवेल ने कहा, "उसने इसे सबसे छिपाये रखा, डैनी तक से। कैसी भयानक बात है! रेबेका के साथ किसी ऐसी बात की तो कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। कैंसर! हे भगवान!"

वह अपनी कार पर झुककर खड़ा हो गया और चिड़चिड़ाता हुआ-सा बोला, "इस बाजेवाले फ़कीर से जाने के लिए कहो, मुझसे इसका शोरगुल सहन नहीं हो रहा है।"

"ज्यादा अच्छा तो यह हो कि अब हम ही यहां से चले जायं। गाड़ी तुम खुद चला लोगे या कर्नल को चलानी पड़ेगी ?" मैक्सिम ने पूछा।

"बस एक मिनट की बात है, मैं अभी ठीक हुआ जाता हूं। तुम समझ नहीं पा रहे हो। इस बात से मुझे बड़ा धक्का पहुंचा है।"

"ज़रा सम्हलो फ़ेवेल, इस तरह गली में खड़े-खड़े अपनेको तमाशा न बनाओ। धक्का लगा है तो अन्दर बेकर के पास चले जाओ, वह दवा दे देंगे।"

"आप ठीक कहते हैं। आपको अब कोई चिन्ता नहीं है, मैक्सिम की विजय हुई है और आपका उद्देश्य सफल हो गया है। अब आप हर सप्ताह मैन्दरले में जाकर दावत उड़ा सकते हैं और मुझे विश्वास है कि मैक्सिम आप

को अपने पहले बच्चे का धर्म-पिता बना लेंगे।" फ़ेवेल ने सीधे खड़े होकर कर्नल को देखते हुए कहा।

"चलो, अब चलें।" कर्नल ने मैक्सिम से कहा।

मैक्सिम ने कार का दरवाजा खोल दिया। कर्नल अन्दर बैठ गये, मैं सामने मैक्सिम के पासवाली सीट पर बैठ गई। फ़ेवेल अब भी अपनी कार का सहारा लिये खड़ा था।

"सीधे घर जाकर सो रहो, फ़ेवेल।" कर्नल ने कहा, "धीरे-धीरे मोटर चलाना, कभी किसीकी हत्या के अपराध में जेल में न ठूंस दिये जाओ। और हां, तुम्हें एक बात बता दूं। मैजिस्ट्रेट होने के नाते मुझे कुछ अधिकार है। अगर तुमने कभी केरिथ या ज़िले में आने की कोशिश की तो वे अधिकार काम में लाये जायंगे। याद रखो, डरा-धमकाकर रुपये ऐंठने का धंधा आज-कल कुछ चलता नहीं है और फिर हमें ऐसे लोगों से व्यवहार करना भी खूब आता है।"

फ़ेवेल मैक्सिम की ओर देख रहा था और उसके मुख पर वही पुरानी भद्दी मुस्कराहट थी। वह बोला, "तुम्हारे भाग्य का सितारा तो चमक उठा है, मैक्स! तुम समझते हो कि तुम जीत गये हो। लेकिन तुम अब भी कानून की गिरफ्त में आ सकते हो और मैं भी तुम्हें समझ लूंगा, लेकिन कुछ दूसरे ही ढंग से।"

मैक्सिम ने मोटर चला दी। थोड़ी देर तक हम चुपचाप चलते रहे। फिर कर्नल बोले, "अब वह कुछ नहीं कर सकता, फ़ेवेल गीदड़ धमकी दे रहा है। डाक्टर की रिपोर्ट उसकी सारी कोशिशें बेकार कर देगी।"

मैक्सिम कुछ नहीं बोले। मैंने उनके चेहरे की ओर देखा, पर उसपर कोई भाव नहीं था। कर्नल बोले, "मैं पहले ही जानता था कि बेकर से कुछ सहायता अवश्य मिलेगी। कैंसर बड़ी भयानक बीमारी है, एक ऐसी बीमारी, जो किसी भी युवती और सुन्दर स्त्री को पागल बना सकती है।"

हम चलते रहे।

"मैं समझता हूं, आपको इसका कभी संदेह नहीं हुआ होगा, मैक्सिम!"

कर्नल ने कहा।"

"कभी नहीं।" मैक्सिम बोले।

"कुछ आदमी, विशेष रूप से स्त्रियां, इससे बहुत घबराती हैं। आपकी पत्नी साहसी तो थीं, लेकिन वह इस बीमारी का, इसकी पीड़ा का सामना नहीं कर सकती थीं।"

"हां," मैक्सिम ने कहा।

"अगर मैं चुपके-चुपके केरिथ में और आस-पास लोगों को बताता रहूं कि डाक्टर बेकर से हमें ऐसी-ऐसी बातें मालूम हुई हैं तो आपको इसमें कोई आपत्ति तो नहीं होगी, मिस्टर द विन्तर? लोग-बाग बेकार की अफ़वाहें फैलाते रहते हैं। ऐसी हालत में अगर उन्हें स्वर्गीय श्रीमती द विन्तर की सही-सही बातें मालूम हो जायं तो मामला आसान हो जायगा।"

"ठीक है, मैं आपकी बात समझ रहा हूं।" मैक्सिम ने कहा।

"अब मुझे किसी बात की आशंका तो नहीं है, फिर भी हमें तैयार रहना चाहिए। लोग तो हवा मिलते ही न मालूम क्या-क्या बेसिर-पैर की बातें ले उड़ते हैं।"

"हां," मैक्सिम ने कहा।

हम चलते रहे।

"साढ़े छः बजे हैं।" कर्नल ने कहा, "पास ही मेरी एक बहन रहती है, मैं चाहता हूं कि हम वहां अचानक जा पहुंचे और वहीं भोजन करें। फिर रातवाली ट्रेन से चले चलेंगे। आप दोनों को देखकर वह बड़ी प्रसन्न होगी।"

मैक्सिम कुछ झिझके और उन्होंने मेरी ओर देखा।

"आपकी कृपा है, लेकिन मैं सोचता हूं कि अब हमें अपने-अपने कार्यक्रमों में स्वतन्त्र हो जाना चाहिए। मुझे फ्रैंक को फोन करना है। और भी कई बातें हैं। हम रास्ते में कहीं भोजन कर लेंगे और रात को कहीं ठहर जायंगे। यही ठीक रहेगा।"

"अच्छा, तो आप मुझे मेरी बहन के घर छोड़ते जायं।" कर्नल ने कहा।

कर्नल की बहन के घर के द्वार पर आकर मैक्सिम ने कार रोक दी और

कहा, 'जो कुछ आपने आज किया है, उसके लिए आपको कहांतक धन्यवाद दूं।"

"मेरे प्यारे मित्र ! मैं बड़ा प्रसन्न हूं कि मैं कुछ कर सका।" कर्नल ने कहा, "जो बातें बेकर को मालूम थीं, वे अगर हमें मालूम होतीं तो इसकी नौबत ही नहीं आती। खैर, अब इसकी चिन्ता मत करो। जो कुछ हो चुका है, उसे भूल जाओ। फ़ेवेल तुम्हें अब तंग नहीं करेगा, अगर करे तो मुझे फौरन खबर कर देना।"

यह कहते हुए कर्नल अपना कोट और नक्शा लेकर कार में से उतर गये। फिर बोले, "अगर आप कुछ दिनों के लिए इधर-उधर घूम-फिर आयें तो ज्यादा अच्छा रहेगा। स्विट्ज़रलैंड अच्छी जगह है। हो सकता है, यहां मैन्दरले में परेशान करनेवाली छोटी-मोटी बातें पैदा होती रहें, लेकिन 'आंख ओट पहाड़ ओट' वाली कहावत के अनुसार अगर आप यहां नहीं रहेंगे तो किसीको भी कुछ कहने को नहीं रह जायगा। संसार का यही नियम है।"

अपनी सब चीजों की सार-सम्हाल कर लेने के बाद कर्नल चले गये।

हम सड़क पर आकर आगे चल दिये। सीट पर पीछे की ओर झुककर मैंने आंखें बन्द करलीं। अब जबकि हम एक बार फिर अकेले थे और सिर का बोझ उतर चुका था, मुझे एक अकल्पनीय संतोष का अनुभव हो रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे कोई फोड़ा फूट गया हो। मैक्सिम कुछ बोल नहीं रहे थे लेकिन उनका हाथ मेरे हाथ पर था। वह भीड़ में से होकर कार चला रहे थे। मैं शोर सुनती रही।

जब मैक्सिम ने कार रोकी तब मैंने आंखें खोलीं। हम एक गली में एक होटल के सामने पहुंच गये थे। मैं अचकचाकर अपने चारों ओर देखने लगी।

"तुम थक गई हो और भूखी भी हो।" मैक्सिम ने कहा, "कुछ खाकर तुम्हारी तबीयत सम्हल जायगी। चलो, अन्दर चलकर कुछ खा लें। यहीं से मैं फ्रैंक को टेलीफ़ोन भी कर दूंगा।"

कार में से उतरकर हम एक होटल में चले गये और कोने की एक मेज पर बैठ गये। मैक्सिम ने खाना लाने के लिए आर्डर दिया और कहा, "खाना

खाने के बाद हम धीरे-धीरे कार चलाते हुए जायंगे। शाम को ठंडक भी हो जायगी। रात को हम रास्ते में ही कहीं ठहर जायंगे और फिर सुबह मैन्दरले पहुंच जायंगे।"

"हां, ठीक है।"

अपनी शराब पीने के बाद मैक्सिम बोले, "कर्नल सच्ची बात को कहांतक भांप पाये हैं, कुछ सोच सकती हो?"

मैंने कुछ उत्तर नहीं दिया, अपने गिलास के ऊपर से उनकी ओर देखती रही।

"उन्हें सब मालूम है, निश्चय ही वह सबकुछ जान गये हैं।" मैक्सिम ने कहा।

"अगर वह समझ भी गये हैं तब भी कुछ कहेंगे नहीं।" मैंने कहा।

"नहीं, कभी नहीं।" मुझे विश्वास है कि रेबेका ने मुझसे जान-बूझकर झूठ इसलिए बोला था कि वह चाहती थी कि मैं उसे मार डालूं। उसने पहले ही सारी बातें सोच ली थीं, तभी वह हँसी थी, तभी मरने के बाद भी वह खड़ी हुई हँसती रही थी।"

मैं चुपचाप अपनी शराब पीती रही। अब तो सबकुछ निबट चुका था। अब मैक्सिम को चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं थी।

"मेरे साथ उसका यह आखिरी मजाक था और सबसे बढ़िया। शायद अब भी जीत उसीकी हुई है।"

"क्या मतलब, उसकी जीत कैसे हुई?"

"पता नहीं।" उन्होंने घूंट भरते हुए कहा और वह फ्रैंक को फोन करने चले गये।"

बैरा आकर मेज पर खाना रख गया। मैं उसकी ओर देखकर मुस्कराई। होटल में बड़ा अच्छा लग रहा था। मैं और मैक्सिम साथ थे, सभी बातें ठीक से निबट गई थीं। रेबेका मर चुकी थी, अब वह हमें परेशान नहीं करेगी। मैक्सिम के साथ उसका अन्तिम मजाक भी हो लिया। अब वह कुछ नहीं कर सकती।

दस मिनट में मैक्सिम लौट आये।

"फ्रैंक कैसे हैं?" मैंने पूछा।

"वह ठीक है। दफ्तर में वह हमारे फोन की प्रतीक्षा कर रहा था। मैंने सब बातें बता दीं। सुनकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। हां, एक बात अजीब-सी है। फ्रैंक का ख्याल है कि श्रीमती डैन्वर्स चली गई है। वह चुपचाप सारे दिन अपना असबाव बांधती रही। चार बजे कोई आदमी आकर उसके बक्स ले गया। फ्रिथ ने टेलीफोन करके फ्रैंक को सब बातें बताईं। इसपर फ्रैंक ने कहा कि श्रीमती डैन्वर्स से दफ्तर में आने को कहो, पर वह दफ्तर नहीं गई। अभी मेरे टेलीफोन करने से दस मिनट पहले फ्रैंक के पास फ्रिथ का टेलीफोन फिर आया था और उसने बताया था कि श्रीमती डैन्वर्स के नाम से कहीं दूर से एक फोन आया था। उसके कुछ देर बाद जब फ्रिथ उसके कमरे में गया तब कमरा खाली था। नौकरों ने उसे ढूंढ़ा, लेकिन वह नहीं मिली। वह घर में से निकल-कर सीधे जंगल में से होकर चली गई होगी, क्योंकि फाटक से बाहर जाते उसे किसीने नहीं देखा।"

"अच्छा ही हुआ वह खुद चली गई, वरना हमें उसे निकालना पड़ता। मेरा ख्याल है कि रात वह भी कुछ भांप गई थी।"

"यह अच्छी बात नहीं हुई, मुझे यह बात अच्छी नहीं लगी।" मैक्सिम ने कहा।

"अब वह कुछ नहीं कर सकती। फोन फ़ेवेल ने किया होगा और उसे वेकर और कर्नल की सारी बातें बताई होंगी। लेकिन अब वह हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

"मैं यह नहीं सोच रहा हूं।"

"फिर क्या बात है? अब तो सबकुछ ठीक हो गया है। हमें तो ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए।"

मैक्सिम ने कोई उत्तर नहीं दिया। हम चुपचाप खाना खाने लगे। मैं मैन्दरले के अपने भावी जीवन के बारे में भांति-भांति की कल्पनाएं करती रही।

"तुम खा चुकीं?" सहसा मैक्सिम ने पूछा।

"मुझे तो और कुछ नहीं चाहिए, सिर्फ कॉफी।"

"बैरा ! तेज कॉफी और बिल ले आओ।"

मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि आखिर जाने की इतनी जल्दी क्या है ? होटल में तो हम बड़े आराम से बैठे थे।

लेकिन मैक्सिम चल दिये और मैं भी उनके पीछे-पीछे हो ली। बाहर निकलकर मैक्सिम बोले, "क्या तुम कार में आराम से सोती हुई जा सकती हो ? मैं तुम्हें कम्बल और अपना कोट उढ़ा दूंगा और गद्दियां भी पीछे लगाई जा सकती हैं।"

"लेकिन मैं तो सोचती थी कि शायद रात को हम कहीं यहीं ठहरेंगे।"

"सो तो ठीक है, लेकिन मेरा मन कह रहा है कि मुझे रात को ही मैंदरले पहुंच जाना चाहिए। तुम पीछे आराम से सो सकोगी न ?"

"हां-हां, सो जाऊंगी।"

"अगर हम अभी चल दिये तो ढाई बजे तक मैन्दरले पहुंच जायंगे, सड़क खाली मिलेगी।"

"तुम बहुत बुरी तरह थक जाओगे।"

"नहीं, मेरी चिन्ता मत करो। मैं घर पहुंचना चाहता हूं। वहां कुछ गड़-बड़ी है। जरूर कुछ गड़बड़ी है।"

"क्या गड़बड़ी हो सकती है ? अब तो सबकुछ ठीक हो गया है।"

वह कुछ बोले नहीं। मुझे कार में लिटाकर उन्होंने कम्बल उढ़ा दिया और कहा, "अब तुम ठीक से हो न, बिल्कुल ठीक ?"

"हां, मैं ठीक हूं।" मैंने मुस्कराते हुए कहा, "मैं सो जाऊंगी। रास्ते में कहीं ठहरने से यह कहीं अच्छा है हम सूरज निकलने से बहुत पहले मैन्दरले पहुंच जायंगे।"

आगे की सीट पर बैठकर उन्होंने कार चलादी। मैंने अपनी आंखें बन्द कर लीं। कार चलती रही और मैं उसके हल्के-हल्के धक्के महसूस करती रही। मेरी बन्द आंखों के सामने एक-एक करके सैकड़ों चित्र आने लगे। कभी मुझे श्रीमती वान हॉपर के टोप का ध्यान आया, कभी फ्रैंक के खाने के कमरे की कुर्सियों का,

तो कभी जैस्पर के गुलाब के बाग़ में तितलियों के पीछे दौड़ने का। आंखें बन्द करने पर—शायद नींद के झोंके में—मुझे डाक्टर बेकर का कुत्ता, क्लैराइस की मां और बेन अजीब-अजीब से काम करते दिखाई दिये। मैं गहरी नींद सो गई और उसी अवस्था में श्रीमती डैन्वर्स मुझे मैंदरले के ज़ीने पर खड़ी दिखाई दी। जब मैं ऊपर पहुंची तब वह ग़ायब हो गई। फिर उसका मुंह मुझे एक दरवाज़े में दिखाई दिया। मैंने उसे पुकारा और वह ग़ायब हो गई।

"क्या समय हो गया है ?" मैंने पूछा।

"साढ़े ग्यारह बजे हैं। आधा रास्ता हम तय कर चुके हैं, कोशिश करके सो जाओ।"

"मुझे प्यास लग रही है।"

वह आगे के कस्बे में रुके। गैरेज में जो आदमी था, उसने बताया कि उसकी पत्नी अभी सोई नहीं है और वह हमारे लिए चाय बना देगी। हम गैरेज में खड़े हो गये। बड़ी ज़बर्दस्त ठंड थी। मैक्सिम ने सिगरेट जला ली। मैंने कोट के बटन लगा लिये। कुछ क्षण बाद उसकी पत्नी हमारे लिए चाय बना लाई। मैक्सिम बार-बार अपनी घड़ी की ओर देख रहे थे। मैं चाय पीने लगी।

"अब हमें चलना चाहिए। बारह बजने में दस मिनट हैं।" मैक्सिम ने कहा और हम फिर कार में सवार होकर चल दिये। मैंने फिर कम्बल ओढ़ लिया और आंखें बन्द कर लीं। बाजा बजानेवाले भिखारी के गाने की लय मेरे मस्तिष्क में गूंजने लगी। मैं सो गई और सोते-सोते मैंने देखा कि फ्रिथ और राबर्ट लाइब्रेरी में चाय लगा रहे हैं। फिर मुझे दिखाई दिया कि खाड़ी के काटेज में नावों के नमूने रखे हुए हैं। मैंने आनन्द-घाटी में जाना चाहा, किन्तु वह मुझे मिली ही नहीं। चारों तरफ़ जंगल-ही-जंगल था, आनन्द-घाटी का कहीं नाम-निशान भी नहीं था। उल्लू बोल रहे थे। मैन्दरले की खिड़कियों पर चांदनी छिटक रही थी और बाग़ में ऊंचे कांटे खड़े थे—दस फुट ऊंचे, बीस फुट ऊंचे।

'मैक्सिम," मैं चिल्लाई, "मैक्सिम।"

"हां-हां, मैं यहां हूं।"

"मैंने एक सपना देखा है ।"

"क्या ?"

"मुझे पता नहीं, मुझे याद नहीं ।"

और मैं फिर सो गई और सपना देखने लगी—सवेरे के कमरे में मैं पत्र लिख रही हूं, निमंत्रणपत्र भेज रही हूं । किन्तु जब मैं कागज़ देखती हूं तब उस पर मेरी लिखावट नहीं है, उसपर वही लम्बी, तिरछी लिखावट है । मैं उठकर शीशे के पास पहुंचती हूं, किन्तु उसमें मुझे अपना मुंह दिखाई नहीं देता । वहां एक बहुत सुन्दर पीला मुख है, जिसके चारों ओर गहरे काले बाल हैं । वह शीशे-वाला मुख मुझे देखकर हँसता है । और तब मैं देखती हूं कि वह सोने के कमरे में शृंगार-मेज़ के पास बैठी है और मैक्सिम उसके बाल बना रहे हैं । उन्होंने उसके बाल हाथ में पकड़ रखे हैं । सहसा वह बाल रस्सी जैसे, सांप-जैसे दिखाई देने लगते हैं और मैक्सिम हँस-हँसकर उन्हें रेबेका की गर्दन के चारों ओर लपेटने लगते हैं ।

"नहीं-नहीं," मैं चिल्लाई, "हमें स्विट्ज़रलैंड चले जाना चाहिए । कर्नल कह रहे थे, हमें स्विट्ज़रलैंड चले जाना चाहिए ।"

मैंने अपने मुख पर मैक्सिम के हाथ का स्पर्श अनुभव किया । "क्या बात है ? क्या बात है ?" वह बोले ।

मैं उठकर बैठ गई और मैंने अपने बाल मुंह पर से हटाकर पीछे की ओर डाल लिये ।

"मैं सो नहीं सकती, कोशिश करने से कोई फ़ायदा नहीं ।"

'लेकिन तुम तो सो रहीं थीं । तुम तो दो घंटे तक सोती रही हो । अब सवा दो बजे हैं । हम लेनीओन को पारकर चार मील और आगे आ गये हैं ।"

ठंड बढ़ गई थी और मैं कांप रही थी ।

"मैं आपके पास आती हूं । हम तीन बजे तक पहुंच जायंगे न ?"

पीछे से आकर मैं उनके पास बैठ गई । मेरे हाथ उनके घुटने पर थे और दांत बज रहे थे ।

"तुम्हें जाड़ा लग रहा है ?" मैक्सिम बोले ।

"हां।"

हमारे सामने पहाड़ियां कभी उभरती थीं, कभी फिर नीचे को दब जाती थीं। अब बिल्कुल अंधेरा था। तारे भी छिप गये थे।

"तुमने क्या समय बताया था ?"

"दो बजकर बीस मिनट।"

"बड़ी अजीब बात है। ऐसा लग रहा है जैसे पहाड़ियों के दूसरी ओर सूर्य की किरणें फूट रही हैं। लेकिन यह कैसे हो सकता है, अभी तो बहुत जल्दी है।"

"वह ग़लत दिशा है, तुम तो पश्चिम की ओर देख रही हो।"

"हां, यह ठीक है। अजीब-सी बात है न ?"

उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। मैं आकाश की ओर देखती रही। प्रकाश कुछ अधिक बढ़ता दिखाई देने लगा, जैसे सूरज की किरणें निकल रही हों। धीरे-धीरे वह प्रकाश सारे आकाश में फैल गया।

"उत्तरी ध्रुव का प्रकाश तो जाड़ों में दिखाई देता है न ? गर्मियों में तो दिखाई नहीं देता।" मैंने कहा।

"वह उत्तरी ध्रुव का प्रकाश नहीं है। वह मैन्दरले है।"

मैंने उनके मुख की ओर देखा, उनकी आंखों की ओर देखा।

"मैक्सिम," मैंने कहा, "मैक्सिम यह क्या है ?"

वह और भी तेजी से कार चलाने लगे। हम पहाड़ी की चोटी पर पहुंच गये। मैन्दरले जानेवाली सड़क सामने दिखाई दे रही थी। चांद छिप चुका था। हमारे सिर के ऊपर आकाश बिल्कुल काला था, किन्तु क्षितिज लाल हो रहा था, जैसे रुधिर के छींटे फैले हों। समुद्र की खारी हवा के साथ-साथ राख हमारी ओर उड़-उड़कर आ रही थी।

: ३० :

रात मैंने सपना देखा कि मैं फिर मैन्दरले गई हूं। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं बाहर लोहे के फाटक के पास खड़ी हूं, लेकिन आगे जाने का रास्ता बन्द है, क्यों-

कि फाटक में जंजीर पड़ी है और उसमें ताला लगा हुआ है। मैंने सपने में ही चौकीदार को आवाज दी, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। तब मैंने फाटक के जंग लगे हुए लोहे के सीखचों के भीतर झांककर देखा। चौकीदार का वह मकान खाली पड़ा था। वहां कोई भी नहीं था।

चिमनी में से भी धुआं नहीं निकल रहा था और झिलमिलीदार छोटी खिड़कियां मुंह बाए खुली पड़ी थीं। तब—जैसा कि अक्सर सपना देखनेवालों के साथ होता है—मुझमें सहसा कोई दैविक शक्ति आ गई और मैं अपने सामने के बंद फाटक में एक आत्मा की तरह प्रवेश कर गई। मेरे सामने की सड़क पहले की ही तरह मुड़ती और घूमती चली गई थी और जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ रही थी मुझे ऐसा लग रहा था जैसे चारों ओर सबकुछ बदल गया है। पहले तो मैं कुछ चकराई और मेरी समझ में नहीं आया कि यह परिवर्तन कैसे हो गया, लेकिन एक वृक्ष की नीचे लटकती हुई डाल से अपनेको बचाने के लिए जब मुझे अपना सिर झुकाना पड़ा तब मेरी समझ में सब कुछ आ गया। प्रकृति ने धीरे-धीरे वहां मनमानी करनी शुरू कर दी थी। रास्ते के दोनों ओर के वृक्ष बहुत घने होकर इधर-उधर फैल गये थे। उनकी शाखाएं बढ़ती-बढ़ती आपस में ऐसी मिल गई थीं कि मेरे सिर के ऊपर एक गुम्बज-सा बन गया था। वहां बीसियों तरह के वृक्ष थे, जिन्हें मैं पहचानती भी नहीं थी और उनके बीच-बीच में कितनी ही तरह की झाड़ियां और घास-फूस उग आई थी। रास्ता बहुत संकरा हो गया था और कंक्रीट पर झाड़-झंखाड़ फैल गया था।

जिस रास्ते पर कभी हम मोटर में आते-जाते थे, या घूमते-फिरते थे वह एक पतली पट्टी की तरह मालूम पड़ रहा था और मैं उसपर आगे बढ़ती चली जा रही थी। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता जैसे रास्ता गुम हो गया है, लेकिन कभी-कभी किसी गिरे हुए वृक्ष के नीचे से या जाड़े की बारिश से भरे हुए किसी बड़े गड्ढे के उस पार से वह फिर दिखाई दे जाता। रास्ता इतना लम्बा होगा, इसका मुझे ध्यान नहीं था। जिस प्रकार वृक्षों की सघनता बढ़ गई थी, उसी प्रकार शायद रास्ते की लम्बाई भी बढ़ गई थी। ऐसा मालूम होता था कि यह रास्ता घर की ओर न जाकर किसी भूल-भूलैयां या किसी घने जंगल की ओर

जा रहा है।

लेकिन अचानक मैंने देखा कि सामने ही मैन्दरले है। मैं खड़ी-की-खड़ी रह गई। मेरी आंखों में आंसू भर आये और दिल ज़ोर-ज़ोरसे धड़कने लगा।

मैन्दरले! हां, हमारा मैन्दरले हमेशा की तरह ख़ामोश और रहस्यमय। उसके भूरे पत्थर मेरे सपने की चांदनी में चमक रहे थे और खिड़कियों की परछाई हरे-हरे लॉन और चबूतरे पर पड़ रही थी। समय मैन्दरले की दीवारों की सुन्दरता को नष्ट नहीं कर सकता था। भूमि की गोद में वह वैसे ही चमक रहा था जैसे किसीकी हथेली में कोई हीरा चमकता है।

चबूतरे का ढलान लॉन की तरफ था और लॉन दूर समुद्र तक फैले हुए थे। उस ओर देखने पर मुझे समुद्र एक चांदी की चादर की तरह लगा। चांदनी में वह बिल्कुल शान्त और गम्भीर दिखाई पड़ रहा था—बिल्कुल ऐसा जैसे तूफान और हवा से अछूती कोई झील हो। मैंने फिर मुड़कर घर की ओर देखा, वह ज्यों-का-त्यों खड़ा था, मानो हम उसे कल ही छोड़कर गये हों। लेकिन बाग़ में जंगल की ही तरह प्रकृति का साम्राज्य छाया हुआ था। लाल गुलाब के पौधे पचास फुट ऊंचे होकर एक-दूसरे में उलझ रहे थे और ऐसा लगता था, जैसे उन्होंने दूसरी जाति की झाड़ियों से ब्याह कर लिया था, जो उनकी जड़ों के चारों ओर लिपटी हुई अपनी क्षुद्रता का भान करा रही थीं।

बिच्छू के पेड़ हर जगह रक्षा-सेना की तरह फैल गये थे। चबूतरे को उन्होंने घेर लिया था, रास्ते पर वे बेढंगेपने से छा गये थे और मकान की खिड़कियों तक पर झुक आये थे।

रास्ता छोड़कर मैं चबूतरे पर चढ़ गई। सपने में बिच्छू के पेड़ों ने मेरे लिए कोई रुकावट नहीं डाली, मैं मानो किसी जादू के ज़ोर से आगे बढ़ती गई।

चांदनी रात में कल्पना न जाने कैसी-कैसी उड़ानें भरने लगती है। जागृत अवस्था की ही नहीं, स्वप्नावस्था की कल्पना की भी यही दशा होती है। मैं वहां चुपचाप खड़ी थी और मुझे सचमुच ऐसा लग रहा था कि मकान खाली नहीं है, बल्कि पहले की तरह ही आबाद है।

खिड़कियों से रोशनी आ रही थी और परदे रात की हवा से धीरे-धीरे उड़

रहे थे। लाइब्रेरी का दरवाज़ा उसी प्रकार आधा खुला हुआ था, जैसा हम उसे छोड़ गये थे और मेज़ पर गुलदस्ते के पास मेरा रूमाल पड़ा था।

कमरों से हमारे वहां रहने का आभास मिल रहा था। लाइब्रेरी की किताबों का एक छोटा-सा ढेर निशान लगाकर वापस करने के लिए रखा था और 'टाइम्स' अखबार की प्रति एक ओर मेज़ पर पड़ी थी। राखदानी में सिगरेट के टोंटे पड़े थे। कुरसियों की गद्दियों पर हमारे सिरों के रखने के निशान पड़े हुए थे और लकड़ियों की राख अबतक भीतर-ही-भीतर सुलग रही थी। और जैस्पर! प्यारा जैस्पर! बड़ी-बड़ी भावपूर्ण आंखों और झुके हुए जबड़ोंवाला हमारा जैस्पर फ़र्श पर टांगें फैलाये पड़ा था और उसकी पूंछ अपने मालिक के पैरों की चाप सुनकर हिलने लगी थी।

सहसा एक बादल ने न जाने किधर से आकर चांद को ढक लिया, जैसे मुंह के सामने कोई काला हाथ आ गया हो। और उसके साथ-साथ वह मायाजाल भी छिन्न-भिन्न हो गया। खिड़कियों की रोशनियां बुझ गईं और अब मैं समझ गई कि मैं सपना देख रही हूं। मुझे यह भी ज्ञान हो गया कि वास्तव में मैं सैकड़ों मील दूर एक अनजान देश में पड़ी हूं और कुछ ही क्षणों बाद जब मेरी आंखें खुलेंगी तब मैं अपनेको एक छोटे-से होटल के सोनेवाले कमरे में पाऊंगी। एक ठंडी सांस लेकर मैं अपने हाथ-पांव फैलाऊंगी और करवट बदल लूंगी। आंखें खुलने पर तेज़ चमकती हुई धूप और साफ़ आसमान देखकर कुछ अजीब-सा लगेगा, क्योंकि मेरे सपने की चांदनी से यह दृश्य एकदम बदला हुआ होगा। हम दोनों के सामने एक पूरा लम्बा दिन होगा, जिसमें न कोई घटना होगी न कोई हलचल, लेकिन जिसमें एक तरह की ऐसी शान्ति और ऐसा चैन होगा जैसा हमें पहले कभी नहीं मिलता था। हम मैन्दरले के बारे में बातें नहीं करेंगे, मैं मैक्सिम को अपना सपना नहीं सुनाऊंगी, क्योंकि मैन्दरले अब हमारा नहीं है। मैन्दरले अब रह ही नहीं गया है।

... ...

हम मैन्दरले फिर नहीं लौटेंगे, इतना तो निश्चित है। बीते हुए दिन अभी हमारे बिल्कुल निकट हैं। जिन बातों को हम भूलने की कोशिश कर रहे हैं, वे

वहां जाने से फिर याद आने लगेंगी और भय तथा बेचैनी की वे भावनाएं, जो भगवान की दया से इस समय दब गई हैं, शायद किसी दूसरी तरह हमारे जीवन में घर करने लगेंगी, जैसे पहले हो चुका है।

मैक्सिम बहुत ही सन्तोषी हैं, वह कभी कोई शिकायत नहीं करते। कोई बात याद आ जाने पर भी वह मुंह से कुछ नहीं कहते और याद तो उन्हें न जाने कब-कब आती होगी, लेकिन हर बार वह मुझे बताते भी नहीं हैं।

मैं उनके व्यवहार से उनके मन की दशा का पता लगा लेती हूं। वह सहसा खोये-खोये-से और परेशान नजर आने लगते हैं और उनके मुंह पर से सारे भाव ऐसे ग़ायब हो जाते है जैसे किसी अदृश्य हाथ ने उन्हें झाड़-पोंछकर साफ़ कर दिया हो। वह सिगरेट-पर-सिगरेट पीने लगते हैं, लेकिन उन्हें बुझाने की परवा नहीं करते। जलते हुए सिगरेट के छोटे-छोटे टोंटें उनकी चारों तरफ फ़र्श पर फूल की पंखुड़ियों की तरह बिखरे रहते हैं। वह जल्दी-जल्दी उत्सुकता के साथ बेमतलब की बातें करने लगते हैं।

कहा जाता है कि जिस तरह आग में तपने से सोने में चमक आ जाती है उसी प्रकार मनुष्य भी दुःख झेलने के बाद अधिक श्रेष्ठ और दृढ़ बन जाते है। यह भी कहा जाता है कि लोक-परलोक में अपनी उन्नति के लिए हमें अग्नि-परीक्षा देनी होती है और हम काफ़ी अग्नि-परीक्षा दे चुके हैं। हम दोनों भय, एकान्त और बड़ी परेशानी का सामना कर चुके हैं। मैं समझती हूं कि ये बातें प्रत्येक मनुष्य के जीवन में देर-सवेर आती ही है। हम सबको दुःख देने के लिए कोई खास शैतान होता है, जो हमपर सवार हो जाता है और उससे लड़कर अन्त में हम उसे हरा देते हैं। हमें विश्वास है कि हम अपने शैतान पर विजय प्राप्त कर चुके हैं, अब वह हमपर सवार नहीं होगा। संकट को हम पार कर चुके हैं लेकिन बिना कुछ चोट खाये नहीं।

सुख कोई ऐसी सम्पत्ति नहीं है, जिसके लिए लालसा की जाय। यह तो मस्तिष्क की एक दशा है। उदासी के क्षण भी आते हैं लेकिन कभी-कभी ऐसा भी समय आता है, जो हमारे होंठों पर मुस्कराहट ला देता है, मैं जानती हूं अब हम साथ-साथ एक-दूसरे के कंधे-से-कंधा मिलाकर जीवन में बढ़ रहे हैं और अब हमारे

बीच न कोई मतभेद है, न किसी प्रकार का रहस्य ही।

दुःख-सुख सभीके हम दोनों भागीदार हैं। माना कि हमारा यह छोटा-सा होटल नीरस है, जहां खाना भी रूखा-सूखा मिलता है। यह भी माना कि यहां की हर सुबह प्रायः एक जैसी ही होती है। फिर भी हम कुछ और नहीं चाहते। हम दोनों सादगी पसंद करते हैं और अगर कभी-कभी हम उकता भी जाते हैं तो वह उकताहट भय को भगानेवाली होती है। अब हम नियमित ढंग से जीवन बिताते हैं और मुझमें जोर से पढ़ने की आदत पड़ गई है। मैं उन्हें बेचैन होते हुए केवल तब देखती हूं जब डाकिये के आने का समय निकल जाता है, क्योंकि इसके माने होते हैं कि हमें अगले चौबीस घंटों तक फिर डाक के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। हमने रेडियो से भी खबरें सुनने की कोशिश की लेकिन उसमें इतना शोर मचता है कि हमें अपनी उत्सुकता को दबाना ही अच्छा लगता है। इसलिए देर से आनेवाले समाचार-पत्र में कई दिन पहले खेले गए क्रिकेट-मैच की खबरें भी हमारे लिए बड़ा महत्त्व रखती हैं।

कभी-कभी जब मुझे 'फील्ड' अखबार की पुरानी प्रतियां मिल जाती हैं तब ऐसा लगता है जैसे मैं इस नीरस टापू से हटकर इंग्लैंड के बसन्ती जीवन में पहुंच गई हूं।

एक बार उसमें जंगली कबूतरों के बारे में एक लेख छपा था और जब मैं उसे जोर-जोर से पढ़ रही थी तब मुझे ऐसा लगा जैसे मैं मैन्दरले के घने जंगलों में पहुंच गई हूं और मेरे सिर के ऊपर कबूतर फड़फड़ा रहे हैं। मुझे याद है कि गरमी के दिनों में ठंडक पहुंचानेवाली उनकी कोमल आवाज को मैं बड़े चाव से सुना करती थी और उस समय तक सुनती रहती थी जबतक कि जैस्पर मुझे खोजता हुआ आकर उन्हें तितर-बितर नहीं कर देता था।

कितनी अजीब बात है कि कबूतरों पर लिखे गए एक लेख ने अतीत को मेरे सामने इतना सजीव बना दिया और मैं जोर-जोर-से पढ़ते हुए हकलाने लगी। एकाएक मैक्सिम के चेहरे को सफेद पड़ते देख मैं रुक गई और पन्ने पलटकर क्रिकेट-मैच पर लिखा हुआ एक समाचार पढ़ने लगी। उसे सुनकर कुछ क्षण बाद ही उनके चेहरे पर फिर वही शान्ति झलकने लगी और इस प्रकार हम अतीत में

जाते-जाते रुक गये ।

गांवों के बारे में मुझे बहुत-सी बातें मालूम हैं और उन्हींके बारे में सोचते-सोचते मैं अपनी दोपहर हँसी-खुशी से बिता देती हूं और शाम की चाय के समय भी अपनेको मुस्कराती हुई पाती हूं ।

हम चाय के समय हमेशा एक ही तरह की चीजें लेते हैं—मक्खन के साथ डबल रोटी के दो टुकड़े और चीनी चाय । लोगों की आंखों में हम बड़े ही रूढ़िवादी दिखाई पड़ते होंगे, क्योंकि हम उन नियमों को ही निबाहते रहते हैं, जिनका इंग्लैंड में पालन किया करते थे ।

इस साफ़-सुथरे बरामदे में बैठकर मुझे मैन्दरले के साढ़े चार बजे का समय याद आ जाता है, जब हमारे लिए लाइब्रेरी के आतिशदान के पास चाय की मेज़ लगाई जाती थी । एक मिनट का भी आगा-पीछा किये बिना दरवाजा ठीक साढ़े चार बजे खुलता था और चाय का काम शुरू हो जाता था । हमारे सामने हमेशा ही पूरी दावत का सामान रखा जाता था, यद्यपि हम खाते बहुत थोड़ा थे । इतने पर भी मुझमें कभी श्रीमती डैन्वर्स से यह पूछने का साहस नहीं आया था कि बचे हुए सामान का क्या होता था, क्योंकि मैं जानती थी कि मेरे ऐसा पूछने पर वह मुझे तिरस्कार के साथ देखेगी और बड़प्पन की व्यंग्यभरी मुस्कान के साथ मुझसे कहेगी, "श्रीमती द विन्तर तो कभी ऐसी शिकायत नहीं करती थीं ।" श्रीमती डैन्वर्स ! पता नहीं, अब वह क्या कर रही है । और फ़ेवेल !

खैर अब यह सबकुछ खत्म हो चुका है । मुझे अब किसीका भय नहीं है। अब हम दोनों स्वतंत्र हैं । हमारा प्यारा वफ़ादार कुत्ता भी कहीं दूर शिकार की खोज में चला गया है और मैन्दरले खत्म हो चुका है । आज वह एक खंडहर की तरह वीरान पड़ा है ।